

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गाधी मार्ग,
इलाहाबाद–१ द्वारा प्रकाशित

●

कापीराइट
हरनाम दास सहराई

●

प्रथम संस्करण : १९८२

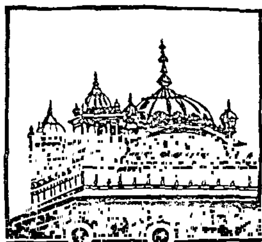
●

लोकभारती प्रेस
१८, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद-१ द्वारा मुद्रित

मूल्य : ३५.००

दरबार साहिब के निर्माता
गुरू अर्जुनदेव को
पुण्य स्मृति में

हरिमन्दिर



हरि मन्दिर

स्वर्ण मन्दिर की आत्म-गाथा

कियो उपद्रव तुर्क बड़ अमृतसर गुरुद्वार ।
हरि मन्दिर में कंचनी रखे तुरकन को सरदार ॥
मंडियाली को रंगड़ो मस्सा ताको नाम ।
करे बेअदबी हरि मन्दिर पापी बड़ो हराम ॥

—प्राचीन पंथ प्रकाश

लक्खी जंगल

घने पेड़ों का एक घेरा और उसकी नाभि में जलाशय। राजस्थान की रेतीली धरती में पानी की छवि कुदरत की सबसे बड़ी नियामत है। पानी का छींटा तक नजर आता नहीं। पानी के लिए बिलखता रहता है राजस्थान।

बिल्लौर जैसा चमकदार शीतल जल। उसमें झलकती हुई पेड़ों की परछाइयां। सिक्खों का गुप्त स्थान। तराजू के एक पलड़े में सिक्ख का नाम रख लो, दूसरे में मौत—पलड़े बराबर भले ही हो जायें, पर प्रसंग फिर भी रह जायेगा। सिक्ख का नाम भारी मौत फिर हल्की। किस मुंह से सिक्ख का नाम लिया जाये! फिर भी सिक्खों का नाम लेने वाले बहुत थे। पंजाब के अपना ही खून थे। बेटे थे, पोते थे, भाई थे, जंवाई (दामाद) थे। पंजाब तो गैरों की सौ-सौ खिदमतें करता था, उन्हें आदर भाव देता था, फिर अपनों को क्यों न सीने से लगाता। सामने नहीं तो न सही, चोरी, रात-बेरात, चूरमे कूट-कूट कर, कटोरे भर-भर कर खुद खिलाता पंजाब। हुकूमत का बहुत दबदबा था।

एक पेड़ की छांह में बैठे चार जन बातें कर रहे थे।

लम्बी-लम्बी, खुली, बावरी लटों और कटी मूंछों वाला, दिखने में पक्का सूफी, नाम बिजला सिंह—वह बोला :

'सज्जनो, इसे मुसलमान मक्का कह लें या मदीना, इसे काशी कह लो या प्रयाग, हरिद्वार कहो या अयोध्या, सिंह इसे गोइंदवाल कह कर सिर नवा लें या अमृतसर को हृदय में बसा कर सिर झुका लें, हुकूमत इसे किला कह ले या छावनी, ज्यादातर लोग इसे मौत का घर कहते। हिंदू श्रद्धालु शिवस्थान। कुछ सिंह दमदमा कह कर जी ठंडा कर लेते। लाहौर सूबा इस जगह को लक्खी जंगल के नाम से पुकारता। इन सभी बातों में से कोई भी बात झूठी नहीं है। सबकी सब सोलहों आने सच हैं—कसौटी पर कस कर परखी हुई।

'सरकारी कागजों में जब लक्खी जंगल का नाम आता, तो साथ ही यह लिखा होता कि यह जगह लुटेरों, आक्रामकों, हत्यारों, दरिंदों और डाकुओं का डेरा है। लक्खी जंगल हुकूमत की आंखों में कुकरे की तरह चुभता रहता। सूबे

की मारक फौजें सिंहो के गुप्त स्थानो की छाह तक न पा सकती। कोशिश बहुत करती, पर हासिल कुछ न होता। सिंहो का जलाल है यह !'

'जलाल तो बहुत है, पर वजूद कुछ नही है।' तारा सिंह बोला।

'मदारी का तमाशा नहीं है कि वजूद नज़र आ जाये !' बिजला सिंह ने कहा, 'साजिशें अधेरों मे ही पलती है। खामोशी के झुटपुटे मे उनका जन्म होता है। बधे हुए मुंह और कसे हुए कमर पट्टे उन्हें परवान चढाते हैं। उन्हे जवानी के द्वार तक पहुंचाने के लिए बडा संघर्ष करना पडता है। समझ में आयी मेरी बात ?'

तारा सिंह जोश में आ गया, सीने पर हाथ मारता हुआ बोला, 'सिंह जी, यह हमारा कीरतपुर है, चमकौर साहिब है ! आनदपुर की गद्दी का दूसरा रूप है यह लक्खी जगल !'

मनसा सिंह ने यो ही बीच में टाग अड़ा दी, 'इसे सरहंद नहीं कहा जा सकता ? कत्लगढ से कम है यह ?'

बिजला सिंह ने अपना सयम बरकरार रखा, 'सिंह जी, यह न सरहंद है, न कत्लगढ', उसने कहा, 'लक्खी जगल में कोई भी आदमी किसी दूसरे के खून में अपने हाथ नही रंग सकता। यह पवित्र स्थान है। इसे तब तक पवित्र रखा जाये, जब तक हमारे बीच दरार नही पड़ती। अगर दरार पड़ गयी, तो फिर यह गुरदास नंगल बन जाये। सिंह अब ऐसी ग़लती नही करेंगे। एक भूल हो गयी। भूलें बार-बार नही हुआ करती। एक भूल ने ही घर-बार को नष्ट कर डाला है...वरना सिंह किसे पल्ले बाधते थे !'

मनसा सिंह बोल उठा, 'मुझे आज पता चला है कि लक्खी जगल एक होवा है, बाघ है, शेर बब्बर है हुकूमत के लिए ! मैं तो यही समझता था कि सिंहों ने इसे चोरो की तरह छुपने की जगह बना रखा है !'

'हुकूमत के लिए तो वही कुछ है, लेकिन सिंहो के लिए यह एक गढ़ है, बिना बुर्जी, बिना दीवार और बिना खाई का किला है।' बिजला सिंह ने उत्तर दिया।

मनसा सिंह बोल उठा, 'मुझे तो बड़ा प्यार हो गया है। मेरी हमदर्दी बढ़ गयी है। मैंने कभी ऐसा सोचा या सुना नही था। हमारा काम था, जत्थेदार का वचन मानते जाओ, सेवा करते रहो, मेवा मिलेगा !'

'आराम से बैठ जाओ और सुन लो कि लक्खी जंगल क्या है,' बिजला सिंह ने अपनी छोटी-सी दाढ़ी पर हाथ फिराया और दस्तार को संवारा, 'सिंह इसका इतना सत्कार क्यों करते हैं। सारा पंजाब इसके नाम पर सिर क्यों झुकाता है...'

श्रद्धा और प्यार के स्वर मे बिजला सिंह ने लक्खी जंगल का वर्णन करना शुरु किया :

'लक्खी जंगल सूरमाओं, योद्धाओं और वीरों की वस्ती का नाम है।'

'लक्खी जगल मे वही लोग रह सकते हैं, जो मौत को हंस-हंस कर गले लगाने में बिल्कुल न घबरायें।'

'लक्खी जंगल दुस्साहसी सूरमाओं का गढ़ है।'

'प्रतिज्ञा करने और इस पर पूरा उतरने वालों की जन्मभूमि है लक्खी जंगल।'

'लक्खी जगल मे वे लोग वसते हैं, जो गुरु के नाम की माला जपते हैं। गुरु के सहारे जीने वालो का गुरुधाम है यह।'

'लक्खी जंगल एक मंदिर है, उन पुजारियों का, जिनका गुरु पर विश्वास अटल है।'

'लक्खी जगल के वासी वे लोग हैं, जो अपने मुंह से निकले शब्द पर प्राण दे देते हैं, और उफ तक नहीं करते, यह गांव उनका है।'

'लक्खी जगल एक दोधारी तलवार है। इसके दोनों ओर लिखा है: तब तक धर्म निभाते चले जाओ, जब तक [illegible] है।'

'लक्खी जंगल आस्थावानों का एक [illegible] है।'

'बांट कर खाना लक्खी जंगल वालों का धर्म है।'

'गुरु की गोलक, गरीब का मुंह है [illegible] कहा जा सकता है।'

'लक्खी जगल कृपाण की [illegible] तीखी, दोधारी तलवार है। [illegible] लाली है, लाज है, शर्म और [illegible]'

'लक्खी जंगल एक [illegible] तोहे प्रेम खेलन का चाव, [illegible]'

'लक्खी जंगल [illegible] एक ही भूरे मे काट लेते हैं [illegible]'

'लक्खी जंगल [illegible] और भूरी माला। [illegible] गुरु की मुहर।'

'जंगल में मोर नाचा किसने देखा ? पहाड़ पर बांसुरी बजती किसने सुनी ? लक्खी जगल ऐसी ही एक छावनी है, जिसके करतब किसी ने नहीं देखे हैं !'

'लक्खी जगल के बारे मे बहुत कुछ मशहूर है। उसमें से बहुत कुछ सच है। सिह अभी-अभी थे और अभी-अभी हिरनों के सींगों पर सवार हो कर आलोप हो गये। भूतों का डेरा है। पल-भर में गायब हो जाते। आसमान खा जाता या ज़मीन निगल जाती--कोई नही जानता।'

'इसीलिए उसे भूतों का डेरा कहा जाता है।'

'लक्खी जंगल में सिह छावनियां डालकर रहते हैं। उनके बारे में एक आख्यान बन गया है : 'सिह मकान छोड कर भाग गये !' वे हारे नहीं। उन्होंने दिल नही छोडा, बल्कि वे नये हमले की तैयारी कर रहे हैं। एकाएक जैसे कोई बौछार पडती है, वैसे ही अचानक हमला ! खून बरसा, लहू के फौवारे छूटे, दुश्मन की फौजों की नसें निचोड़ी, बोटियां उड़ा दी...यह नया ढंग है युद्ध का। सिह नेताओ ने नया आविष्कार कर डाला है।'

'लक्खी जगल पर हम न्योछावर ! खायेंगे भुने हुए चने और डकार लेंगे काबुली बादामो का ! खायेंगे बासी रोटियां और स्वाद लेंगे मीठे प्रसाद का ! पीयेंगे कढी और अमृती कह कर उसे पवित्र कर लेंगे ! होगा एक और सवा लाख कह कर सामने वाले की जान निकाल लेगा !...

'लक्खी जगल उन दुस्साहसी सिहों का स्थान है, जो संगत, पंगत और वाणी पर ईमान रखते हैं।'

'लक्खी जगल उन सिहो की छावनी है, जिनके बारे मे मुगल शाही लोग कहते है कि सिह महापुरुष हैं, देवता हैं।'

किसी सर्प की तरह अचानक फन उठाते हुए, मनसा सिह बीच मे ही बोल उठा, 'भाई, सो कैसे ?'

बिजला सिह बोल उठा, 'सिहों ने हमला किया एक खेमे पर। जब उन्हे पता चला कि यह खेमा बेगमों का है, उन्होंने फौरन अपनी तलवारें म्यान मे रख ली। दोनों हाथ जोड़ कर उन बीबी-रानियों से क्षमा मांगी, जो कुछ अपने पास था, सब उनके सामने रख दिया, जो कुछ लूट कर लाये थे, वह भी उनके सामने डाल दिया। मोहरो का ढेर लग गया। वही से लौट आये। बहनों और बेटियों के घर आये थे न भाई !'

'मां के दूध की तरह पवित्र है लक्खी जगल--यह बात, यह कथा, यह वारदात सिर्फ लक्खी जगल ही जानता है। पजाब के बहुत गिने-चुने लोग ही इस बात को जानते हैं। तुमने सुन ली है, पल्ले बांध लो।'

'किसी दिन इन्हें पजाब का मिहमान संभालना है। घोडे, जोड़े और कलगियां इनके लिए होंगी, उन जालिम मुगलों के लिए नही, उनके सिर के लिए तो सात चूल्हो की राख !'

बिजला सिह ने कह कर हाथ जोड दिये : 'धन्य, धन्य, धन्य, धन्य, गुरु गरीब-नवाज़ !'

●●

वलवले

'लाहौर से एक आदमी आया है। उसने बताया है कि सूबा लाहौर ने भरी कचहरी मे यह फैसला किया है कि अब पजाब मे सिंह नही रह सकते। एक म्यान मे दो तलवारें कैसे रखी ज' सकती है ? एक जगल में दो शेर कैसे समा सकते हैं ? शेर एक ही रहेगा जगल में। एक म्यान में तलवार भी एक ही रह सकती है। पंजाब में या तो मैं राज करूगा या खुदा का कहर। किसी के घर से चोरों-चकारों की तरह पैसा लूट कर ले जाना, यह कहा की बहादुरी है! यह तो शोहदों का काम है! ढोल वजाओ, दूसरों को ललकारो और फिर लूटो। इसे कहते हैं वीरता। शिवाजी ने एक ही बात बतायी है सिंहो को, बाकी बातें नहीं बतायी। शिवाजी का जमाना और था, मेरा जमाना और है। इन दोनो में ज़मीन-आसमान का फर्क है। मैं सिंहो का बीज नष्ट कर दूंगा। मैं पंजाब में ऐसी कोई औरत ही नही छोडूंगा, जो ऐसे निडर, बेधड़क, बेख़ौफ़ और हथेली पर जान रखकर मरने-मारने को पल भर में तैयार हो जाने वाले सिंह पैदा कर सके। मैं उन सबके गर्भ भंग करवा दूंगा। मेरे जीते-जी किसी की कोख नही फूलेगी। सुन ली ज़करिया खा की दिलेरी ?' बिजला सिंह ने जोश में आ कर पूछा।

'अगर सिंहों ने उसी का ही तुख़्म खत्म कर दिया, तो वह किस मा को मौसी कहेगा ?' मनसा सिंह ने कहा, 'यहाँ कई सिकंदर आये। अहमद आया। गजनी भी गरज गया। गौरी आये और हवा के झोंके की तरह उड़ गया। उनका नाम-लेवा दिखता है कोई ? भगवान् की लाठी बड़ी बेआवाज है। देर है, अंधेर नही है। जरा पांव रखने की जगह मिल जाये सिंहो को, बैठने की जगह, देखना, वे कितनी जल्दी बना लेते हैं! यह समय ही अलग है। इस तरह के समय इसी तरह लुका-छिपी करके दिनकटी की जाती है।'

बिजला सिंह बोला, 'अब्दुल समद खां को जो ज़ोर लगाना था, लगा कर देख चुका; जो अति करनी थी, करके देख चुका। कहां हैं वे हरनाकश और कंस ? ऐसे दुष्ट कभी फलते-फूलते नही! कृष्ण जेल में पैदा हो कर भी लोगो के

हृदय में बैठ जाता है। माला उसी के नाम की जपी जाती है। अमृत वेला में कंस या हिरनाकश का नाम कोई नहीं लेता। अपरिमित मिट्टी के नीचे दब गयी है मूरतें। इसकी भी चार दिन की चांदनी है। अंधेरा अपने झंडे गाड़ कर ही रहेगा। अंधेरे में से लौ उभरती है। वह लौ सारे संसार को रोशनी देती है। सूरज भी अंधेरे की गोद से उगता है। सूरज के उजियारे के सामने किसी की आख नही टिक पाती। यह भी अपनी सेना को लगा दे पौदे उखाड़ने के लिए। कटवा ले पेड़! ढाव का पानी लदवा कर लाहौर ले जायें। फिर चाहे सिंह यहा से भाग जाये। एक दरवाजा बद होता है तो सौ दरवाजे खुलते है। काने काछो का जगल। राजस्थान के रेत के टीले। ये सब इसके बाप की जागीर हैं। सिंह वहा जा कर अपना ठिकाना बना लेंगे। क्यों, मैं कुछ झूठ कह रहा हूं?'

'सिंह कभी झूठ नही बोलते। यह बात गुरुओ ने इन्हें बतायी ही नही है!' दारा सिंह बोल उठा, 'अगर सिंह इसी की अलख मिटा दे! पाच-सात आदमी ही शहीद होंगे ना! न रहेगा बास, न बजेगी बासुरी!'

'यह काम इतना आसान नहीं है, दारा सिंह, जितना तुम सोचते हो,' बिजला सिंह ने कहा, 'ये लोहे के चने है। चबाना आसान नहीं है। पाप का घड़ा भरने दो, अपने आप फूट जाएगा। सिंह शोधेंगे तो जरूर, लेकिन वक्त-वेला देख कर। जकरिया खा किस्मत का सिकंदर है और जवाई है दिल्ली के वजीर का। दोहरी चीज है—एक करेला, दूसरा नीम चढा। अभी इसने नादिर शाह का नाम ही सुना है। ज़ियारत करने दो उसे, अगर छटी का दूध याद न आ जाये, तो कहना। ये बिल्लिया उन बाघो को चाट जायेंगी। पजाब हमारा है। हम पंजाब के वारिस हैं। ये तो मेहमान हैं—कब तक खाटें तोड़ते रहेंगे! घर तो घरवाली का है!'

अब मनसा सिंह की बारी थी। 'लो भाई, तुम भी दिल का गुबार निकाल लो। तुम्हारा अफरा हुआ पेट भी हल्का हो जाये! बोलो!'

'दर्रा ख़ैबर पर अभी नादिरशाह ने एक ही भभकी दी है। मुलतान के सूबे के चावल सफेद हो गये। सूबा लाहौर की सलवार में पेशाब निकल गया। सरहद के सूबे को दौरा पड गया है। दिल्ली में सफे-मातम बिछ गयी है। नादिर का मुकाबला कोई नही करेगा। वह सारे पजाब को घोड़ों के पैरों के नीचे कुचल डालेगा। दिल्ली का कचूमर निकाल देगा। नीबू की तरह निचोड़ देगा वह दिल्ली के अमीरों-वजीरों को। इनकी तो वैसे ही डर के मारे हवा सरक रही है। नादिर कोई हौआ है? दो हाथ हैं, दो आंखें, दो कान, एक ही घोड़े पर सवार है ना? दो घोड़ों पर तो सवार नहीं है ना? चार हाथ तो किसी ने नहीं देखे हैं? आने दो। उसकी तलवारें भी देख लेंगे और उसकी भभकिया भी। अगर अकेले सिंह भी उनको पड़ गये तो बांटने पर बोटी-बोटी हिस्से नही आयेगी। कच्चा ही खा

जायेंगे। कोई भूनने तक का कष्ट भी नही उठायेगा। इन मुगलों की तलवारों को जग लग गया है। ये नादिर का कुछ नही बिगाड सकेंगे। शराव ने इनकी तलवारों को तडागी पहना दी है। यह काम सिंहो के पल्ले ही पडा हुआ है। भला कोई पूछे, भई, हमें क्या लेना है परायी आग मे जल कर? हमारे खून के प्यासे तो ये भी हैं, वे भी। दोनों को लड़कर हल्के हो लेने दो। वह जरा दिल्ली को लूट ले। दो-एक डोले निकाल ले। दवी हुई दौलत उखाड ली जाये। इनकी नाक से तो टप-टप विच्छू गिरते हैं। जरा नाक साफ हो जाये, फिर सिंह सोचेंगे। इस बार पजाव नादिर से नही भिडेगा। हम तो नादिर की कमर तक नही देखेंगे, जव वह जा रहा होगा। जव वह दौलत से भरी गाड़ियां, अशरफियो से लदे ऊंट और घोड़े, गहनो की गठरिया लिये पजाव से गुजरेगा तो हम उसके साझीदार बनेंगे। मीठा झूठ के वहाने खाया जाता है। हम तो भार ही हल्का कर सकते हैं। हमें जरूरत ही क्या है जग के सामान की? घोड़े, तोपें, दौलत—नादिर उन सवका करेगा भी क्या? बेकार का भार! सफर में कम भार ही वेहतर रहता है। उसका सफर तो वेहद लम्बा होगा। हमारा मेहमान है। सेवा करना हमारा फर्ज है। यह गुरुमत लक्खी जगल मे स्वीकार किया जाता है। लक्खी जगल के सूरमा ही शोधेंगे नादिरशाह को। इन ससुरे लुटेरों ने पजाव को जरनैली सड़क वना रखा है। जब तक इनकी नाक में नुकेल नही पड़ती, तव तक ये मानने वाले नही है। और अभी तो नादिर सिर्फ खामा ही है। भभकी सुनने दो जकरिया खां को—मां की गोद मे जा छिपेगा! लाहौर पर उसकी कौन-सी ईंट लगी हुई है! ससुराल चला जायेगा। पर सिंह कहा चले जायें? यह हमारी जन्मभूमि है। मा-वाप का घर छोड कर हमे कहा जाना है?'

विजला सिंह ने टोका, 'गंगा जल की तरह पवित्र है लक्खी जगल। खाने-पीने के लिए वाघ-विलाव और काम के लिए रीछ! इस तरह की बातें परदे के पीछे की जाती है। विद्वान् कहते है कि दीवारो के भी कान होते हैं।'

'सिंहों मे कोई चुगलखोर नही पैदा हो सकता। मैं दावे के साथ कहता हूं कि सारे पजाव मे चुगली खाने वाला एक भी आदमी नही है। सारे पजाव को इनसे हमदर्दी है। सारा पंजाव दुखी है। उन्होने सारे पंजाव की इज्जत को सूप में डाल कर छाट डाला है। पंजाव के सारे लोग सिक्ख हैं—चाहे कोई हिंदू हो या मुसलमान...' पारा सिंह एक क्षण को रुक गया। फिर बोला, 'खालसा एक-दम तैयार है। सिंहों को कौन-से घोडे तैयार करने हैं! भूरे को कधे पर डाला और तैयार।...'

मनसा सिंह ने अपनी दाढी पर हाथ फिराया। 'जरा ठहरो, जल्दवाजी की जरूरत नही है। जकरिया खां की लौ मद्धिम पड़ने दो। उसका दिमाग ठिकाने आ जाये। टटिहरी की तरह आसमान को सिर पर उठाये फिरता है। सिंह तो इसे चींटियो की तरह लगते हैं। अमृतसर खाली करवाना है!—तुम करवा के

देख लो। थोड़ा-बहुत रौब जो बना हुआ है, अगर धूल में न मिल गया तो हमारा नाम बदल देना। देख लेना, हम खान को गली के तिनकों से भी हल्का कर देंगे। सारे पंजाब से ईंट उखाड़ने से हमारा डेरा निकलता है। हमारी धर्मशालाएं, हमारे रैनबसेरे—यही हमारी छावनियां हैं और यही हमारे दुर्ग। पंजाब के एक-एक घर में एक-एक किला है। ये पुजारी, ये साधु योद्धा भी हैं। ये माला को छोड़ कर कृपाण उठाना भी जानते हैं। इन सभी संत-सिपाहियों को गुरु ने सजाया है और उन्होंने ही इन्हें भेजा है। बारिश पड़ने दो, चौमासा लगने दो, फिर देखना ये कैसे खुंबियों की तरह फूटते हैं! ये सिंह, बाघ जंगल में ही अच्छे लगते हैं। मुगलों की सेना भेड़-बकरियों का बाड़ा है, एक बाघ उनके बीच जा घुसा तो सभी बकरियों को चीर कर रख देगा। सिंह वक्त की तलाश में हैं। ये समझते हैं कि हमसे डर गये। हमें डराने वाला अभी पैदा ही नहीं हुआ है। हम सिर्फ अकाल पुरुष से डरते हैं। समय आ रहा है...राज करेगा खालसा आकी रहे न...'

'बोले सो निहाल—सत्श्री अकाल!' सब सिंहों ने मिलकर जयकारा बोल दिया।



गुल्लू बाई

सोते-जागते, खाते-पीते, शराब और अय्याशी के अखाड़ों में, यहां तक कि गांव के चौराहों में भी एक बात चक्कर लगा रही थी : 'नादिर आया'।

'नादिर आ गया, नादिर! नादिर पंजाब की धरती को लहू-लुहान कर देगा, पंजाब की इच्छाओं को पी जायेगा, ईरानी गरदन तोड़ कर खून पीने के आदी है... बेगमों और हरमों के बीच नादिर की कहानियां...नादिर ने लहू सुखा दिया है पंजाब के शासकों का। एक दिन मूवा लाहौर का जकरिया खां गुल्लू बाई मिरासिन के चौबारे में बैठा शराब उड़ा रहा था। रखैल थी ना! लेकिन गुल्लू बाई अपनी जूती पर नहीं रखती ऐसे सूबेदारों को। उसकी महफिलें बड़े जोड़ों में थी। जकरिया खां उसने अंगूठे के नीचे रखा हुआ था। जब वह नशे में बेसुध हो गया तो गुल्लू बाई ने धीरे से कहा, 'नादिर।'

'कहां है नादिर?' जकरिया खां चौंक कर बोल उठा।

'दर्रा खैबर में...मेरी बगल में नहीं है। सुना है, चलने वाला है। आया कि आया...।' गुल्लू बाई ने कहा।

'अभी बहुत दूर है, कोस-भर चली नहीं कि बाबा प्यासी! नादिर घोड़े पर ही आयेगा, उडनखटोले पर नहीं। अभी आषाढ जायेगा, सर्दी आयेगी, तब कहीं नादिर यहां पहुंचेगा। अगर रास्ते में ही किसी ने थोबड़ा तोड़ दिया तो खैबर पार करना भी मुश्किल हो जायेगा। तूने तो मेरा नशा ही उतार दिया! अरी कमजात! नादिर कोई मौत का फरिश्ता है? हमने चूड़ियां पहन रखी हैं? तेरी तरह मेहंदी नहीं लगा रखी है, जो उतर जायेगी। दिल्ली की फौज आ रही है नादिर के परखचे उड़ाने के लिए। अगर हमने उसका थोबड़ा न सेंक दिया तो हमारा नाम जकरिया खां नहीं! मैं ग़म गलत करने आया था, पर तुमने कांव-कांव मचा दी!'

'आ गयी फौज दिल्ली की! यह मुंह और मसूर की दाल! वह तो शराब के प्याले बदल-बदल कर पी रही है। इधर झांकने की उसे फुरसत ही कहां?' गुल्लू बाई ने व्यंग्य किया।

'जबान को लगाम दे, कुलच्छिनी ! मुंह खराब हो तो बात तो अच्छी करो। मान लिया, दिल्ली के हाकिमों से तेरा समधियाना है। पर वे आयेंगे जरूर—पत्थर की लकीर है।'

'आ चुकी फौज ! नादिर शाह मुलतान और लाहौर के सूबों के लिए जंजीरें घड़वा कर ला रहा है। सुन्दर, लोहे की नहीं, सोने की, हीरे-जडी जंजीरें, जो कमर में पडी सुन्दर लगें।'

'तुझे कैसे मालूम ?'

'बताने वाले मुझे भी बता गये हैं। मेरे चौवारे पर हर किस्म का आदमी आता है।'

'बडी कमजात हो !'

'ये चौवारे जागीरदारों, नवाबों, सूबेदारों के लिए खुले हुए हैं। उन्हें कोई नही रोक सकता—सूरज चाहे उगे, चाहे डूबे ! मैं रोकूं, तो खाऊं कहा से ? नादिर की नजरें तख्ते-ताऊस पर हैं। लाहौर वह गाजरें खाने नही आ रहा है। दूंबे उसे दिल्ली मे ही मिलेंगे। तुम्हारे लिए शाही खिल्लत तैयार है। उसने कफन को संदूक में डाल रखा है। तुम नादिर से गठजोड कर लो। मजा करो। टाग पर टाग रख कर ऐश करो। नादिर पगडंडी पर चल दिया, तो फिर मैं-तुम होंगे, तीसरा कोई नहीं होगा। क्यों, बात पसद आयी ?' गुल्लू बाई ने पूछा।

'कगन बनवा कर हमने दिये हैं और बाजे तू दूसरों के बजा रही है !'

'कगनो को खाऊं ? मोहरों के बगैर पेट की आग नही बुझती। तुम्हारा मन किया तो तुम आ गये। चार जुम्मे की चार नमाज तुम्हारा इतजार किया। रोजे नही रखे जाते हैं।'

'नादिर ! नादिर !' कमरे से आवाजें आयीं, 'क्या बात है ?'

'मेरी बांदी सोते मे डर गयी है। नादिर उसे डरा रहा है !' गुल्लू बाई कमरे मे गयी और लौट कर बोली।

'इसका मतलब है कि नादिर का हौआ सारे पजाब मे फैल गया है। नादिर क्या उतना ही जालिम है, जितना तुम बता रही हो ? बड़ा डर है उसका ! बड़ी दहशत है। बड़ा डरपोक है पंजाब ! जकरिया खां बोला।

'नादिर शाह का नाम ही इतना डरावना है कि आदमी चैन से नही सो सकता।'

'मैं अभी जा कर किले की बुर्जियों पर तोपें लगवा देता हूं।' जकरिया ने कहा।

'अभी बहुत दूर है नादिर ! कहा दर्रा खैबर और कहा लाहौर ! मैं तो तुम्हारा दिल टटोल रही थी। उस लुटेरे की क्या मजाल कि लाहौर की तरफ आंख उठा कर देख भी ले ! डरने की जरूरत नही है। आज रात मेरे पास रहो।

मौसम बहुत खूबसूरत है। कल सोचना...' गुल्लू बाई ने जकरिया खा का हाथ पकड़ लिया।

'कमजात! यह चौबारा नहीं, नादिरशाह के जासूसों का अड्डा है। इसका मतलब है, नादिर के आदमी सारे पंजाब मे फैल चुके हैं...नादिर... नादिर...' जकरिया बौखलाया-सा बोल उठा, 'यह जरूर कोई गुल खिलायेगा...' हार देते-देते जकरिया खा चौबारे से निकल गया। अंधेरी रात से तनिक भी नही डरा वह। गुल्लू बाई हस-हंस कर दुहरी हो गयी।



जन्नत का द्वार

अजीब मुसीबत आ पड़ी थी—इधर नादिर शाह और उधर दिल्ली सरकार। दोनों के शिकंजे में फसा जकरिया खां । नींद उड गयी, मुहब्बत-भरे सपने वीरान हो गये । मखमली बिस्तरों पर नींद न आती । बदन छिल जाता । तीन साल का इकट्ठा खेराज कौन देगा ? हजम होना भी मुश्किल है । नींद भले ही हराम हो चुकी थी, लेकिन जकरिया खां भी कम दावबाज नही था । वह छत्तीस घाट का पानी पी चुका था । उसने एक ऐलान जारी किया, जिसने सिंहों को बहुत भडका दिया :

१. जो आदमी किसी सिंह की सूचना देगा, उसे दस रुपये इनाम ।

२. जो आदमी किसी सिंह को पकड़वायेगा, उसे पच्चीस रुपये इनाम ।

३. जो आदमी किसी जिंदा सिंह को पेश करेगा, उसे पचास रुपये इनाम ।

४. जो किसी सिंह का सिर पेश करेगा, उसे सौ रुपये इनाम ।

५. जो किसी का घोड़ा छीन ले, घोड़ा उसका ।

६. अगर कोई सिंह किसी के हाथों कत्ल हो जाये, तो कानून उसे माफ कर देगा ।

७. जो आदमी इससे भी बढ कर कुछ कर दिखाये, उसे जागीर मिल सकती है ।

सिंह भले ही भड़क उठे थे, पर इससे यह नुकसान हुआ था कि अहलकारों ने अपना सारा ध्यान सिंहों की ओर मोड़ दिया और गावों को अल्लाह के नाम पर छोड दिया । गावों के चौधरी और इलाकों के सरपंच, सभी सिंहो के शिकार मे निकल पड़े । किसी के साथ पाच आदमी थे, कोई पचास लेकर चला, कुछ ढाणियों मे सौ भी थे । जिधर जिसका मुंह उठा, वह उधर ही चल दिया । हालत यह हो गयी कि सिंह आगे-आगे और 'शिकारियों' के टोले पीछे-पीछे । कही आगे सिंह और पीछे फौज, और कही आगे फौज और पीछे सिंह । घोडों पर सवार चौधरियों की ताव सही नहीं जाती थी, लेकिन सिंह उन्हें अपनी जूती पर भी नही धरते थे । आगे-आगे सिंह लूटते गये और पीछे-पीछे शाही फौज उजाडती गयी । सारा देश उजड़ गया । न चारा न फसल न घर, न बाड़ी,

न कुआं न खेत—शाही फौज ने तो कुओं की ईंटें तक उखाड़ ली ! ज़मींदारों का खाना खराब कर गयी फौज। न फसल हुई, न अनाज घडो मे पड़ा। मामला किसके पल्ले से निकले ? सरकार कैसे चले ? खजाने को तो खाली होना ही था। भेड, बकरियां, गायें, बछडे-बछडिया, सबको ज़िबह करके हजम कर गयी फौज। भूखे-नगे अपनी बोटियां काट कर तो सरकार को दे नही सकते थे। जकरिया खां ने दिलेरी तो दिखाई थी, लेकिन वह दिलेरी उसके सामने प्रश्न-चिह्न बन कर खडी हो गयी। सिहों के साथ वैर बहुत महंगा पड़ा।

खेराज वसूल करने के लिए जब दिल्ली की फौज चढ आयी तो जकरिया खां का दिल डूबने-उतरने लगा। फौज के साथ सलाबत खां, हैबत खां और दो हजार रुहेले लाहौर पर आ चढे। बचा-खुचा उन्होने उजाड़ दिया। उन्ही दिनों पांच-पांच कोस पर दीया जला। पजाब वाले भूख के दुख से देश को तिलाजलि दे गये। जाते हुए लोगो ने सात बार सलाम किया पजाब को। लोटा-चटाई उठायी और आगे जाकर डेरा डाल दिया। सारा पंजाब दहल उठा—हिल उठा।

दिल्ली वालो ने ज़करिया खा की गरदन दबोच ली। खजाना तो खाली पेट बजा रहा था। दस-बीस हज़ार से खेराज पूरा कहा होता ! यहा तो मोटी रकम चाहिए थी।

'सूबेदार साहब, हमें तो खेराज की रकम चाहिए' हम आपका मुंह देखने नही आये हैं। खूबसूरत सूरतें हमने दिल्ली में बहुत देख रखी हैं !'

'खेराज तो आपको देना ही होगा—मुझे रोज का खर्च भी चाहिए—पाच हज़ार।' सलाबत खा बोला, 'खेराज बाद मे देना, पहले हमारा पेट भरिये !'

'खर्च तो लीजिए, खेराज की रकम का इतजाम मैं कर रहा हूं। ईरानी शराब के ढोल पड़े हुए है। सूखी शराब की माजून घोलिए और पीजिए। खेराज देकर आपको विदा करूंगा। लाहौर आये हैं आप लोग। चार दिन मौज-मेला कीजिए। इस जिंदगी का क्या भरोसा है !' ज़करिया खां ने दोनों खान बादशाहों को बहला लिया।

इलाके के चौधरियों की जब मुरम्मत हुई तो खजाना खुदबखुद भरना शुरू हो गया। कुछ ही दिनों में लाखों जमा हो गये। फौजी शराब पी-पी कर अंधे हुए घूम रहे थे।

'शराब ज्यादा पीयो, खाओ कम। यह शराब दिल्ली मे नही मिल पायेगी। यह तो मेहमानों के लिए खासतौर पर रखी गयी है। बगलें गर्माओ और ऐश करो।'

'जन्नत कहां है, यह आज पता चला है। लाहौर जन्नत का दरवाजा है।' फौजी कह रहे थे।

Purchased with the assistance of
the Govt. of India under
Scheme of Financial Assistance

मेरा मुंह, तुम्हारी चपत

'खा साहब ! आप यमुना का पानी पीते रहे हैं, वह तो बड़ा मीठा और हल्का है । मैं रावी का पानी पीता हू !' जकरिया खां कह रहा था । 'यह कसैला और ताकतवर है । इसे ताकत वाले ही हजम कर सकते हैं । पानी-पानी की तासीर है । जाने लगे या न लगे, इसीलिए मैंने ईरान की सूखी माजून शराब के ढोल पेश किये है । मैंने अपने लिए मगवायी थी । घर आये मेहमानों की सेवा करना पंजाबियों का फर्ज है । किसी बात की तकलीफ नही मानते । मैं हाथ बंधा गुलाम हूं ।'

'आपकी खिदमत का बहुत-बहुत शुक्रिया ! बहुत दिनों के बाद रोटी खाने का मजा आया !' सलावत खां ने कहा ।

'आपकी मेहमान-नवाजी कभी नहीं भुलायी जा सकती !' हैबत खा ने कहा ।

दोनों धुत्त थे—अंधे शराबी । रही-सही कमी गुल्लू बाई के डेरे से आयी सूरतो ने पूरी कर दी । उनकी झांझरे नशा खिला गयी । फौजी बिल्लौरी जोबन मे अपने चेहरे देखते रहे ।

उनमे एक रुहेला सरदार था । जकरिया खां ने उस पर डोरे डाले । उसे अपने शीशे में उतारा । अलग शराब, मोहल्ले की सब से सुन्दर लड़की, अलग महल, और अपना निजी दस्तरख्वान उसके हवाले कर दिया । सारी रात सोने की जंजीर खनकती रही । दिन चढ़े तक भी झाझर ने अपनी जबान बन्द नही की । बहुत खुश हुआ रुहेला सरदार ।

'यह लो दस हजार मुहरें । इनका कोई हिसाब-किताब नहीं है । यह नजराना है । इसे झोली में छुपाओ । किसी को कानो कान खबर न हो । मैं जानूं या खजाने वाले । आपको बोलना कम है । मेरे इशारे पर हां में हा मिलाते जाना है !' जकरिया खां ने कहा ।

'यह तो सिर्फ मुंह दिखाई है ! आप ने फिर कब आना है पंजाब ! हम गरीब लोग हैं, आपको कोई सेवा नहीं कर सकते ।' लाहौर का सूबेदार मक्खन लगा रहा था ।

'गोली किसकी और गहने किसके ! जब नौकर ही सरकार के हो गए, तो फिर अकड़ काहे की ! सैंयां भये कोतवाल अब डर काहे का ! तुम अपना अलगोजा बजाओ, हमें अपनी बासुरी बजाने दो !' रुहेला सरदार नशे में धुत्त था ।

जकरिया खा पर जादू सिर चढ कर बोला ।

जब सूबे ने अपने सारे मुहरे पक्के कर लिये, तो फिर उसने सिंहो के साथ रिश्तेदारी जगाने की सोची । हमदर्द ढूंढो । सिंहों पर भी जादू की छड़ी घुमायी जाये । डमरू बजाने वाला आदमी इकट्ठे कर लेता है । उसने झोली में से चोर निकाले । दीवान कौड़ा मल के खानदान वाले शाही नौकरी मे थे । जकरिया खा ने उन्हे महल में बुलवा भेजा ।

'आइए दीवान जी ! आपका मामला अभी तक सरकारी खजाने में जमा नही हुआ है । क्या बात है ? कही बिल्ली रास्ता तो नही काट गयी ?'

'सरकार ! सारा पंजाब उजड़ा पडा है । सोग हो रहा है । अन्न-दाने का कही नाम तक नही है । लोग रू-रू करते घूम रहे है । जिनको पेट की पड़ी हो, वे लगान कहां से दें ?' कौड़ामल के आदमी ने जवाब दिया ।

'क्या सीपी-सा मुंह बना रहे हो ! माफी चाहते हो ? तुम्हारे जैसे लोग अगर मामला नही चुकायेंगे, तो दिल्ली से पीछा कैसे छूटेगा ?' जकरिया खा ने कहा । 'खजांची को बुलाओ !'

खजाची आया, तो जकरिया खां ने उससे कहा, 'हिसाब चुकते की रसीद दे दो दीवान को ।' रसीद दे दी गयी, तो वह फिर बोला, 'लो भाई, अब मामला तो साफ हो गया । अब तो खुश हो ना ! क्यों ?' उसकी जुबान मे मिठास घुली हुई थी ।

'खां साहब ! हम तो हुजूर के नौकर हैं । नौकरी की तो नखरा कैसा !'

'वक्त कम है । काम मुश्किल है, मगर आपके बगैर यह काम हो नही पायेगा । जल्दी करो । रसीद पर शाही मुहर लगवा लो और जो काम मैं बताने जा रहा हूं, हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जाओ ।'

'आप बत्तीस दांतो के बीच से जो बात कहेंगे, उस पर फूल चढाये जायेंगे ।'

'तो जाइए, सिंहो के डेरे पर जा कर उन्हे मुबारक दे आइए । कहिए, परसों सूरज की टिकिया निकलने से पहले शाही खजाना दिल्ली जा रहा है लूट लो । मेरी फौज पास खड़ी रहेगी, मुंह देखती । तुम अपना काम करो और हिरन हो जाओ ! तुम्हारा लूटा हुआ माल तुम्हारी अमानत माना जायेगा । लाहौर की सरकार उसकी कोई पूछ-पड़ताल नही करेगी । माल मिल रहा है, ले जाओ । यह मौका कुदरत ने दिया है, फायदा उठाओ । क्यों, है ना मुबारक देने की बात ?' जकरिया खां ने दीवान की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा ।

'अगर सिंहों ने मेरी बात न मानी तो ?'

'बात मनवानी पड़ेगी। इसमे उन्हें क्या नुक्सान है? चार दिन गुलछर्रे उड़ा लेंगे। माले मुफ्त दिले बेहरम।'

'अगर उनकी आदत बिगड़ गई तो?'

'खुदा मालिक है। फिर कोई बहाना मिल जायेगा। जल्दी करो। वक्त कम है। जा कर बात करो और आ कर मुझे बताओ।'

'तनख्वाह लगवानी पड़ेगी तो बात तभी छेड़ी जायेगी। तनख्वाह की रकम ख़जाना अदा करेगा। अच्छा, मैं सिंहो के डेरे पर जाता हूं। भली करेंगे राम।'

फैसला हो गया। सिहों ने तसल्ली देकर चलता किया दीवान को और चलते-चलते बात भी उसके पल्ले बांध दी कि अगर इसमे धोखा हुआ, तो हमसे बुरा कोई न होगा। तुम्हारी फौज चुप रहे, बाकी दिल्ली के धनियों को तो हम देख लेंगे।

सुन कर नवाब लाल हो उठा। उसके पांव जमीन पर नही पड़ रहे थे।

'दौलत और घोड़े अगर मिल जायें, तो बुराई ही क्या है? पंजाब की दौलत पजाब में ही रह जायेगी! हमारे काम आयेगी', सिहों के एक जत्थेदार के विचार थे।

'रखवाला जैसे ख़ाली बागो मे तोते उडाता है, उसी तरह तुम्हें शोर मचाना है। मेरी फौज सिहो को उंगली तक न लगाये। वे शोर मचायें, धाड़ मारें, तुम्हे कान तक नही धरना है। तुम लोग अपना काम करो और पत्रा बांध जाओ! आजकल जकरिया खां मेहरबान है। लालची अपना दाव लगा रहा है, और तुम भी अपनी गाठें पक्की करो।'

'कल शाही ख़जाना लाहौर से दिल्ली जा रहा है। ख़जाने की रकम लूट लो और नौ-दो-ग्यारह हो जाओ। पुण्य भी और फलियां भी। देवी दर्शन भी और व्यापार भी। लूट का माल सब अपना है, इसमें किसी की हिस्सेदारी नही है। यह बात मैं नवाब से तय करके आया हूं।' यह बात दीवान ने जत्थेदार से की थी और जत्थेदार ने सब को बता दी थी।

अंदर खाने सारी बात तय हो गयी। निर्णय कर लिया गया। सिहों ने अपने रास्ते की जांच भी कर ली। भागने के रास्ते भी तय कर लिये। हल्ले का पैंतरा भी बना लिया। खालसा पूरी तरह तैयार हो गये।

चुपड़ी और दो-दो! सिहो को और क्या चाहिए था? वे लाहौर के दरवाजों को संभाल कर बैठ गये। रूप पठानों का-सा। जकरिया खां मोम की तरह नर्म था और सिंह फौलाद की तरह सख्त-जान।

●●

हो रहे थे। शराब उड़ रही थी। पालकियो में लाहौर से तोहफे मे मिली बेगमें थीं। काफिला क्या था, शाही बारात जा रही थी।

सुबेग सिंह ने कान लपेटे और हवा हो गया। सिंहों के पास पहुंच कर उसने बात उनके कानो में डाल दी।

शाही खजाना दिल्ली की ओर जा रहा था। नादिर शाह के लिए दौलत इकट्ठी हो रही थी। ब्यास के किनारे सिंहों के शिविर लगे हुए थे। कड़ाह प्रसाद (हलवे) की देगचियां तैयार थीं। सिंहों ने प्रसाद लिया और अरदास की। उन्होंने पहले से ही दावतें शुरू कर दी थीं...वैसे, दावत क्या थी, मुट्ठी भर चने हर सिंह को ज्यादा मिल गये थे।

शाम हो रही थी। अंधेरा अपने पांव पसार रहा था। रात ने अपनी ढोलक बजानी शुरू कर दी थी।

फौज का पड़ाव ब्यास के किनारे ही मुकर्रर हुआ। काफिला उतर रहा था। फौज सुस्त पड रही थी।

सिंहो ने अपने जत्थे को दो हिस्सों में बांट लिया। एक हिस्सा ब्यास के किनारे खडा था। उसे हल्ला बोल कर लाहौर की ओर भागना था, और लाहौर की तरफ से जिस जत्थे को हमला करना था, उसे नदी के किनारे-किनारे चलते हुए राजस्थान पहुंच जाना था। सिंहों ने ख़जाना उतरने नहीं दिया। अभी फौज ने घुटना भी नहीं मोड़ा था, कि ऐसा ज़ोरदार हमला किया कि उन्होंने ख़जाने से लदी हुई गाड़ियां हांक ली। जब तक फौज को होश आया, तब तक सिंह खजाने को ठिकाने लगा चुके थे। आधी फौज अभी पीछे ही थी और शराब की चुस्कियां ले रही थी। खाली गाड़ियां ब्यास के किनारे खड़ी रात की आखिरी नमाज़ अदा कर रही थी। रुहेला सरदार माथे पर हाथ धरे दहाड़ मार कर रो रहा था।

'कोई मर गया है क्या! दहाड़ मार कर रो रहे हो?' सलावत खां बोला।

'ख़ज़ाना लुट गया! लुटेरे लूट कर ले गये! ये लुटेरे सिंह ही हो सकते हैं।'

'चलो, नादिरशाह बोझ से बच गया।' हैबत खां बोल उठा।

'दिल्ली जा कर क्या जवाब देंगे?'

'सिंहो ने ख़जाना लूट लिया और हवा हो गये। सिंहों का कोई ठिकाना हो तो उनके पीछे जायें! बिना बात सिर में धूल कौन डलवाता फिरे?' सलावत खां ने कहा।

'देने वालो ने खेराज दे दिया। लेने वाले ले गये। यह बात अलग है कि आधी रकम लाहौर मे ज़करिया खां ही खा गया। गिनने मे आधी रकम तभी नही थी। जो उसने दी, सिंहो ने लूट ली। शहंशाह को तो खेराज मिल गया।'

'ये काम हुकूमतों के हैं। हमने तो अपने सौ आदमी मरवा लिये। हुकूमत ढूंढे सिहों को और दे सज़ा, जो देनी हो। हमारी कलगिया कौन उतार सकता है? अगर ज्यादा जोर मारेंगे, तो हम नादिरशाह से मिल जायेंगे।' सलावत खां के विचार थे।

बंदर के गले में रस्सी थी, वह टूट गयी। आंगन खुला हुआ था। सिहों का दाव लग गया। चलो, चार दिन कड़ाह-प्रसाद छक लेंगे सिह। बड़े दिनों से कड़की चल रही थी। लंगर मस्ताना और सिह कामी।



हवाई किले

शहंशाह के लिए भी सच्चा और सिंहों के साथ भी हमदर्दी ! चतुर लोगों से खुदा बचाये । रुहेला सरदार, सलाबत खां और हैबत खां जैसे भेड़ के खून के कारण फांसी के फंदे तक जा पहुंचे । सैयद भाइयो ने उन तीनो को ही जेल मे बद कर दिया । लाहौर से आयी बेगमों में से कुछ को तो सैयद ले गये और कुछ दरबारियों मे बंट गयी ।

ज़करिया खां ने शहंशाह को चिट्ठी लिखी कि तीन करोड़ अशरफिया और साज-सामान गिन कर आपकी फौज को चलता किया था, पर मुझे बड़ा अफसोस है कि फौज की गफ़लत के कारण सिंह लूट कर ले गये और घड़ी-पल मे गायब भी हो गये । मेरी सारी मालगुजारी मे सिंह खांस तक नही सकते । अगर लुटेरों को रोका न गया, तो ये जरूर हुकूमत पर हाथ डाल देंगे ।

नजावत खां, सफदर खां और जाफर खां की कमान में बीस हजार की सेना लाहौर की तरफ रवाना हुई—सिंहो का बीज नष्ट करने के लिए । सिंहों में से कुछ तो पहाड़ों में जा छुपे, कुछ बीकानेर जा पहुचे । मेला कुछ दिन काहनूवाल के पत्तन पर भी लगा । लक्खी जंगल में भी रौनक लगी हुई थी । बदकिस्मत पंजाब को शाही फौज ने एक बार फिर लूट लिया । मारे गये साऊ मुसलमान, बुजदिल हिंदू और अधकचरे नामधारी सिख । मुसलमानो का भी खासा नुक्सान हुआ । सेना लाहौर मे जमी बैठी थी । आखिरकार गश्ती सेना ने माझे के गांव छान मारे—न कोई सिंह मिला, न उनका पता । ज़करिया खा घबराया हुआ था । गश्ती सेना ने अति कर दी थी । सिंह तो मिले नही, कुत्तों को मार-मार कर उन्होने ढेर लगा दिये । इन कुत्तो ने उनकी शलवारें फाड़ दी थीं । गश्ती सेना का सारा गुस्सा उन्ही पर निकला ।

खाली बैठी, मक्खियां मारे ! उन्होने मुसलमानो के घरों के किवाड़ खोले, वही मुर्गियां भूनी और पख नोचे । वही शराब उड़ी । सतियों का सतीत्व लूटा । न हाकिम बोला, न लाहौर का सूबेदार ।

फौज ने बेशर्मी की हद को हाथ लगा दिया। आखिरकार लाहौर-वासियों ने चंदा इकट्ठा किया और गश्ती सेना की झोलिया भर दी और अपने गले से हत्या उतारी। गश्ती सेना के कुछ दस्ते फिर भी रह गये। ज़करिया खां को अपने भीतर का जाडा मारता था कि कही भरी दुपहर मे वह नंगा न हो जाये। नादिरशाह सिर पर चढता आ रहा था। उसे मालूम था, पहला वार उसी पर होगा। पहला मुकावला उसी के साथ होगा। इसीलिए वह पंजाब-वासियों के साथ कोई वदसलूकी नही करना चाहता था। वह सिहो को क्यों छेड़े ? फनियर विल में घुसे हुए हैं, विल मे हाथ डाल कर दंश क्यो ले ? शेरों को छेड़ने की जरूरत नही है। यह वला टल जाये, तो वाद में देखेंगे। सिह तो घडे की मछलिया हैं, जब चाहा पकड़ लेगे। इन्हे हल्का कर नादिर के गले डाल दिया जाये, वाद मे मैं हल्ला वोल दूं—नादिरशाह दुम दवा कर भाग जायेगा और मेरी सूवेदारी वनी रह जायेगी। वसना तो मुझे ही है पजाव मे। दिल्ली वाले यहां वैठे नही रहेंगे...।

जकरिया खां यही सब सोच रहा था।

बिल्ली की-सी आखों वाला जकरिया खां यहा भी दाव लगाना चाहता था। अंदरखाने सिहों के साथ गठजोड करना चाहता था, लेकिन विचौलिये नही मान रहे थे।



अपने-अपने चरखे

'मुगलों के शीशमहल को लोगों ने ईंटें मार-मार कर तोड़ दिया और उसकी किरचें हैदराबाद, लखनऊ, बुंदेलखंड, पूना और पंजाब में जा गिरीं।' बिजला सिंह बोला।

'वह कैसे?' मनसा सिंह ने पूछा।

'पहले पंजाब की बात कर लें, यही बात चल रही थी ना, सो जल्दी समझ में आ जायेगी। बाकी बातें तो परदेस की हैं। बात वह, जो समझ में आने वाली हो। जकरिया खा दोगला आदमी था। एक तरफ दिल्ली दरबार से उसके कौर सांझे थे, दूसरी तरफ नादिरशाह के साथ गठबंधन की ब्योंत वह बना रहा था। शगुन देना चाहता था या शगुन लेना। समधियाई बनने वाली थी। दो किश्तियों में पांव रखने वाला इन्सान हमेशा डूबता है। उसने एक तरफ तो दिल्ली अर्जी भेजी कि सेना तुरंत भेजो। नादिरशाह को लाहौर में ही रोक दिया जाये—और दूसरी तरफ नादिरशाह के साथ सुर मिलाने के लिए सरकार लाहौर आयें! मैं आते ही शगुन दूंगा। लाहौर का तख्त आपका इंतजार कर रहा है। तीसरी छछूंदर और भी छोड़ ली! सिंहों के साथ भले ही वैर था, पर वक्त पड़ने पर तो आदमी गधे को भी बाप बना लेता है! एक बार तो जकरियां खा ने सिंहों को खासे सब्ज बाग दिखाये। मिन्नत भी की, दांत भी निपोरे, हाथ जोड़ कर गुजारिश भी की—आओ, सिंह जी, एक बार मिल कर नादिर से मुलाकात कर लें। हिस्से करना या बांट तो अपने घर की बात है! हम भाई-भाई है। चार ढेरियां तुमने ज्यादा ले ली, या मैंने ले ली—हम लोगों में कोई फ़र्क नहीं है। मीठी-मीठी बातें करके उसने सिंहों को घेरे में ले लिया। सिंहों ने कुछ हामी भर दी। गंगा-जल और आबे-जमजम एक लोटे में जमा हो गये। सिंहों ने कहा कि हम नादिर की आंतों को जरूर फाड़ डालेंगे, पर तुम्हारे साथ मिल कर नहीं, अकेले! तुम्हारी-हमारी पटरी नहीं बैठती। तुम बेपेंदे के लोटे हो, और रहट के डिब्बे जैसे बरतन हो। क्या पता, कब फिसल जाओ। सिर्फ पंजाबी होने के नाते हम तुम्हारी मदद करते हैं। अगर हमें कहीं भी शक हो गया या तुमने हमारे

साथ कोई चालाकी की, तो याद रखना, मा का दूध मुह में ठूंस कर ही हम दम लेंगे। जाओ, तुम्हारे साथ वचन हुआ। सिंह वचन से कभी नही टलते। देखा, तारा सिंह! जकरिया खां गिरगिट की तरह रंग वदलता है!' बिजला सिंह रुक गया।

'सिंह इतनी जल्दी मोम कैसे हो गये?' तारा सिंह ने पूछा।

'नादिरशाह का हमला, पंजाब की मौत। अगर कोई धरती कुचली जायेगी, तो वह पंजाब है। दिल्ली वाले तो सलाम कर देंगे। ज्यादा बात होगी, तो अपनी औरतें दे देंगे। पर पंजाब ऐसा कभी नही कर पायेगा। इसलिए पंजाब की खाल जरूर उतरेगी। हमारे सिंहो ने तय कर लिया है—वक्त आने पर बतायेंगे।' बिजला सिंह मीठी-मीठी बातें कर रहा था।

तारा सिंह बोल उठा, 'तुम हजूर साहब के पास हैदराबाद की बात बताने वाले थे।'

'हां, मुगल हकूमत का एक स्तंभ हैदराबाद भी था। निज़ामुलमुल्क तजुर्बेकार, शक्तिशाली और तेज मिजाज आदमी था। दिल्ली वाले उसके बगैर छीकते तक नही थे। बादशाह को उस पर पूरा विश्वास था, पर दिल्ली सरकार ने जो चौपड़ बिछा रखी थी, उसके खिलाड़ी सैयद बंधु थे। वे मुंह जोर थे, अक्खड़ थे। उनका हुकूमत पर इतना कब्जा था कि यह बात सिर्फ वही कह सकते थे—लाओ, अंधा, काना, लूला-लंगडा, कोई शहजादा हो या बांदी का पूत या किसी बेगम का कोई पिछलग्गू...हम जिसके सिर को जूता छुआ देंगे, वही बादशाह बन जायेगा। बादशाह बनाने वाले हम है! सैयद बंधु हर किसी को घूंसा दिखाते रहते। निज़ामुलमुल्क की इज्जत उन्होंने धो कर रख दी। भरे दरबार मे उसकी दाढी नोच डाली। बूढ़ा मुर्गा भीतर ही भीतर पी गया। उन्होने कई पापड़ बेल रखे थे। छत्तीस घाट का पानी पी चुके थे। उन्होंने संकट का हल यह निकाला कि इनकी ताकत को तोडा जाये। निज़ामुलमुल्क ने नादिरशाह से गाठ-सांठ कर ली। दोनो के बीच तोहफे आने-जाने लगे। अपना चाहे कुछ न बचे, इन सैयद भाइयो का घर जलाकर ही सास लेनी है! बादशाह भी सैयद बंधुओ से आजिज आ चुका था, पर वह उनके हाथों की कठपुतली बना हुआ था। नचा लो पुतलियां, पुतलीगरो! बाजीगर आ रहा है। वह सब की गरदन मरोड़ कर रख देगा! हमने कौड़ियां फैंकी हैं। वे बेकार नही जायेंगी। निज़ामुलमुल्क बंदरों को नचाना जानता था!' बिजला सिंह के बोलों में बडा असर था।

मनसा सिंह ने एक और सवाल किया, 'अवध भगवान राम की जन्म भूमि है। क्या मदारी वहां भी अपना डमरू बजा रहा था?'

'हां, बिलकुल! अवध के सूबेदार सआदत खां को भी बुलाया गया मूंजी मारने के लिए। आया तो वह बड़े जौहर-जलाल के साथ, लेकिन जो शतरंज...

दिल्ली मे खेली जा रही थी, उसके किसी भी मुहरे पर हाथ न पड़ सका। लाल मुंहे सैयदो के चेहरे ने यो घुड़की दी कि सूबेदार दिल्ली ही वन गया! सैयदों ने उसकी दाढी के बाल भी नोचने शुरू कर दिये। दाढ़ी कोई भी आदमी नुचवा सकता है, लेकिन सामने बैठ कर मोचने से कौन बाल चुनवाये? फिर वह आदमी, जिसने किले फतह किये हों, जिसने तलवारें चलायी हों...वह छोकरों को कैसे पल्ले बांध सकता है? सैयद बंधुओ ने उसकी मेहदी-रगी दाढी को भी मिट्टी में रौंद डाला! बड़ा परेशान हुआ। वदरों के जब पांव जलने लगते हैं, तो वे अपने ही बच्चो को पैरों के नीचे कर लेते हैं। सआदत खा ने भी अंदर ही अंदर नादिर शाह के साथ गठबंधन कर लिया।'

'यह सारा टोला ही गद्दारो का था। चोर को आवाजें देकर, अपने घर में पलग विछा कर दे रहे हैं!' तारा सिंह ने कहा।

'मुगल हुकूमत की आंखों में मराठों ने भी सुरमा डाल रखा था। दिल्ली मे उनकी भी तूती बोलती थी। बुंदेलखड के पिंडारे भी दिल्ली मे अपने खूंटे गाड कर बैठे हुए थे—हालांकि नुकेल सब की सैयद भाइयों के ही हाथ मे थी, नुकेलों का रग चाहे जो भी रहा हो! कमजोर की बीवी को हर आदमी भाभी कह लेता है। हर आदमी हुकूमत की बोटियां काट-काट कर अपने कटोरे में डाल रहा था। नादिर शाह फिर क्यों न लूटता! दरवाजे खुले हों तो चोर को माल लूटने मे क्या लगता है।' बिजला सिंह थोड़ी देर के लिए खामोश हो गया।

'नादिरशाह सब के सिर में जूते लगायेगा। सब की इज्जत गलियो में रुलेगी। गलियों मे नहीं, चौराहे में खड़ी करके नंगी की जायेगी पाटेखानों की इज्जत!'

'जिस हुकूमत के इस तरह के सज्जन मित्र हों, उसे दुश्मनो की क्या जरूरत है? लो भाई, अब नादिर ने पंजाब को घोडों के पांवों के नीचे रौंद डाला। मुलतान ने हार मान ली। लाहौर ने नजराने पेश कर दिये। नादिर का दिल दिलेर हो गया। घमंड से फूल गया। ईरानी पहले थप्पड़ मारता है, फिर नाम पूछता है। ईरानियों के झंडे पंजाब भर में झूल रहे थे। उसने दिल्ली दरबार को पैगाम भेजा: मै आगे नही बढना चाहता, तुम लोग मेरे बागी मुझे वापस कर दो। अगर मुग़ल सरकार हर्जाना देने को तैयार हो तो मैं लौट जाऊंगा। इतनी गर्मी मे बदन जलाकर मुझे क्या लेना है? मुहम्मद शाह ने उसके रुक्के को शराब के प्याले मे डुबो दिया। चिंदी-चिंदी हो गया फरमान। सीसा ढाल कर उसके एलचियो के गले मे डाल दिया। जब यह खबर नादिर शाह के पास पहुंची, तो वह बोल उठा: आग के गोले को आखिर फूटना तो था ही!

'रणभूमि बना करनाल। दोनों दलों में मकाबला ठन गया। कौरवों-पांडवों का युद्ध छिड़ गया।

'इस्लाम ने इस्लाम के गले पर छुरी रख दी।

'भाई-भाई के खून का प्यासा हो गया। कटोरे लहू से भरे जाने लगे।

'नादिर तो जर, जोरू, जमीन का भूखा था। हुकूमत की चाबिया नादिर के पास आ गयी थीं। उसने उन्हे कमर मे बांध लिया था।

'तीन सूबे नादिर की गोद में जा बैठे थे। बाकी टक्कर सैयद भाइयो से थी। खूब लडे जवां मर्द। हक अदा किया हुकूमत का। शहीद हो गये, लेकिन नादिर से हाथ नही मिलाया।

'कुदरत ने हिंदुस्तान की किस्मत को स्लेट पर लिखा। नाम ईरानियों का था—अक्षर उभर कर नादिरशाह के आये।

'बहादुर सूरमाओ ने गुलामी की जंजीरें हसते-हंसते पहन ली।

'जंजीरें क्या थी, सोने-चादी के गहने थे!

'मुहम्मद शाह रंगीले ने दिल्ली की चाबिया सुनहरी टोकरी मे सजा कर नादिरशाह को पेश कर दी।

'ईरानियों ने दिल्ली के दरवाजे में कदम बाद में रखा, दिल्ली की कुंआरियों को बुरके में पहले लपेट लिया। गोरी, अल्हड़ लड़कियों को इन वहशियो ने एक रात मे ही औरतें बना दिया।

'सिंदूर भरी मांग पोंछ डाली गयी। मोतियों से जडी हुई मांग साफ कर दी गयी। किस्मत को अभी उनकी मागो में दूसरे मोती जड़ने थे। जुल्फों को कैंची से काट डाला गया। जो अति नही हो सकती थी, ईरानियों ने वह भी कर डाली। मुंडे हुए सिर वाली दिल्ली किसे अपना खसम माने?'

बिजला सिंह की आंखो मे आंसू भर आये थे।



फकीरों की टोली

करनाल के मैदान में मुगल शहंशाह की तकदीर मे लिखा हुआ सिंहासन स्लेट से पोछ दिया गया। सजे-सवरे घोड़े पर सवार होकर खान दौड़ता हुआ आया था और जनाजा उठा कर ले गये। एक जावाज शहीद भी करवाया और साथ ही जग भी हारी। सैयद मुंह जोर जरूर थे, लेकिन दिल के सच्चे थे। उन्हे मुगल हुकूमत से प्यार था। देशद्रोही वे नही थे। वतन से उन्हे मुहब्बत थी। अगर बाहर से उजले थे, तो भीतर से काले भी नही थे......पर सच्चे को कौन पूछता है ?

बगुला भगत बादशाह को बहुत प्यारे थे—वे खुशामदी, जिनकी जुबान में मिश्री घुली हुई थी। शहद उनके होठों से टपकता। सैयद मीठी बातें नही जानते थे। उन्होंने बादशाह को कभी सब्ज बाग नही दिखाये थे। सावन के अंधे को चारो ओर हरा ही हरा दीखता है ! निजामुल्मुल्क और सआदत खां, दोनों ही जी-हजूरिये थे। यही अगुवा थे और यही पिछलग्गू। इधर लगाई, उधर बुझाई ! ये दोनों नादिरशाह की लल्लो-चप्पो कर रहे थे। नादिरशाह को ऐसे चमचों की ही कमी थी। हिंदुस्तान उसके लिए नया देश था। वह यहां की खसलत से वाकिफ नही था। एक रात नादिर ने दोनो को एक साथ बुलाया। शिविर करनाल में लगा हुआ था। पहले निजामुल्मुल्क भीतर गया, फिर सआदत खां। जब दोनो ने एक-दूसरे को देखा, तो दोनों के हाथो के तोते उड़ गये। पर ढीठ थे—शर्म पचा गये। युद्ध मे हार तो हो ही चुकी थी। अब सिर्फ सौदेबाजी हो रही थी। नादिर ने पहले निजामुल्मुल्क को खिल्लत दी। दूसरी बारी सआदत खां की थी। किसी बात पर नादिर से तकरार हो गई। बात तूल पकड़ गई। नादिर गुस्से में लाल-पीला हो गया। उस वहशी ने सआदत खां की दाढी पर थूक दिया और धक्के मार कर तंबू से निकाल दिया। मेहरबानी सिर्फ इतनी की कि जान बख्श दी। बाकी और कोई कसर न रखी। अनख वाले नवाब से यह हत्तक बर्दाश्त नही हुई। उसी रात उसने जहर का प्याला पी लिया और अल्लाह को प्यारा हो गया। लोग कहते हैं कि करनाल में सिर्फ दो जनाजे उठे—एक खानदौरां का और दूसरा सआदत खां का। सारी फौज ने शोक

मनाया। कंधा निजामुलमुल्क ने भी दिया। नादिरशाह बड़ा पछताया, ये जनाजे देख कर। जकरिया खा दोशाला और कलगी पहले ही ले चुका था।

तीन धर्मपुत्र थे। वतनफरोशी तो यों ही घड़ी भर की चीज थी। कान तो काले हो नही जाते! धब्बा तो नही लगा पोशाक पर। उनकी पोशाकें दूध-धुली थी। भीतर ही भीतर अपने वतन के टके ही कमाये थे। अपनी मां को नया खसम करवा दिया था। लेकिन नादिरशाह बड़ा लुच्चा था। उसने तीनों की बात मीठे चावल खिला कर सुन ली, लेकिन साथ ही तीनों के गले में गेंठ वाली रस्सी भी डाल ली। दादा-परदादा का जमा किया हुआ सब कुछ निकलवा लिया। गले में पल्ले डाल कर, लार चाट कर ढीठों ने अपने जुर्माने माफ़ करवाये। मारे हुए से भगाया हुआ बेहतर!

बादशाह जब बादशाह से मिला, तो गलबहियां डाली गयीं, खैर-खैरियत पूछी गई। दिल्ली के बादशाह ने निवेदन किया, 'शाहे-ईरान थक गये होंगे। कुछ दिन मेरे गरीबखाने पर मेहमान रहिए, थकान उतर जायेगी।'

शाहे-ईरान बोला, 'खानदौरां होता, तो दिल्ली आने का मजा मिलता। मरद मरदों के घर में ही मेहमान हो कर अच्छे लगते हैं। जहाँपनाह, आपके लश्कर में एक ही मरद था: बाकी सब तो [illegible] हैं। बहादुर बहादुर की कद्र करता है। नादिर खानदौरां को जिंदगी में कभी नहीं भूल सकता। अगर एक और आदमी होता, तो मैं जंग हार जाता। आपकी हुकूमत का एक दोस्त और भी था, लेकिन मसखरियों ने उसे [illegible] कर दिया था। वह था सआदत खां। बाकी सब दुश्मन हैं—[illegible]। वे हुकूमत को चलने नहीं देंगे। मैं कुछ ही दिनों का मेहमान हूं। [illegible] काल में डालने लायक बना जाता। आपकी [illegible]। बहुत दिनों से ख्वाहिश थी, अल्लाह ने पूरी कर दी है। जहाँपनाह, [illegible] बहुत कम मिलता है। मुझे ढोंग में रखा गया है। [illegible] कोई कब्र में नहीं ले जा सकता। [illegible]। मेरा बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है। मैं बहुत दूर से चल कर आया हूं। जहाँपनाह, मेरा ख्याल [illegible] जाहिर होता, तो उसमें [illegible]। [illegible]" [illegible] इतनी बातें एक साथ ही कह डालीं।

मिल-जुल कर अमीरों-वजीरों ने नादिरशाह को साथ ले लिया। चार कहारो ने पालकी उठायी। दूसरे दिन नादिर ने दिल्ली की धरती पर पांव धरे। लाल किले ने भी झुक कर सलाम किया। बारह तोपें किले की बुर्जियों पर से दागी गयी। तख्ते-ताऊस ने कदमबोसी की। जलवा अफरोज हुआ। शहंशाह-ईरान को नजराने पेश किये गये। दिल्ली के बादशाह ने झुक कर सिजदा किया। अगले रोज जुम्मा था। जामा मस्जिद में नादिर शाह के नाम का खुतबा पढा गया। मुगल हुकूमत की तख्ती पुंछ गयी। कुछ दिन खूब जश्न हुए। मुहम्मद शाह रंगीले की बेटी नादिर के बेटे से ब्याह दी गयी। हरम की बेगमों में से कुछ नादिर को पसंद आ गयी, कुछ जरनैलों ने ले ली। सियाह फाम हसीन औरतो का इंतखाब इसलिए किया गया, क्योंकि नादिर जलेबियां खा-खा कर उकता गया था। चटनी चाट कर मजा लेना चाहता था।

दिल्ली के बीचोबीच एक चडूखाने मे बैठे कुछ नशई नशे में झूम रहे थे। एक बेगम जो जबरदस्ती नादिर शाह के हाथों मसली जा चुकी थी, और बाद में उसके जरनैलों ने भी उसकी खासी हालत की थी, उसने बदला लेने के लिए अगले दिन एक साजिश रची। वह चडूखाने में जा पहुची। चेहरे पर नकाब नहीं था। उसने अपने हुस्न की ज़रा-सी झलक दिखायी। बोली, 'आखिर रंगीले बादशाह का दांव लग ही गया ना!' बादशाह उसे अंगुलि पकड कर अपने हरम में ले गया। उसने, पता नहीं, बेगमें दिखायी या दासियां। नादिर शाह को उसने अपने शीशे में उतार लिया। मुर्गे की तरह गरदन मरोड़ कर फेंक दी। सिर उतार कर यमुना में फेंक दिया। नादिरखानी पल्ले में बंधवा दी।'

नशइयों ने बात सुनी। वह छबीली वहां से खिसक गयी।

घड़ी भर में यह खबर सारी दिल्ली में फैल गयी। दिल्ली वालो ने चंडूखाने के तमाशबीनों के साथ मिल कर नादिरशाह के कुछ सिपाहियों को कत्ल कर दिया। नादिरशाह हरम मे बैठा इश्क के चरखे चला रहा था। खबर सुनी तो लोहा लाल हो गया। कत्ले आम का हुक्म दे दिया। कहते हैं कि एक दिन में एक लाख नर-नारी, बच्चे-बूढे कत्ल हो गये। चार घटों मे जब चिड़िया का बच्चा भी बाकी न रहा, तो निज़ामुलमुल्क और बादशाह गले में पल्ला डाल कर नादिर के हुज़ूर में हाजिर हो गये। 'दिल्ली मे तो अब कोई पर मारने वाला भी न रहा। अब तो तलवार को म्यान में डाल लीजिए।' नादिर ने अर्ज मान ली और कत्ले आम बंद हो गया।

नादिर को दिल्ली का मिजाज रास न आया। एक हज़ार हाथी, सात हज़ार घोड़े, एक लाख ऊंट, एक सौ तीस खुशनवीस, दो सौ लुहार, तीन सौ राज, दो सौ संगतराश, एक सो हिजड़े, बाइस सौ खूबसूरत औरतें, कोहेनूर और तख्ते-ताऊस साथ लेकर वह दिल्ली से लौट चला। जकरिया खां को पहले ही संदेश भिजवा दिया कि मैं बहुत जल्दी लाहौर पहुंच रहा हूं। एक करोड़

अशरफियां तैयार रखो। गफलत हुई, तो सजा दी जायेगी। वह सजा क्या हो सकती है, अपने दिल से पूछ लो। जकरिया खां को दौरे पड़ने लगे। बेगम ने तसल्ली दी। हर्जाना इकट्ठा किया गया, हजारों लोगों की रूह को कब्ज करके।

नादिर को एक गुमान हो गया था कि हिंदुस्तान हिजड़ों का मुल्क है। बुजदिलों के बेटे-पोते भारत में बसते हैं। एक दिन वह बोला, जो आदमी मेरी फौज की तरफ आंख उठा कर देखेगा, मैं उसकी आंखें निकलवा दूंगा। कोई आदमी मेरी फौज की परछाईं तक को नहीं लांघ सकता।' बड़ा अहंकार था नादिरशाह को। मस्ती में जा रहा था। मुजरे हो रहे थे। शराब उड़ रही थी। फौज क्या जा रही थी, जैसे बारात जा रही थी। जकरिया खां के घर मेंहदी से सिंगारी हुई बेगमें पालकी में बैठी ही नादिर का मनोरंजन कर रही थीं। सिंहों ने उसकी ललकार को कबूल किया। भारत हिजड़ों की नहीं, बहादुरों की धरती है। तुम्हारा वास्ता ही नहीं पड़ा आदमियों से! नादिरशाह सरहंद से आगे निकल चुका था। सिंहों ने इतनी तेजी से तूफानी हल्ले किये कि दौलत भी लूट ली, घोड़े भी छीन लिये, ऊंट भी भगा लिये और नादिर के साथ औरतों का जो दल जा रहा था, उसे भी छुड़ा लिया। भार हल्का कर दिया। तीन-चौथाई काफिला सिंहों ने लूट लिया। बमुश्किल एक-चौथाई लाहौर पहुंचा।

नादिरशाह को पता चला, तो उसके पैरों के नीचे से धरती खिसक गयी।

नादिरशाह ने जकरिया खां से पूछा, 'ये कौन हैं, जिन्होंने मेरी फौज को लूटा है, मेरे खजाने पर हाथ डाला है? इनके घरों को आग लगा दो। इनके गांवों को जला कर राख कर दो। जकरिया खां, इनका नाश कर दो!' नादिर गुस्से से दहाड़ रहा था।

'जिल्ले आलाह हुक्म फरमावें पर! पर इन फकीरों की टोली को कौन ढूंढे और कहां ढूंढे! घर न घाट! इनके घर घोड़ों की काठियां हैं। हुजूर ही बतायें, इन खूंखार बन्दों को कोई कहां से पाये!' जकरिया खां ने जवाब दिया।

नादिरशाह ने पेशीनगोई की। 'ये फकीरों की टोली एक दिन पंजाब की वारिस बनेगी। इनकी किस्मत में बादशाहत लिखी है। बू आती है इन्हें बादशाहत की!'

जकरिया खां ने सिंहों को कुचल देने की कोशिश की, लेकिन वह उन्हें ही काबू में न कर सका।

रात के गुलाम, दिन के बादशाह !

सिंह हिरन हो गये। हिरनों के सींगों पर सवार भी कभी कोई मिलता है ?

रातो-रात सिंह लक्खी जंगल में जा घुसे। नादिर ने एक बार हथेलियां मसली और ठंडी आह भर कर बोला, 'अब तो मैं जल्दी मे हू। अगले साल मैं फिर आऊंगा। मैं ही निपटूंगा इन सिंहो से। मेरे काटे पेड़ कभी हरे नहीं होते !'

एक करोड़ का हर्जाना उसने पल्ले बाधा और राह चल दिया। परन्तु विचारों ने उसका पीछा न छोड़ा—कमाल हो गयी ! हाथ को हाथ लग गये ! फकीरों की टोली ही नादिरशाह को लूट कर ले गयी ! मेरे कुल्हाड़े का पानी उर गया है। इज्जत उतार कर रख दी है इन फकीरों ने। इन काफिरों की गरदन तोड़नी ही पड़ेगी। फौज कूच कर चुकी थी। नादिरशाह घोड़े पर सवार था। ज़करिया खां ने विदा की सलामी दी। नादिर सोच रहा था। मैने जिंदगी में कभी हार का मुंह नही देखा था, जीत हमेशा मेरे कदम चूमती रही। या खुदा ! या परवरदिगार ! यह तुमने क्या किया ? दूसरो के टुकड़ो पर पलने वाले फकीरों से मुझे मात दिला दी !......यह मेरी जिंदगी की पहली हार है !......

नादिर का बेटा डोली लेकर जा रहा था। वे लोग अभी अटक के इधर ही थे कि शाह ने उसे हुक्म दिया, 'कजाक हद न पार कर जायें।' कज़ाक वे लोग थे, जिन्होने नादिर के खिलाफ साज़िश की थी और उसे ठठरी मे पानी पिलाया था, लेकिन विधाता ने उनकी किस्मत में हार लिखी हुई थी। वे भाग उठे और हिंदुस्तान पहुंच कर दम लिया। पर वे शाह के हाथ न आ सके। जब नादिर ने हिंदुस्तान को जीत लिया और विजय के नगाडे बजाता वापस जा रहा था, तो कज़ाक उसके आगे-आगे थे, और वह उनके पीछे-पीछे।

'जल्दी जाओ बेटा और उनकी गरदन नाप लो।' बेटे का नाम निसार खां था। बहादुर जवान ने अपनी सेना को ऐसी दुडकी लगवायी कि कज़ाक काबू मे आ गये। उन्होंने नाक रगड़ी, मिन्नतें की। नादिर का हुक्म था कि सब की गरदन उडा दी जाये। निसार ने न जाने रिश्वत ले ली या हमदर्दी मे आ गया, या उसके दिल में रहम आ गया, उसने आधे लोगो को कत्ल करवा दिया और आधे लोगों

को भगा दिया। आधे सिर लेकर जब बेटा नादिर से मिला, तो नादिर ने पूछा 'बस, इतने ही थे?'

'नहीं। आधे भाग गये। बड़ा हल्ला किया, पर हाथ से निकल गये। काबू में नहीं आये।'

'तुमने माजून खा रखी थी? नादिर का वली अहद इतना नालायक नहीं होना चाहिए। आधे लोगों को तुमने भगा दिया है। बच्चे, अगर तुम उन कज़ाकों के हाथ आ जाते, तो फिर तुम रहम की दरख्वास्त करके देखते—पता चल जाता वे तुम्हारे साथ क्या सलूक करते! दुश्मन पर रहम करना नालायकी है। सांप देखो, तो सिर कुचल दो। पूछ पर हाथ रखा नहीं कि वह डंक मारने से बाज नहीं आयेगा!' नादिर की आखो मे खून उतर आया। 'इस हरामज़ादे की आंखों में गरम-गरम सलाखें फिरा दो। इसने हुकूमत के साथ दगा किया है!' नादिरशाह ने हुक्म दिया।

नादिर का हुक्म इलाही हुक्म था। न कोई दाद थी, न फरियाद।

घड़ी भर मे आंखें चू गयीं। उत्तराधिकारी यों ही अंधा हो कर बैठ गया। मां खबर लेने आयी। देखते ही उसने अपनी छाती पीट ली। 'हाय! मैं मर गई-! यह अन्धेरगर्दी! इतनी बड़ा सज़ा! जुल्म की भी कोई हद होती है! मेरा खाना खराब हो गया। मेरा कुल नष्ट हो गया। मेरी कोख फूटी जैसे न फूटी!' मां दहाड़ मार कर रोने लगी। 'यह बाप है, नहीं, बाप नहीं, कसाई है! अच्छा बेटे, सब्र करो। खुदा रहम करे। इस बाप को बाप कहने को मैं तैयार नहीं हूं! शाह की आदत से तो तुम वाकिफ़ हो। हाकिम की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी से हमेशा बचो।'

'इससे बड़ी सजा और क्या दी जा सकती है? मौत! वह तो बहुत खूबसूरत चीज है। यह सज़ा बड़ी डरावनी, बड़ी भयानक डायन है, मां। डायन भी चार घर छोड़ लेती है!' निसार ने कहा।

रात जरा गहरी हुई। अंधकार अपनी गुंजलक मारने लगा। मां-बेटे और जरनैलों ने मिलकर सलाह की। बात तय हो गयी। जरनैल जान की बाजी लगा कर एक नई बाजी खेलना चाहते थे।

शाही तंबू के चारों ओर कड़ा पहरा था और पहरे वाले जाग रहे थे। फिर भी दो जरनैल नादिर की अपनी फौज के तंबू में जा घुसे। उन्होंने शाह को जगाया और ललकारा। बोले, 'शाह! होशियार हो जाओ! निकालो अपनी कुल्हाड़ी। बाद में यह न कहना कि कुल्हाड़ी निकालने का मौका नहीं मिला। हम वार करने वाले हैं। जो ज़ोर लगता हो, लगा लो। [illegible] शाह का नाम रोशन था। हम अब दीया गुल करने लगे हैं। [illegible] कोई नहीं रोक सकता। खबरदार! वार संभालो!'

अहमद खां की तलवार नादिरशाह के खून में नहा उठी। दायीं बांह पर भरपूर वार पड़ा था।

नादिरशाह कत्ल हो गया। यह खबर दावानल की तरह सेना में फैल गयी।

नादिर शाह का गुलाम-सेवक अहमदशाह अफगान तंबू के भीतर गया। पहले उसने अपने मालिक को सिजदा किया और फिर वक्त की नजाकत को देखा। उसकी पीठ पर अफगानों की टोली खड़ी हुई थी।

तलवार उसने हाथ में सूत ली। आखों में लहू उतर आया। वह बाहर आया। कातिल भाग चुके थे। फौज के बाकी जरनैलों ने कोहेनूर हीरा, नादिर की कुल्हाड़ी, तलवार, ताज नजराने के तौर पर अहमद शाह अफगान को पेश कर दिया।

सारी सेना ने बुलंद आवाज में नारा लगाया—अहमद शाह अब्दाली, शहंशाहे ईरान—जिंदाबाद, पाइंदाबाद!

अहमद शाह अब्दाली रात को गुलाम था। सूरज की टिकिया के निकलते-निकलते बादशाह हो गया। सुलतानी उसकी किस्मत में लिखी हुई थी।



सोनपांखी लौट आये

'मैंने सुना है, तुमने लाहौर मे दीवाली मनाई है—नादिरशाह के कत्ल की खुशी मे। क्या यह ठीक है? यह नमकहरामी है। बादशाह के साथ गद्दारी है यह। मैं बहुत जल्द लाहौर आ रहा हूं। खेराज तैयार रखना। अब मैं बादशाह हूं। एक बात और भी सुन लो, कान खोल कर। मैं शाह के साथ आया था और मैं हिन्दुस्तान का पत्ता-पत्ता जानता हूं। वहा के लोग भी देखे हैं। उनका स्वभाव भी मेरा जाना हुआ है। मुझे कोई दिलेर या गैरतमद, खुद्दार लोग मिले हैं तो वे सिक्ख हैं। उनकी धुरी, उनकी ताकत, उनका उद्यम नूर का चश्मा अमृतसर है, और उनके बीच जो एक नूरानी मस्जिद है, और जिसे हरिमन्दिर कहते हैं, उसे गिरा दिया जाए। उसे मलियामेट कर दिया जाए। तालाब भर दिया जाए ताकि ये लोग स्नान न कर सकें। कोई दीदार के लिए न आए। जो आये, जिंदा वापस न जाये। इतना काम अगर तुमने कर लिया, तो लाहौर का सूबा बचा रहेगा, वरन् सारा पजाब सिंहों का समझना। मै जल्दी ही पजाब आ रहा हूं।'

अहमदशाह अब्दाली के कासिद ने यह फरमान भरे दरबार में पढ़ कर सुनाया।

दिन बीते। महीने निकल गये। रुत आई, रुत चली गई। एक बार सोनपांखी आये और आते ही पहाड़ों की ओर लौट गये। न अहमदशाह आया और न उसके घोड़ों की टाप किसी के कान मे पड़ी। वह अपने घर के झगड़ों में उलझ गया।

जकरिया खां ने गिरगिट की तरह अपना रग बदला। पहले दिल्ली गया और बादशाह के कान मे कुछ फूंक आया। पंजाब की हालत बताई। बताया कि अहमद शाह अब्दाली चढता आ रहा है, क्या करना होगा।

'सिंहों ने पंजाब में अब फिर से हल चला लिया है। उनके घोड़े फिर दुलकी चाल से दौड़ने लगे हैं। उनकी लगाम को हाथ डालने वाला कोई नहीं है।

शहंशाह, सिहों के सामने थोडा-सा टकड़ा डाल दीजिए। रोटी का टुकड़ा इनकी थाली में आ गया, तो वे आपस में ही लड़ मरेंगे।'

'क्या मतलब ?' शाह ने पूछा।

'जागीर बख्शी जाये। एक महीने में ही आरामतलब हो जाएंगे। ऐयाशी जब इनके डेरों में आएगी, तो फिर इनकी गरदन नापना आसान हो जाएगा। फिर मैं इन्हें हमेशा के लिए उठने लायक नही रहने दूंगा,' जकरिया खा का ख्याल था।

'बात में तो दम है! इसका फैसला हमें पहले ही कर लेना चाहिए था। यह हमारी बाह भी बन सकते हैं। अब भी कुछ नही बिगड़ा है।'

शाही फरमान जारी हुआ। एक लाख रुपयो की जागीर, एक खिल्लत और साथ मे पट्टा। कड़ाह प्रसाद के लिए देंगे अलग से। सब कुछ लेकर ज़करिया खां लाहौर लौट गया।

अब सिहों के साथ बात कैसे की जाये—विचार यह था।

कौन जाये सिहों के साथ बात करने ? और कैसे पहुंचें ? कई आदमी ख्याल में आये और उनके साथ विचार-विमर्श भी हुआ। कोई भी ऐसा न निकला, जो इस गठरी को सिर पर लेकर जाये। किसी की जुर्रत ही नही हुई।

जागीर और पट्टा आदि, हर चीज ज़करिया खां के पास अमानत पड़ी रह गई।

अहमदशाह अब्दाली का हरकारा हर नये सूरज के साथ नई सलाह लेकर आता। चुप रहो और वक्त निकालते जाओ वाली नीति के अनुसार जकरिया खां ने कानों मे तेल डाल लिया, और सो रहा। हरकारे आते रहे, जाते रहे।

सिहों ने सिर उठाया। अपनी खोहों मे से सर्प निकल आये। मांद मे से शेर निकल आये। उन्होने सारे पंजाब में हलचल मचा दी। चौधरियों को कान से पकड़-पकड़ कर आगे कर लिया, न कोई नवाबी रहने दी और न कोई सूबेदारी, सब को खूंटी पर टाग दिया। पंजाब मे जैसे जलजला आ गया।

सिह घर लौट कर आये। सोनपाखी अपने देश को लौट आये। ढोल-सिपाही आये, आगन मे रौनक लौट आई। बहनो को मिले भाई, कांत मिले सुहागिनो को, हीरों को रांझे मिल गये। बसन्त द्वार पर आ गया।

ज़करिया खा के सीने पर साप लोट गए, लेकिन उसके कानो मे काबुली मुर्गे बांग दे रहे थे। मुश्के बन्धी हुई थी जकरिया खा की—इधर दिल्ली और उधर खुरासान। साप के मुंह मे छिपकली, खाये तो कोढ़ी, छोड़ दे तो अन्धा!

●●

अमृत-बेला

'सुनाओ भाई, सिंह, परिवार जनों का क्या हाल है ?'

'आप अब की बात पूछ रहे हैं, या पहले की ? आजकल भी सुख नहीं है और पहले भी नहीं था। पंजाब का कोई घर नहीं था, जिसके आंगन में दुहत्थड़ मार कर स्यापा न होता हो। हर घर में कोई न कोई जीव परलोक सिधार गया था। मुसलमानों के घरों में भी यही हाल था। सरकारी हुक्म चढ आये, तो यह कौन देखता है कि हाकिम किस आदमी को पकड़ रहा है ! यह सिंहों का घर है या हिन्दुओं का या मुसलमानों का ? उन्हें तो अपनी कारगुजारी दिखानी थी। उन्हें क्या, जो आदमी टेंट चढ जाता, उसी का सिर धड़ से जुदा कर दिया जाता। जब हाकिम यह बात पूछता कि सिंह नहीं, तो वे झट से अपनी बोली बदल लेते और कहते कि यह काफी बड़ा बदजबान था। हमने इसके केश मूंढ दिये हैं और इसकी दाढ़ी-मूंछ मुहम्मदी बना दी हैं। हमने तो इसके जिंदा रहते ही यह काम कर डाला था। अगर सिंह हुकूमत के विरोधी हैं, तो मुसलमान पंजाबी भी उतने ही दुश्मन हैं। ये साले सिक्खों का ही पक्ष लेते हैं। पता नहीं, सिंह इन्हें क्या पका कर खिलाते हैं ! लेकिन सिंह धर्म के बड़े पक्के थे। केशों और दाढी को हाथ न लगाने देते। सिर दे देते, लेकिन 'सी' तक न करते। हुजूर, हमने सारे इलाके में कोई सिंह रहने नहीं दिया है। सारी मालगुजारी में कोई सिंह खांसता तक नहीं है। हाकिम खुश हो जाता। इनाम लेकर आता टुकड़खोर फौज का आदमी !' धारा सिंह कह रहा था।

पास बैठा मनसा सिंह बोल उठा, 'धारा सिंह, यार, तुम्हे तो मुहम्मदी जुबान भी आ गई है !'

'जैसा देस, वैसा भेस ! मुसलमानों मे रहने के लिए उनकी जुबान सीखनी ही पड़ेगी। मुझे तो कुरान की आयतें भी पढ़नी आती हैं। कभी मेरी कव्वालियां सुनी हैं ? कोई आदमी कह नहीं सकता कि मुझे अल्लाह रसूल में ईमान नहीं है। जब मैं बजद में आकर धमाल डालता हूं और मेरे बोल उभरते हैं, तो सारे मजमे को नशा आ जाता है—'मदीने बुला ले मुझे...' मुझ में और उन मे फ़र्क ही क्या

है ? मुसलमान बन कर इनकी भावनाएं पीनी हैं। इनके थोबड़े सेंकने हैं। चुल्लू भर-भर कर इनका लहू न पीया, तो मेरा नाम भी बिजला सिंह नहीं।'

धारा सिंह ने उसे बीच में ही टोक दिया : 'विधि चन्द ने अगर मुसलमानी लिबास पहन लिया, तो क्या उसके कान काले हो गये थे ? हुकूमत वाले उसे लाख मुसलमान कह लें, सैयद का रुतबा दे दें, लेकिन अपने भाइयों ने तो उसे रसोई से बाहर नहीं धकेला ना ! मैं तो समझता हूं कि अगर उनके साथ एक कुबाली में बैठ कर खा भी लिया जाये, तो कोई हर्ज नहीं है। महात्मा चाणक्य ने कहा है कि तुर्कों से युद्ध भी करना पड़े, तो भी ईमान नहीं जाता। धर्म बचाने के लिए जो कसब करना पड़े, करो, लेकिन अपने धर्म-भाइयों को बचा लो।'

'क्या विधि चन्द भी खा लिया करता था मुसलमानों के साथ ?'

गुरु के नाम पर अगर चोरी कर ली या खाना भी पड़ गया, तो कोई पाप नहीं है। हरिमन्दिर साहब जाकर स्नान कर लो, शरीर भी पवित्र हो जाएगा और आत्मा भी पवित्र हो जाएगी। 'रामदास सरोवरि न्हाते...' मनसा सिंह का कहना था।

'बलिहारी विधि चन्द की, जो गये हुए घोड़े ले आया, चाहे चोरी करके लाया, या भगा कर। गुरु की आसीसें ले ली। विधि चन्द के बारे में लोग कहा करते थे—विधि चन्द छीना गुरु का सीना...हमने जो बीड़ा उठाया है, गुरु फतेह ही करेंगे। एक तो हमारे गुरु की गुल्लक भरी रहे और दूसरे लंगर का सदाव्रत चलता रहे, और तीसरे पंजाब के लोग हमारे पीछे हुंकारा भरते रहें— बस, फिर हम हुकूमत की मुश्कें बांध लेंगे। फिर देखेंगे कौन खोलता है ! सिंह जानते हैं दुश्मन का सिर कैसे कुचला जाता है। हरिमन्दिर साहब में ज्योति जलती रहे और हम उससे रोशनी लेते रहें...,' बिजला सिंह का विश्वास था।

'नवाब जो जागीर दिल्ली से लेकर आया है, क्या सिक्ख उसे कबूल कर लेंगे ?' धारा सिंह ने पूछा।

'खलअत भी पहनी जाएगी और जागीर भी कबूल कर ली जायेगी। पर दोस्त, यह ज्यादा दिन नहीं चल पाएगी। इनका कोई विश्वास नहीं है। लोटे का क्या है, क्या पता कब लुढक जाये ! और फिर ये तो बिन पेंदे के लोटे हैं। चलो, जागीर अगर एक साल तक ही चल जाये, तो घोड़े, काठियां, बारूद, गोला, जमूरे ही खरीद लेंगे। तोपें नहीं, तो न सही। तोपें छीनी जा सकती हैं। एक-दो गाड़ियां भी हमारे काबू आ गई, तो काम बन जाएगा। अनाज के जखीरे भी, गुरु ने चाहा, तो हाथ लगेंगे—और फिर समझ लो, हमारे पांव मज़बूत हो गये। पंजाब के पैर हमारे, धरती हमारी, लोग हमारे, घर-द्वार हमारे, एक हुकूमत ही गैर की है ना। हुकूमत बदली जा सकती है। जनता हुकूमत बदल लेती है। लोग ही हुकूमत बनाते है, और लोग ही उसे फाक जाते हैं। फिर हमें तो गुरुओं ने हुकूमत बख्शी है !' बिजला सिंह ने सब के मन पक्के कर दिये।

धारा सिंह ने कहा, 'अमृतसर का सरोवर हमारी काशी, हमारा हरिद्वार है। हमारा यह सरोवर पवित्र रहे, सिंहों का कोई बाल भी बांका नही कर सकता। सिंहो का विश्वास अटल है। सिंहो के इरादे पत्थर के हैं। सिंह पहाड़ हैं। जो भी इनसे टकराया, वह चूर-चूर हो गया। पलीता लग गया उसे!'

'हुकूमत की अमर बेल फैल गई है। एक दिन यह सारी धरती को ढंक लेगी। हम गुलामी का जूआ उतार फेंकेंगे। यह अमर वेल रहने नही देनी है—चाहे सिर देने पड़ें, चाहे शहादत!' धारा सिंह ने अपनी बात पर पूर्ण विराम लगा दिया।



सांप आखिर सांप है !

'जागीर ले कर आया लाहौर का शाबाज सिंह जावर। वह सीधा अमृतसर ही पहुंचा। वैसाखी मनाने के लिए सिंह अकाल तख़्त पर जमा थे,' बिजला सिंह बोला।

'सिंहों का काफी जमघट होगा। सिंह छावनियां डाल कर बैठे होंगे। तभी वैसाखी का मेला भरता है !' धारा सिंह ने कहा।

'गुरु की संगतें तो हुमहुमा के आई थी, लेकिन मुखिया सिंह जुड़े बैठे थे। दरबारा सिंह, कपूर सिंह, हरिसिंह हजूरी, दिलीप सिंह शहीद, जस्सा सिंह रामगढिया, करम सिंह, बुड्ढा सिंह शुकर चकिया, गरजा सिंह...बस करूं कि और गिनाऊं ?' बिजला सिंह ने कहा। 'खिलअत और जागीर का पट्टा लेकर हाजिर हुआ।' शाबाज़ सिंह बोला—'मैं पंथ की अनुमति के बग़ैर जागीर का पट्टा सिर पर उठा कर ले आया हूं। पंथ जो तनखाह लगाये, मुझे हाथ बांध कर मंजूर है। मुझे निवेदन करना है। पंथ उस पर विचार कर ले।'

'कहीं काफिरों का आदमी कह कर उसे दुत्कारा तो नहीं गया ?' धारा सिंह ने कहा।

'सिंहों में शाबाज़ सिंह का बड़ा आदर था। क्या हुआ अगर सरकारी अहलकार था ! आखिर खून तो अपना ही था। अपने आदमी सरकारे-दरबार में हों, तो खबरें मिलती रहती हैं। खजाना कब चलता है और किधर को जाता है, कब चलने वाला है और रात कहां गुजारेगा—सिंह की जरा-सी भनक लग गई, हल्ला किया और मस्ताना लंगर अमीर हो गया !' बिजला सिंह ने कहा।

'फिर क्या कहा शाबाज़ सिंह ने ?' धारा सिंह ने पूछा।

'यह माया देश के लिए पंथ की भेंट है। सरकार ने सुलह की दरख्वास्त की है, खिताब भेजा है और साथ ही जागीर का पट्टा। पंथ कृपा करके परवान कर ले। वक्त से फायदा उठाना चाहिए।'

दरबारा सिंह ने पंथ से सलाह पूछी, सब ने मन भर का सिर हिला दिया। किसी ने हामी नहीं भरी। फिर शाबाज सिंह बोला—'नीति यह कहती है कि घर आई चीज लौटाई न जाये, सुलह के लिए हमने थोड़े ही मिन्नतें की थी—बल्कि

हुकूमत ही वासते दे रही है। हुकूमत पंथ से डर गई है। शरण आये की लाज रखना हमारा धर्म है।

न हां में बदल गई, मगल ने जागीर परवान कर ली, पर उसे झेलने के लिए कोई तैयार न हुआ। आखिर दरबारा सिंह ने सारे दीवान पर अपनी नजर घुमाई। कपूर सिंह पखा हिला रहा था। सेवा में मग्न था। गर्मी की रुत थी। पसीना सिर से चूता और पैरों तक पहुचता। सेवा की मस्ती मे कपूर सिंह वाणी भी पढ़ रहा था और आनन्द भी ले रहा था।

आवाज आई—कपूर सिंह, आगे बढो और खिलअत कबूल करो।

कपूर सिंह इतना भोला नही था, बोल उठा—यह उस्तरों की माला मेरे गले मे क्यों डाली जा रही है ? मरा हआ साप जिंदा साप से भी बुरा होता है।

दरबारा सिंह ने कहा—यह पथ का हुक्म है।

कपूर सिंह ने कहा—सिर-माथे पर। लेकिन मेरी एक शर्त है!

—क्या ?

—यह खिलअत पांच प्यारों के जोडों (जूतियो) में रखी जाये, और उनके चरणों को छुआ कर मुझे दी जाये। मैं जिंदा फनियर सांप गले में डाल लेता हूं।

मंजूर! मजूर!—आवाजें आई। वही हुआ, जो कपूर सिंह ने कहा था। नवाबी का खिताब और जागीर का पट्टा झोली खोल कर ले लिया कपूर सिंह ने। उसी दिन से सिंह उसे नवाब कपूर सिंह कहने लगे।

'जागीर तो मिल गई, पर चली कितने दिन ?' मनसा सिंह ने पूछा।

'जितने दिन तक डर था, खौफ था, दहशत थी अहमद शाह अब्दाली की। जरा-सा डर कम हुआ, तो जकरिया खा ने अपनी आखों को माथे पर धर लिया। जागीर जब्त कर ली। अमृतसर का सरोवर भर दिया और उसमें कपास बो दी। इतने वक्त मे ही सिंहों के पाव पक्के हो गये। जागीर वापस तो हो गई, लेकिन नवाबी का दुमछल्ला कपूर सिंह अपने नाम से हटा न सका। सारा जत्था आज भी उसे नवाब कपूर सिंह कह कर पुकारता है,' बिजला सिंह ने कहा।

पंजाब में फिर बुरछा-गर्दी शुरू हो गई। रीछ फिर नाच उठा। मदारी के झोले में से फिर साप निकले। सापों ने सिर उठाया। बीन की जरूरत फिर आ खड़ी हुई।

सांप आखिर सांप है—चाहे उसे जितना भी दूध पिला लिया जाये।



मण्डी लगी शहीदों की

'फिर शहीदों का मेला लगा। शहादत देने वालों की वैसाखी आई। बाजरे के पौदे कमर तक हो आये। शहादतों की रुत आ गई। कतारें लग गईं शहीदों की। एक-एक मनके के बदले में कई-कई सिर दिये तो कहीं एक मनका हाथ आया। गिनती करना मुश्किल हो गया। एक-एक मनका खरीदा, तब यह माला बनी।' बिजला सिंह बोला।

'इन शहादतों का कोई अन्त भी है! किसी हद पर जा कर यह बात खत्म भी होगी या नहीं?' धारा सिंह बोल उठा।

'जब तक हुकूमत की तलवारें कुंद नहीं हो जातीं। जब तक राज हमारे हाथ में नहीं आ जाता, तब तक भोग नहीं पड़ सकता!' बिजला सिंह ने कहा।

'अभी कितनी देर लगेगी?'

'जब तक हम सारे पंजाब वाले बलवान् नहीं बनते। मन बलवान् है। शरीर हृष्ट-पुष्ट है। कमजोरी है, तो हथियारों की।'

'और अगर हम हमलावर अहमदशाह अब्दाली से गठजोड़ कर लें, तो क्या हमारे कान काले हो जाएंगे?'

'सांप के बच्चे कभी मित्र नहीं होते, मूर्ख! सांप आखिर सांप है!'

'मुंह में राम बगल में छुरी।'

'बात यहीं खत्म नहीं होती। शक्ल मोमिन की, काम काफिर के।'

'हम में और इनमें फर्क सिर्फ यही है कि हम कभी झूठ नहीं बोलेंगे और इन्होंने सच न बोलने की कसम खा रखी है।'

'फिर क्या हुआ? लोहे को लोहा काटता है।'

'नहीं। गुलाब की पत्ती से भी हीरे का जिगर काटा जा सकता है।'

'रेत की दीवार कब तक खड़ी रह सकेगी? एक जोरदार तूफान आया कि ढह कर ढेरी हो जाएगी।'

'लोहा गरम है। अभी पीट लो मुड़ जाएगा, चपटा हो जायेगा—अपनी

मर्जी से उसे गोल कर लो। मेरे ख्याल में तो अब्दाली के साथ आधे-आधे का भाईचारा कर लिया जाये!'

'सिहों ने दुश्मन के साथ कभी चावल नहीं खाये!'

'जब लंगर में बैठ गये, तो फिर दुश्मनी कैसी?'

'दुश्मन की रगों में अंगूठे दो। जब आखें बाहर आ जाएंगी, तो अपने आप भाई कह उठेगा। ईंट का जवाब पत्थर। सुना नहीं, ज़ोरावर का सात बीसी सौ! दुनिया ताकत के आगे झुकती है। अहमदशाह अब्दाली आ रहा है।

खेंवर ने उसकी ललकारें सुनी हैं। वह बाघ ये सारी भेड़ें फाड़ खाएगा। सिहों की पांचो उंगलियां घी मे। अब्दाली लूटेगा और लुटते माल में सिह आधा हिस्सा बांट लेंगे। ये आपस मे लड़-लड़ कर कमज़ोर हो जाएं, तो सिंह बकरसुर गाते इनके गले पड जाएं, फिर देखो रंग! हींग लगे न फिटकरी, रंग चोखा आये!'

'गश्ती फौज ने फिर से सिहों को पकड़ना शुरू कर दिया है। बाज़ार फिर गर्म हुआ कत्लेआम का। लहू की कीमत फिर लगने लगी। लहू अब महंगे भाव में बिकेगा। तलवारों को फिर सान पर चढ़ाया जा रहा है। धारा फिर तेज़ हो रही है।'

'यह आखिरी बार है। ज़करिया खां दिल की तमन्ना निकाल ले। दिल ठण्डा कर ले। चढा ले गश्ती फौज। यह अंधड़ कई बार चढा है और कई बार दबाया गया है। हम चुन-चुन कर मारेंगे इस गश्ती फौज और इसके आगुओं को!'

बिजला सिंह ने आखिर कह ही दिया, 'पहली शहादत और वह भी भाई मणि सिंह जी की। उनका कसूर क्या था?' फिर खुद ही जवाब दिया, 'उनका कसूर यह था कि उन्होंने अमृतसर में दीपमाला की इजाज़त हुकूमत से मांगी थी। और कोई खेत नहीं मांग लिया था उसने। इजाज़त मिल गई। ठेका चुकाया गया पांच हज़ार दमड़े (रुपये)। संगतों ने हुमहुमा कर आने के लिए मुडासे बांध लिये। इससे ठेका भी पूरा हो जाएगा और हरिमन्दिर साहिब की सेवा भी हो जाएगी। पुण्य भी कमाई भी! यह ठेका काज़ी अब्दुल रज्ज़ाक की सलाह से तय हुआ। उन दिनों लाहौर का दीवान लखपत राय था। उसे बीच में रखा गया। बिचौलिये की ज़िम्मेदारी उसके सिर पर रखी गई, पर बेईमानी की भी कोई हद है! झट से चिकने घडे पर से फिसल गये। ईमान को चुल्लू में डुबो लिया। उठा कर चाट गये। इधर ऐलान हुआ और उधर सिहों ने अमृतसर आने के लिए तैयारियां कर ली और इधर बेईमानों ने फौज चढ़ा दी। युद चढ आया अब्दुल रज्ज़ाक। उसने अमृतसर के नाके बन्द कर दिये। दीपमाला न हो सकी। संगतें वापस मुड़ गईं। न मेला भरा और न ही ठेका पूरा हुआ। स्वप्न देखा था—बीच में ही आंख खुल गई। दिलों के अरमान दिलों की तह में ही दबे रह

गये। वलवले लेकर आई थी संगतें, वलवले राह में ही ठण्डे हो गये। न स्नान ही कर सके, न दर्शन ही पाया हरिमन्दिर का। भाई मणि सिंह की माला हाथ में ही पकडी रह गई। दिल मसला गया। बूंदें बरसी, कुछ ठण्डक-सी पहुंची। चाह-भरे दिल मसले गये। अब्दुल रज्जाक ने अमृतसर में आग बरपा कर दी। घुड़दौड़ होने लगी। हौवा बन गया अब्दुल रज्जाक। निराश संगतें वापस लौटने लगी। लाहौर के काजी ने हुक्म जारी किया। मेले को एक महीना होने को आया अभी तक सिंहो ने ठेका नहीं चुकाया है। क्या बात है? अगर ठेका एक-दो दिनों में ही खजाने में जमा न हुआ, तो जंजीरों से जकड़ कर लाहौर की अदालत में पेश किया जाये।

खुदा का हुक्म तो मुड़ सकता था, पर काजी का हुक्म खुदाई हुक्म से भी ऊपर था।

अब्दुल रज्जाक भाई साहिब के सामने आ खड़ा हुआ—हमें हुक्म मिला है, इसलिए हम अर्ज करने आये है।

—क्या हुक्म है?

—या तो ठेका चुकाइए या हमारे साथ चलिए, अदालत में अपनी चारा-जोई करने के लिए।

—कैसा ठेका? हमारा ठेका था कि मेला लगे, संगतें आएं, दीपमाला हो, तो हम ठेका चुकाएंगे। पर तुम लोगो ने तो फौज की हलचलें शुरू कर दीं। अमृतसर मे तो घोड़े दौड रहे थे, मेले में कौन आता? जब मेला ही नहीं हुआ, तो ठेका किस बात का? भाई जी ने कहा।

—इसका फैसला सिर्फ लाहौर-दरबार ही कर सकता है। हम तो नौकर हैं। गोली किसकी और गहने किसके! हम तो हुक्म के बंधे हुए हैं।

कोरा जवाब लेकर गये लाहौर के अहलकार। दूसरा हुक्म गिरफ्तारी का था। बस, फौज ने किसी की कोई बात नही सुनी। न कोई दाद थी, न कोई फरियाद। मणि सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। हरिमन्दिर भांय-भांय कर रहा था। सवाल-जवाब शुरू हुए लाहौर में। सूबेदार बोला—जामिन के कहने पर हमने ठेका मंजूर किया था। तुमने मेला भी करवा लिया। उगाही भी इकट्ठी कर ली; उसे डकार गये और हमें अंगूठा दिखा दिया!

—मेला तो हुआ ही नहीं! मेला तो आपकी फौज का था। हमारा कोई आदमी तो डर के मारे अमृतसर आया ही नहीं।

—मैं इस बात का जिम्मेदार नही हूं। मुझे सिर्फ ठेका चाहिए। कागजों का पेट भरना है मुझे। मैं भी किसी का नौकर हूं।

—ठेका हम दे नही सकते। हमारे पास फूटी कौड़ी भी नही है!

—जुबान देकर बेईमान हो गये हो!

—सिंह जुबान देकर नहीं मुकरता। आप झूठ बोलते हैं!

—मैं ज्यादा बकवास सुनने का आदी नहीं हूं। मैं सिर्फ एक बात चाहता हूं: ठेका। ठेका नहीं तो काज़ी का फतवा सुनो। काज़ी का कहना है, अपना मजहब छोड़ दो! सूबेदार ने अपनी बात कह दी।

—किसी सिंह ने आज तक अपना मजहब छोड़ा है? फिर आप मुझ से ऐसी उम्मीद रखते हैं? मणि सिंह ने कहा।

—एक शर्त है, मुसलमान हो जाओ। देख लो कितनी आसान और हमदर्दी वाली बात है। और अगर तुमने 'न' ही पढा है, तो कत्ल के लिए तैयार हो जाओ। तीसरा और कोई रास्ता नहीं है। और अगर तुमने अब भी हील-हुज्जत की, तो मैं बंद-बंद कटवा देने का हुक्म सादर करूंगा। तुम काफिरो ने हमारी जान शिकंजे में फसा दी है। हमारा जीना मुश्किल कर रखा है!

यह खबर लाहौर में फैल गई। लाहौर के सहज्धारी हिन्दुओं और उन सिक्खों को बडा दुःख हुआ, जो सरकारी अहलकार थे। उन्होंने चोरी-चोरी ठेके की रकम एकत्र की और सूबेदार के सामने रख दी।

—यह क्या?

—भाई जी का ठेका हमने लाहौर से इकट्ठा किया है। सरकार रकम जमा कर ले।

—उल्टा चोर कोतवाल को डाटे! हमारी बिल्ली और हम से ही म्याऊ! हमारे दरबार से रकम इकट्ठा की और हमको ही दे रहे हो! खुले दिन में ही हमारी आखो में धूल झोक रहे हो!

भाई जी ने साफ इन्कार कर दिया—हम ठेका नही चुकाएंगे। यह असूल की बात है।

—गुस्ताखी हद से बढ रही है। यह काफिर मानने वाला नहीं है! फतवा आयद किया जाये!

सिंह तैयार है।

लाहौर का एक सम्मानित नागरिक बोल उठा—सरकार को तो रकम चाहिए, चाहे कोई भी दे। आपके खजाने में रकम जमा हो गई। सरकार-दरबार मे आपके नाम के झण्डे गड़ गए। यह रकम हुजर को कबूल कर लेनी चाहिए।

पर भाई मणि सिंह बोल उठे—बात रकम चुकाने की नहीं है। बात असूल की है। जुर्माना चुकाना गुरु घर का नियम ही नही है। कोई गुनाह किया हो, तो कोई जुर्माना भी कबूले। हमारा गुनाह क्या है? यही कि हम मेला कर रहे हैं। अपने गुरुओं के चरणो में सिर नवाने के लिए। यह जुर्म है? क्या हुकूमत पांच वक्त नमाज़ नहीं पढ़ती है? खुदा का शुक्राना ये अदा नहीं करते? खुदा ने इन्सान को पैदा किया, उसे अशरफुल मखमुलकात बनाया। इन्सान इतना ही बेगैरत है कि अपने मालिक के सामने सिर न झुकाये?

—यह दण्ड है अमृतसर पर। तुमने वादाखिलाफ़ी की है! हुकूमत के लिए यह सीधी बगावत है। इसलिए जुर्माना चुकाना ही पड़ेगा! हाकिम ने कहा।

—हरिमन्दिर पर कोई कर, कोई जुर्माना, कोई दण्ड कबूल नही किया जा सकता। यह हमारे उसूल के खिलाफ है। हम यह बात नही मान सकते। भाइयो, तुम अपनी रकम घर ले जाओ। इनसे मैं खुद ही निपट लूंगा। गुरु आपका भला करे! पथ की इज्ज़त को दाग नही लगने देंगे पंजाबी।

—अन्धेर साईं का! इतना बडा धोखा और ऊपर से सीनाजोरी! यही बात तो हमें खत्म करनी है। रकम चुकाना कोई इतनी बड़ी बात नही है! इज्ज़त मिट जाये—यह हमारे सारे लाहौर की बदनामी है। उठा ले जाओ अपनी रकम। लाहौर वाले ठेंका नही चुका सकते। यह हुकूमत का मुजरिम है। बागी है। पहले इसका बंद-बंद कटवाओ, और फिर इसे तड़पा कर कत्ल किया जाये। इन काफिरों ने मौत को भी खेल समझ रखा है! इन कम्बख्तों की खाल मे रत्ती भर भी भय नही है! हाकिम ने हुक्म लिखा और कलम तोड़ दी।

जल्लाद आ गये। सरे-बाज़ार जल्लादों ने बांह से पकड़ कर खींच लिया भाई मणि सिंह को।

एक जल्लाद बोला—बांह आगे करो।

—क्यों, क्या बात है?

—हमें बांह काटनी है।

—नही दोस्त! ऐसे नही, तुम्हे बंद-बंद काटने का हुक्म मिला है। पहले अगुली काटो, फिर कलाई, और फिर बाह। हुक्म-उदूली नही करते। हुक्म मानने का तरीका सीखो।

—या अल्लाह! रहम कर! ये बंदे है या फरिश्ते! जल्लाद कानों को हाथ लगा रहे थे।

पहले अंगुलि काटी गई, फिर कलाई, फिर कोहनी और फिर बाह की बारी आई। इसी तरह पैरों के अंगूठे, अंगुलिया और फिर टखने, घुटने और जांघें। धड़ को भी अब अलग किया जाना था। बीच में गरदन काटी जानी थी। पर धन्य गुरु के सिंह! कही 'सी' तक नही की। न ही आसू बहे। हंसते-हंसते मौत को गले लगा लिया। सिर धड़ से अलग कर दिया गया।

इस शहादत के बारे में सुन कर सारे पंजाब का दिल धड़क उठा। आखों में लहू उतरा। जोश में उबाल आया। सारे पंजाब का खून खौल उठा। अंधड़ चढ रहे थे। कुछ होने वाला था। तूफान जन्म ले रहा था, शहीदों के लहू में। तिनकों के नीचे आग रखी जा रही थी।

●●

समझौता

'शहादतें भी सिक्खों के हिस्से आयी थी......इस कुभ में कोई हिंदू आगे नहीं आता था ?' मनसा सिंह ने सवाल किया ।

बिजला सिंह ने जवाब दिया, 'आते क्यों नही थे ! उनका नाम सरकारी कागजों पर चढता नही था । हिंदू तो घड़े की मछली थे । घर की मुर्गी दाल बराबर, जब जी किया, जब दिल मे आया, जिबह कर लिया । हुकूमत हिंदू के कत्ल को कोई सम्मान नही देती थी । मूजी मार लिया, या हिंदू मार लिया, एक ही बात थी । हिंदुओं को हुकूमत बुजदिल समझती थी । हिंदू भी खैरख्वाह थे हुकूमत के, भले ही भीतर ही भीतर उनकी हमदर्दी सिक्खों के साथ थी । जाहिरा तौर पर वे हुकूमत का ही दम भरते । सिंहों और हिंदुओं का आपस में समझौता था, तभी तो सिंह फलते-फूलते थे । यों ही कड़वी बेल की तरह वे नही बढ़ रहे थे ! हिंदू ही तो उन्हे गले लगाते थे । अपने घर में छुपा कर रखते थे । अन्न का भंडार हिंदुओं के घर से ही पूरा होता । रात-बिरात वही काम आते थे । सिंह तो बदनाम थे । जो नेतृत्व करे, वही हुकूमत का बागी । न घर, न ठौह, न ठिकाना, घर-गृहस्थी वाली तो कोई बात ही नही थी । हिंदू हुकूमत की आखों में काजल डाल देते, और हुकूमत आंखों को मटकाती रहती । हुकूमत ने ज़रा-सी ढील की, कि हिंदुओं ने सिक्खों को प्रोत्साहित किया और सिंहों का दाव लग गया । सिंहों की पीठ पर हिंदुओं का ही हाथ था । और किस मां को मौसी पुकार सकते थे ? हिंदू सिंह का असर कबूल कर लेते, वे सहजधारी कहे जाते । सहजधारी भी हुकूमत की आंखों में चुभता, लेकिन हुकूमत इतनी अक्लमंद ज़रूर थी कि वह अपने चारों ओर वैरी ही वैरी इकट्ठे नहीं करना चाहती थी । चौधरी, अगुवा, दादा मुसलमान, जो गलती मे या रंजिश से किसी हिंदू को कत्ल कर देता, तो सूबे की तरफ से उसे इनाम न मिलता, बल्कि झिड़कियों की गठरी बांध कर ही वह घर लौटता और सारे इलाके में बदनाम भी हो जाता । वैसे मुसलमानों और हिंदुओं का खाना साझा था, क्योंकि असल में दोनों ही दुखी थे । जुल्म दोनों पर एक-सा होता । लड़कियां

अगर हिंदुओं की उठायी जाती थी, तो मुसलमानो की भी कोई बेटी कोरी कुआरी नही ब्याही जाती थी। आम जनता हुकूमत से परेशान थी। कोई विरला ही हुकूमत का गुणगान करता था। गुलछर्रे सिर्फ उनके घर में ही उडते। बाकी तो मुसलमानों के घर भाग ही भुनती। सिंहों के भुलावे में हिंदू भी सूली पर चढ़ जाता और मुसलमान भी कत्ल हो जाता। अंधा शराबी अहलकार यह नही देखता था कि ये सिंह हैं या मुसलमान फकीर। उसे तो सिर चाहिए था। सिर देखने वाले कहां एक-एक करके देखते हैं! कितने सिर हैं? पाच! यह लो रसीद और खजाने से इनाम की रकम ले जाओ।'

'तब तो बकरियों से ज्यादा सिंह शहीद होते होंगे!' धारासिंह ने कहा।

'जकरिया खा ने एक बार सिर इकट्ठे करके ढेर बना दिया। वह ढेर इतना ऊंचा हो गया कि एक मीनार बन गयी और हाकिमों ने सूबे को दिखाया। सूबे के हाथो के तोते उड़ गये, कि यह गुनाह है! यह खुदा का कहर है! जकरिया खा, देखना, ये सिंह एक दिन तुझे कच्चा ही खा जायेंगे। ये सारे सिर सिंहों के हैं! न, हो नही सकते। यह सब झूठ है। एक-एक सिर दस-दस बार दिखाया जाता, और दस-दस बार खजाने से रकम वसूल की जाती। गजब खुदा का! इतने सिर इकट्ठे हो और सिक्ख फिर भी पजाब में कुलबुला रहे हो......—आप एक सिर काटते है, ये दूने-सवाये होते जाते हैं! इनकी जिन्स ही कुछ अलग है! सूबा मुलतान ने कहा।

'इसका मतलब है, हाकिम सारी बात समझते थे, पर फिर भी आंख से अंधे और कान से बहरे थे। कार्रवाई दिखानी थी, इसलिए अंधे को बहरा घसीटे जा रहा था,' मनसा सिंह बोला।

विजला सिंह ने कहा, 'हुकूमत के काम ऐसे ही चला करते हैं, दोस्त! सच को झूठ और झूठ को सच करके दिखाना, इसी का नाम अहलकारी है। हाकिम खुश तो खुदा खुश!'

'अपनी बात तो फिर बीच मे ही रह गई।'

'बात तो हिंदू की हो रही थी ना! पंजाब का हर घर, पंजाब की हर चौगाठ अपने बड़े बेटे को सिख बनाती और वही लड़का जत्थे में मिल कर सिंह बन जाता। हुकूमत उन्हे लुटेरे कहती और चोरों के नाम के साथ उनका नाम जोड़ती। क्या ये सिंह हिन्दू नहीं? यह सारा प्रताप ही हिन्दुओं का है। इनके सिर पर ही ऊंचा बोल लेते हैं जत्थे। आदमी किल्ले पर ही शेर होता है। हर काम को पूरा करना, हर काम को आखिरी मंजिल तक पहुंचाना, हर तरह की मदद करना, यह हिन्दुओं का हिस्सा है। जो सामने आ गया, वही हुकूमत का वैरी, बाकी सब तो सील-मुर्ग थे। घर की चारदीवारी के अंदर सिंह और

बाहर हिन्दू-तिलकधारी। एक शहादत का मैं जिक्र कर रहा हूं। पर इसके अलावा भी कई शहादतें हैं, जिनका हमें पता नहीं है,' [illegible] सिंह ने कहा।

'इतनी बड़ी शहादत कौन-सी थी?' [illegible] सिंह बोल उठा।

'हिन्दुओं और सिहों का सांझा रक्त [illegible] नदियों में बह रहा था। यही साझा रक्त एक दिन रंग लायेगा—[illegible] थी। अच्छे दिन कभी तो आयेंगे। पंजाब इंतजार कर रहा [illegible] तब तुम्हारे झंडो की नदियां तुम्हारा ही गीत गायेंगी। कोई गैर नहीं रहेगा, कोई [illegible] नहीं रहेगा......नहीं रहेगी, यह [illegible]!'



हकीकत राय

दूध के दांत अभी नहीं टूटे थे। ब्याह रचा दिया मां-बाप ने हकीकत का। मेरा बेटा बड़ा हो कर दीवान बनेगा, मां हर वक्त इन्हीं सपनों में डूबी रहती। कभी-कभी पिता भी उसकी हां में अपनी हां जोड़ देते। हकीकत अभी बच्चा ही था। घर में बहू आ गयी। उसने अभी हाथ से गुड़िया-खिलौने भी नहीं छोडे थे। हकीकत अभी गिल्ली-डंडा खेलता था। मां बहू वाली बन गयी और बेटा गृहस्थ। पानी वार के पीया मां ने। बहू के चारों तरफ वह डोलती फिरती। पर इधर हकीकत सिहों के रास्ते पर चल पडा था। मेरा मतलब जत्थे से नहीं है। स्यालकोट में लोग सिहों से हमदर्दी तो रखते ही थे। सिहों की बातें तो छिडती ही रहती थी। हर चौक मे, हर महफिल में, हर दुकान पर, चौसर की हर बाजी पर न और कोई कथा थी, न कहानी—था तो सिक्ख थे, या पंजाब। तीसरी बात कोई छेड़ता ही नहीं था। हकीकत बुजुर्गों की बातें सुन-सुन कर पक्का होता गया। चेहरे-मुहरे से वह हिन्दू था, पर भीतर से वह धीरे-धीरे पक्का सिक्ख बनता जा रहा था। उसके इरादे सिहों से मेल खाने लगे, लेकिन मां-बाप तो कुछ और आस लगाये बैठे थे हकीकत राय से। मेरा बेटा दीवान बनेगा, नाम कमायेगा सरकारे दरबार मे। पूत तो पैदा होते ही जवान होते हैं। मां दलीलों की मिट्टी गूंधती, महल बनाती, महल ढह जाते!' बिजला सिंह ने रुक कर सांस ली।

'लोग जान-बूझ कर गुलामी की तख्ती गले में डालने को क्यों तैयार हो जाते थे?' धारा सिंह ने पूछा।

'खत्री का बेटा या तराजू तोले या नौकरी करे......और कौन-मुगदर उठायेगा वह! खेती-बाड़ी को वे दूर से ही सात बार सलाम कर देते। इसलिए हिन्दू नौकरी को ही उत्तम काम समझता है। मांगने पर चाहे कोई भीख भी न दे, पर करेगा नौकरी ही। हकीकत राय का बाप भागमल भी नौकर था—सरकारी। बारिश हो, अंधड़ चल रहा हो, बादल गरज रहा हो, तूफान आ जाये, तनख्वाह तो घर में आ ही जायेगी। सिंह लूट ले, या नादिर लूट कर ले

जाये, उन्हें तनख्वाह तो ले ही लेनी है। लागियों का क्या है, उन्हें तो लाग चाहिए, चाहे घर जाते ही विधवा हो जाये। इसीलिए नौकरी को उत्तम समझा जाता। हमें क्या। हमें कौन-सा राज ले लेना है, हमें तो नौकरी करनी है! चाहे कोई मुग़ल आये या पठान। हमारी तरफ से चाहे ईरानी आ जायें चाहे तूरानी। बैल को तो कोल्हू में ही जुतना है। कोल्हू का बैल इससे आगे सोच भी क्या सकता है! हिन्दुओं और सिक्खों में सिर्फ नजरिये का ही फर्क था। हिन्दू गुलामी कबूल कर लेते और सिक्ख कबूल न करते। एक कौम जबर सहना जानती थी और दूसरी टक्कर लेने के लिए सिर की बाजी लगाने के लिए तैयार बैठी थी।' बिजला सिंह ने कहा।

'हकीकत राय भी सिंहों की बोली बोलता होगा!' धारा सिंह ने कहा।

'अभी तो वह बच्चा ही था बोली तो समझता ही नहीं था। सिंहों की बोली हर आदमी तो समझ नहीं सकता। दिनो-दिन मन कड़ा होता गया। हकीकत सिंहों की ओर झुकता गया। उसके इरादे मजबूत होते गये। हर नये सूरज के साथ दीवार ऊंची उठती गयी।'

'हकीकत भी दीवान बनना चाहता था?' बहुत समय के पश्चात् धारा सिंह बोला।

'दीवान बनने को किसका जी नहीं चाहता? लेकिन दीवान बनना इतना आसान काम तो है नहीं! पानी का कटोरा थोड़े ही है कि घड़े से भरा और पी लिया। सब मां-बाप चाहते हैं कि हमारा बेटा दरबार सरकार में सम्मान पाये। हर आदमी सपना देखता है, लेकिन सभी सपने पूरे थोड़े ही होते हैं! मां-बाप ने हकीकत को स्कूल में भर्ती करा दिया। मौलवी ने पहले दिन ही बिस्मिल्ला कहकर तख्ती पर पूरना डाला। कुरान शरीफ के सुधारे हकीकत राय ने कुछ महीनों में ही याद कर लिये। बटेर की तरह बोलता घूमता हकीकत राय सारी मस्जिद में। हाकिमों के बेटे ईर्ष्या करने लगे। पढ़ने-लिखने के मामले में फिसड्डी,थे......पर मौलवी बहुत खुश था। एक साल में ही हकीकत ने अरबी भी सीख ली। मस्जिद में जब भी मौलवी किसी बच्चे की बात करता, तो यही कहता कि दो सालों में हकीकत हाफिज बन जायेगा। जवानी चढ़ने तक यह आलम बन जायेगा। दीवान से नीचे इसे नौकरी नहीं मिलेगी। जब लड़के ये बातें सुनते, तो उनके सीने पर कटार चल जाती। उनके दिल में गांठ बंध गयी। यह लड़का जरूर किसी दिन हमारा सिर मूंडेगा। हकीकत को किसी तरह मौलवी की नजरों से गिराया जाये—यही तरीके सोच रहे थे। किताबी कीड़ा बन गया है। हकीकत रात-दिन कुरान पढ़ता, कुरान की बातें करता; कुरान के दृष्टांत देता। कुरान क्या है? अगर लोग कुरान को समझ लें तो दुनिया जन्नत बन जाये। स्यालकोट में चर्चे शुरू हो गये हकीकत के मुसलमान हकीकत को अपना बेटा बनाना चाहते थे। पर मां तो उस

बनने के ख्वाब देख रही थी। लेकिन होनी को कौन रोके! जब होनी होती है, तो बर्तन उलटे हो जाते हैं!' बिजला सिंह ने अपने साथियों की ओर देखा। धारा सिंह कबूतरों की तरह आखे मींच रहा था।

बिजला सिंह कहने लगा, 'धारा सिंह की तरह एक दिन मौलवी ने दिन में ही भाग पी ली। कबूतर की तरह कभी वह आंखें बद करता, कभी खोल लेता। लड़कों की लगाम खुल गयी। लड़कों ने बस्ते वहीं छोड़े और खुद पीपल पर जा चढ़े। वहीं खेलने लगे। हकीकत भी उनके साथ था। किसी बात पर झगड़ा हो गया। झगडा तकरार मे बदल गया। लड़के कह रहे थे, पिदाई की बारी हकीकत की है। वह कह रहा था, उसकी पिदाई हो चुकी है। लड़के कह रहे थे—हकीकत झूठा है। वह अपनी बात पर अड़ा रहा और लड़कों ने शोर मचा दिया। असल मे हकीकत सच्चा था। उसने उन्हें यकीन दिलाने के लिए देवी मां की सौंगध खायी, लेकिन शैतान बच्चों ने उसका बड़ा मजाक उड़ाया और उसकी भवानी की सौगंध को फूंक मार कर उडा दिया। हकीकत को इस बात का बड़ा दुःख हुआ। हकीकत अकेला था और वे बीस थे।

—पत्थर की मूरत और वह भी औरत की! कसम खाते हुए शर्म नहीं आयी! कसम खानी ही थी, तो किसी मरद की खाते!। एक लड़के ने कहा।

—इनके मजहब मे औरतें ही प्रधान हैं। कोई मरद हो तो कसम खाये भी! दूसरे लड़के ने कहा।

—किसी के मजहब में दखल नही दिया करते, मेरे हमसाये, मां-बाप-जाये! मैं तुम्हारा सहपाठी हूं। तुम्हारा भाई हूं! हकीकत ने कहा।

—बात तो ठीक है, हम साये, मां-बाप-जाये! लेकिन हमसाये अगर मुसलमान हों तो? अगर काफिर की दीवार साझी हो, तो फिर कैसा सांझा! उसका धर्म झूठा और हमारा ईमान इलाही। फर्क नही है जमीन-आसमान जैसा? एक चालाक लड़के ने पूछा।

—धर्म धर्म है। हर धर्म इलाही है। खुदाई आवाज है। हिन्दू और मुसलमान सभी यहीं की पैदावार हैं। खुदा की इन्सान की एक मखलूक है। उसके लिए हिन्दू-मुसलमान दायीं-बायीं आख हैं। इन्सान पैदा होता है, तो न वह हिन्दू होता है, न मुसलमान। ये सारे ठप्पे समाज लगाता है। इसीलिए सभी को अपना-अपना धर्म प्यारा है। हम पढ़ने आये हैं, किसी के धर्म को लेकर लड़ने नही आये हैं! हकीकत राय ने अपने साथियों को समझाया।

—काफिर का पूत कुफ्र तोलता है। लिये घूमता है बड़ी देवी! ले जा मां के पास। कहीं कोई हाकिम हरम मे न डाल ले! हिन्दू औरतें बड़ी मुलायम होती हैं। एक दम मलाई। अरे काफिर! पढ़ता है कुरान और कसम खाता है गश्ती देवी की!......चौधरी का लड़का बोल उठा।

—जबान को लगाम दो, चौधरी ! मेरी देवी को गश्ती कह रहे हो ! तुम्हारी फातिमा क्या कम गश्ती थी ?......

हकीकत अभी अपनी बात भी पूरी नही कर पाया था, कि सभी लड़कों ने मिल कर उसे जमीन पर लिटा लिया, और मार-मार कर शरीर सुजा दिया। इतने में मौलवी का नशा उखड़ गया। सारे मदरसे में भूत नाच रहे थे। लड़के हकीकत को बिज्जू बनाये, घसीटे ला रहे थे।

एक लड़का बोला—इस काफिर की औलाद ने हमारी फातिमा को गश्ती कहा है। इसकी जुबान खींच लो। यह सांप है। काफिर है।

कहने वाला चौधरी का लड़का था।

—बात क्या हुई ? मौलवी ने पूछा।

—इसने इस्लाम की तौहीन की। हजरत बीबी फातिमा को गश्ती कहा है। इसे काजी के हवाले कर दो ! चौधरी का लड़का लाल-पीला हो रहा था। उसकी आंखें चिंगारियां उगल रही थीं।

—मौलवी साहिब, गाली पहले इन्होंने दी मेरी दुर्गा भवानी को। मैंने तो कुछ कहा ही नहीं। मैंने तो सिर्फ यही कहा था कि ये दोनों बहनें हैं। अगर यह गश्ती है, तो वह भी गश्ती है। आप ही बताइए, मेरा क्या कसूर है ? हकीकत राय ने जवाब दिया।

—हरामजादो ! घर से पढ़ने आये हो या लड़ने ? उल्लू के पट्ठो, चलो बैठो और पढ़ो ! मौलवी ने झाड़ पिलायी।

—पहले फैसला, फिर सबक। हम जा रहे हैं काजी के पास। चौधरी का लड़का उछल-उछल कर कह रहा था।

झगड़ा बच्चों के बीच का है। बड़ों के कान में बात मत डालो। सिर फट जायेंगे। मैं अभी इसके कान खींचता हूं। दुबारा कभी गाली नहीं देगा।...... मौलवी समझा रहा था।

छोकरे तो शैतान को आगे लगा लेते हैं, मौलवी को क्या गिनते थे ? उन्होंने शोर मचा दिया और अपने बस्ते-तख्तियां उठा कर घर की तरफ दौड़ गये। रात होने से पहले बात सारे शहर मे फैल गयी। जरा-सी आग थी, पर जगल की आग में तबदील हो गयी। बात काजी तक जा पहुंची। बुजुर्गों ने विचार किया ताकि बात ठण्डी पड जाये, लेकिन शैतान की जड़ लड़के कैसे बैठे रहते। उन्होंने सारे स्यालकोट को सिर पर उठा लिया।

हकीकत के पिता भागमल और मां खुद हाथ जोड़ कर पहुंचे। माफी मांगी। मिन्नतें कीं, लड़कों-लड़कों का झगड़ा है......बच्चे हैं, बड़े होंगे तो अपने आप समझ जायेंगे। कल ये फिर एक हो जायेंगे। आप मुझे गालियां दीजिए। ने झोली फैला रखी है, सबकी सब इसमे डाल लूंगी। मां कहे जा रही थी।

भूत एक घर से निकले दूसरे में जा घुसे। एक घर में आग लगी, दूसरे मे मच उठी। काज़ी परेशान हो गया।

अगले दिन कचहरी बैठी। बयान हुए। भागमल ने बड़ी सेवा की थी, काज़ी, चौधरी और शहर के अन्य बड़े लोगों की। बुज़ुर्ग यह चाहते थे कि यह बात यों ही टल जाये। भागमल का वे बड़ा अहतराम करते थे, लेकिन भीड़ के मुह पर हाथ कौन रखे?

काज़ी ने ताड़ना देकर बात को रफ़ा-दफा कर दिया। मां ने घर आकर ठण्डे पानी का कटोरा पीया।

लेकिन आग को फिर कुरेद डाला गया। शिकायत अमीर बेग के पास पहुंची, जो उस समय स्यालकोट का हाकिम था। उसने भी बात पर धूल डालने की कोशिश की। हमारी दीवारें सांझी हैं। हमारा जद्दी-पुश्तैनी लिहाज-प्यार अभी बचा हुआ है। भागमल जैसा ईमानदार और शरीफ आदमी सारे इलाके मे नही मिल सकता। उसका इकलौता बेटा है। अगर गलती कर ही बैठा है, तो कान खींच दो, चार थप्पड़ लगाओ और समझा दो। लेकिन छोकरों ने तो गिलहरी की तरह आसमान सिर पर उठा रखा था। खबरें हकीकत के ससुराल में भी जा पहुंचीं। बटाले वाले भी आ गये। उन्होंने भी माफी मांगी। हाथ-पांव जोड़े। हकीकत की सास तो लकीरें निकाल रही थी। मुकद्दमा फिर मुफ्ती के सामने पेश हुआ। वह तो पहले ही लोहे का घन था। लोहा लाल हो गया। इस्लाम की तौहीन, शफा का मजाक! एक काफिर की इतनी जुर्रत! इसका फैसला भरी कचहरी में कत्ल किया जाएगा। हकीकत राय बंदीखाने मे कैद था। कोमल-कोमल हड्डियां...जजीरों में जकड़ा वह कचहरी मे पेश हुआ, चढ़ते सूरज के साथ।

—क्यों बालक, तुमने बीबी फातिमा को गाली दी? मुफ्ती ने पूछा।

—पहले इन लड़कों ने दुर्गा भवानी को गालियां दी थी।

—मैं सिर्फ यह पूछना चाहता हूं कि तुमने गाली दी या नहीं—पहले हो या बाद में?

—बाद में मैंने वैसा ही कहा, जैसा इन लड़कों ने मेरी भवानी के बारे में कहा था।

—जुर्म इकबाल है। इसकी सिर्फ एक ही सजा है—कबूल-इस्लाम। अगर मुजरिम इन्कार करे, तो गर्दन उड़ा दी जाये!"

हाहाकार मच गया सारे स्यालकोट में।

माता कौरां भरी कचहरी में आंचल फैलाये कह रही थी—मेरी सारी दौलत, मेरा मकान, मेरी सारी जायदाद जुर्माने में ले लो, पर मेरी आंखों के नूर, मेरे लड़के को बख्श दो। अगर यह कसूरवार है, तो मैं माफी मांगती हूं। मेरा एक ही बेटा है। मुझे आज से अन्धा मत बनाओ। मुफ्ती साहब, आप भी बाल-बच्चों वाले है!

लेकिन नक्कारखाने मे तूती की आवाज कौन सुनता है ?

—क्यों छोकरे, तुझे इस्लाम कबूल है ?

—मजहब नही बदला जाता, यह कहना कुर्रान का है। बंदा एक मजहब पर ईमान रखे। जब आदमी दूसरा मजहब अख्तियार करता है, तो वह काफिर हो जाता है। मैंने इस्लाम की तालीम ली है, इसलिए मैं मजहब बदलने के लिए तैयार नही हूं! हकीकत ने अपना फैसला सुना दिया।

—इसकी जुबान से साजिश की बू आती है। यह हुकूमत के लिए कभी भी खतरनाक साबित हो सकता है। इसलिए इसकी सजा बहाल रखी जाये। ले जाओ इसे कैदखाने में और बन्द कर दो!

भागमल और उसके साथियों ने मुफ्ती के पास कई सिफारिशें पहुंचवाई। कई सम्मानित लोगों ने उसके आगे हाथ जोड़े, पर उसने तो एक ही 'न' पकड़ ली थी।

अगले दिन कत्लगाह मे हकीकत से पूछा गया :

—खूबसूरत बेगम की लड़की, चार गाव जागीर, एक बढिया पद... ये सब सरकार की तरफ से। पाच हज़ार मुहरें मैं अपने घर से दूंगा। तुम, बरखुरदार, इस्लाम कबूल कर लो। मैं अपने घर से भी डोली दे सकता हूं। तुम्हारी मां का दुःख मुझसे देखा नही जाता। मान जाओ, बेटा, मान जाओ! मुफ्ती कह रहा था।

—इस्लाम कबूल करने से क्या मौत नही आएगी? मौत को तो आना ही है। अब तो घोड़ी लेकर आई है। बारात चढने दो। इससे सुन्दर बेला फिर नही आएगी, मां! तुम समझ लेना, मेरा एक ही बेटा था, उसे भी धर्म की बेदी पर कुर्बान कर दिया। हकीकत धर्म नही छोड सकता, जान दे सकता है।

जो तोहे प्रेम खेलन का चाव,
सिर धर तली गली मोरी आव।

मांयें तो सिर पर सेहरा बाध कर विदा करती आई हैं। खत्रानियां तो 'गाना' बांध कर विदा करती थी। मा, तुम्हारी आखों मे आसू हैं, पोंछ डालो ये आसू! मेरा रास्ता मत रोको। मंजिल बड़ी खूबसूरत है। मुझे आज हिलोरें ले लेने दो। यह घड़ी फिर लौट कर नही आएगी। मां, मेरी एक भाभी ही होती। मेंहदी भरे हाथो से मुझे सुरमा डालती। मेरी कोई बहन नही है। किसी पड़ोसिन को बुला लो। मेरी घोडी की बागें ही गूंथ दे। बापू से कहो, मुहरें लुटाये, बेटा घोड़ी पर सवार हुआ है। जिंदगी मे इससे ज्यादा खूबसूरत दिन फिर कभी नही आएगा। मां, अपनी बहू को कहना, तेरा-मेरा इतना ही रिश्ता था। फिर मिलेंगे। मैं फिर आऊंगा—किसी मा का पेट नौ महीने गन्दा करके। फिर सही। परसों बसन्त पंचमी है। फूल खिले हुए हैं। रुत का देवता मुस्करा रहा है। मा, तुम अपने आगन में फूल लगा लो, सारी उम्र महक देंगे। मां,

मुझे भरी रात मे विदा करो। कर लेने दो उन्हें अपने मन की। गाय कसाइयों के हाथ में आ गई है। ये बुलबुलें हमेशा बागों मे नही बोलेंगी। पहले किसी ने धर्म छोड़ा है, जो मैं छोड दूं !...हकीकत राय मुस्करा रहा था।

अचानक एक मुफ्ती लाहौर से आ गया। जब उसने यह घटना सुनी, तो उसने फरमान जारी किया कि यह तमाशा लाहौर मे होगा। यहां भीड़ नहीं जुड़ती। वहां मजमा लग जाएगा। इन काफिरो ने इस्लाम को मजाक समझ रखा है। इन्हें मौत का ख़ौफ ही नही है। इनकी खाल मे डर ही नहीं है।

हकीकत को लाहौर ले जाया गया।

बसन्त पचमी के दिन हकीकत को जल्लादो के सामने पेश किया गया। जल्लादो ने जंजीरें खीची।

—क्यों तकलीफ करते हो! मैं खुद ही चलता हूं कत्लगाह की तरफ... हकीकत बोला। मौत से कैसा डर! मौत का दिन ही तो सबसे खूबसूरत दिन है!

—जिस कौम में इस तरह के बालक पैदा होते हैं, वह हमेशा जिंदा रहती है, खुदाया रहम! हम एक बेकसूर, बेगुनाह, मासूम बालक की गर्दन उतारने जा रहे हैं! जल्लाद ने एक बार कलमा पढा।

चिन्तित मत हो, मेरे बुजुर्ग। इस हुकूमत का कानून अन्धे की लाठी है। इसके थोड़े ही दिन बचे हैं...चलिए, मैं आपको अपनी गर्दन पेश करता हूं।

कहते हैं, धर्मी हकीकत राय ने खुद ही अपनी गर्दन झुकाई और जल्लादों ने एक ही वार में गर्दन को धड़ से अलग कर दिया। सारे लाहौर ने तमाशा देखा।

सारे पंजाब के हिन्दुओ और मुसलमानों ने खून के आंसू बहाये। अब कौम मे हलचल मची। इस शहादत ने पूरे पंजाब मे एक जोश भड़का दिया। सारे हिन्दू सिक्खों के हमदर्द बन गये। कौम ने नई करवट बदली।

—इसकी कब्र पर बसन्त के फूल खिलेंगे। हकीकत राय मर गया, मगर इसका मुबारक नाम कयामत तक जिंदा रहेगा...मुफ्ती के शब्द थे।

अभी एक ही कुर्बानी के बारे मे सुनकर आंसू गिराने लगे! इस जैसी बहुत-सी कुर्बानिया हैं, जिनके बारे में हमने कभी कुछ नही सुना है। हिन्दू भी सिक्खों के कन्धे से कन्धा जोड़ने लगे।

फुलवाडी मे अब शहीदी फूल खिलेंगे। बसन्त हर साल आएगा और हकीकत की समाधि पर हर साल फूल खिलेगे। फूल चढ़ेंगे। मायें मनौतियां मनाने आया करेंगी कि उनकी कोख से हकीकत जैसे बेटे पैदा हों। पंजाब गर्व करेगा इन शहीदों पर। बहारें फिर आएगी।



सुरमे वाली आंख

झांझरें आधी रात को तो छनकतीं ही हैं, लेकिन गुल्लूबाई मिरासिन के आंगन में वे दिन में ही बोलने लगतीं। घुंघरू तो हर वक्त खनकते ही रहते। बिल्लौरी चूड़ियों की खनक पड़ोसी भरी दोपहर को भी सुनते और आधी रात ढलने के बाद बेचैन झांझरें सोने भी न देतीं। घुंघरू, तबला और सारंगी अपनी तानों से सारी गली को सिर पर उठाये फिरते थे। गुल्लूबाई मस्त थी। मोरनी नाचती रहती और जवानी के रस को चाटती रहती।

लोग तो खुदा की तेरहवीं पर आये हुए थे, पर गुल्लूबाई थी, जो बारात में आई लगती थी। हर रोज़ बेगमी चावलों की देगची चढ़ती, न्याज़ रोज बटती। नौकर-चाकर चूरमा कूटते और पीरों के मज़ारों पर चढ़ाने जाते। अगर कमाई हराम की आती थी, तो गुल्लूबाई के हाथों में भी शखावत थी। कोई सवाली दरवाजे से खाली हाथ नहीं लौटता था। शखावत और हलाल की बात सिर्फ समझने की ही है—उसके लिए तो वही दौलत हक-हलाल और पांच नाखूनों की कमाई थी।

जवानी में वह मुट्ठियां भर-भर कर हुस्न बेचती रही। अधेड़ अवस्था में मोहरें बांटीं—बुढ़ापे में क्या मोती दान करेगी ?

गुल्लुबाई की सुरमे वाली आंख कलेजे में आग लगा देती। कलेजा निकाल कर ले जाती छबीली नार। कल की पैदा हुई छोकरियां गुल्लूबाई के पासंग बराबर भी नहीं थीं। गुल्लूबाई अपने आप में एक मुकम्मिल तस्वीर थी। गज़ल के शेर तो सिर्फ उसकी एक आंख थे। पूरी गज़ल थी वह अपने आप में।

गाने-बजाने में तो मिरासिनें हातिम होती ही हैं, लेकिन उसके डेरे की धूम लाहौर-अमृतसर में अपने झण्डे गाड़ चुकी थी। उसके मुजरे ने दिल्ली तक नाम कमा रखा था। सरहंद, जालन्धर और अमृतसर वाले उस पर लट्टू हुए घूमते थे। दिल्ली के बिगड़े हुए रईस गुल्लूबाई पर अपना दिल फेंकते।

एक बार वह बुरहानपुर चली गई। जितनी रकम मुजरे में इकट्ठी की, उसे और इनाम-कराम को पल्ले में बांध जब वह चलने लगी, तो घोड़ों का एक

सौदागर आ गया। अरबी घोड़ों की एक जोड़ी उसने अपने यार के लिए खरीद ली। लोगों ने पूछा, तो हंस कर बोली—यार के लिए कोई सौगात तो ले जानी ही पड़ेगी न! अवध में मुजरा हुआ, तो मोहरों की वर्षा हुई। लौटते हुए उसने एक कण्ठी खरीद ली—पसन्द जो आ गई थी। हैदराबाद, दक्कन के नवाब के बेटे का ब्याह था। बुलावा आया था। कई मुजरे एक साथ हुए हैदराबाद में, सारा हिन्दुस्तान वहां इकट्ठा था, लेकिन हीरों की लड़ सिर्फ गुल्लूबाई को नसीब हुई।

चारमीनार, गोलकुण्डा की हवा खाने के बाद जब सलाम करने गई गुल्लूबाई, तो बीस हजार की अगूठी, शहजादे को नज़राना दे आई। भोपाल वालों ने बुलाया। जितने दिन मुजरा चला, वह शाही मेहमान बनी रही। तबीयत आ गई कुछ दिन और ठहरने को। मकान किराये पर चाहिए था। एक हवेली वाले से किराया पूछा, तो वह बोला—यहा मकान किराये पर देने का रिवाज नहीं है। हवेली खरीद कर रहिए।

कीमत पूछी। दस हज़ार थी। आठ पर सौदा हो गया। लेकिन जब रकम झोली में डाली गई, तो वह दस हज़ार थी। दस दिन उज्जैन और माडू देखने में निकल गये। सिर्फ एक दिन ही हवेली मे सोई। एक दिन सोई और कीमत दी दस हज़ार! जब बिस्तर गोल किया, तो जाती बार मकान-मालिक को बुलवाया और चाबिया उसके हवाले कर दीं। मालिक हैरान था, बोला—माफ कीजिए, मुझसे चौकीदारी नही हो सकेगी। कोई और आदमी ढूंढ लीजिए। गुल्लूबाई ने फरमाया—यह हवेली तुम्हारी है। हम सिर पर उठा कर नही ले जाएंगे। यह तुम्हारी नज़र है।

—मैं रकम नही लौटा सकूंगा।

—नजर है, फिर रकम का क्या सवाल! तुमने मुझे अमानत दी थी। वही अमानत तुम्हे लौटा रही हूं।

—मैंने तो पैसे ले लिये थे। मेरी मिल्कियत खत्म हो गई।

—मिल्कियत कैसी! ज़मीन खुदा की, आदमी मेहमान। एक रात रहा, दिन निकला, तो अपनी राह चल दिया। तुम ज़मीन के मालिक हो। हम तो परदेसी हैं। अच्छा, खुदा हाफिज़!

यह थी गुल्लूबाई। एक गजल थी। एक राग थी। एक पिटारी थी हुस्न की। उसकी रागिनी में सोज था। उसकी झांझरो मे सोज था। उसकी कमर हिचकोले खाती, तो ज़मीन भी डोलती और आसमान भी डोलता। हातिमताई को उसने अपने पल्लू मे बांध रखा था। एक फितना था, जो लाहौर में पटोलों में लिपटा हुआ था। एक फुलझड़ी थी, जो आतिशबाज के हाथ में थी।

शाही क़िला, लाहौर मे मुजरा था; दूल्हा था खान बहादुर ज़करिया खान और महफिल की शमा थी गुल्लूबाई। गले बीस नर्तकियां आग के बगूले

की तरह लपटें झपकाती थी, लेकिन जो गजब हुस्न गुल्लूबाई पर था, बस खुदा ही खैर करे! लपटों से भरे मुखड़े महफिल की शमा की लौ को ठण्डा न कर सके। शमा जल रही थी, परवानों के झुरमुट में। शरमाते-संकुचाते घुंघरू भी बोल उठे। सारंगी का गज रूह खींच कर ले गया लोगों की। मेहमान चाहे गिनती के ही थे, फिर भी ठाठ बंधा हुआ था। कसूर के चौधरी, मुलतान से आया मेहमान और मंडियाले से नया आया परदेसी; भले गांव में नम्बरदार ही था, जवान मस्सा रंघड़ भी महफिल का सिंगार था।

नाचती हुई गुल्लूबाई के बोल उभरे—

'लाखों के बोल सहे सांवरिया तेरे लिए...'

गुल्लूबाई ने महफिल को लूट कर अपनी झोली भर ली। गूंगे घुंघरू भी बोल उठे। महफिल झूम रही थी। नशे में आ गई थी। और गुल्लूबाई नाच-नाच कर सब के दिल को नचाये जा रही थी।

—सिंह आ गये! एक आवाज आई।

—कहां? जकरिया खां ने कहा।

—लाहौर, यक्की दरवाजे पर। उन्होंने दुकानें लूट ली हैं और चुंगी वाली लोहे की अलमारी उठा ले गये हैं, जिसमें दस हज़ार मुहरें थीं। मामला इकट्ठा हो रहा था। किसी ने मुकाबला नहीं किया। डर के मारे हम भाग उठे.... अहलकार बता रहा था।

—अब कहां हैं?

—हिरन हो गये।

—हाय मेरा मकान! मेरा भाई, मेरी भाभी! गुल्लूबाई की आवाज थी।

—तुम्हारे मकान को क्या हुआ? तुम कौन-से भाई-भौजाई ले आई? सारा मजा किरकिरा कर दिया। बेस्वादी पैदा हो गई। मुजरा बरखास्त! जकरिया खां ने हुक्म दिया।

सारे मेहमान उठ खड़े हुए। साजिंदों ने साज़ सम्भाले। जकरिया खां हरम में चला गया। गुल्लूबाई जाते-जाते सलाम करने गई हरम में।

—बैठो! अभी तो पाव भी मैले नहीं हुए। अभी जा रही हो! अभी तो रात भी गहरी नहीं हुई! ज़रा भीगने दो रात को। उठाओ शराब की सुराही, जरा गम ग़लत किया जाये। इन सिंहों ने जान आज़ाब में डाल दी है। अब ये लाहौर तक आ पहुंचे। कल किले का दरवाजा तोड़ने लगेंगे। ईरानी सूबेदार को ये क्या समझते हैं? अब ईरान से इजाज़त लेनी पड़ती है कि इन सिंहों का क्या किया जाये। पहले दिल्ली वालों की मिन्नतें करनी पड़ती थीं और अब ईरान के सामने एड़ियां रगड़नी पड़ती हैं। ईरानी सूबेदार तो मिट्टी का माधो है। अन्धा घोड़ा। औरत, शराब—दूसरी कोई बात ही नहीं। वहशी है, एकदम वहशी!'

और ये सिंह ! खून ही पी लिया है इन्होंने मेरा । जकरिया खां ने एक ही घूंट में पूरा गिलास खाली कर दिया ।

—आपने भी तो कम गुलछर्रे नहीं उड़ाये हैं । उनका वक्त आया है, उन्हें भी अपना मुंह नमकीन कर लेने दीजिए । कभी दादा की, और कभी पोते की । जुबान का स्वाद बदले. फिर लुत्फ आता है जिन्दगी का ! गुल्लूबाई ने कहा ।

यह पानी का तालाब, यह आबेहयात का चश्मा, यह गुरुओं की मस्जिद, यह अमृतसर—जब तक ये हैं, सिंह कभी कमजोर नहीं हो सकते । ये बिज्जू जब आबेहयात के तालाब में से नहा कर निकलते हैं, तो अली बन जाते हैं । अली अली का क्या मुकाबला ? अली का कोई मुकाबला नहीं है ।...जकरिया खां सोच रहा था ।

—दाना डालिए, बटेर इकट्ठे हों, पकड़ लीजिए । गुल्लूबाई ने कहा ।

—ये शिकारियों के जाल तोड़, साथ ले, भाग जाते हैं । इनके पीछे एक बहुत बड़ा जज्बा काम कर रहा है । हमारे सारे जज्बे मद्धम पड़ गये और नष्ट हो गये । हमने सब कुछ शराब के प्याले में घोल कर पी लिया । इन्होंने अभी तक छू कर भी नहीं देखी है—ये खुदा हैं । हम तो बंदे भी नहीं रहे । खुदा और बंदे का क्या मुकाबला ! जकरिया खां उदास था ।

—शराब के दो प्याले भर कर पीयो, मीत जी, सब गम भूल जायेंगे । सिंहों के साथ दोस्ती की जरूरत है । अब हुकूमत भी परायी है । लाहौर का सूबा अब दिल्ली के अधीन नहीं है, ईरान की छत्रछाया के नीचे है । ये ईरानी मुग़लों से भी ज्यादा कमीने हैं, भूखे, लीचड़ और दुष्ट हैं । इनकी भूख निकलेगी, तभी ये बादशाह बनेंगे । ये तो हैवान हैं । एक दिन में ही मेरी आंख लग गयी । भरी दुपहर में दो ईरानी मेरे घर में आ घुसे । मेरी दो नाचियों की हड्डियां कड़का गये : पंख तो उखाड़ते ही, पर हड्डियां तोड़ने की क्या बात !...वहशी ! बड़े भूखे हैं औरत के । औरत नजर आ जाये, बस लसूड़े की तरह चिपक जाते हैं !... गुल्लूबाई ने कहा ।

—शराब लाओ, शराब ! कमजात ! तुम तो अपनी कहानी ले बैठीं । हुस्न की बात करो । जोबन की बात करो । शराब का नशा खिले । नींद आ जाये । इन हरामजादे सिंहों ने मेरी नींद हराम कर दी है । सोने नहीं देता इनका डर । अमृतसर पर कड़ा पहरा । तालाब की सख्ती से हिफाजत...आदमी कहां हैं इस काम के लिए ?...शराब के नशे में जकरिया खां बड़बड़ा रहा था ।

गुल्लूबाई जल्दी में थी । मस्सा रंघड़ के साथ बात करके आयी थी । कड़ियल जवान, शेर जैसा तगड़ा...शीशम जैसा शरीर—खूबसूरत, आकर्षक... रात, मस्सा और मैं...रात कितनी सुहानी हो जायेगी...ऊपर से थोड़ी-सी शराब...जवानी हिचकोला खा जायेगी । आज तो झूला झूल लेने दे कमबख्त ! तेरी मनुहार तो कभी खत्म होगी नहीं ! हमारी रात को क्यों आग लगाये जा

रहा है ! सिंह ! सिंह ! इनका वक्त आया है, इन्हें भी चार दिन मौज मना लेने दे !... गुल्लू बाई ने एक प्याला और भर कर दिया ।

एक ही सांस में चढ़ा गया पट्ठा !

—इधर आ कमजात ! आधी रात को कहां जा रही है !

—मैं आप के तलुवे रगड़ती हूं । रात बहुत ठण्डी है । मैं आपके पास हूं । फिर कैसी ठण्डक !...गुल्लबाई तलुवे रगड़ने लगी ।

—अमृतसर का चौधरी किसे बनाया जाये ?

—अभी तक चुनाव ही नहीं हुआ ? चौधरी बनाना है...आप ईरान का बादशाह तो बना नहीं रहे !

सब बुज़दिल हैं...निकम्मे !...सिंहों के डर के मारे इनकी हवा सरकती है । सिंह बड़े दिलेर हैं । फौलादी जिस्म...बंजर शरीर...पहाड़ जैसे हौसले... जकरिया खां कह रहा था ।

—मेरी सुरमे वाली आंख ने महफिल में ही चुनाव कर लिया था... गुल्लूबाई ने कहा ।

—मैं भी तो सुनूं तुम्हारी पसन्द...शायद राय मिल जाये । तुमने घाट-घाट का पानी पीया है ! बोल, मेरी छमक छल्लो !

मेरी नजर मस्सा रंघड़ पर है । यह आदमी सिंहों को कील सकता है...गुल्लूबाई ने छाती के जोर से कहा ।

—कहीं याराना तो नहीं है मस्सा रंघड़ से ! रोज नये छोकरे तलाशती फिरती हो !

—पहली बार देखा है ।

—नजर तो पहली ही बुरी होती है ।

—नहीं, सरकार । मुझे शक की नजर से मत देखिए । मेरा तो उस बेचारे से कोई रिश्ता नहीं है !...अच्छा, सलाम अर्ज करती है बांदी ।

नशे की जद में आया ज़करिया खां बेसुध हो गया ।

वह ख्वाब देख रहा था : सिंह जनाजा उठाये लिये जा रहे थे, जिंदा जकरिया खां का । बेचारा डर के मारे बोल भी नहीं रहा था ।

—सिंह आ गये ! जकरिया खां चौंक कर उठ बैठा ।

पहली अजान हो रही थी । दिन चढ़ रहा था ।



चौधरी

चौधरी की पगड़ी मस्सा रंघड़ के सिर पर बांधी गयी।

ज़करिया खां ने अपनी कमर से तलवार खोलकर उसकी कमर में बांध दी। खिल्लत और एक अरबी घोड़ा भी दिया। छोकरा घर से लाहौर को देखने आया था, और लाहौर की बारादरियों से चौधरी के घोड़े पर सवार होकर वह निकला। उसकी झोली मुबारकों से भरी हुई थी। पगड़ी का तुर्रा हवा मे मोर की तरह नाच रहा था।

भरी कचहरी में ज़करिया खां ने कहा—ले रे बच्चू ! आज से तू अमृतसर का चौधरी ! सरकारी कागज़ों में तेरा नाम चढ गया। स्याह सफेद का तू मालिक। अपनी चौधराहट की लाज रखना। यह चुनाव चाहे सुरमे वाली आंख का है, लेकिन मैंने कल कचहरी मे उठते ही फैसला कर लिया था। शाही तलवार ललकार-ललकार कर यह कह रही है कि तुम्हारे सिर पर फर्ज़ों की गठरी रख दी गयी है। मंज़िल तक पहुचाना तुम्हारा काम है। लाहौर की सारी फौज, लाहौर का सारा खजाना, सब तुम्हारी मदद के लिए हैं। तुम्हे दस खून माफ। जैसे भी हो सके, ज़ोर-ज़ुल्म, सख्ती-तलवार, तोप-बारूद का भय दिखा कर एक बार अपनी दहशत पैदा कर दो। थर-थर कांपे अमृतसर। प्यार करो, दिलासे दो, घी के चूरमे खिलाओ, दूध पिलाओ, मलाई खिलानी पड़े या खीर, जो जी में आये, करो, बस सिंह तुमसे डरे-डर के मारे कोई सिंह अमृतसर की तरफ रुख न करे। तालाब भरवा दो। वह मस्जिद—सुनहरी बुर्जी वाली, गुंबदों वाली, चार दरवाज़ों वाला वह हिन्दुओं का मन्दिर। पानी मे खड़ी उस मस्जिदे-हिंद के दरवाज़े बंद कर दो। कोई सिंह न सलाम कर सके, न दुआ। बस, तुम्हारा इतना ही काम है। जाओ, अमृतसर मे डेरा डाल दो। आप खाओ और दूसरों को गुलछर्रे उड़ाने दो। अगर तुम इस काम में कामयाब हो गये, तो पंचहज़ारी बनवाना मेरा काम। अब ताज़ा रक्त की ज़रूरत है। पगड़ी का लाज रखनी है तुम्हे। ज़करिया खां ने उसकी पीठ पर थपकी दी।

—खान बहादुर, मस्से की खाल में रत्ती भर भय नहीं है और न ही मैं सिंहों से डरता हूं। खौफ खाना मैंने सीखा ही नहीं है। मेरे जीते-जी कोई

भी सिंह अमृतसर की हद में पांव नहीं रख सकेगा। मैं पैर काट दूंगा। मैं इनके भूत न निकाल दूं, तो मुझे मस्सा रंघड़ मत कहिए, ऐरा-गैरा जो जी में आये वह लीजिए। मैं रंघड़ों को लाज नहीं लगने दूंगा! मस्सा रंघड़ ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

—अच्छा भाई खुदा हाफिज!

मस्सा रंघड़ ने सूबे को सात बार सलाम किया और बहादुरी से घोड़े को एड़ लगायी। हवा से बातें करता घोड़ा यह गया, वह गया! लाहौर की चौबुर्जिया पीछे छूट गयी। पीछे एक घोड़ा आ रहा था—सरपट दौड़ता। मस्से ने पीछे घूम कर देखा। लगा कोई दोस्त है। घोड़े की चाल धीमी कर दी मस्से ने।

—अस्सलाम अलैकुम! हुजूर, आप लाहौर से परदेसियों की तरह निकल आये। जैसे आपका कोई जान-पहचान वाला वहां हो ही नहीं। गुल्लूबाई आपके इंतजार में हवेली के दरवाजे में सारी रात खड़े-खड़े अकड़ गयी। आपको आना था। दस्तरखान उसी तरह बिछा पड़ा है। ईमान से, गुल्लूबाई ने रो-रो कर आखें सुजा ली हैं। जब उसे पता चला कि आप लाहौर से चल पड़े हैं, तो वह गश खाकर धम्म से जमीन पर गिर पड़ी। बोली, आपको आना नहीं था, तो इकरार की क्या जरूरत थी? अच्छा, खुदा हाफिज!

घुड़सवार ने अपनी बात कह दी।

—माफ करना, वक्त नहीं मिला। फिर आयेंगे। अभी तो जवानी चढ़े हैं! बहुत जिंदगी पड़ी है। मिलेंगे, जरूर मिलेंगे। उससे नहीं मिलेंगे, तो और कौन-सी नय वाली है, जिससे बात करेंगे? मेरी वजह से उसे और उसके परिवार को जो कष्ट उठाना पड़ा है, उसके लिए मुझे दुःख है...मेरी तरफ से माफी मांग लेना। पर देखा जाये...'पंछी और परदेसी नहीं किसी के मीत'...।

चढ़ी हुई घटाएं कभी रुकी हैं! गये हुए बादल कभी लौटे हैं? पंछी लौटते हैं हर साल। मौसम आया, तो फिर लाहौर आयेंगे। फिर महफिलें सजेंगी। दीवानखानों में फिर रौनक होगी। फानूस जगेंगे, झांझर खनकेगी, दिल डोलेगा, बहार नाचेगी बाई के आंगन में। मैं भी झूमूंगा और लाहौर भी झूमेगा! मस्से ने कहा।

—ठीक कहते हैं, हुजूर! आदमजादियां कब किसी की सुनती हैं! हवा की बेटी ने जब हथेली पर मेंहदी लगा ली, तो जरा-सी खुशबू निखरी, बिखरी, फैली और जुलेखा बन गयी। यूसुफ चक्कर नहीं लगायेगा तो और क्या करेगा? किबला, गुल्लूबाई ने तोहफ़ा दिया है। नजराना तुच्छ-सा है, कबूल फरमाइए.. घुड़सवार ने कहा।

—जाहे-किस्मत! क्या है?

—ईरानी इत्र।

—अच्छा! शुक्रिया...

दोनों अपनी-अपनी राह चल दिये। एक तरफ मस्सा रंघड़ का घोड़ा हवा से बाजी लगा रहा था, दूसरी तरफ गुल्लूबाई का नौकर धूल उड़ाये जा रहा था। घड़ी भर में ही बहुत बड़ा फासला दोनों के बीच पैदा हो गया।

अमृतसर में खबर पहले ही पहुंच गयी थी। लोगों की ढाणियों की ढाणियां खडी थीं। सरकारी कर्मचारी भी फूलों के हार लिये खड़े थे।

लोगों ने मस्से की गरदन को फूलों के हारों से भर दिया। ज़मीन से बलिश्त भर ऊंचे थे मस्से के पांव।

मस्सा रंघड़ की मां ने पानी वार कर पीया। भाभियों ने सिरवारने किये, सदके किये बहनों ने। मुबारकें देने वालों ने मस्से की मां की झोली इतनी भर दी कि उछल-उछल पड़ रही थीं मुबारकें!

सम्मान देने आये ये चौधरी—चौधरी रामा, रंधावा, कन्हैये वाला करमा छीने गांव का, पाना नौशहरे का धरमदास जोधनगरिया। साहिब सिंघू, दिलबाग राय, हैबत खां नेशटे वाला। मजीठे वाला शेर गुल जाट, बटाले के भंडारी खत्री, जंडियाले के निरंजनिये साधू। इन्होंने इतनी बधाइयां दीं कि मस्सा रंघड़ अपने आपको भूल गया। बड़ा नशा होता है चौधराहट का।

अमृतसर की कोरी स्लेट पर कुदरत ने मस्सा रंघड़ का नाम लिख दिया। उसने मस्से के पैरों के नीचे हुकूमत के गलीचे बिछा दिये।

अब अमृतसर में सिर्फ मस्सा रंघड़ ही रहेगा। शेर अकेला ही गरजेगा जंगल में। भेड़ों के झुंड अब अमृतसर में नहीं घूमेंगे।

मस्सा रंघड़ अमृतसर का खुदा बनकर बैठ गया। गुरुओं की माला तस्बीहों में बदल दी जायेगी। धर्म ईमान का चोला पहनकर घूमेगा। राम-राम, वाहे गुरु कहने वाले अल्लाहू अकबर बोलेंगे—तभी मस्से का नाम लाहौर की बारादरियों में गूंजेगा।



चुपड़ी और दो-दो

लक्खी जंगल का हाल सुनाने लगा बिजला सिंह।

'मैं लक्खी जंगल देखना चाहता था। बस नाम ही सुन रखा था। मेरे शरीक-भाई लक्खी जगल में बसते थे, कभी बरस-छमाही में फतेह बुलाने का मौका मिल जाता, वह भी रात-बिरात। रात अंधेरी होती, तो कभी कोई गांव मे आ जाता चोरों-चकारो की तरह। मेरा जी बहुत करता लक्खी जगल जाने को। कोई साथ नही बना। एक दिन अपने चाचा के बेटे के साथ तैयार हो गया। छलांग लगा कर सवार हो गया घोड़े की पीठ पर। भाई का घोड़ा था। बस, फिर सिंह ने सारी रात सांस नहीं छोड़ी। लौ लगी, तो घोड़े ने भी दम मारा और मेरे भाई ने भी। बड़ी सख्त जान हैं। मेरी तो पसलिया हिल गयी, हड्डिया ढीली हो गयीं, लेकिन मैंने भी दम रखा। नंगे घोड़े पर बैठे रहने से काफी छिल गयी टांगें, पर मैंने परवाह नही की। चाव जो था! दिन-रात उसी तरह सफर, मंजिलों पर मजिलें तय करता घोड़ा, हवा से बातें करता, दौड़ता, जैसे भगवान् को हाथ लगा रहा था। फिर दूसरा दिन चढ़ आया। फिर सांस ली, प्रसाद-पानी चखा, घुटना नवाया, आराम किया। यह एक हिंदू का घर था। तीसरी रात हम फिर मारा-मारी करते लक्खी जंगल के नज़दीक जा पहुंचे। कहां माझा और कहां लक्खी जंगल! सात समंदर पार, मक्की से परे उजाड, रेत ही रेत! यह रात हमने एक मुसलमान राजपूत के घर में काटी। खूब सेवा की उस राजपूत ने। मेरे भाई के ठिकाने पर बड़े विश्वसनीय और ईमानदार और शरीफ़ लोग थे। बलिहारी जाऊं मैं उस घोड़े के, उसने जरा भी थकान नही जानी। मेरा तो अंग-अंग चूर-चूर हो गया। पर मेरे भाई को जूती तक याद नहीं थी। भोर का तारा निकला। हमने फिर घोड़े को कस लिया। रब दे, तो बंदा मरे। मेरी टांगें भले ही अकड़ गई थीं, लेकिन लक्खी जंगल देखने का चाव था, दम साध कर पीछे बैठा रहा। गुरुओं की वेला हुई, हमने जाकर फतेह बुलाई। यह जंगल था। घने पेड़ों का घेरा, न राह न रास्ता, झाड़ियां, पेड़, कीकर, करीर, फलाही, धरेक, बेरियां, जंड, जंगली दरख्त—यही था गिद्धों का लक्खी जंगल।

मेरा ख्याल था कि खूब गुलछर्रे उड़ेंगे। पर वहा तो मेला लगा हुआ था। जब मैं जगल के बीचो बीच पहुंचा, तो भगवान कसम, अमावस का मेला लगा हुआ था—अमृतसर के घोड़े, ऊट, बैलगाड़िया...क्या था जो सिहों के पास नही था!

तिनको-फूस की झोंपडी, जिसे शीश महल कह कर वे आनद मनाते। कंधे पर लोई लिए या कोई भूरे को ही लपेट कर बैठा हो कहते दुशाला तो बहुत खूबसूरत है! दातुन कीकर की हो तो हरा गुलाब! फलाही की हो तो इलायची कह कर खुश रहते। लगड़ा मिल गया तो सुचाला, अंधे के दर्शन हुए तो कह दिया सूरमा मिल गया। बहरा मिल गया तो चौबारे चढा हुआ। एक आंख वाला—सुनेत्र। टुंडा—लाख बाहों वाला। कुत्ता भौंका तो—दस कर रे दुरकुतबुलदीना। जरा-सी सांस ली तो जैसे छावनी बना ली। रुपए को छिलका या ठीकरा। मुहरों के मिल जाने पर—डायनें आ गईं! सोना घास के फर्श पर स्वप्न लेना मखमली बिछौनों का। लक्खी जंगल को कई लोग राम राज कहकर संबोधित करते। परांठा मिल जाये तो तहतोड़ कहकर उसका सत्कार। दीया देखना तो उसे उजागर कहना। रजाई नजर आ जाये तो अफ़लातूनती कहकर उसकी गर्मी लेना। अगर किसी ने डंडा पकड़ रखा हो, तो कहना, अक्लदान लिये फिरता है। पानी के दो घूंट पीना और इंद्र सिंह कहना। बेरियों के बेरों का आनंद सेब कहकर लेना। सिहों के बोल आज़ादी का दम भरते और आदमी का दिल बलवान बनाते।

मस्जिद नजर आ जाती, तो वे दूर से ही मस्तगढ़ के बोल उच्चारते। उगाही करते तो कहते मामला उगाह रहे हैं। शब्द निकलते तो सामने वाला चारों कन्नियां झाड़ देता। आटा खत्म हो जाये, कोई सिंह चक्की पीस रहा हो तो कहना फिरनी की सवारी हो रही है। खोदना घास पर कहना बाज़ का शिकार कर रहा हूं। नगे पाव वाले को जूती मिल जाये तो बोले घोड़ी मिल गई है। चबाना दाने मक्की के और कहना—सुना बसंत कौर आ गई! रोटी को प्रसाद और अगर चप्पा भर रोटी हो तो फक्कड़ प्रसाद कहना। माश पके हों तो सुरमई दाल का नाम देना। एक छींटा दूध मिल जाये—सिंह समंदर मे गोते लगा रहा है। बैंगन नजर आ जाये तो राम-बटेर पकड़ लाये हो! प्याज को मुक्का मार कर तोड़ना—रूपा-प्रसाद का स्वाद ही निराला है! कीकर के तुक्ले पकते हुए देखे तो कहना अंगूर पकने वाले हैं। बेलों के पत्ते पूरियों का स्वाद। कड़ी पीना और अमृती कह कर स्वस्थ होना। भुने हुए छोलिये को इलायचीदाना कहना। जंड की फलियां—जलेबियां। सिर में तेल लगाना—छठा रतन घिस रहे हो? घी को पांचवां रतन बोलना। खाना नमक तो सातवें रस का मजा! शक्कर हो तो श्री खंड। गुड़ की रेवड़ी—सूबेदार को काट रहे हो?

वाली रोटियां मीठे प्रसादे कह कर पुकारना । खिचड़ी का थाल भरा हो—खिचड़-पिलाउ । जंग छिड़ जाये—होला खेल रहा है ? लड़ाई बंदूक की लड़नी हो—रामजपा के दर्शन हो रहे हैं ? अहमद शाह के बारे में मशहूर था—काबुली कुत्ता । आशावान होना । चढ़ती कलाए कह कर एकदम तैयार रहना ।

इन सिंहों के शब्दों ने गुरु की लाडली सेनाओं के मन में धीरज भर दिया—बलवान चित्त, हिम्मत और दृढ़ निश्चय, पक्का हौसला । वे वीर योद्धा बन गये । वे किसी से न डरते । कड़ाके की सर्दी, बारिश पड़े, अंधड़ चले, झखड़ झूले, एक धूरे पर रात काट लेते । सारी रात वाणी-स्मरण करते । स्नान, ध्यान और पूर्ण विश्वास । लो, मेरे साथ जो बीती, वह भी सुन लो ।

मेरा ख्याल था कि सिंहों के मेहमान है, अच्छा तथा बहुत-सा खाने-पीने को मिलेगा । चार दिन मौज उड़ायेंगे । ख्वाब मुगलों के दस्तरखान के देखे जा रहे थे । मीठे चावलों का चाव था मन में । रात को अच्छा खाना मिलेगा । दिन में कड़की थी, लंगर मस्ताना था । इतने लोगों की छावनी के लिए अनाज भी आना ही चाहिए । पर जरूरी नहीं था, आज ही आये । कोई जागीर तो थी नहीं सिंहों के पास ! कोई मामला नहीं आता था कि खजाना भरा रहे । न कोई खजाना, न कोई गुल्लक । रात को लूटमार कर ली तो दिन में जश्ने-बहारां । रात को अगर सिंह खाली आ गये तो फिर कड़की ही कड़की । इस तरह सिंहों का मन बलवान होता गया । पंक्ति बैठ गई लोहे के कटोरे लेकर । हर आदमी के पास अपना लोहे का लोटा और कटोरा था ।

—आज लंगर मस्ताना है । आज तो फौजों को तिहरे गपके मिलेंगे ! एक सिंह ने कहा ।

पहला गपका आया कड़ाह प्रसाद ।

—सब्ज पिलाउ सिंह जी !

सबने अपने कटोरे आगे कर दिये । पत्तों, बेलों, लताओं का साग । भोजन शुरू हो गया । परोसने वाला अभी दूसरी पात के पास पहुंचा ही था कि आवाज आयी—चांदनी पिलाउ सिंह जी !

कटोरों में डलवा लिया सिंहों ने—खिली हुई मकई के दाने थे । परोसने वाला आगे निकल गया ।

—खुश्क पिलाउ !

कटोरे फिर आगे बढ़े । भुने हुए चने थे ।

लोटा भर पानी पीया । अरदास करके सब उठ खड़े हुए । यह था सिंहों का दस्तरखान, यही एय्याशी थी और यही जशन । ऐसी हालत में भी सिंह चढ़ती कलाओं में थे,

धन्य हैं गुरु के लाल ! धन्य गुरु, धन्य गुरु के सिंह !

चंडाल चौकड़ी

मस्सा रंघड़ के चारों ओर चंडाल चौकड़ी ने झुरमुट बना लिया, जैसे गिद्दे की रानी लड़कियों की ढाणी में नाचती है। चांद के चारों ओर जैसे तारे। हिरन के पीछे हिरनियां। साकी की आंख पर जैसे शराबी। दूल्हा बना हुआ था बरातियों के झुंड में मस्सा रंघड़।

उसने लाहौर के सूबेदार जकरिया खां द्वारा दी गई तलवार की मूठ पर हाथ रखा और मूंछ को ताव दिया। शमले वाली पगड़ी उसकी चौधराहट का ढिंढोरा पीट रही थी।

खुशामदी टट्टू उसकी लार तक चाट जाने को तैयार बैठे थे। आंखों में सुरमा। होंठों पर पान की सुरखी अपनी धाक जमाये बैठी थी। भांति-भांति की बोलियां बोलने वाले बटेर टु टु कर आने लगे। गप्पें हांकने वाले जमीन-असमान के कुलावे मिलाने लगे। गपौड़ियों को कैसी शर्म! घूंघट के ओट से नही बोलते थे वे बल्कि समधियों की टोली में मुंह को नंगा करके, बाहें उछाल-उछाल कर टु टु आते थे। तिलियरों की डारें आ बैठीं हरिमंदिर के गुंबद पर। बंद बुलबुलों की खिड़कियां खुल गईं। उन्होंने गीत छेड़े प्यार, मुहब्बत और इश्क के। कव्वालिया गाने वालो ने अपनी तानें छेड़ी। गले की गरारी कुएं के डिब्बों की तरह बजने लगी। कई रागिनियां अपने आप पैदा हो गईं। सारंगी के रेशमी तारो पर खुरदरा गज घूमा—कलेजा छिल गया मुलायम तारों का। मशाल जल रही थी। मशालची जब तेल डालता, तो महफिल चमक उठती ; गपौड़िये भावा छककर इस तरह महफिल की पलकें संवारते—

—मेरे बाबा के पास एक ढांगा था—बड़ा लंबा, बड़ा ऊंचा ! एक गपौड़िये ने सीना तानकर कहा।

—कितना लंबा ?

—कोई बीस गज होगा।

—जा बे ! तुझे क्या पता कि ढोडा कहां बजता है ? तू भेड़ों में ऊंट ही पहचानता है !

—बीस गज नही, तो चालीस गज होगा।

—नही रे नही, एक मील लबा।

—तब तो कमाल है! हद हो गई। बड़ा लंबा ढांगा था तुम्हारे बाबा के पास!

दूसरे आदमी को बड़ी खीज हुई। उसने एक बार खांसा, गला साफ किया, सीधा होकर बैठा और मशालची ने मशाल आगे बढाकर सारी महफिल को उसका चेहरा दिखा दिया।

—यार! हमारे बाबा की भी भली पूछी। बड़े लोगो की बड़ी बातें। सरकारे-दरबार में भी पूछ-प्रतीत हो, उसकी बातें ही निराली हैं। मेरे बाबा ने भी एक हवेली बनवाई थी। मेरा समधी कहता है कि उसमें बीस गांव बसते थे। बीस अलमबरदार। जब कभी इकट्ठे बैठते, कसम अल्ला ताला की, एक बार लाहौर की कचहरी का नशा आ जाता।

पहला शर्मिंदा हो गया। उसके दिमाग मे एक बात जरूर आई, लेकिन खामोश बैठा रहा।

बीच में एक और आदमी बोल उठा—तुम्हारा बाबा ढांगे को क्या करता था?

—बकरियां हाकता होगा।

—जा रे, जा! मेरा बाबा कोई गडरिया था! वह तो जमींदार था। बीस गांवों का मालिक। लाहौर दरबार भी उससे खम खाता था। जब कभी सूखा पड़ जाता और वर्षा की एक बूंद न पड़ती, सारी दुनिया हाय-हाय कर उठती, तो मेरा बाबा अफीम का मावा चखता और अल्ला ताला का नाम लेकर ढांगा निकालता। ढागे को एक बार बांहों मे तोला, कलमा पढा और जब 'या अली!' कह कर उसने ढागे को हिलाया, तो तीतर के पंखों जैसी बदलियां हिल उठी। छमाछम बारिश होने लगी, खेतों में घुटने-घुटने पानी भर गया। बाबा तख्तपोश पर बैठ जाता। शरीकों के कलेजो पर साप लोटवाने के लिए जैसे कोई खूबसूरत औरत चिक तान ले—आशिकों के दिल जलाने के ख्याल से—मेरा बाबा भी उसी तरह परदा कर लेता। सारे गांव के मुंह दुखने लगते, जम्हाइयां लेते-लेते, पर पानी का एक छींटा तक न गिरता।

—सारा गांव उसे वली मानता होगा। तब तो तुम्हारे बाबा की बहुत बड़ी खानगाह बनी होगी! अल्लाह का लोक होगा तुम्हारा बाबा। उस पर फकीरों की मेहर जो थी!

पहले को जमीन धंसती हुई लगी। झट से बोला—यार, ढांगा रखता कहां होगा तुम्हारा बाबा?

पास बैठे एक आदमी ने कहा—बेचारा कहां रखेगा। खेत में ही रखता होगा।

—सिंह नही देखते थे ? चोर उठा के नहीं ले जाते थे ? सिंहों को तो ऐसे करमाती धागे की जरूरत थी।

—मेरा बाबा इतना कच्चा-मुलायम नही था।

—फिर तो वह उसे कोठरी में रखता होगा या मुर्गियों के दड़बे में।

—नही रे, नही...यारों के यार दोस्त...मेरा बाबा तुम्हारे बाबा का यार था न। तुम्हारे बाबा की हवेली खाली पडी थी, वहीं रखता था।

दूसरे आदमी का खाना खराब।

ऐसे गप्पबाजों की टोली जुटी हुई थी मस्सा रंघड के चौगिर्द। मस्सा रंघड का दिल बिल्ली के बच्चे जैसा था—दिनों में ही शेर का कलेजा बन गया।

पुजारियों-श्रद्धालुओं का हरिमंदिर, सिदकियों का स्थान, गुरु के प्यारों की काशी, पापी-एय्याशों का अखाड़ा बन गया।

मस्सा रंघड़ ने बड़ी अति कर रखी थी। वह हरिमंदिर में हर तरह का कुकर्म कर रहा था। उसने आबादी को छेड़ा तक नहीं। अमृतसर के लोगों का कान तक गरम न हुआ। लेकिन बिगड़े हुए लोग कब बाज आते हैं।

एक दिन जब सूरज थका-टूटा अपनी हुकूमत में गया, और रात को अपने हरम मे घुसने लगा, तो अमृतसर की आबादी के एक घर मे हाहाकार मच गया।

—क्या हुआ ? क्या हुआ ? लोगों की आवाजें उठीं।

—जीतो को कोई उठा कर ले गया। पत्ता-पत्ता छान मारा। घर-घर ढूंढ लिया, गली-राहो से पूछा। तिनको से भी हल्के हो गये दोनों भाई। बलाका सिंह बेचारा पहले ही सीधा-भोला था, साधु-स्वभाव, संन्यासी, गुरमुख, न किसी से लेना न किसी से देना। माला पकडी और सारा दिन लीन रहे। न काहू से दोस्ती न काहू से वैर।

दूसरा भाई जोगा—वह अमृतधारी तो नही था, सहजधारी था। अपने भाई को हर रोज कथा-कहानिया सुनाता रहता। उसका मन सिक्ख बन गया था। बलवान हो गई थी उसकी आत्मा। उसकी संवेदना सिंहों से जा जुड़ी। उसकी हर सांस सिंहो का हुंकारा भरती। सिर्फ इतना दोष था उनका। जवान-जहान बहन होना भी एक पाप है। मां-बाप मर चुके थे। इसी कारण बहन के हाथ पीले न हो सके। एक चंडाल की नजर मे चढ़ गई। पानी भरने जाती थी कुएं पर। उसी ने मस्सा रंघड़ के कान में बात डाल दी। बस, फिर क्या था, उसी रात मस्से के आदमियो ने, जिन पर मरण मिट्टी चढी हुई थी, उसे घर दबोचा। काली तितली को बाज पकड़ ले गये। एक ही रात मे उन्होने उसे लहू-लुहान कर दिया। कच्ची कुआरी टहनी मसल डाली गई और फिर मरी हुई जीतो को वे हरिमंदिर के दरवाजे पर फेंक गये। दिन मे शोर मच गया। सम्माननीय लोग इकट्ठे हुए—हिंदू, मुसलमान—पर कुछ न कर सके। उठाकर ले गये रोते हुए। दाह-सस्कार किया। अमृतसर वालो के कलेजे मे आग धधक उठी, लेकिन मस्सा रघड़

के डर ने उन पर मश्कों का इतना पानी फेंक दिया कि वे ठंडे-ठार हो गये। पर जिनके घर में आग लगी हुई थी, उन्हे किसी ने नही पूछा था। भीतर ही भीतर कुढ-कुढ कर मरते रहे। न जान निकले और न खलासी हो। दिन चढा, ढल गया, रात हुई, निकल गई। दूसरी रात लोग अभी सोये नही थे। दोनों भाइयों ने विचार-विमर्श किया। तिनके वगैरह एकत्र किये। हताश का जीना बडा कठिन। घर को आग लगा दी। घर फूंक तमाशा देखा। सारा घर जलकर कोयला बन गया। दूसरे दिन सारे अमृतसर ने इन भाइयों को तलाशा, लेकिन वे दोनो मुंह काला करके निकल गये थे। कई महीनो तक उनकी कोई खबर न मिली। गम का गोला पेट में लिये फिरते थे।

एक आवाज़ आ रही थी अमृतसर की गलियों से—'

'गलिया होवण सुंझिया विच मिर्जा यार फिरे।'

आवाज़ किसी फ़क़ीर की थी।



कंचनी

जोगा कुछ दिन तरनतारन में रहा। फिर जी कर आया अमृतसर देखने को। अमृतसर का जलवा सारे पंजाब में फैला हुआ था। यह बात अलग थी कि हर आदमी उभर कर सामने न आता। लेकिन भीतर ही भीतर सब कुढ़ते रहते। जो सिक्ख छुपते-छुपाते बाहर आता, वह या तो पकड़ा जाता, या कत्ल हो जाता। पकड़कर कैद में फेंकने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था। सिहों के लिए मुकद्मे की कोई जरूरत नहीं समझी जाती थी। मस्सा रंघड़ भी जकरियां खां के पद-चिह्नों पर चल रहा था। अगर यह कहा जाये कि वह उससे दो कदम आगे ही था, तो कोई झूठ बात नहीं होगी। गुरु गुड़ चेला शक्कर। सारे इलाके की बत्तीसी मस्से का ही नाम लेने लगी।

हरिमंदिर साहिब के पवित्र स्थान को कंचनी के गोरे-गोरे पैरों ने गंदा कर दिया। कंचनी दोहरी हो-ही कर नाच रही थी। मस्सा रंघड़ को सलाम करती और मुहरों से झोली भरती। शराब के मटके खुलते और बाद में पांव की ठोकर से लुढ़का दिये जाते। खाली मटके भाय-भाय करते। निवारी पलंग बिछा हुआ था, हरिमंदिर की नाभि में। जूतों सहित पलंग पर आ बैठा चौधरी। अहलकार ने हुक्का भरकर सामने ला रखा। मस्से के जी में जो आया, उसने किया।

—बोलो, अब भी कोई सिंह अमृतसर आने की जुर्रत करेगा? मैंने इनकी मस्जिद को नापाक कर दिया है। गाय के खून से इसके फर्श को कई बार धो डाला। बोला मस्सा रंघड़।

—हुजूर का इकबाल बुलंद। आपकी कलगी को फूल लगेंगे लाहौर की भरी कचहरी में। अहलकार ने कहा।

—अब तो सिहों की रूह भी यहां नहीं आ सकती। आपने सब भूत निकाल दिये हैं। दूसरे अहलकार ने कहा।

कंचनियों का एक मुहल्ला आबाद हो गया अमृतसर में। गुल्लू बाई के डेरे ने पहले ही छावनी डाल रखी थी। खूब हाथ रंगे डेरेदारनियों ने। मुहरें गिनते-गिनते कइयों के हाथों की रेखाएं मिट गई थीं। सब के मन के चाव पूरे

हुए, लेकिन बेचारी गुल्लू बाई के मन की मुराद पूरी न हुई। वह चाहती थी कि मस्सा रंघड़ उसकी सेज का सिंगार बने। उसने कई बार जुम्मेरात के पीर जुम्मे रात के मकबरे पर न्याज चढाई, फकीर की खानगाह मे मनौती मनाई, लेकिन मस्सा तो रोज नई-नई कबूतरियो के पर नोचता था—वह उस बुढ़िया का क्या करता। उसने उसकी तरफ देखा भी नही। अगर किसी ने कभी सलाह दी, या गुल्लू बाई का जिक्र किया, तो उसने थूक दिया, खंगार मार कर दीवार लिथाड़ दी।

गुल्लू बाई बड़ी उदास थी। उसकी नचनियों के हाथों में मस्सा रंघड़ खेलता। मेंहदी और सुरमे का भाव चढ़ गया। आग लग गई दंदासे को। सोने के भाव बिकती चूड़ियां। मंडी लगी हुई थी गोरी-गोरी सुंदरियो की। अमृतसर में शैतानों का टोला उतरा हुआ था।

हरि मंदिर की पवित्रता भंग हो गई। चंडाल चौकड़ी के लोग वहां चांगरे मारते। झांझर का मुंह न दिन मे बंद होता, न रात में।

उसने माझे में सिहों का बीज नष्ट कर डाला। जोगा ने जब देखा, उसकी अंतड़ियां मुट्ठी में आ गई हैं, तो उसकी आंखें खून के आसू रो दी। 'चोर-उचक्का चौधरी, गुंडी रन्न परधान।' जोगा सोच रहा था, मुझे अपने घर के फुंकने का कोई अफसोस नही है, लेकिन हरिमंदिर की पवित्रता भंग नही होनी चाहिए थी।

चौराहे पर खड़ा जोगा सोचे जा रहा था।



राही

—चम्पा, ओ चम्पा ! शैतान छोकरी, सो गई ! अरी, दरवाजे की आवाज का भी ख्याल रखना चाहिए।

दरवाजा बन्द था।

—चम्पा ओ चम्पा।

—बापू हैं। अभी मेरे संग बातें कर रही थी। सो गई होगी। जगाती हूं। बापू, जरा धीरज रखो।...पड़ोस से आवाज आई।

—चम्पा, री चम्पा। बापू आये हैं। उसने कुंडी बजाई।

—कौन है, भूरी ? तुम्हें सौ बार मना किया है कि मैं सोई होऊं, तो मुझे मत जगाया करो। अभी तो मेरी आख लगी ही थी कि तुमने आवाजें देना शुरू कर दिया। जाओ, अपने घर, मुझे नींद आ रही है। बापू का पता नहीं, कब आएंगे। आवाज चम्पा की थी।

—दरवाजा खोल री, बापू आये हैं।

—बापू। चम्पा चौंक कर उठ बैठी।

—हां, बापू।

उसने दरवाजा खोला।

—बापू, यह क्या ? चम्पा ने पूछा।

—कुछ नहीं, बेटी, खाट बिछा दो। एक परदेसी है। धूप ने इसकी सूरत बिगाड़ दी है। बेहोश हो गया है।

चम्पा ने खाट पर चादर बिछाई और परदेसी को लिटा दिया। बापू उसके तलुवे रगड़ रहा था।

—बेटी, पानी लाओ और ऊंट को बांध दो। मैं खुला ही छोड़ आया हूं।

—मैंने बांध दिया है, बापू। भूरी बोली।

बापू ने कपड़ा गीला किया और परदेसी का मुंह पोंछा। मुंह और आंखों से रेत साफ की। कपड़ा फेर कर धोया, फिर पोंछा और मुंह खोल कर पानी

का घूंट डाला। पहले पानी अन्दर न गया। फिर कोशिश की, पानी अन्दर उतर गया। दो-एक घूंट और दिये। बापू ने उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारे। चम्पा एक और कपड़ा भिगो कर ले आई।

—बापू, यह इसके सिर पर रख दो। कहीं गरमी सिर को न चढ़ जाये।

—बड़ी सयानी है मेरी बिटिया रानी।

भीगे हुए कपड़े ने परदेसी के सिर की सारी गरमी चूस ली। एक घूंट पानी और दिया। उसने जरा-सी आंख खोली।

—बापू, यह है कौन ? चम्पा बोली।

—परदेसी। राह भूला हुआ राही। न राह से वाकिफ न मंजिल से। न रेत की तासीर से परिचित न उसकी तपिश से। लगता है, बहुत दूर से आया है। कष्टों का मारा रास्ता भटक गया है। बापू ने कहा। —वह डायनों वाला टीला है न, वहीं मेरे आगे-आगे चला जा रहा था, पत्ते की तरह डोलता, गिन-गिन कर कदम उठाता; कभी गिरता फिर उठता, फिर मुंह के बल गिर पड़ा। यह तमाशा मैंने दूर से देखा। पहले तो मैं डर गया, पर जब देखा, यह तो कोई राही है तो कमर बांध कर, जी को कड़ा करके टीले पर चला गया। यह मुंह के बल गिरा पड़ा था, बेसुध, बेहोश और दीन-दुनिया से बेखबर।

—डायनें चिपट गई हैं। मैं जाऊं ? बुआ बासंती को बुला कर लाऊं। वह डायनों को उतारना जानती है। चम्पा बोली।

—मैं जाती हूं। भूरी ने कहा।

चम्पा ने उसके माथे का कपड़ा फिर बदला और चम्मच भर दूध उसके मुंह में डाला।

—मैं कहां हूं ? आप कौन हैं ? ...पानी...

ठंडे पानी का कटोरा चम्पा ने उसके होंठो से लगा दिया। पानी का आधा कटोरा वह पी गया, आधा बिस्तर पर ही गिर गया।

उसने जरा-सी गरदन उठाई। —आप कौन हैं ? मैं कहां हूं ? वह बोला।

—हम राजपूत हैं—हिन्दू।

—हिन्दू ? हिन्दू ?

—हां। हिन्दू किसान। गरीब। रेत के दरिया के वासी।

—पानी...रोटी...पानी !

चम्पा रोटी का टुकडा ले आई। शक्कर और घी [illegible] और उसे दिया।

—खाओ बेटा...थोड़ी-सी रोटी अन्दर जाने दो। [illegible]

दूध का आधा कटोरा चम्पा ने बापू को दिया।

—पी लो, मेरे जवान बेटे। घबराने की जरूरत नहीं है। अब तुम अपने घर में ही हो। उस आफत से तुम निकल आए हो। डायनों-भूतों से बच गए हो।

वासंती ने कुछ मन्त्र पढ़े—मुंह में कुछ बुदबुदाती—फिर फूंक मारी और बोली—अब सब खैरियत है। जो डायन चिपटी थी, मेरा डंडा देख कर भाग गई।

फिर उसने फूंका हुआ धागा दिया और कहा—इसके गले में बांध दो। अब कोई डायन नहीं आएगी। अगर आई, तो मैं उसकी चुटिया उखाड़ लूंगी।

परदेसी उठकर बैठ गया। वासंती का जादू सिर चढ कर बोला। यह रेत का समदर, यह अंधड़ो-तूफानों की धरती, यह रेतीली बाढ, गुरु बचाएं इससे। कोई वैरी भी इसकी राह पर न पड़े। परदेसी बोला—कहीं इधर आपने सिंह तो नहीं देखे हैं।

—सिंह कौन ? तुम कौन हो ?

मैं ? मैं जोगराज हूं। मुझे जोगा कहते हैं। मैं बहुत दूर—अमृतसर—से आया हूं। मुझे सिंहों की तलाश है।

—कौन सिंह ? कहां रहते हैं ? बापू ने पूछा।

—आप सिंहों को नहीं जानते ? सिंहों को तो सारी दुनिया जानती है।

—हम तो पहली बार तुम्हीं से सुन रहे हैं।

—घोड़ों पर सवार जवान, भूरों के कपड़े, सिरों पर पगड़ियां और ऊपर लोहे के चक्र, हाथों में लोहे के कड़े, तलवारों-ढालों वाले जवान पुरुष...धाड़-धाड़ करते आते हैं और धाड़-धाड़ करते निकल जाते हैं। जोगा ने सिंहों की पहचान बताते हुए कहा।

—हां, बापू, यह उन घोड़ों वालों की बात कर रहे हैं, जो परसों हमारे गांव के पास से गुजरे थे। वही, जो राखी मांगते हैं। वही शेरों-बाघों जैसे इन्सान। उनके घोड़े हवा से बातें करते हैं। तलवारें, बापू, बहुत बड़ी-बड़ी। सिर से चार-चार हाथ ऊंचे नेजे। मैं जानती हूं।

—किस तरफ गये हैं ?

—पहाड़ की तरफ से आए थे और दक्खिन की तरफ गए हैं। उनका क्या ठिकाना। जहां देखी तवा-परात, वहीं बिताई सारी रात।

—बापू, मेरा भाई ज्वार की बोरी भरकर देने गया था। चने, गुड़ मैंने खुद ऊंट पर रखे थे—भूरी बोल उठी।

—तब तो तुम्हें मालूम होगा कि वे जत्थे कहां रहते हैं ?

—जानती तो हूं। मेरे भाई ने कहा था किसी को बताना मत। ये हुकूमत के बागी हैं। जो बताएगा, उसे राजा पकड़ कर ले जाएगा और काल कोठरी में

बन्द कर देगा। वहां न अन्न, न पानी, न हवा, न रोशनी। वहां दम घुट जाता है आदमी का। भूरी ने अपना डर व्यक्त कर दिया।

—पगली कहीं की। अरी सौदाइन, मेरे रहते कौन पैदा हुआ है पकड़ने वाला ? बापू ने अपनी मूंछ को ताव दिया।

—बता दूं ? डर तो नहीं है न कोई ?

—बता दो।

—लक्खी जंगल।

—हां-हां, लक्खी जंगल। वे वहीं रहते हैं। मैंने भी यही सुना है। जोगा ने कहा।

—तुम सिंह-सिंह बोले जाते हो, हम क्या जानें। सीधे यह क्यों नहीं कहते—भूरों वाले सरदार, जिनका न घर है, न द्वार। बापू ने कहा।

—हां, बापू, मुझे उन्हीं से मिलना है और उन्हीं को सन्देश देना है। मैंने प्रण किया है। बापू, मेरा वचन न चला जाए। सिर भले ही चला जाए। बहुत जरूरी काम है। धर्म का काम है। धर्म के सामने सिर की क्या कीमत है ? मुझे मिलवा दो, बापू, गुरु मेहर करेंगे। गुरु नेमतों से तुम्हारा घर भर देंगे। जोगा धीरे-धीरे कह रहा था।

ज़रा-सा दम मारो, तगड़े होओ, मैं खुद ले चलूंगा। आराम करो, बेटे। दिन चढ़ने दो। मैं तुम्हे वचन देता हूं, भूरों वाले सरदारों के दर्शन मैं तुम्हें जरूर करवा दूंगा। बापू ने जोगा को धीरज दिया।

रेत ठंडी हो चुकी थी। हवा चल रही थी। जोगा नींद की गोद मे चला गया। निंदिया रानी झूला झुला रही थी।



—पी लो, मेरे जवान बेटे। घबराने की जरूरत नहीं है। अब तुम अपने घर में ही हो। उस आफत से तुम निकल आए हो। डायनों-भूतों से बच गए हो।

वासंती ने कुछ मन्त्र पढ़े—मुंह में कुछ बुदबुदाती—फिर फूंक मारी और बोली—अब सब खैरियत है। जो डायन चिपटी थी, मेरा डंडा देख कर भाग गई।

फिर उसने फूंका हुआ धागा दिया और कहा—इसके गले में बांध दो। अब कोई डायन नहीं आएगी। अगर आई, तो मैं उसकी चुटिया उखाड़ लूंगी।

परदेसी उठकर बैठ गया। वासंती का जादू सिर चढ़ कर बोला। यह रेत का समदर, यह अंधड़ों-तूफानों की धरती, यह रेतीली बाढ़, गुरु बचाएं इससे। कोई वैरी भी इसकी राह पर न पड़े। परदेसी बोला—कहीं इधर आपने सिंह तो नहीं देखे हैं।

—सिंह कौन ? तुम कौन हो ?

मैं ? मैं जोगराज हूं। मुझे जोगा कहते हैं। मैं बहुत दूर—अमृतसर—से आया हूं। मुझे सिंहों की तलाश है।

—कौन सिंह ? कहां रहते हैं ? बापू ने पूछा।

—आप सिंहों को नहीं जानते ? सिंहों को तो सारी दुनिया जानती है।

—हम तो पहली बार तुम्हीं से सुन रहे हैं।

—घोड़ों पर सवार जवान, भूरों के कपड़े, सिरों पर पगड़ियां और ऊपर लोहे के चक्र, हाथों में लोहे के कड़े, तलवारों-ढालों वाले जवान पुरुष...धाड़-धाड़ करते आते हैं और धाड़-धाड़ करते निकल जाते हैं। जोगा ने सिंहों की पहचान बताते हुए कहा।

—हां, बापू, यह उन घोड़ों वालों की बात कर रहे हैं, जो परसों हमारे गांव के पास से गुजरे थे। वही, जो राखी मांगते हैं। वही शेरों-बाघों जैसे इन्सान। उनके घोड़े हवा से बातें करते हैं। तलवारें, बापू, बहुत बड़ी-बड़ी। सिर से चार-चार हाथ ऊंचे नेज़े। मैं जानती हूं।

—किस तरफ गये हैं ?

—पहाड़ की तरफ से आए थे और दक्खिन की तरफ गए हैं। उनका क्या ठिकाना। जहां देखी तवा-परात, वहीं बिताई सारी रात।

—बापू, मेरा भाई ज्वार की बोरी भरकर देने गया था। चने, गुड़ मैंने खुद ऊंट पर रखे थे—भूरी गेल उठी।

—तब तो तुम्हें मालूम होगा कि वे जत्थे कहां रहते हैं ?

—जानती तो हूं। मेरे भाई ने कहा था किसी को बताना मत। वे हुकूमत के बागी हैं। जो बताएगा, उसे राजा पकड़ कर ले जाएगा और काल कोठरी में

बन्द कर देगा। वहां न अन्न, न पानी, न हवा, न रोशनी। वहां दम घुट जाता है आदमी का। भूरी ने अपना डर व्यक्त कर दिया।

—पगली कहीं की। अरी सौदाइन, मेरे रहते कौन पैदा हुआ है पकड़ने वाला? बापू ने अपनी मूंछ को ताव दिया।

—बता दूं? डर तो नहीं है न कोई?

—बता दो।

—लक्खी जंगल।

—हां-हां, लक्खी जंगल। वे वहीं रहते हैं। मैंने भी यही सुना है। जोगा ने कहा।

—तुम सिंह-सिंह बोले जाते हो, हम क्या जानें। सीधे यह क्यों नहीं कहते—भूरों वाले सरदार, जिनका न घर है, न द्वार। बापू ने कहा।

—हां, बापू, मुझे उन्हीं से मिलना है और उन्ही को सन्देश देना है। मैंने प्रण किया है। बापू, मेरा वचन न चला जाए। सिर भले ही चला जाए। बहुत जरूरी काम है। धर्म का काम है। धर्म के सामने सिर की क्या कीमत है? मुझे मिलवा दो, बापू, गुरु मेहर करेंगे। गुरु नेमतों से तुम्हारा घर भर देंगे। जोगा धीरे-धीरे कह रहा था।

जरा-सा दम मारो, तगड़े होओ, मैं खुद ले चलूंगा। आराम करो, बेटे। दिन चढ़ने दो। मैं तुम्हें वचन देता हूं, भूरों वाले सरदारों के दर्शन मैं तुम्हे जरूर करवा दूंगा। बापू ने जोगा को धीरज दिया।

रेत ठंडी हो चुकी थी। हवा चल रही थी। जोगा नींद की गोद मे चला गया। निंदिया रानी झूला झुला रही थी।



घंटियां

—चम्पा, बेटे, रोटी पका रखो। यह परदेसी सांस लेने वाला नहीं है। मैं चाहता हूं कि परदेसी के पैरों के छाले जरा नर्म पड़ जाए, जलन कम हो जाए, एक दिन थकावट और उतर जाए, लेकिन यह इतना उतावला है कि यह धीरज रखने वाला नहीं है। यह हमारी बात सुनने वाला नहीं है। अगर यह अकेला चला गया, तो यह चार कोस भी नहीं चल पाएगा। यह खुद मौत को आवाज़ें दे रहा है। मौत इसके सिर पर कूक रही है। मैं क्यों गुनहगार बनूं? मेरे घर मेहमान आया है, अगर मैं इसकी कोई मदद नहीं कर सकता, तो इसकी जान लेने का बहाना भी क्यों बनूं? इसने सिक्ख धर्म कबूल किया है या नहीं, मालूम नहीं, लेकिन सिहों वाला जोश, उनका जज्बा इसकी हड्डियों मे जरूर ठाठें मार रहा है। यह मरुस्थल, ये रक्त-भरे दरिया, यह रेत का महासागर, जाने यह कितनों की जानें ले चुका है और कितनों की अभी लेकर रहेगा। एक निर्दोष यों ही क्यों बेकार में मारा जाए। परदेसी मेहमान भगवान् की तरह होता है। भगवान् ने इसे भेजा है, बेटे, ज्वार की चार रोटियां उतार दो, डेहलों का अचार और गुड़ साथ बांध दो। हमें तड़के ही निकलना है। तारों की छांह में रास्ता पूरा होगा और सूरज निकलने तक हम अपने ठिकाने जा पहुंचेंगे। क्यों, ठीक है न, बेटे? बापू बोला।

—बापू, मैं सोने से पहले ही रोटियां पका लेती हूं। तुम लोगों को सुबह जाना है। मैं अकेली रहूंगी? चम्पा ने कहा।

—पड़ोसी, चाची, ताई, भूरी, भाई और फिर भी तुम अकेली। अरी, तुझे अकेलापन कैसा। ऊंट को चारा डाल दिया? देखना, ऊंट भूखा न रह जाए। रास्ता बहुत लम्बा है। बापू ने कहा।

—हमारा ऊंट थकने वाला नहीं है। यह रेगिस्तान का जहाज, यह रेत का बादशाह बिना पानी, बिना पत्तों, बिना घास के चार दिन भूखा रह सकता है। भगवान् ने बहुत बड़ा जिगर दिया है इसे। बापू, जब आंख खुले, मुझे जगा

देना। मैं सब कुछ तैयार करके सोऊंगी। तुम्हें सब कुछ तैयार मिलेगा। चम्पा ने कहा।

—बड़ी सयानी बिटिया है मेरी। इन मुगलों ने हमारा सब कुछ लूट लिया है। धन, दौलत, इज्जत, ग़ैरत, मान। हमारे पल्ले तो कुछ भी नहीं रह गया है। सिंहों ने अगर जुर्रत की है, तो हमें इनकी मदद करनी चाहिए। अगर अपना राज बन जाएगा, तो फिर पौ बारां ही पौं बारा है। इन मलेच्छों ने हमारी बुद्धि ही मलिन कर दी है।

बापू सो गया और चम्पा ने चूल्हा जला दिया, आटा गूंधा। वह रोटियां उतार ही रही थी कि परदेसी जाग गया।

—अभी कितनी रात बाकी है?

—अभी काफ़ी बाकी है। ध्रुव तारे ने अभी दर्शन नहीं दिए हैं। आप सो जाएं। मैंने रोटियां पका दी हैं। बापू ने कहा था कि पुच्छल तारा चढ़ते ही उठकर चल देना है। आप सो जाइए। दूध का गिलास रखा है। पीएंगे? चम्पा उठी और दूध का गिलास ले आई। —दूध पीजिए। इससे सारी गरमी दूर हो जाएगी।

जोगा ने चम्पा के हाथ से दूध का गिलास लिया और चढ़ा गया। फिर वह खाट पर लेट गया—नींद आई कि न आई। चम्पा भी सो गई थी। रात अपना रास्ता तय कर रही थी। बापू जाग उठा।

—उठो भई जवान, पंच-स्नान करो। चलो फिर राह पकड़ें। बापू की आवाज़ थी।

जोगा पहले ही जाग रहा था। बोला—मैं तैयार हूं, बापू।

—तुम लोग लौटोगे कब? चम्पा बोली।

—जब इसे सिंह मिल जाएंगे।

—अगर न मिले, तो?

—जब तक सिंहों का जत्था नहीं मिलता, हम लोग घर नहीं आएंगे।

—अच्छा, बापू, तुम्हारी मर्ज़ी। जाओ बापू फिक्र करने की जरूरत नहीं है। शेर की बच्ची अकेली घर में रहेगी। आएंगे तो फिर इधर ही न? चम्पा ने कहा।

—और दूसरा कौन-सा रास्ता है, बेटी? आगे भगवान् मालिक। गुरु जाने कौन-सी राह डालेंगे।

—इसी रास्ते आना, बापू। हमने मेहमान की कोई सेवा नहीं की है। इस तरह घर का नाम निकल जाता है। अच्छा बापू, जय माता की।

—जय माता की।

वे ऊंट पर सवार हुए—दोनों। ऊंट की घंटियां सारे जंगल की जान थीं। उनकी आवाज दूर तक सुनाई देती। वे दूसरे गाव के पास से गुजरे।

—किसका ऊट है, भाई ? एक गांव वाले की आवाज़ थी।

—गंगासिंह है सूरतगढ़ वाला।

—लगता है, कोई ज़रूरी काम है।

—मेहमान आया था। उसी के साथ जा रहा हूं।

—अच्छा, जय माता की।

घंटियों की आवाज़ लोरिया देती जा रही थी ऊंट को।



तारों की छांव में

अभी किसी ने मन्दिर का दरवाजा भी नही खोला था, किसी पुजारी ने शख भी नहीं फूंका था। सारा गाव सो रहा था। रास्ते खामोश थे। पगडंडियां नीद की गोद में खर्राटे ले रही थीं। रेत का जंगल आने वाले मेहमान का इन्तज़ार कर रहा था। जब किसी ऊंट की घटी बजी, टुनकार सारे जगल मे गूंज उठी...फिर जंगल भी जाग उठे। पगडडी ने भी आखें खोली। रास्ते अपने आप जाग उठे। दिन निकलने का घड़ियाल बजा, लेकिन उससे पहले ऊंट की घंटियां खनक उठीं। यह खनक भी किसी तोप की गरज से कम नही थी। तोप भी तो किसी राजघराने मे छटती है। जगल मे तो लोग तारों को देख कर रात की घडियां गिन लेते हैं। तारे देखने वाले धोखा नही खाते।

तारों की छांव में एक ऊंट चल रहा था। खामोश रेत के समंदर में। दूर के मुसाफिर, शायद आधी रात को ही जाग गये थे। ठंडी-ठंडी हवा चल रही और रेत का कलेजा भी ठंडा-ठार था। दिन चढने से पहले रेत सुहानी रुत मे रहती है; जब सूरज की किरण फूटती है, तो रेत के कलेजे मे गर्मी की चिंगारी जन्म लेती है। जैसे-जैसे दिन चढता जाता है, वैसे-वैसे रेत का बदन गर्म होता जाता है। सूरज सिर पर आया नही कि रेत तप कर ज्वाला बनी नहीं। आदमी को यों ही भून कर रख देती है। दिन मे तपिश, जैसे आग की बरसात, और रात ठंडी ठार। जैसा देस वैसा भेस। लोगों के स्वभाव भी रेत की तासीर की तरह बदल जाते हैं। वे सारे काम-काज या तो सूरज के जलाल से पहले करते हैं, या उसका तेज़ मद्धम पड़ जाने के बाद। दोपहर को वे टांग पर टाग धर कर सो रहते हैं।

उनके सर्द खाने शाही मेहमान खानों का मुकाबला करते थे। हवा चाहे गर्म चले, चाहे आग के समंदर में से गुजर कर आये, राजस्थान वालों ने इस तरह के झरोखे बना रखे थे कि हवा का मिजाज ठडा हो जाता। हवा गर्मी के गुस्से को थूक देती। ऊंट रेगिस्तान का जहाज़ है—ऊंट को लोग देवता मानते हैं। राजस्थान की सबसे बड़ी जायदाद ऊंट या कुआं। आदमी अड़ियल, लड़ाके,

झगडालू और तेज़ तबियत। न किसी की सुनेंगे, न किसी को सुनाएंगे। करेंगे पहले, सोचेंगे बाद में।

—चल भई चल, शेर के बच्चे; मंज़िलें मारता चल। ठिकाने लगा दे, बेटा। परदेसी की आस पूरी हो जाए। चौधरी की आवाज थी।

—घोड़ा तो इतना नही चल पाता होगा, बापू? जोगा बोला।

—घोड़ा शाही सवारी है। घोड़ा रेत में दम तोड़ जाता है। ऊंट पर परमात्मा की मेहर है। सवार का दम भले ही डोल जाए, पर ईश्वर का यह जीव कभी नहीं थकता।

जोगा ने पूछा—बापू, तुम्हारा यह जवान 'बेटा' कितना सफर पार कर आया होगा?

—सूरज देवता के दर्शन होने से पहले हम दस कोस निकल जाएंगे।

—कितनी दूर है अभी लक्खी जंगल?

—हम सीध रख कर जा रहे हैं। भूरी ने कहा था कि सिंह इधर को गए हैं। इधर ही ऊंट का मुंह कर दिया। लिये जा रहा है बेचारा नाक की सीध में। दिन चढे, तो पूछेंगे, हमारा ऊट कहां है? रोटी-टुक्कड़ भी सूरज की टिकिया पिघलने पर लेंगे। जितना लाभ उठाया जा सके, उठा लेना चाहिए। बीकानेर में धूप मौत का दूसरा नाम है। अभी तक तो कोई गांव भी नही आया। एक ही गांव आया था। दस कोस पर गाव होता है...वह गाव लगता है।

मुझे तो पेड़ लगते हैं, आगे भवानी जाने। वहां पहुंच कर दस कोस पूरे हो जाएंगे। वह लौ जग रही है, वाह रे शेर। ले चल यार के पास। सस्सी चलते-चलते मरुस्थल में मछली की तरह भुन गई, लेकिन पुन्नू नहीं मिला। हमें मरुस्थल पार करने हैं, चाहे मुंद्राएं पहननी पड़ जाएं, चाहे जोग लेना पड़े। हवेलियों में जाकर अलख जगानी है। बच्चू, तुम्हारा साथ किया है, ठिकाने पहुंचाएंगे। राजपूत रास्ते में नहीं छोड़ते। राजपूत तलवार का धनी है, तो बात का भी पक्का है। तुम तो परमात्मा का रूप हो, कि हमारे घर आए हो। तुम्हारे साथ ही स्वर्ग चलेंगे, और तुम्हारे साथ ही दोज़ख में जलेंगे। इन लुटेरों की गुलामी का तौक उतार कर ही दम लेना है। यह जुआ किसी दिन उतार कर फेंक दिया जाएगा। फिक्र क्यों करते हो, बेटे। राजपूताने वाले तुम्हारे साथ हैं। अन्दर से बहुत दुःखी हैं। उन्होंने इनको कोई जवान लड़की ऐसी नही छोड़ी, जिसे दिल्ली न ले गए हों। अब डोलियां दी नही जाएंगी, अब डोलियां लेनी हैं। अब वक्त आ रहा है कि दिल्ली वाले खुद डोलियां देंगे। भगवान सिंह की एक गलती ने हमारी पीढ़ियां बिगाड़ दीं। तगड़े हो जाओ, बेटे, इनसे मिल कर ही दम लेंगे। चौधरी भावुक हो उठा था।

—गुरु आपका भला करें। गुरु आपकी मुरादें पूरी करें। जोगा कह रहा था।

—यह हमारा फर्ज है। यह हमारा धर्म है। सारे देश वाले अगर एक बार ऐसा सोच लें, तो भवानी की सौगन्ध, यदि हम मिलकर एक बार फंक मार दें, तो ये हवा में उड़ते हुए गजनी पहुंच जाएं। मन निर्बल, कायर और भारी हो गया था। जब से सिंहों का बल और तेज़ देखा है, मन बलवान् होता जा रहा है। इन्हें कोई घी के चूरमे खाने है? बेचारे, हमारे लिए कष्ट झेल रहे हैं। जब पुलाव बनेगा, तो सभी खाएंगे। चौधरी अपनी रौ में बोले जा रहा था।

—मुझे लगता है, बापू, तुम भी सिंह हो। जोगा ने कहा।

सारा देश ही सिंह है अपने भीतर, लेकिन बाहर डर के मारे कोई नहीं कहता। भय का भूत गाव-गांव में नाच रहा है। डर की डायन घाघरा घुमाती रही है गली-मुहल्लों में। बीकानेर वाले, दिल्ली सरकार के गुमाश्ते, जोधपुर वाले सम्बन्धी, जयपुर की प्रत्येक लड़की की ससुराल दिल्ली मे या आगरा में। मुसलमान अपने हरम में एक हिन्दू बेगम जरूर रखते हैं।

—सो क्यों?

—बस, स्वाद बदलने के लिए। मुसलमान कहते हैं कि मुसलमान औरत गोश्त का स्वाद देती है और हिन्दू कन्या मलाई का। खुरचन का मज़ा सिर्फ इन काफिरों के पास ही है।

—क्या यह बात ठीक है?

—झूठ, बिल्कुल झूठ। यह एय्याशी है, सिर्फ मक्कारी, हुकूमत की हेंकड़ है आग लगाने के लिए। हिन्दू जल-भुन कर कोयला हो गए। मेरे भतीजे ने अजमेर के एक हाकिम की लड़की निकाल ली और डाकुओं के गिरोह में शामिल हो गया। वह जब कभी नशे मे होता, तो कहता कि यह काबुली कूजे की मिश्री है, अंगूर है कोटे का, अनार है कंधार का। चटखारे ले-लेकर बातें करता और जीभ फेरता। स्वाद ले-लेकर चटखारे लेता। भुने हुए कबाब की महक लेनी हो, तो किसी मुसलमान मुहल्ले से गुजर जाओ या किसी बेगम के बुरके की खुशबू सूंघ लो। जब अनख जागने लगती है, तो कौम में इस जैसे लड़के पैदा होते हैं—सिर देने वाले, यानी, सिर-धड़ की बाज़ी लगाने वाले। फिर कौम करवट लेती है। गर्व जागता है। आदमी अपने आपको पहचानता है। तलवार उतनी देर ही बुजदिल रहती है, जितनी देर म्यान में रहे। एक बार बाहर निकल आए, तो शेर की तरह गरजती है। देश तभी आज़ाद होते हैं। जागृत कौमों को कोई नहीं दबा सकता। ये भले ही आटे मे नमक बराबर हैं; पर धरती जाग उठी, धरती के बेटे जाग उठे, तो फिर न कोई मुग़ल नजर आएगा, न कोई ईरानी। अहमदशाह आ रहा है। लोग बलवान् हो गए हैं। अहमदशाह के दांत तोड़ेंगे जवान पंजाब के। पसलियां सेकेंगे वीर राजस्थान के। चौधरी अब भी जोश में कहे जा रहा था।

—गुरु की सौगन्ध, बापू, तुम तो पूर्ण सिंह हो। मैं समझता था कि पंजाब से बाहर कोई सिंह नहीं है। जोगा ने हैरानी से कहा।

—मेरे ऊंट ने भी सिंहों के पेड़ों के पत्ते खा रखे हैं। यह एक भावना है, प्यार है, लगन है। सूरज की टिकिया पिघल रही है। लो वह आ गया गांव भी।

चौधरी के चेहरे पर मुस्कराहट थी।

—हां, बापू।

—उस कुएं पर जाकर ठहर जाओ, मेरे जवान बच्चे।

कुएं पर पहुंच कर ऊंट के पांव रुक गए। सूरज सुनहरी रंग की कूची फेर रहा था मुंडेरों पर। सूरज अभी निकला ही था, पर धूप अभी से चुभने लगी थी।

—किसका ऊंट है, भाई? कुएं की मुंडेर पर बैठे एक बुजुर्ग राजपूत ने पूछा।

—सूरतगढ़ वाला गंगा सिंह हूं।

—जय भवानी।

—जय भवानी।

ऊंट को पेड़ से बांध कर दोनों व्यक्ति कुएं की मुंडेर पर बैठ गए। जोगा का सारा शरीर दुःख रहा था।

—आराम कर लो, बेटे।

—आप लोग हाथ-मुंह धोएं, मेरी छोरी ऊंट को पीपल के पत्ते खिला कर पानी पिला देती है। बुजुर्ग राजपूत ने कहा। फिर उसने आवाज़ दी—ओ छोरी...ओ छोरी। जल्दी आ, मेहमान आये हैं।

—आई बापू। जरा-सा धीरज धरो, बापू।

छोकरी जब आई, तो उसके सिर पर मटका और हाथ में लोटा था। रोटियों की गठरी भी वह साथ ले आई थी।

—बस-बस, बेटे। तुम तो रोटियां भी ले आईं। रोटी तो हमारे पल्ले भी बंधी हुई है। तूने क्यों तकलीफ की?

—नहीं बापू, इसे बंधा रहने दो। मेरा कुआं है, तो रोटियां भी मेरी होंगी। नाश्ता-पानी करो, मैं खाट बिछा देती हूं। रोटी खाकर आराम करो। जाना हो, तो रात यहीं आराम करना, दिन में जाना। मेहमान तो भगवान् का रूप है। धन्य भाग्य हमारे, नारायण खुद चल कर हमारे घर आए हैं। लड़की ने कहा।

—धन्य है राजस्थान। धन्य हैं यहां के लोग। बड़ा शक्तिशाली और पवित्र स्थान है। जिन्हें ऐसा साथ मिल जाए, मस्सा रंघड़ अब नहीं रह सकता। अमावस, अब तेरे दिन पूरे हो गए। मेरे हरिमन्दिर की पवित्रता अब

भंग नहीं हो सकती। जोगा मन ही मन में सोचे जा रहा था। जब हवा चलती है तो चूहे के बिल तक पहुचती है। सिहों की आवाज सारे राजस्थान में पहुंच गई है। तभी तो सिहों के ठिकाने यहां हैं। धन्य गुरु, तेरे चोच निराले।

धूप का फूल खिला। कुएं की मुंडेर पर जरा-सी ठडक थी और बाहर धूप के फूल पूरे जोवन पर थे।



मैना बोली

—परदेसी बड़ा मोहक लगता है। खूबसूरत, आकर्षक, जवान, भरा-भरा शरीर, वज्र देह। भूरी बोल उठी।

—पसन्द है? आवाज चम्पा की थी।

—पसन्द है, तभी तो सलाह पूछ रही हूं। भूरी ने कहा।

—तो बात पक्की कर दूं? जोड़ी ठीक रहेगी। बाकी बातों का तो जवाब नहीं, सिर्फ केश हैं मुसलमानों जैसे। चम्पा बोले जा रही थी।

—जमाना कैसा जा रहा है। विदेशी राज और सीधी टक्कर। दुश्मन होकर जीना। भेस न बदलें, तो क्या करें? सारे राजस्थान में चिराग़ लेकर ढूंढें, तब भी नहीं मिलेगा ऐसा जवान। आंख लड़ा लो। बापू फेरे कर देगा। अगर सिंहों को राज मिल गया, तो ऐश करेगी। इन मलेच्छों से तो अच्छी ही रहेगी। गाय भी खा जायें और घोड़े भी। यहा पटरानी न भी बनी, तो रकानन तो लोग कहेंगे ही। भूरी मीठी-मीठी बातें कर रही थी।

—किसके लिए चुना जा रहा है दूल्हा? चम्पा ने पूछा।

—अपनी छमक-छल्लो के लिए, उन्नाबी गुड़िया के लिए। भूरी ने मुस्करा कर कहा।

—आख तुम्हारी है और नाम मेरा ले रही हो? चम्पा ज़रा तेज आवाज़ में बोली।

—खूबसूरत, जवान लड़की, पर जरा सावली-सी। एक तो तेरा रंग मुश्की, दूसरे बैठ गई गली में चर्खा डालकर। परांठे यो ही नही पकते। दूध के कटोरे हीर ही बेले तक लेकर जा सकती है। झूठ बोलती हो? अरी झूठी। ला, मैं तेरा धड़कता दिल देखूं। परदेसी वैसे ही खूबसूरत होते हैं। पंजाब, जहा दूध की नदियां बहती हैं, सोना उगलती है धरती, मटकी भर दही और मक्खन के पेड़े, मक्की की रोटी और सरसों का साग। रग निखर आयेगा दिनों में ही। मैं भी आया करूंगी तुम्हारे पास। भूरी रंग बाधती जा रही थी।

चम्पा शरमा गई। उसकी आखें नीची थी।

—अरी ! भाई की याद आ रही है । रोती मित्रो को, भाइयों का नाम लेकर । अरी सरसों की डाली । जरा चोटी बना तो, ऊपर डाल के मोर-फाख्ता। उन्हें आ ही जाना है ; तुम जरा दाते तीखे करो । जरा हवा दो मद्धिम पड़ती अंगीठी को । परदेसी फिर कहां जायेगा ? तुम्हारे आंगन में तो तिलियर भी गश खाकर गिर पड़ते हैं । परदेसी कोई सात समदर से आया है । कुरूप हो तो कोई निन्दा भी करे । तुम्हारी जैसी कली तो सारा बाग छान मारने पर भी नहीं मिलेगी । परदेसी को और क्या लेना है ? जिसे गूलर जैसी औरत मिल जाये, उसे और क्या सत्त लेने हैं ? शीशे में मुंह देखो । चूमने को तो मेरा ही जी करता है, क्या वह न पिघलेगा ? घी आग के पास रहे, तो पिघले बिना नहीं रह सकता ।

भूरी ने चम्पा को सचमुच शीशे में उतार लिया ।

—तुम्हें सचमुच पसन्द है ? चम्पा बोली ।

—मेरे तो दिल की तह तक बस गया है परदेसी । तभी तो जीजा बनाने की सोच रही हूं ।

—ढोला-मारू वाली बात तो नहीं होगी ?

—ये सिंह हैं । जबान के पक्के, कौल-करार के धनी । अगर बांह पकड़ लो, तो फिर मौत से पहले कोई छुड़ा नहीं सकता ।

भूरी ने चम्पा को भरमा लिया ।

❁❁

पड़ाव

कुएं की मुंडेर पर बैठे-बैठे दोपहर हो गई। सूरज ने अपना चमत्कार दिखाया। छांव होने के कारण दोनो गहरी नींद सो रहे थे, जैसे घोड़े बेचकर व्यापारी सोया हो। गाव के सम्मानित लोग बातों में लीन थे। कुछ घुड़सवारों ने घोड़ों की लगाम खींची। घोड़े रुक गये।

—ये मुसीबतें कहां से आ गई?

—अन्धे कुत्ते हिरनों के शिकारी। जहा रोटी-टुक्कड़ मिलने की उम्मीद हुई, उधर ही मुंह उठा लिया। आजकल ये भी लाहौर दरबार के दामाद हैं। रोटी लाहौर के सूबे ने डाल दी है, उन्ही के गीत गाते फिर रहे हैं। ये भी शिकार ढूंढते फिरते हैं। साले रानी खा के। दूसरे आदमी ने अपनी बात कही।

—ये कौन हैं? कहां रहते हैं? यह क्या करते हैं? एक घुड़सवार ने इशारा करते हुए पूछा।

—सूरतगढ़ से आये हैं। हमारे मेहमान हैं। थके हुए आदमी को नींद आ ही जाती है। पहले आदमी ने जवाब दिया।

—यह कौन है? दूसरे सिपाही की आवाज गूंजी।

—होगा कोई पुछल्ला। रिश्तेदारी से आये है, कोई गोला-गुमाश्ता तो साथ होगा ही।

—मुझे तो सिक्ख लगता है।

—सिक्ख यहा खाक फांकने आयेंगे। सिंह तो पहाड़ पर चढ गये होंगे। यहा वे रेत फांकने आयेंगे। पहले ने कहा।

—सरकारी हरकारों के कहने से सिंहो ने घोड़ों के मुंह राजस्थान की ओर कर दिये हैं।

—तब तो तुम्हारी चांदी ही चांदी है। दूसरे आ[illegible]हा।

—शेर को मारना आसान [illegible] सिंह [illegible]कल। कीमत तो जिंदा सिंह की मिलती है। [illegible] मश्किल। अगर पकड़ लिया जाये, तो फि[illegible]ों की कीमत बढ गई है। पांच सौ [illegible]

—और अगर सिंह न मिले तो ?

—तो किसी पठान की दाढ़ी आधी मूंड डालो, सिर काटो, ढाई सौ मोहरें गिनवाओ और अपने रास्ते लगो। आधी उन्हें दे आओ। सवा सौ का पड़ता है पठान का सिर। सिपाही कह रहा था।

—बीकानेर के राजा ने कसाइयो का काम कब से शुरू कर लिया है ? पहला आदमी बोला।

—दिल्ली दरबार में राजा जी हां कर आये, तथा फामी हमारे गले में पड़ गई है। घर से चालीस आदमी चले थे हम लोग। बीस सिपाही सिंहों ने झटका दिये। हमारे हाथ आया एक सिंह और वह भी रात को निकल गया। खानापूरी करना मुश्किल हो गया है। सिंहो ने तो हमारी ऐसी हालत कर दी है कि अब तो कुत्ते भी हमसे नही डरते। गश्ती टोली का सरदार कह रहा था।

जोगा दम साध कर पड़ा हुआ था। सिपाही ने डण्डे से उसे ठोका और बोला—उठ रे। कौन है तू ?

मैं सरकार, मैं आपके जूते झाड़ने वाला, अल्लाह रखवाला, बुजुर्गों की कसम, सेहरों वाला जीता रहे, पूत की खैर और हम गीत गाते रहे, मीरजादा मांगता-कमाता अपने जजमानों के साथ आ गया है। कुछ बेल हो जाये सुंदर सरदारों की तरफ से। हमारा क्या है, जिधर मुंह उठाया, उधर ही रोटियों के भण्डार। एक से बढ कर एक दाता। मीरजादे को क्या कमी। जीते रहें सरकार। हाथी झूलते रहे हवेलियों के आगे। जोगा कानों पर हाथ रखे कहे जा रहा था।

—ये भांड, ये मिरासी, ये मीरज़ादे जमीन में से खुंबियों की तरह अपने आप ही फूट पडते हैं। इन्हें पैदा होते किसी ने नही देखा। ये खुद घोड़ी नही चढ़ते, दूसरों को घोडी चढाते हैं। गश्ती फौज के एक सिपाही ने कहा।

—पैदा होना तो बडे लोगों का। हमारा क्या पैदा होना। वर्षा हुई, चौमासा लगा, तो कुकुरमुत्तों की तरह पैदा हो गए। धूप लगी, तो कुम्हला गए। सर्दी पड़ी, तो मर गए। मौला की रहमतें, दुआ फकीरों की, अल्ला हुजूर, हमारी भी हाजिरी लग जाए। या मुश्किल कुशा, हजरत अली ने जब आवाज लगाई, तो हम सबसे पहले हाजिर हुए; हमने सारी दुआएं इकट्ठी करके झोलियां भर ली और अब गांव-गांव बांटते घूम रहे हैं मुट्ठियां भर-भर कर। जजमानों के इकबाल बुलन्द, खजाने भरे रहें कलगियों वालों के। मीरजादे की भी सुनी जाए। बेल, दाता की बेल। जोगा बेलें इकट्ठी करने में जुट गया।

गश्ती फौज जेबें खाली करवाकर अपनी राह चली गई। चौधरी ने सारा नाटक आधी आंखें मींच कर देखा।

—देखा बापू, कुत्तों से कैसे पीछा छुड़वाया ? सिंहों का शिकार ये और कितने दिन करेंगे ?

—हिरन भी कभी काबू में आये हैं अंधे कुत्तों के ? चौकड़ियां भरते सिंह एक गाव से दूसरे गाव में पहुंच रहे हैं।

—मदारी के डमरू पर वारी जायें, भई उनके दिन हैं। अगर अहमदशाह अब्दाली चढ आया, तो इनके टुकड़े यों ही अपने आप हो जायेंगे। अति से भगवान् भी शत्रु बन जाता है। चलो, वक्त टल गया।

हा चौधरी, इन्होंने हमारे कई गांव उजाड़ दिए हैं। हमें सिंहों से हमदर्दी तो है। हमसे कहते है, तुमने सिंहों को छुपाकर रखा हुआ है। हमें सिंहो से मोहरें लेनी हैं ? सिंह बेचारे तो मिन्नतें करने पर भी किसी के घर मे नहीं रहते। मिला तो खा लिया, नही तो माला फेरते रहे। सिंह बड़े भले लोग हैं। कुएं की मुंडेर पर बैठे एक बुजुर्ग ने कहा।

गश्ती फौज की टुकड़ी दूसरा गाव पार कर चुकी थी।

—मुझे तो वह मदारी सिक्ख लगता है। चकमा दे गया हमे। शक्ल-सूरत से तो सूफी लगता है, मगर उसे गिल्ली-डण्डा चढ़ाया जाता, तो सिंहो का पता जरूर बता देता। सिपाही गुलाम महम्मद बोला।

—सावन के अन्धे को हर तरफ हरा ही हरा दीखता है। दूसरा अफसर बोला। —भले आदमी, फकीरों की बददुआएं नही लिया करते। चलो, आज सिंह नही मिले, तो न सही, कल मिल जायेंगे। चार मुसलमान ही कत्ल कर दो आज। हाजिरी तो पूरी करनी ही पड़ेगी। हाकिम की आंखों मे अगर धूल न झोंकी गई, तो वह हमारी गर्दन पर सवार हो जाएगा।

—तो चलो पिछले गांव और कर लो अपनी कारगुजारी।

मुसलमानों के दस घरों में से पांच आदमी निकाले गए और जिबह कर दिए गए। रोते बच्चों की चीखों पर किसी ने कान न धरे। राजपूत इस तरह चिढाकर मुसलमान सिपाहियों से सिंहो के दुश्मन खत्म करवा रहे थे। रास्ता साफ होता जा रहा था।

खुदा भी पनाह माग गया इन हाकिमों के जुल्म से।

सिंह कड़वी बेल की तरह बढ़ रहे थे। सिंहो से किसी की दिली दुश्मनी नही थी। चौधरी और जोगा को गांव वालों ने रात के वक्त जबरदस्ती रोक लिया। गांव वालों ने उन्हें घी के कुल्ने करवाए। शक्कर-घी और ज्वारी की रोटी दी। दिन में रोटी देकर विदा किया मुसाफिरों को।

जोगा कह रहा था—धन्य है राजस्थान। मेरा गुरु कभी तो पहुंचा ही देगा लक्खी जंगल।

—कल हम लक्खी जगल में प्रसाद पायेंगे। मुख मांगी गुरुओं से। मेरे ऊंट ने अब तहैया कर लिया है कि लक्खी जंगल पहुंचकर ही सास लेनी है। लक्खी जंगल अब दूर नहीं है। बस अब पहुंचे ही समझो।

पेड़ भी रखवाले होते हैं

आधी रात के समय दोनों उठ बैठे, ऊंट को निकाला। उसे थपकी दी। उसकी फूलों वाली मुहार जोगे की आंखों के सामने नाच उठी।

डाची जैसी जवान जहान मुटियार ने ज्वारी की रोटियां बांध कर दी थी। क्या मज़ा है। कितने अच्छे लोग हैं। डेलों का अचार। बिल्कुल किसी अल्हड़ हिरनी की आंख के कोयों जैसा। रोटी पर पड़े मेरी ओर घूर-घूर कर देख रहे थे। जोगा सोच रहा था।

—किन विचारों में खोया है गुरु का सिंह? चौधरी बोला।

—क्या हम आज लक्खी जंगल पहुंच जायेंगे? क्या मैं गुरु का भार उतार लूंगा? मेरा गुरु मेरे कन्धे पर हाथ रखे। वही लाज रखता आया है। लक्खी जंगल अभी कितनी दूर है? जोगा ने पूछा।

यह तो मैं भी नहीं बता सकता, लेकिन यहां से नज़दीक ही लगता है। सूरज की टिकिया पिघलने से पहले ही हम लक्खी जंगल पहुंच जायेंगे। चौधरी ने बताया।

—गुरु आपका भला करे। गुरु तुम्हारे मन की मुराद पूरी करे। गुरु सबका रखवाला है। ठण्डी चांदनी, ठण्डक भरी रेत और छन-छन करता ऊंट, फिर रास्ता क्या कहता है? रास्ता कटते कौन-सी देर लगती है? तारों की छांव में सफर की कमर तोड़ डालेंगे।

एक गांव आया। दिन चढ़ने की आस हुई। ऊंट की रफ्तार तेज़ हो गई। ऊंट जानता था। कुदरत ने उसके पैरों में फुर्ती भर दी थी। वह अपनी मस्ती में चला जा रहा था। जोगा गुरुवाणी पढ़ रहा था और चौधरी मौज में था।

—कितना सुरूर है वाणी में। कितनी मिठास है। यह वाणी तो पूरी तरह मेरी समझ में आ रही है। रब का नाम आत्मा की शुद्धि, खुराक रूह की, गुरुओं ने पंजाब को वाणी के सरोवर में गोते लगवा दिए हैं। इसलिए बलवान हैं, योद्धा हैं, इरादे के पक्के, इतनी बड़ी हुकूमत से टक्कर ले रहे हैं। अपने सिर देकर भी पीछे नहीं हटे। तुम ले के रहोगे अपना हक। तुम्हारे साथ हमारी

नाथों की धूनी

ये पेड़, जंगल, वृक्षों का जखीरा, दरख्तों की छावनी, बेरियों, कीकरों, मलियों, करीरों के झुंड, न पगडंडी, न रास्ता, न कोई वाड़, न मुंडेर, नाक की सीध में चलते जाओ और अपने ठिकाने जा पहुंचो। यह काम सिक्ख ही कर सकते हैं। अजनबी आदमी, परदेसी इन्सान या शाही फौज लक्खी जंगल मे ग़लती से भी आ घुसे, या जान-बूझ कर अन्दर आ फसे, मार्ग ढूंढ ले—एकदम नामुमकिन। यहां तो सूरज भी सिक्खों की मर्जी के बगैर नही उगता। कोई रास्ता हो, तो कोई पहुंच भी जाए और इन सिक्खो की नाक में नकेल डाल दे। यह बात अनहोनी है। सिक्ख तो पेड़ों की आड़ मे छिपकर आने वाले की गत बना देते हैं। अजनबी आदमी रास्ता देख रहा होता और सिक्ख गर्दन उतार कर जमीन पर फेंक देते। इसीलिए कोई शाही दस्ता इधर की तरह मुंह न उठाता। ये कंटीले पेड़ ही सिहों की रक्षा करते हैं। जिसका कोई वसीला न हो, उसका भगवान् मालिक। हुकूमत जिसकी दुश्मन, उसके हमदर्दी लोग। सिंह सिर्फ गुरु के नाम के साथ ही जी रहे थे। सारा जमाना वैरी, पर किसी ने उन्हें अपने सीने से लगा रखा था, तो वह था लक्खी जंगल। बहादुर योद्धाओं का घोसला था यह; झुग्गी थी फकीरों की, सराय गुरु के प्यारों की। शीश महल मिसलों के, राठ सरदारों के—भले ही तिनको की छलनी ही क्यों न हो। इसे लोग लक्खी जंगल के नाम से पुकारते।

जोगा और चौधरी जब पेड़ों के पास पहुचे, तो चौधरी के हाथ में ऊंट की मुहार थी।

—इस जंगल मे पहुंचना ऐरे-गैरों का काम नहीं है। यह चक्रव्यूह है द्रोणाचार्य द्वारा रचा हुआ। द्रोणाचार्य ही राह बतायें, तो आदमी शायद आ पहुंचे। अगर कोई अभिमन्यु दिल का जोर मारकर चक्रव्यूह को तोड़ना चाहे, तो वह तोड़ तो लेगा, लेकिन बच के निकल आये, यह सम्भव नहीं है। उसकी लाश को भले ही सिक्ख लक्खी जंगल से बाहर रख आयें। वैसे लाश भी कोई नहीं ला सकता। चौधरी ने कहा।

भी सुनी जाएगी। रेगिस्तान की कोख से जब गर्मी निकल गई तो मुग़लों ने उसकी आग वुझा दी। आग ही तो आदमी का जीवन है। आग ही सब कुछ है। सिक्खों के भीतर आग ही तो काम कर रही है। आग के सदके छत्र झूलेंगे, हाथी झूमेंगे, घोड़े, जोड़े, नौकर-चाकर, हवेलियां, वारादरियां—ये सब सिहों के लिए ही हैं। मुगलों ने जितना आनन्द लेना था, ले लिया। 'सदा न वाग में वुलवुल वोले, सदा न वाग वहारें' धन्य हो रे तुम गुरु के सिंहो। तुम्हारी वाली रात को कोई दूसरा पैदा नहीं हुआ।

चौधरी बोले जा रहा था और ऊंट अपनी मस्ती में चले जा रहा था।

दिन चढ़ आया। सूरज उगा। दोनों मस्त थे वाणी में।

—वे झुंड हैं या कोई गाव है या पेड़ हैं। जोगे ने कहा।

—वह लक्खी जंगल है।

दोनो लक्खी जंगल के इस तरफ ही उतर पड़े।

—नंगे पाव चलेंगे लक्खी जंगल के अन्दर। जोगे ने कहा। गुरु के द्वारे आये है, सत्कार के साथ चलें।

—जैसी तुम्हारी इच्छा।

नंगे पांव चलने लगे। ऊंट की मुहार हाथ में थी। जोगा ने सीस नवाया और बोला—गुरु की काशी, तुझे नमस्कार। सिक्खों का गुरुधाम लक्खी जंगल। यही कौम का रखवाला है। यही वाड़ है कौम की। इसी से सूरमा उठेंगे और अपने गुरुधामों की पवित्रता कायम रखेंगे।



भी सुनी जाएगी। रेगिस्तान की कोख से जब गर्मी निकल गई तो मुगलों ने उसकी आग बुझा दी। आग ही तो आदमी का जीवन है। आग ही सब कुछ है। सिक्खों के भीतर आग ही तो काम कर रही है। आग के सदके छत्र झूलेंगे, हाथी झूमेंगे, घोड़े, जोड़े, नौकर-चाकर, हवेलियां, बारादरियां—ये सब सिहों के लिए ही हैं। मुगलों ने जितना आनन्द लेना था, ले लिया। 'सदा न बाग में बुलबुल बोले, सदा न बाग बहारें' धन्य हो रे तुम गुरु के सिहो। तुम्हारी वाली रात को कोई दूसरा पैदा नहीं हुआ।

चौधरी बोले जा रहा था और ऊंट अपनी मस्ती में चले जा रहा था।

दिन चढ आया। सूरज उगा। दोनों मस्त थे वाणी में।

—वे झुंड हैं या कोई गांव है या पेड़ हैं। जोगे ने कहा।

—वह लक्खी जंगल है।

दोनों लक्खी जगल के इस तरफ ही उतर पड़े।

—नगे पाव चलेंगे लक्खी जंगल के अन्दर। जोगे ने कहा। गुरु के द्वारे आये है, सत्कार के साथ चलें।

—जैसी तुम्हारी इच्छा।

नगे पांव चलने लगे। ऊट की मुहार हाथ मे थी। जोगा ने सीस नवाया और बोला—गुरु की काशी, तुझे नमस्कार। सिक्खों का गुरुधाम लक्खी जंगल। यही कौम का रखवाला है। यही बाड़ है कौम की। इसी से सूरमा उठेंगे और अपने गुरुधामों की पवित्रता कायम रखेंगे।



नाथों की धूनी

ये पेड, जंगल, वृक्षों का जख़ीरा, दरख्तो की छावनी, बेरियों, कीकरों, मलियों, करीरों के झुंड, न पगडंडी, न रास्ता, न कोई बाड़, न मुंडेर, नाक की सीध मे चलते जाओ और अपने ठिकाने जा पहुंचो। यह काम सिक्ख ही कर सकते हैं। अजनबी आदमी, परदेसी इन्सान या शाही फौज लक्खी जंगल में गलती से भी आ घुसे, या जान-बूझ कर अन्दर आ फसे, मार्ग ढूंढ ले—एकदम नामुमकिन। यहां तो सूरज भी सिक्खो की मर्जी के बगैर नही उगता। कोई रास्ता हो, तो कोई पहुंच भी जाए और इन सिक्खों की नाक में नकेल डाल दे। यह बात अनहोनी है। सिक्ख तो पेड़ों की आड मे छिपकर आने वाले की गत बना देते हैं। अजनबी आदमी रास्ता देख रहा होता और सिक्ख गर्दन उतार कर जमीन पर फेंक देते। इसीलिए कोई शाही दस्ता इधर की तरह मुंह न उठाता। ये कंटीले पेड़ ही सिहों की रक्षा करते हैं। जिसका कोई वसीला न हो, उनका भगवान् मालिक। हुकूमत जिसकी दुश्मन, उसके हमदर्दी लोग। सिंह सिर्फ गुरु के नाम के साथ ही जी रहे थे। सारा जमाना वैरी, पर किसी ने उन्हें अपने सीने से लगा रखा था, तो वह था लक्खी जंगल। बहादुर योद्धाओं का घोंसला था यह; झुग्गी थी फकीरों की, सराय गुरु के प्यारों की। शीश महल सिमलों के, राठ सरदारों के—भले ही तिनकों की छलनी ही क्यों न हो। इसे लोग लक्खी जंगल के नाम से पुकारते।

जोगा और चौधरी जब पेड़ो के पास पहुंचे, तो चौधरी के हाथ मे ऊंट की मुहार थी।

—इस जंगल मे पहुंचना ऐरे-गैरो का काम नही है। यह चक्रव्यूह है द्रोणाचार्य द्वारा रचा हुआ। द्रोणाचार्य ही राह बतायें, तो आदमी शायद आ पहुंचे। अगर कोई अभिमन्यु दिल का जोर मारकर चक्रव्यूह को तोड़ना चाहे, तो वह तोड़ तो लेगा, लेकिन बच के निकल आये, यह सम्भव नहीं है। उसकी लाश को भले ही सिक्ख लक्खी जंगल से बाहर रख आयें। वैसे लाश भी कोई नहीं ला सकता। चौधरी ने कहा।

—बापू, वह देखो धूनी। मुझे नाथों का डेरा लगता है। जोगा बोल उठा।

—बस द्रोणाचार्य का स्थान वहीं है। वह चक्रव्यूह के मुख्य द्वार पर बैठा हुआ है। उधर ही चलो, वही हमारा कल्याण करेगा।

दोनों ने उधर का ही रुख किया। चौधरी ने नारा लगाया—अलख निरंजन। जय गुरु गोरखनाथ।

—अलख निरंजन। आओ भक्तजन, किधर से रास्ता भूल गये? धूनी पर बैठे नाथ ने कहा।

—राह भूले नहीं, जानबूझ कर इधर आये हैं। जो आदमी मकड़ी के जाल में फंसना जानता है, उसी को जीवन का राज मिलता है। हमें काम है सिहों के जत्थे से। चौधरी बोला।

—धन्य भाग्य। हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं?

—लक्खी जगल यही है न? हम कहीं गलत जगह तो नहीं आ गए?

—आपका निशाना ठीक रहा है। ठीक जगह पहुचे हैं। जत्थे में शामिल होने का ख्याल है?

—अभी तो यह ख्याल नहीं है, लेकिन वक्त आने पर जरूर शामिल हो जायेंगे। अभी तो कुछ विनती करने आए हैं। गुरु का भार है, उतर जाए, तो हमारा जीवन भी स्वर्ग बन जाए। कंचन काया चन्दन बनाने आया हूं, बाबा। जोगा ने कहा।

—कहां से चले हैं भक्त? नाथ ने पूछा।

—श्री अमृतसर से। लुकते-छिपते, डरते-डराते, सहमे-डरे, चोरों की तरह गुरु की कृपा से मंजिल पर पहुचे हैं। अब दर्शन हो जाएं सिहों के दस्ते के, तो निहाल हो जाएं। टांगें जवाब दे गई हैं। पैरों में छाले हैं। थकान ने शरीर को तोड डाला है। टांगों में छल्लियां पड़ गई हैं। अब ठिकाने पहुंचे हैं। जरा सी खुली सांस मिले। चलो, गुरु कभी यह आस भी पूरी करेंगे। जोगा ने अर्ज किया।

—नाथ तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे।

—जय गुरु गोरखनाथ! जोगे ने कहा।

—बैठ जाओ। घुटना टेको। जरा सांस लो, जल-पान करो, फिर तुम्हारी तृष्णा पूरी की जाएगी। नाथ ने कहा।

—सिहों का तो जमाना वैरी है, तुम्हारी हमदर्दी सिहों के साथ है या हुकूमत के साथ?

—कोढ पड़े, कुल नष्ट हो, जो हुकूमत का हुकारा भी भरे! हम तो दुःखी हैं, फरियादी हैं, गुरु का नाम लेकर जीने वाले सिक्ख हैं। नाथ जी, हमारी नीयत

पर शक मत कीजिए। गुरु के उपासक तो दूर से ही पहचान में आ जाते हैं। जोगे ने बड़ी नम्रता से कहा।

—क्या काम है ?

—हमारा अपना कोई काम नहीं है। हम गुरु-घर के काम से आए हैं। परन्तु बताएंगे हम सिर्फ सिहों के जत्थेदार को ही।

—कोई दूसरा पूछे तो ?

—बिल्कुल सफेद और कोरा जवाब। सिर कटवा देंगे, मगर मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलेगा।

—फिर हम तुम्हारी मदद नहीं कर सकते। नाथ ने थोड़ी-सी तुर्शी के साथ कहा।

—चलो, गुरु हमारी बांह आप पकड़ेंगे। जो प्रह्लाद को गर्म खम्बे से बचा सकता है, जो ध्रुव को सीने से लगा सकता है, हमें भी तारेगा। पत्थर की लकीर मिट सकती है, पर हमारा विश्वास नहीं डोल सकता।

भक्त जन, हम तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते। इसके लिए हम शर्मिन्दा हैं। सिहों की छावनी में कौन जाए। कौन सोए शेरों को जगाए, सांप की बांबी में कौन हाथ डाले। कौन है जो अपनी मौत को खुद आवाज़ लगाए ? नाथ ने कहा।

गुरु मालिक ! अच्छा, नाथ जी, अलख निरंजन। जय गुरु गोरखनाथ। जोगी चलते भले। जंगल गए हुए फकीर लौट कर नहीं आते। आपकी धूनी की चुटकी हमारी राह आसान बना देगी।

दोनों व्यक्ति उठ बैठे। चलने लगे, तो नाथ ने बाहं पकड़ ली—बैठ जाओ, गुरु के प्यारो। गुरु की नगरी से खाली हाथ कोई नहीं जाता। प्रसाद तो लेते जाओ। गुरु का घर सबके लिए खुला है। तुम नाराज मत होवो, हम तुम्हारा मेल करवाएंगे। जय गुरु। अलख निरंजन।

नाथ ने दोनों को फिर धूनी के पास बैठा लिया।

तुम खालसा के मेहमान हो। गुस्सा थूक दो, बच्चा। ताव खाने का अभी वक्त नहीं है। चुपचाप वक्त की चाल को देखते जाओ। भले दिन जरूर आएंगे।



मरद रोते नहीं

आगे-आगे नाथ चला, पीछे-पीछे जोगा और चौधरी। ऊंट की मुहार चौधरी के हाथ में थी।

—भक्त जी, ऊंट डेरे तक नही पहुंच सकेगा।

—जहा तक जा सके, वही तक ले चलते हैं। फिर किसी पेड़ के साथ बाध देंगे। ऊट को मैदान में बांध कर जाना मौत को आवाज देने के बराबर है।

—ऊट को यही रहने दो।

—मेरा मन नही मानता। मै तो इसे पेड़ों के झुण्ड मे ही बाधूंगा। चौधरी ने कहा।

दूर से घोड़ो के हिनहिनाने की आवाज आई।

—घोड़ा?

—बस, वही सिंह होगे। बख्तावर के घर का पता ड्योढी से ही मिल जाता है। चौधरी ने कहा।

—बस, अब हमें कोई खतरा नहीं है। ऊंट तो क्या, अब हमारी जान भी हाजिर है। सिंह यही है। हम गुरु की सराय में आ पहुंचे हैं। अब हमें कोई डर नही है। अब हम किसी से नही डरते। लो नाथ जी, ऊंट। जोगे ने नाथ के पाँव छू लिए।

—तसल्ली हो गई? नाथ ने पूछा।

—तसल्ली तो पहले ही हो गई थी, पर परदेसी हूं, फूंक-फूंक कर पाव धरना चाहिए। दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है। जोगा ने कहा।

—हमने तुम्हारी नस-नस परख ली है। तुम्हारी परीक्षा ले चुके थे, तभी उंगली मे लगाया है। यहा हर आदमी की परीक्षा ली जाती है, तभी उसे आगे बढने दिया जाता है। हम भी जत्थे के सिंह हैं, रूप बदल कर बैठे हुए। हमारा काम है जासूसी करना। हम विधिचंदिये हैं। हम कभी सूफी, कभी खोजी, कभी पनियारे, तो कभी नाथ। हमारी कसौटी पर घिसा हुआ सोना कभी पीतल साबित नही हो सकता। नाथ ने कहा।

—धन्य गुरु और धन्य उसके सिंह। दशमेश पिता ने खालसा सजा कर कुन्दन बना दिया खालसा को। उसका झूठ, उसका गर्व, उसका अहंकार, उसका अहं, उसका तकब्बर, उसका सब कुछ भट्ठी में भस्म कर दिया। सिंह कमल के फूल-न्याई हैं। तालाब में रहते हुए भी तालाब में न्यारा-न्यारा है। पासे के सोने में कोई कितनी खोट मिला सकता है? नाथ जी, आपने हमारा जीवन कितना सफल बना दिया। गुरु की मेहर, गुरु की बरकतें, गुरु की आसीसें, गुरु की बख्शिशें आपने सब अपनी झोली में डलवा ली हैं और हमें प्रसाद देकर निहाल कर दिया है। जोगा मग्न था।

—गुरु तुम्हारी यात्रा को सफल बनाएं। नाथ ने आशीर्वाद दिया।

—'चोले जिनके रत्तड़े, कंत तिन्हां के पास', आवाज जोगे की थी।

—गुरु और सिंहों का निशान सिर्फ घोड़े हैं।

—घोड़े तो मुसलमानों के पास भी हैं?

—उनके घोड़ों और हमारे घोड़ो में फ़र्क है। उनमें अरबी नस्ल के घोड़े बेशुमार हैं, और हमारे घोड़ों में देसी नस्ल आम है। इसलिए पहचान मुश्किल नही होती। हम घासी भी हैं और खोजी भी।

हमें घोड़े भगाने भी आते हैं।

नाथ बोला—वही तुम भी विधिचंदिया तो नहीं हो?

—विधिचंदिया ही हूं, तभी तो मेल हो सका है।

झाड़ियां, लम्बी-लम्बी घास, बेलो से ढंके रास्ते—जोगा देखकर हैरान रह गया। नाथ ने हाथ से बेल को एक तरफ हटाया, तो सामने रास्ता बन गया।

—यह पगडंडी सीधी डेरे को जाती है। चाहे इसमें बीतियों बल-खम पड़ें, जब तक डेरा नही आता, यह पगडंडी हमारा साथ नही छोड़ेगी। लक्खी जंगल की बाड बेलों से ही बनी है। सिंहों ने राह में कई चक्कर डाल रखे हैं। कई भूल-भुलैया हैं। अनाड़ी पगडंडी को भूला नही कि धड़ाम से खड्डे में गिरेगा या कंटीली झाडियों में। यह खालसे का चक्रव्यूह है। यह सिंहो का गढ़ है। इसे तोपें सर नही कर सकती। गोले इसे जला नही सकते। नाथ बता रहा था।

—सिंहों को लक्खी जंगल के अलावा सम्भाल ही कौन सकता है?

—तुम ठीक कहते हो।

सुरइए पढने की किसी की आवाज आई। नज़र से ओझल, पर झाड़िया हिल रही थी। आवाज़ में जोश भी था और जलाल भी:

'बाजत डंक अतंक समैं
रण रंग तुरंग नचावहगे
कसि बान कमान गदा बरछी
कचि सूल त्रिसूल भरमावहगे

गण देव अदेव पिसाच परी
रण देख सर्वे रहसावहगे
भल भाग भया इह सभलके
हरि जू हरिमन्दिर आवहगे।'

—बस-बस। मैं गुरुधाम पहुंच गया। गुरु रामदास ने मेरा बेड़ा किनारे लगा दिया। जोगा खुशी से बावरा होता जा रहा था। —चौधरी जी हमारी उम्मीद अवश्य पूरी होगी।

—खेत के बहाने भेड़ को भी पानी मिल गया। चौधरी ने कहा।

—लकड़ी के साथ लोहा भी तर गया। जोगे ने कहा।

दोहा पढ़ा सिंह ने :

'कोई किसी को राज न दे है।
जो ले है निज बल से ले है।'

पिछली तुक दो बार पढ़ी। सीस नवाया। अकाल पुरुख को नमस्कार किया। उठकर अरदास-वन्दना करने के बाद सत श्री अकाल का जयकारा लगाया। उस जयकारे में जोगे ने भी अपनी आवाज मिला दी। चौधरी ने भी आवाज मिलाने की कोशिश की। सारा जंगल गूंज उठा। नाथ के साथ का इतना प्रताप था।

सिंह ने नेत्र खोले। लाली भरे, दीवाने-मस्ताने नेत्र। नेत्रों की ज्योति में सूरज की ज्योति जलती थी। पेड़ की टहनी परे हटाई, तो सिंह भी नजर आए।

—प्रेमियों, आप कौन हैं? कहां से आए हैं? क्या सेवा की जाए आपकी? सिंह साहिब ने पूछा।

नाथ बीच में ही बोल उठा—एक पुरुष राजस्थान का है और दूसरा प्रेमी श्री अमृतसर से आया है। मैंने काम पूछा था, इन्होंने बताने से इंकार कर दिया। मैंने सत्य वचन कह कर सीस नवा दिया। ये बोले, इन्हें जत्थेदार से मिलना है। मैं साथ ले आया हूं। बाकी आप जानें और आपका काम।

जोगे की आवाज गले में ही अटक गई। खुशी में वह इतना दीवाना हो गया कि बात ही नहीं कर सका। आंखों में आंसू आ गए चने के दानों के बराबर। ये आंसू खुशी के भी थे और दुःख के भी।

—नाथ जी, आपने परख लिया है—वैरी हैं या मित्र?

—जोगा तो विधिचंदिया है, मैंने इसकी सारी जन्म-पत्री देख डाली है। यह चौधरी हमदर्द है। जोगे को यहां पहुंचाने के लिए आया है।

—चौधरी बोला—मैं भी मित्र हूं, सेवक हूं, श्रद्धालु हूं, गरीब हूं, दस नाखूनों की कमाई खाता हूं और अपना और अपने बच्चों का पेट पालता हूं। यह परदेसी अमृतसर से आया है।

सिंह ने जरा तेजी से पूछा—श्री अमृतसर से?

—जी हां, सतगुरुओं की नगरी से। पर कहने के साथ ही जोगा रो दिया। आंसुओं की झड़ी लग गई। वह वैसे ही रो रहा था, जैसे बेटे के मर जाने पर कोई रोता है।

—मैं बलिहारी जाऊं, तुम्हारे चरणों की धूल माथे से लगाऊं। तुम मेरे सतगुरुओं की नगरी से आए हो। पर तुम रोते क्यों हो? किसी मुग़ल ने आंख गहरी की है? किसी ने अति को छुआ है?

—अति से बढ़कर पाप ही नहीं किया है, पाप के बादल बरसाये हैं। इतना अत्याचार, उसने भगवान् की भी परवाह नहीं की। मैं बर्दाश्त न कर सका, सह भी न सका, मुझ से रोका भी नहीं गया। मैं क्या बताऊं? मेरी जबान कोढ़ी हो जाए।

इतने में ही एक और सिंह आ गया।

—बस, बताया नहीं जा सकता। जोगा सिर पर बांह रख कर रो रहा था।

—मर्द रोते नहीं। मर्द मुकाबला करते हैं। सीने पर पत्थर रख कर सीस दें। जो गुजरती है, उसे सहें। बताओ, अब सिंह इन्तजार नहीं कर सकते।

—बताऊंगा। मैं जरूर बताऊंगा। बताने के लिए तो आया हूं। पर जत्थेदार के सामने।

सिंह खामोश हो गए।



यार की गली

'चोले जिनके रत्तड़े कंत तिन्हां के पास,
धूड़ तिन्हां की जे मिले, नानक की अरदास।'

दोहा पढ़ कर सिंह ने फतेह बुलाई, और फिर वहीं जमीन पर बैठ गया—रेतीली जमीन पर। साथ ही बड़ी नम्रता से बोला—ये मेहमान कहां से आए हैं?

—एक श्री अमृतसर से और दूसरा राजस्थानी मेहमान है।

—कुशल-मंगल पूछी गुरु-नगरी की।

—अभी तो इनके पांव भी मैले नहीं हुए हैं। अभी तो बात नही हुई। आप आ गए हैं, गुरु की बरकतें-बख्शिशें आप ही झोली में डलवाइए। आपका ही हक बनता है।

· गुरु-प्यारे, गुरु की नगरी का क्या हाल है? बसता है हमारा खेड़ा?

बस इतनी-सी बात ही की थी सिंह ने, कि जोगा फिर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। सांस मे सांस नहीं जुड़ रही थी। जबान तालू से जा लगी थी। एक भी बोल न बोल सका।

—मित्र, कुछ तो बोलो। हम तुम्हारे मुखारविंद से वचन सुनने को उतावले हैं।

रोती हुई आवाज और हिचकियों के बीच जोगा बोला—मस्सा...रंडी...शराब...हुक्का...झांझरें...तबला...सारंगी...हरिमन्दिर...

इसके बाद उसकी आवाज फिर हिचकियो में डूब गई।

—यह पहेली मेरी समझ मे नहीं आई।

—मेरी समझ में आ रही है। यह डरता है कहीं इसकी जबान को कोढ़ न हो जाए। कहीं कोई उसकी जबान खींच न ले। इसका डर सच्चा है। यह हमें ठीक तरह से नहीं बताएगा। इसे जत्थेदार के पास ले चलें। हरिमन्दिर साहिब की बेअदबी की बात कर रहा है। इसकी बातों मे चाहे उलझनें हैं, पर इसकी डोर का गोला बात को समझा रहा है।

पंचायत चल पड़ी। पहला सिंह था सुक्खा सिंह माडी कंबोके वाला, और दूसरा मेहताब सिंह मीरांकोटिया। दोनों अमृतसर के वासी। माझे के लहू में उबाल आया। सिंहों ने अपने खंडे खींच-कर म्यान से आधे बाहर निकाल लिए थे। आंखों से लहू टपकने लगा था।

नाथ बोला—अमृतसर में कोई बड़ा उत्पात हुआ लगता है। किसी ने अपनी मौत को खुद ही आवाज़ दी है। थोड़े दिनों का मेहमान है कोई।

—इस तरह के अंधड़ पंजाब पर रोज़ ही चढ़ते रहते है। लाल बुझक्कड़ तूफान भी कई बार चढ़े। मेघ गरजे, बरसे, बस ठंड पड़ गई। जब बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है, तो सिंहों के खडे म्यान से बाहर आ जाते हैं। ये अब ज़रूर किसी की बलि लेंगे। सुक्खा सिंह ने कहा।

—हरिमन्दिर साहब में कोई कुकृत्य ही हुआ लगता है। जरूर मुग़लो ने ही किया होगा। मेहताब सिंह बोला।

—रंडी, शराब, हुक्का...हरिमन्दिर मे चारों ओर मुग़लों के चिह्न हैं। सुक्खा सिंह के विचार थे।

—आप तो गुरु की नगरी को भगवान् के आसरे छोड कर खुद पत्रा बांच आए। आपने तो लक्खी जगल मे आकर डेरे डाल लिए। कोई मरे या जीये, आपको उससे क्या? आपने कब खबर ली है उसकी। मुगलों के चौधरी ने अमृतसर में घुड़दौड़ शुरू कर दी है। शैतान ने आकर डमरू बजा दिया। गुरु की नगरी में भगड़ा हुआ, रंडी घाघरा पहन कर नंगे मुंह बेशरमी से नाची...गैरत ने घूंघट लिया। परिक्रमा...बस.. बस...जोगा चुप हो गया। —मुझ मे हिम्मत नही है कि मैं कुछ बता सकूं...मेरा कलेजा मुंह को आता है। मुझ से मत पूछिए, मुझे डर लगता है।

बेलों, लताओं, झाड़ियों, कीकरों-करीरों आदि को लांघ कर वे उस जगह पर पहुंच गए, जहां जत्थेदार बैठे हुए थे, पालथी मारे। माला हाथ में थी। दगदग करते चेहरे, आंखों में सुरूर, मस्ती, जलाल, मस्तक मे तेज, तप और गौरव। दरबारा सिंह, बुड्ढा सिंह, कपूर सिंह एक पक्ति मे बैठे हुए थे। सब ने पहुंचते ही फतेह बुलाई।

जब जोगे ने जत्थेदारों को देखा, तो उसका सिर अपने आप झुक गया। उसकी जबान का ताला टूट गया था। गीदड़ शेर बन गया था।

—आओ भाई, सुक्खा सिंह...किधर से आई हैं संगतें? दरबारा सिंह ने कहा।

—मेहमान आए हैं श्री अमृतसर से।

—धन्य भाग्य। मेरे गुरु की नगरी से कोई तो आया। जल-पानी दो। आसन दिया कपूर सिंह ने, जो अभी फूटती दाढ़ी वाला लड़का ही था।

सब लोग बैठ गए।

—जत्थेदार जी, मुझे मामला काफी गम्भीर लगता है। मेहमान की नसें फड़क रही हैं। होनी कहीं हो गई है। बुड्ढा सिंह ने कहा।

—गुरु नगरी का क्या हाल है, गुरु सिंह जी ?

जोगा फिर रोने लगा।

—धीरज रखो। तगड़े बनो। मर्द बनो। मुसीबत के समय मर्द सीना तान कर मुकाबला करते हैं। हमें तो घूंटी ही यही मिली है। घबराओ नहीं, तुम ठीक स्थान पर पहुंच गए हो। जत्थेदार ने जोगा के कन्धे पर थपकी दी।

बिल्ली का बच्चा शेर बन गया उस हल्की-सी थपकी से। जोगे की हिचकी बन्द हुई। उसने आंखें पोंछी और बोला—मैं अमृतसर का वासी हूं और वहीं से आया हूं। इस चौधरी की कृपा मुझे आप तक ले आई है। यह भी गुरु का उपासक है। श्री हरिमन्दिर साहब की परिक्रमा अब परिक्रमा नहीं रह गई है, घोड़ों का तबेला बन गई है।

—यह कुकुर्म किस हत्यारे ने किया है ?

—मस्सा रंघड़ ने।

—वह कौन है ?

—मंडियाले का रंगड़। लाहौर के सूबेदार ज़करिया खा ने उसे चौधरी बना कर अमृतसर भेज दिया है। अब उसके हुक्म के बगैर मक्खी पर नहीं मार सकती। उसने हवा, पानी, दूध को भी थाम रखा है।

—इतना बड़ा जाबर है वह ?

—हां। शैतान का सांढू है।

—खानू की मौसी का पूत लगता होगा।

—घघरी का रिश्ता है।

—तब तो सच है। वह हवा में तलवारें फेर सकता है। और ?

—मेरी जबान में कहीं कोड़ तो नहीं हो जाएगा। गुरु घर से बाहर तो नहीं कर दिया जाऊंगा मैं ?

—गुरु भाई, खोल के बताओ, सीना खोल के। जब नाचने ही लगी, तो घूंघट कैसा ? गुरु तुम्हें भाग्यवान बनाएंगे ?

—सीने पर पत्थर रख लीजिए : श्री हरिमन्दिर साहिब अखाड़ा बन गया है लुच्चो-लफंगों का। दिन-रात मुजरा, परमात्मा के घर में रंडी के घुंघरू खनकते हैं। तबला बोलता है, सारंगी सवाई होकर चीखती है। हुक्का गुड़गुड़ करता है, शराब के मटकों के मटके खुलते हैं। जहां गुरु ग्रन्थ साहिब का पाठ होता था, वहां खटिया डालकर बैठा है मस्सा रंघड़। जहां अखंड ज्योति जलती थी, वहां अब मुजरा होता है। सारा दिन और सारी रात धड़म्म-चौदस मची रहती है। रोज गऊ के खून से धोया जाता है पवित्र पुल वाला रास्ता। हड्डियों, गोश्त के लहू से भर गया है सारा सरोवर। परिक्रमा में या तो घोड़ों की लीद है

या पशुओं की हड्डियां। हमें तो अब कोई अन्धा कुआं भी नही मिलता, जिसमे डूब मरें। मैं कुछ नही कर सका। चिड़िया-सी जान कर भी क्या सकती है? जान बचा कर भाग आया हूं, सिर्फ इसलिए कि बात खालसा के कान तक पहुंच जाए। मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई।

भले ही जत्थेदारों के खंडे भी म्यान से निकल आए थे, लेकिन सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने खडे खीच कर बाहर निकाल लिए। कपूर सिंह का खंडा अभी आधा ही नंगा हुआ था। जोश ने ज्वाला का प्रचंड रूप धारण कर लिया।

—अगर कोई भूला-भटका स्नान करने आ जाए, तो बस आ गई शामत। या तो वह कत्ल हो गया, या हाड़ घुटने तोड़ कर उसे फेंक दिया गया, कोंच-कोंच मारा गया। कई सिंह इस तरह कौवों-कुत्तों को डाल दिए गए हैं। जोगा बताए जा रहा था।

बस-बस...अब और बर्दाश्त नही किया जा सकता। अब हम सुन नही सकते। भगवान् के लिए, गुरु के नाम पर, अब अपनी जबान बन्द रख।

नेत्रों से अंगार फूटे, लहू उबाल खाने लगा, भुजाएं फड़की, तलवारों ने करवटें ली म्यानो में।

—हम तुम्हारे धन्यवादी हैं, सतगुरु तुम्हें निहाल करें। खालसा मस्सा रंघड़ को ठीक करेगा; उसकी महफिलें उजाड़ेगा। सतगुरु के पवित्र दरबार का अपमान करने वाला अब खालसा के हाथ से बच नही सकता।

दरबारा सिंह ने अपने खंडे पर हाथ रखा और कहा—कौन है सूरमा?

सारे लक्खी जंगल में शोर मच गया था।

सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह सबसे पहले खड़े हुए। कपूर सिंह और अन्य जत्थेदार भी खड़े थे कतार में।

—मस्से को ठीक करने के लिए जत्था जाएगा। हुक्म था जत्थेदार का।

—यह बेइन्साफी है। हमारा अधिकार छीना जा रहा है। सबसे पहले यह सन्देश हमने सुना है, हमारे कानों ने यह करुणामयी आवाज सुनी है, ज्वाला हमारे भीतर भड़क रही है। हम मस्सा रंघड़ का सिर लाकर हाजिर करेंगे। अगर न ला सके, तो अपना काला मुंह नही दिखाएंगे। अगर हम बेशरम बन कर आ भी गए, तो अपना सिर भेंट करेंगे सारी संगत के सामने।

—यह मुहिम बहुत कठिन है। यह काम किसी अकेले का नही है। शूलों की बाड़ है। मौत से आंख मिलाना और मौत का मजाक उड़ाना। मौत के साथ खेलना। सिर हथेली पर रखकर खेलने वाली बात है। मैं इजाजत नही दे सकता।

—क्यों? हमने आप से यह बात नहीं सीखी है? क्या हम गुरु से विमुख हो जाएंगे? क्या आपको हम पर विश्वास नही है?

—विश्वास है, पर यह काम बड़े जोखिम का है। इतना लम्बा रास्ता, सारा जग खालसे का वैरी, गलियों के तिनके तक खालसे के दुश्मन। पहले तो अमृतसर तक पहुंचना मुश्किल, फिर हरिमन्दिर साहिब तक पहुंचना और भी कठिन। सिर काटने की बात तो बाद की है। पहले अमृतसर में अपनी ताकत बनानी पड़ेगी। अपनी जगह कायम करनी पड़ेगी। जोश तुम्हारी बहादुरी है। तुम्हारी दृढ़ता, तुम्हारी जिद किसी और दिन काम में आ सकती है। दरबारा सिंह ने अपने विचार सबके सामने रख दिए।

—जत्थेदार के विचार समझने और विचार करने योग्य हैं।

—सिर-माथे पर कबूल। लेकिन हमें हमारे काज से क्यों रोका जा रहा है?

—कौम का विरसा यो ही नहीं लुटाया जा सकता।

—अगर कौम की पगड़ी गलियों में धूल फाक रही हो और कोई उसकी इज्जत बचाने के लिए चले, क्या उसकी बांह पकड़ ली जाती है? सुक्खा सिंह ने पूछा।

—रोकते नही। पर बन्दोबस्त पूरा करके भेजेंगे। सेहरे तुम लोग ही बांध कर जाना, लेकिन साथ मे बाजे वालो का होना भी जरूरी है। बारात ले जानी है, तो बाराती तो इकट्ठे कर लो। दरबारा सिंह ने कहा।

अब जोगा बोल उठा—बाजों वाले हम हैं। हम अमृतसर का इन्तजाम खुद ही कर लेंगे। सारा अमृतसर इनके पांवो के नीचे पलकें बिछा देगा। हमें समधियों की हवेली मे जाना है। सज-धज कर जाएंगे। जत्थेदार जी, खालसे का कोई दुश्मन नही है, मुग़लों के अलावा। लोग तो सास के साथ सास लेते हैं। लोरियां दे-देकर लोगों ने खालसे को पाला है। हाथ गिन-गिन कर जवान बनाया है। दूध-घी भले ही खालसे की क़िस्मत मे नही है, रूखी-सूखी रोटियां ही हैं, मगर इसके साथ सारे पंजाब की आशीर्वे हैं। पंजाब के मुसलमान सिंहों के घोड़ों की लीद उठाते हैं, हिन्दुओं के बेटे-पोते हैं, खालसा हिन्दुओं का लहू-मास है। पजाब की नदिया कभी वैरी हो सकती हैं खालसा की? सिर्फ हुकूमत के अहलकार ही रक्त के प्यासे हैं। बाकी पंजाब तो चूरमे बना-बना कर खालसे को खिलाता है।

—दूल्हा तो एक को ही बनना है। रही बात बारात इकट्ठी करने की, सो हम करेंगे, नाथ ने कहा।

—हां, अब बात कुछ समझ में आई है।

—थपकी दीजिए फिर शेरो को। बुड्ढा सिंह ने कहा।

—क्या यह अमृत मुझे नही चखने दिया जाएगा? कपूर सिंह ने कहा।

—बांट कर खाना सिंहों का नियम है, लेकिन कटोरे दोनों सिंहों के हाथ में आ गए हैं। अब छीने नही जा सकते।

—बस, एक ही बात। मस्से का सिर। अगर मस्से का सिर न ला सके, तो खालसे को मुंह न दिखाना। यह पंथ का फैसला है। दरबारा सिंह ने फरमान जारी किया।

खंडे चूमे गए और जयकारा गुंजाया गया—बोले सो निहाल। सत् श्री अकाल।

सारा लक्खी जगल गूंज उठा।

—पहले हम जाते हैं, आप बाद मे आए। आपका रास्ता और, और हम अपना रास्ता आप चुनेंगे। अच्छा, गुरु रक्षक।

नेजे हाथो मे पकड़ लिए। घोड़ो को एड़ लगाई—और फिर यह जा, वह जा।



रेत का दरिया

चौधरी को घर जाने की उतावली थी, लेकिन खालसे का यह कौतुक देख राजपूती रक्त ने जोश मारा। वह घर भी भूल गया और घर के प्राणियों को भी। बोला—खालसे ने महाकुम्भ रचाया है। मैं भी स्नान करूंगा। कुम्भ तो बारह बरसों में आता है। मैं भी आखिरी कुम्भ नहा लूं। कुम्भ बार-बार तो आता नहीं। आदमी जीवन में कितने कुम्भ नहा सकता है? यह जन्म फिर नहीं मिलेगा। जोगी, तुमने मेरी चौरासी काट दी। भूल जाओ घर को। घर वाले किसी न किसी तरह वक्त निकाल ही लेंगे। मैं भी आप लोगों के साथ चलूंगा।

नाथों ने ऊंट निकाल लिए। चौधरी ने भी अपने ऊंट को थपकी दी।

ऊंट तीन और जवान छह। लक्खी जंगल को नमस्कार करके चले गुरु के लाड्ले। रेत का दरिया ठाठें मार रहा था—पार करना था मरुस्थल।

चौधरी कहने लगा—राजस्थान का इलाका मेरी मर्जी से पार करो। मैं यहां के जर्रे-जर्रे से परिचित हूं। यह मेरी जन्मभूमि है। यहां के लोगों की राशि मुझसे मिलती है। यह दरिया तो मैं पार करवा दूंगा। फिर आप लोगों की मालगुजारी आ जाएगी। फिर आपकी मर्जी।

—राह बदली जाए?

—नहीं, जोगे ने कहा। जिस रास्ते से मैं आया था, उसी रास्ते से चलेंगे। सारे निशान मिलते जाएंगे। कड़ियां एक-दूसरे से जुड़ती जाएंगी। एक जंजीर बन जाएगी। खबरें अपने आप अमृतसर के डेरे तक पहुंचती जाएंगी। जोगियों की धूनियां, सूफी फ़क़ीरों के दायरे, चिश्ती खुदा के बन्दों के तकिये, डोम-मीरासियों के टोले, कव्वाली गाने-बजाने वालों के अखाड़े—सब हमारी एक टंकार से जागेंगे, टंकार से सोयेंगे। तार से तार जुड़ता जाएगा। मेले होंगे, रूह और कलबूत के। मैं खूंटे गाड़ता आया हूं। यह अलग बात है कि मैं कोई ताकतवर इन्सान नहीं हूं। मेरे गुरु के प्यारे चप्पे-चप्पे पर बैठे हैं। सारे पंजाब में उनका जाल बिछा हुआ है—भले वे केशधारी हैं, भले ही सहजधारी या सूफी फ़क़ीर। ये सब खालसा की ही बिरादरी हैं। इन दोनों सूरमाओं का हम से

अलग जाना ही अच्छा है। लेकिन हमारे तार इनसे जुड़े रहेंगे, हमारा घेरा इनके चारों ओर साथ-साथ चलता जाएगा। क्यों नाथ जी, मेरे विचारों से आपके विचार मिलते हैं?

—विधिचंदिये इस बात में उस्ताद हैं। यह इनके गुरु की देन है। किसी को छकाना, किसी को गलत रास्ते पर डालना और फिर मुड़कर अपनी पकड़ में ले आना विधिचंदिये के बाएं हाथ का काम है। नाथ ने कहा।

रेत गर्म थी, पर जोश के उबाल, हिम्मत, जवां-मर्दी, वलवले, जुनून, खिदमते-कौम के आगे रेत का दरिया क्या कह सकता है?

तपती धरती भी ठंडे पानी का स्रोत लगती है। सूरमे जा रहे थे अपनी मंजिल की तरफ। दो दिनों का सफर उन्होंने एक दिन में पूरा किया—ऊंटों की शक्ति से।

जोश सूरज के जलाल की तरह बढ़ता जा रहा था।



मानी योद्धा

सिर की बाजी लगाने वाले, जिद्दी, सिरों को हथेली पर रखकर निकले योद्धा मौत से मजाक करते हैं। जब कोई आदमी निश्चय कर लेता है, तो विजय उसके पांव चूमती है। सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह घोड़ों को थपकियां दे रहे थे और घोड़े भी नाचते-कूदते रेत का समंदर पार किये जा रहे थे।

—शेर बन जाओ, बेटो। हमने तुम्हारे आसरे ही यह बीड़ा उठाया है। हमें पार लगाना तुम्हारा ही काम है। तुम्हारा-हमारा साथ बहुत पुराना है। यह साथ अजल से चलता आ रहा है। हमारी लाज तुम्हारे हाथ है। सुक्खा सिंह ने कहा।

घोड़ों के कान खड़े हो गए। वे फुंकारे मारने लगे।

—देखा, सुक्खा सिंह, घोड़े भी तुम्हारी भाषा समझते हैं। वे बेजुबान भी आजाद हवा में रहना चाहते हैं। ये जानते हैं कि हमारी धरती गुलाम है। हमारी आत्मा जंजीरों में जकड़ी हुई है। हमारी आत्मा दूसरों के हाथों बिकती है। यह जमीन हमारी है, मकान हमारे हैं, तख्त हमारा है, अनाज हमारा, हवा हमारी, तो फिर हुकूमत क्यों दूसरों की हो? देश हमारा और हुक्म गैरों का। हमें हुकूमत की कमर तोड़नी है और अपनी हुकूमत बनानी है—वाहेगुरु के आसरे पर। हम कोई अनहोनी बात तो करते नहीं, अपना हक मांगते हैं। हमारी धरती में जो कुछ भी पैदा हो, वह हमारा ही रहे, कोई दूसरा लूटकर न ले जाए। हमारे बच्चे रूं-रूं करते रहें और यह काबुली बाघ सब कुछ चट कर जाएं। हमने यह बीड़ा उठाया है। अब गुरु ही हमें इस खेल में जिता सकते हैं। मेहताब सिंह के विचार थे।

घोड़े अपनी रफ्तार में जा रहे थे। सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह, दोनों वाणी में मगन हो गए।

—सुक्खा सिंह ने एक बार विचार किया—हमारा हरिमन्दिर और उसकी यह दुर्दशा। ऐसे जीवन से तो डूब मरना बेहतर है। हमारा हरिमन्दिर,

गुरु नगरी, गुरु धाम, हमारे धर्म केन्द्र । हरिमन्दिर के कलश उसकी आखों के सामने घूमने लगे।

—क्या सोच रहे हो, सुक्खा सिंह ? मेहताब सिंह ने पूछा।

मैं सोच रहा हूं, गुरुओं की कृपा-दृष्टि से हरिमन्दिर प्रकट हुआ और मस्सा रंघड़ ने अपनी मालगुजारी बना ली । मस्सा रंघड़ अब जी सकेगा ? उसका कलेजा चीर कर ही अब सास लेनी है। हड्डियां चीरे बिना खाट पर नहीं सोएंगे। गर्दन उतार कर जत्थेदार के सामने पेश करनी है। भले यह काया रहे या न रहे। वचन दिया है, पूरा करना। सुक्खा सिंह ने कहा।

मेहताब सिंह ने उत्तर दिया—भरे दीवान मे तलवार उठाई है। गुरु के आसरे पर, गुरु का ध्यान करके मस्से की गर्दन मरोड़नी है। अगर कही नजर आ गया, तो मुर्गे की तरह उसका सिर काट कर फैंक देंगे। चले तो हैं, गुरु की माला फेरते। यह लाज गुरु के हाथ ही है। सुक्खा सिंह, मैं तो यह प्रण करके चला हूं: 'मोहे मरन का चाव, मरूं तो हरि के द्वार।'

—बस यही अरदास है। पूरी हो जाए, तो हमे जिन्दगी मिल गई। इन जानवरों की तरह सब जिन्दगी भोगते हैं ये भारतवर्ष वाले। यह जीना भी कोई जीना है ? दो पाव कम चल लेंगे, पर चलेंगे मटकते हुए।



राम रौनी

—मेहताब सिंह, हरिमन्दिर मेरी आंखों के सामने घूम रहा है। जब मैं छोटा था, तो अपने बाबा के साथ हरिमन्दिर के दर्शन के लिए आया करता था। बाबा मुझे अंगुली से लगाए माथा टेकने के लिए ले जाया करते थे। वह नक्शा अब मेरी आंखों के सामने आ रहा है।

—हां-हां, मैं भी बाबा के साथ जाया करता था। गुरु की नगरी, जैसे ताज और हरिमन्दिर उसमें जड़ा हुआ हीरा। मेरे बाबा तो कहा करते थे, अमृतसर एक माला है, सिरमौर है हरिमन्दिर। शरीर गुरु की नगरी है और सीस है हरिमन्दिर। मेहताब सिंह ने कहा।

—मैं तुम्हें वह कथा सुनाता हूं जो मेरे बाबा मुझे सुनाया करते थे।

—जरूर सुनाओ, मेरे हमदम। मेरे दोस्त, मेरे भाई, मेरे जोड़ीदार, मेरे हमसफर, मेरे साथी। हम कौम की इज्जत ले के निकले हैं। कौम ने हमें पगड़ी बंधवाई है। हमे अपनी जान की बाजी लगाकर इसकी लाज रखनी है। सुनाओ, सुक्खा सिंह, गुरु-महिमा सुनाओ। मेहताब ने कहा।

सुक्खा सिंह ने कहा—चौबुर्जी, दोबुर्जी और राम रौनी। शेरशाह सूरी ने शहरों की हदें बांधी और बुर्जियां बनवाईं। सड़कें भी उसी की देन हैं। मेरे बाबा भी कहा करते थे कि बुर्जियां इसलिए बनवाई थीं कि कोई झगड़ा न खड़ा हो। हम सारे आपस में भाइयों की तरह रहे। पहले दोनों नाम शेरशाह सूरी की देन हैं, जिसने शहरों की सीमाएं पक्की कीं और तीसरा नाम मिसलों के राठ सरदारों की, जिन्होंने खूंटे गाड़े, गढ़ी बनाई और अमृतसर की सीमा पक्की कर दी। अब अमृतसर ये सारी सीमाएं पार कर चुका है।

अब सुनो, अपने राठ सरदारों की कथा। जस्सा सिंह रामगढिया जालन्धर के सूबेदार अदीना बेग का नौकर था। अदीना बेग लाहौर के सूबे के अधीन था। लाहौर से सरकारी हुक्म हुआ, अमृतसर की ईंट से ईंट बजा दो। अदीना बेग ने जस्सा सिंह रामगढिये को दरबार में बुला कर शाही खिल्लत पहनाई, उसकी कमर से तलवार खोली और अपनी कमर से अपनी तलवार खोल कर और जस्सा

सिंह की कमर में बांधते हुए कहा—अगर तुम अमृतसर को जीत लाओ, तो दोआवे में जो चार गांव तुम कहोगे, या जिन पर तुम्हारे भाई या रिश्तेदार उंगली रख देंगे, तुम्हे दे दिये जाएंगे। एक अरबी घोड़ा दिया गया, साथ ही प्रोत्साहन के लिए थपकी भी। —अगर मूजियों को मार आए, तो तुम्हारी चौधराहट पक्की। खाते रहना सात पुश्तो तक।

जस्सा सिंह इतनी-सी बात में ही शेर हो गया। दोआवे की सेना चढ़ी और उसने अमृतसर को जाकर घेर लिया। खालसे का अन्न-पानी बन्द। पर सिंह भी कहां किसी की पीढ़ी के नीचे नहाये हुए थे ? उन्होंने भी खुले मैदान में तेग चलाई और खूब खून बहाया। तह बिठा दी। लेकिन दूसरे हमले में उन्होंने देखा कि मुकाबला भारी है। हमारा पलड़ा कमजोर है। दुश्मन के पास तोपें भी हैं। सिंह राम रौनी की कच्ची गढ़ी में जा छिपे। जस्सा सिंह ने समझा कि अब शामत आई। खालसा नये हमले की तैयारी कर रहा है। इसका मुंह तोड़ना आसान नही है। पर सिंहों ने तो अमृतसर को गुरु के आसरे पर छोड़ दिया था। दोआबे की फौज को अमृतसर से क्या लेना था ? वह तो किले के द्वार पर धरना देकर बैठ गई। सिंहों ने चुप्पी साध ली। रात निकल गई। दिन अभी निकला नही था। दोआवे की फौज ने खूनी हमला किया। खालसे ने थोड़ा-सा द्वार खोलकर होली खेली। धन्य खालसा। धन्य गुरु। तोप ने भी आग बरसाई। डायन भी मुंह खोले बैठी थी। कलजीभी का पेट ही नहीं भर रहा था। वह कुलच्छिनी सिंहो का आधा जत्था खा गई, लेकिन सिंहों ने दिल नहीं हारा। साहस नहीं छोड़ा। गुरु के चेलों के इरादे बहुत बुलन्द थे। शाम ढली। रात सिर पर आ गई। रात रानी ने सिंहो के परदे ढंक दिए। गुरु ने लाज रख ली। सिंहों का जलाल वैसे का वैसा ही बना रहा।

जब लहू के तालाब बने देखे, तो जस्सा सिंह अपना कलेजा पकड़ कर बैठ गया। यह क्या ? सिंहों का खून। मेरे भाइयों का रक्त। यह मैंने क्या किया ? मेरी अक्ल क्यों मारी गई ? मुग़लों के अन्न ने मेरी बुद्धि मलिन कर दी है। सारी रात जस्सा सिंह को नींद नहीं आई। आंखों में ही रात कटी। सोच मे डूबा रहा रामगढिया सरदार। बिरादरी ने मुझे गाव से निकाला था। इसमें मेरे गांव का कसूर है, मेरे भाइयों का दोष है, पर इसमें सिंहों का क्या दोष ? मैं पापी हूं, गुनाहगार हूं, जालिम हूं, देश द्रोही हूं। मैंने अपने भाइयों के खून से हाथ रंगे हैं। मैंने समझा था कि मेंहदी लगा रहा हूं, फतेह का सेहरा बांधने के लिए। फतेह ? गुरु की नगरी को ढहा कर ? धिक्कार है तेरे जीने पर। डूब मर, कमीने। कहां जगह मिलेगी तुझे ? तुझ से कुत्ते जितनी लाज भी नहीं है। चंद रोटियों के बदले तूने सिंहों को खून से नहला दिया। जस्सा सिंह को एक कंपकंपी सी आई। उसका शरीर कांपा। मैं क्या मुंह लेकर जाऊंगा दशमेश पिता के सामने ? मरना तो मुझे भी है। मुग़लों ने मुझे पट्टा नही लिखवा दिया

है। मुझे मुगलों की बारादरियों की हवा नहीं खानी है। मुझे तो वहां कोई छींकने भी नहीं देगा। बहुत बड़ी गलती हो गई। इतनी बड़ी भूल। क्या मुझे क्षमा मिल सकेगी? उसका आत्म-सम्मान जागा। उसकी आत्मा बलवान हुई। उसे उसके अंतस् ने लानतें दीं। उसे कंपकंपी छिड़ गई। उसने करवट बदली। मैं गुरु का सिक्ख हूं। सुबह का भूला अगर रात को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते। उसने अपनी कमान निकाली, चिल्ला चढ़ाया और आधी रात के वक्त एक तीर सन्देश बांध कर राम रौनी की ओर मारा। सिंह भी कहां सो रहे थे? वह तीर सिंहों के हाथ आ गया।

—क्या लिखा हुआ था उसमें? मेहताब सिंह ने पूछा।

—कालिख लगी दाढ़ी को धोना चाहता था, और उसमें क्या होगा?

—दोस्त, गुरु घर में तो सज्जन जैसे ठग भी तिर गए—इसकी भूल तो खालसा ही बख्श सकता है।

—मुझे एक-एक शब्द याद है, जो मेरे बाबा ने बताया था मुझे। सुन लो। गुरु से विमुख हुआ, अगर फिर भी राह पर आ जाए, तो महा-सिंह की तरह बेदावा चिंदी-चिंदी किया जा सकता है। गुरु टूटे हुओं को जोड़ता आया है।

—सुक्खा सिंह, तुम्हारे बाबा ने जो बात कही, वह पत्थर पर लकीर है। मेहताब सिंह ने कहा।

सुक्खा सिंह बोला—रुक्के में लिखा था, मैं आप का भाई हूं। मैं बिछुड़े भाइयों के गले लगना चाहता हूं। मैं तनखाहिया हूं। मुझे इजाजत दीजिए। मैं जवाब का इन्तजार नहीं कर सकता। अब वक्त नहीं है। मैं पौ फटते ही, सूरज की टिकिया निकलते ही एक हमला करूंगा। पहले आप मेरे हमले का मुंह तोड़िए। हमारी तरफ से कोई ज्यादती नहीं होगी। मैं इन हाकिमों की आंखों में धूल झोंकना चाहता हूं। जब दोआबे की फौज भागने लगे और हम अकाल-अकाल का जयकारा छोड़ें, तब आप किले का फाटक खोल दें और अपने लड़ते हुए भाइयों से आ मिलें। खालसा ऐसे निकले जैसे अपनी खोह से शेर निकलता है। लाहौर की तोपें मैं साथ लेता आऊंगा। तोपों को सम्भालना आपका काम। लड़ता हुआ जत्था भाग कर किले में आ जाए। फिर मैं जानूं और मेरा काम। मेरे हम-निवाले, मेरी बिरादरी के भाई, सब के सब गढ़ी की धूल को माथे से लगाएंगे और अपनी भूलें बख्शवाएंगे। मुझे माफ कर दें गुरु की लाडली फौजें।

दिन के समय एक तमाशा हुआ। बाजीगर ने बाजी खेली। ढोल बजा। डमरू डम-डम बोला। मदारी की बांसुरी ने सर्पों को कील डाला। जस्सा सिंह रामगढ़िया गढ़ी में आ घुसा। सिंहों ने एक-दूसरे को बाहों में भर लिया। खून का एक छींटा भी न गिरा। कड़ाह प्रसाद की देग खाली हो गई।

दोआबे की सेना मुंह देखती रह गई और उनके हाथों के तोते उड़ गए।

नानी याद आ गई। सिंहों के करारे हाथ उन्होंने पल्ले बांध लिए और दोआबे की फौज जूतियों की बगल में दबाकर भाग उठी। मैदान सिंहों के हाथ रहा।

एक हाकिम कह रहा था—देखा, भाई ऐसे भाइयों से मिलते हैं। लहू इस तरह पिघलता है। इस कौम का मुकाबला करना बहुत मुश्किल है। ये लोहे की जान...इन फरिश्तों को मुग़ल कभी खत्म नहीं कर सकते। अदीना बेग का बाप भी इस गढ़ी को फतेह नहीं कर सकता। भागो और जान बचाओ। ये बाघ भेड़ों को फाड़ खाएंगे। कुत्ते की मौत मरने के बजाय अपने घर जा कर आराम करो। हमें कोई चौधराहट नहीं मिल जाएगी।

दोआबे को लाहौर वाले जूते ही मारेंगे। उनका काम है जूते मारना और हमारा काम है जूते खाना। हमने तो प्रसाद ले लिया। लाहौर वाले आएं और वे भी ले जाएं।

कहते हैं, सारी फौज भाग गई, कहीं बिल्ली का बच्चा भी बाकी न बचा। सिंहों ने गुरु के सामने अरदास की। टूटी हुई बाहें गले से आ लगीं।

जस्सा सिंह रामगढ़िया ने अपना कलंक इस तरह धोया। दूध ने जस्से को दूध जैसा बना दिया और खालसे ने उसे रामगढ़िया सरदार बना दिया। कच्ची गढ़ी पक्की बन गई। तभी उसने दम लिया। [illegible]। [illegible] बांटी गई। इस गढ़ी को राम रौनी कहते हैं। यह अमृतसर की [illegible] है!

मेरे बाबा की बात मुझे आज तक याद है। तन को गुरु के लिए [illegible] दो, आगे गुरु जाने और उसका काम।

घोड़े अपनी चाल में मस्ती से चले जा रहे हैं, जैसे वे भी यह कथा सुन रहे हों।

परिक्रमा

—मुझे अच्छी तरह याद है। बाबा का एक-एक बोल ध्यान में है। कच्चा-सा चबूतरा, जुड़ी ईंटों का, ऊपर पोचा किए हुआ और उसके आगे एक चहबच्चा निर्मल जल का। चाहे उसके पास जोगी नाथ और सूफी फकीर बैठे रहते थे, प्रभु-प्रभु करते। हुकूमत उन्हें कभी नहीं टोकती थी। थोड़ी दूर पर मकबरा भी बना हुआ था। कच्ची-सी कब्र, उसके ऊपर हरी चादर। पांवों की ओर फूलों का ढेर। इसे हुकूमत ने अपने जोर से बनवाया था, ताकि लोग पहले यहीं जाकर माथा टेकें। हाकिम लोगों को मजबूर करते कि पहले इस मकबरे पर दुआ पढ़ी जाए, यह जाहिरा पीर तुम्हारी रेख में मेख मार सकता है। जब कोई हाकिम सिर पर बैठा होता, तो लोग उसके डर से सीस नवा देते, लेकिन जब आसपास कोई न होता, तो कोई मकबरे की तरफ देखता भी नहीं। मैंने खुद देखा है कि कोई मुसलमान या हिन्दू यहां अपने आप सिर न झुकाता। पहले यह एक कब्र थी, और जब सिंहों के जत्थे इधर आकर गरजते, तो वे कब्र को ज़मीन से मिला जाते। हुकूमत फिर कब्र बनवाने का यत्न करती। सिंहों का फिर दांव लगता, वे फिर ढहा जाते। यह तमाशा वर्ष में कई बार होता। जुम्मेरात को अब भी कोई न कोई आदमी चिराग जला जाता।

मैं बाबा के साथ था। हमने चहबच्चे में पांव धोए, परिक्रमा में आए, तो, गुरु जानता है, मेरा सिर अपने आप झुक गया। भले ही मैं कुछ नहीं जानता था। हरिमन्दिर की नूरानी किरणों ने हमारे अन्दर आलोक का छींटा मारा। मेरा दिल कह रहा था—धन्य गुरु। मैं हरिमन्दिर की एक-एक ईंट के बारे में सोच रहा था। यह मामूली ईंट नहीं है। पता नहीं, एक-एक ईंट के बदले कितनी-कितनी बार सिर तोलकर कर दिए गए हैं, तब एक ईंट प्राप्त हुई है।

सिंहों के ये सिर जोड़ दिए जाएं तो अमृतसर से दिल्ली तक एक लम्बी सड़क बन सकती है। इतनी चौड़ी कि जिस पर से दो बैलगाड़ियां एक साथ निकल जाएं। अगर शेरशाह सूरी वह सड़क देख लेता, तो अपना मुंह आस्तीन में छुपा लेता। लोग हरिमन्दिर का इतिहास नहीं जानते। अभी कल भाई मणि

सिंहों ने बन्द-बन्द कटवाए है। जो जानते है, वे भूल गए हैं या उन्हे भुलवाने की कोशिश की जा रही है। यह हुकूमत तो वे फकीर करते हैं, जो एक तरफ तो इस्लाम फैलाते हैं और दूसरी तरफ हिन्दुओं के साथ गहरे होने की कोशिश करते है। ढिंढोरा देते है—रूह एक है, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान। खुदा की मख़लूक है यह सारी, इसमें हिन्दू या मुसलमान का क्या फर्क? कई भोले बन्दे इनके कहने मे आ जाते हैं और कई बिलकुल ही सिर हिला देते हैं। हाकिम इस बात से भी चमक उठता है और सिंहों के साथ दुश्मनी और भी बढ़ जाती है।

सर झुकता है, मन नमन करता है, आत्मा नमस्कार करती है, गुरु की शक्ति का स्रोत सारे पंजाब को रूह की खुराक देता है, और रोशनी देता है सारे विश्व को। जिसने एक बार इसकी धूल सच्चे दिल से माथे पर लगा ली, उसकी आत्मा की चौरासी कट गई। यहा कोई गुरु नही, कोई चेला नही। यहा करनी बलवान् है। कर्म करो। फल गुरु देगा। माला जपो। खुद जीओ और दूसरो को जीने दो। डरो सिर्फ उस सर्व शक्तिमान से। बन्दा स्वयं खुदा है। बन्दे के अन्दर खुदा है, लेकिन बन्दा खुदा नही बन सकता। बन्दा सबसे ऊंची वस्तु है। बन्दा भगवान् को जब चाहे, जिस समय चाहे, अपने पास बुला सकता है। चाहे हल चलवा ले, चाहे गोड़ाई करवा ले। अशरफुल-मख़लूकात है। यह जन्म बार-बार नहीं मिलता। लीन हो जाओ उसकी लय मे। यह माकूला सूफी फकीर हज़रत मिया मीर का है। यह बात मुझे आज तक याद है। इसलिए उसकी रूह हरिमन्दिर की नाभि से बोलती है। जयकारों मे अज़ान की धुनें। इसकी नींवों में हिन्दुओं, मुसलमानों और सिंहो का मिला-जुला रक्त मढ़ा हुआ है। अगर यहा हिन्दू कत्ल होते थे, तो उनके साथ सूफी फकीर भी कत्ल हो जाते थे। सिंहों को तो शहीद होना ही था। साझे खून के गारे से ईंटे जुड़ी हुई है। यह गुरु की अटारी पंजाब का दिल है। यही आत्मा है पांच नदियों की। यहां का वासी मुसलमान भी सिक्ख है। चाहे जाहिरा वह इस्लाम का पुजारी है, पर उसका दिल गुरु की वाणी मे रंगा हुआ है। सारे पंजाब ने गुरुओं का प्रभाव स्वीकार किया, सारे पंजाब का सर झुकता है इसकी सरदल पर। फरिश्ते सजदे करते हैं, नमाजी नमाज़ गुजारते हैं, चाहे वे लुक-छिपकर ही करें। साधी करने की किसी की हिम्मत नही होती। मेरे बाबा कहते हैं कि मेरे बुजुर्ग बताते थे, यहां आधी रात के वक्त फरिश्ते चोरी-चोरी सजदा करने आया करते थे। इसका जल लेकर मोमिनों ने वुज़ू किया। इसका जल हरिद्वार, काशी और प्रयाग से भी ज्यादा पवित्र है। यह आबेहयात है, आबे-ज़मज़म है। गंगाजल की धाराएं यहां शायद गुप्त रूप से मिलती हैं। इसकी पवित्रता को कोई चुनौती नही दे सकता।

सर झुकाओ, सारे कष्ट दूर। मेरा सर झुक गया स्वर्ण मन्दिर की छवि देखकर। मेरी आत्मा बलवान् हो गई। मैं परिक्रमा में पहुंचा। कुहनियों तक चूड़े से भरी हुई बांहे, गोरी-गोरी कलाइयां सोने की चूड़ियों से भरी हुई, सिर की चूनरी से

फर्श साफ कर रही थी। यह श्रद्धा पंजाब के पाचों पानियों की तासीर है। यह बाबा नानक की करामात है। यहां अमीर और गरीब का भेद समाप्त हो जाता है। यह सब का साझा है। इसकी परिक्रमा को जीभ से चाटा जा सकता है, जीभ मैली नही होती।

यहा मिट्टी का क्या काम? यहा तो लोग धूल को तरसते हैं। नमाज पढ़ते-पढते जिनके माथे पर मेहराबें पड गईं, उन्हें मौला के दर्शन न हुए, लेकिन यहा जिसने एक बार सीस झुका कर देख लिया, चाहे चोरी से या खुले आम, उस पर चौदह तबक रोशन हो गए। सूफी फकीर यों ही इस पर लहू नही छिड़कते रहे हैं। सूफी तो इसे काबा मानते हैं, मक्का समझ कर, इसकी तरफ मुंह करके नमाज़ गुजारते हैं। एक प्रकाश स्तम्भ है—यह हरि मन्दिर। सब एक बार सिर झुकाओ और बोलो—धन्य गुरु रामदास।

घोडो ने भी एक बार सिर झुका दिया।

—सुक्खा सिह, तुम तो सचमुच ही मुझे गुरु की काशी में ले गए हो। मेहताब सिह ने कहा।

—यह बुजुर्गों का ही प्रताप है और यह उन्ही की देन है, जिसके खिचाव से हम जा रहे है।

रात हो चुकी थी। विश्राम का प्रबन्ध भी बहुत शीघ्र हो गया। गुरु के श्रद्धालुओं ने घोड़ों को ले जा कर हवेली में बांध दिया और सिहों के लिए पलग बिछा कर ऊपर दोहतियां बिछा दी। माला के मनके सिहो को गुरु की काशी मे ले गए।



बाबा बुड्ढा

—जरा-सा आगे चलें, तो बाबा की बेरी नजर आती है। देखो, सेवा करते बूढ़े, जवान, अल्हड़, बूढ़ी और यौवन की देहरी पर पांव धरती लड़कियां। गरीब-अमीर। भरे हाथों वाली सुहागिनें। गोरी, काली, सांवली, गेहुएं रंग की, कुरूप, खाज खाए चेहरे वाली और सुबह की सुनहरी धूप के रंग की कुआरी कन्याएं, जिनका रूप हाथ लगाते ही मैला हो जाता है—सब बेरी के तने को प्यार-श्रद्धा से दबा रही है। लोगों ने तो इस पेड़ की छाल तक उतार ली है। गुरु का खौफ खाओ। मेरे बाबा ने कहा। गुरु के प्यारो, बूढ़े बेर को चार दिन और जीने दो। जो आती है, वही छाल उतार कर ले जाती है। एक बुरके वाली औरत ने तावीज बनवा कर गले में डाल रखा था। जब मेरे बाबा ने पूछा—यह क्या? तो वह कहने लगी—इससे मेरी कोख हरी हुई है। मैंने फकीरों की खानगाहों की खाक छानी, मुल्ला-मौलवियों से टोने करवाए, तावीज बनवाए, लेकिन मेरी कोख न फूटी। वहां से मुझे खैर न पड़ी। मेरे पड़ोस में एक सिक्ख परिवार रहता था। उस घर की औरत ने मुझे बुलाया और बोली, अरी सौदाइन! तूने यों ही मकबरों के दरवाजे उखाड़ मारे हैं। जिन्होंने अपना कुछ नहीं संवारा, वे तेरी झोली क्या भरेंगे। निश्चय रख, विश्वास को पक्का कर। बाबा बुड्ढे की बेरी पर जाकर मनौती मान, बाबा तेरी गोद भर देगा। कलियुग में उससे बड़ा पीर और उससे बड़ा बुजुर्ग और कोई नहीं है। हम पंजाब के वासी हैं, गुरुओं के सिवा हमारा कोई आसरा नहीं है। बस, मैंने उसकी बात को पल्ले बांध लिया। अपने खाविन्द से चोरी मैंने बाबा की बेरी की मुट्ठियां भरीं। माथा टेका और सिर झुका दिया उसके दरबार में। मैंने एक छिलका उतारा और तावीज बनवा कर गले मे डाल लिया। किसी बुजुर्ग की कृपा दृष्टि हो जाए, तो पुश्तें तर जाती हैं। मेरे भाग्य मे सन्तान बिल्कुल नहीं थी। बाबा ने ही मेरी रेख में मेख मारी। बाबा बुड्ढे के एक पत्ते से मेरी जड़े निकल आईं। पंजाब के धर्म का निश्चय इस तरह डोला हुआ था। हिचकोले ले रहा था पंजाब का धर्म, ईमान और निश्चय।

बाबा बुड्ढे को कौन नहीं जानता ? गुरु घर का सबसे बड़ा और वृद्ध तपस्वी, त्यागी और दयालु बन्दा । गुरु-सिक्ख आदमी है, खुदा नही । मैने सुना है, यहा एक फरिश्ता रात को सलाम करने आया और एक सिक्ख को नजर आ गया । जब उससे पूछा गया, तो उसने इस बेरी की महिमा बताई । खुद गुरु का मस्तक जब यहा झुक गया, तो हमारी क्या औकात है ? गुरु स्वयं सोलह कला सम्पूर्ण है । यह बात अलग है कि आदमी कभी-कभी रब की पदवी पा लेता है, लेकिन पहचानने वाली आख पहचान लेती है । ये विचार एक सईद औरत के थे । हमारा तो यह मक्का है । मैं सरहिन्द से आई हूं । हर साल आती हूं हाजिरी लगाने । भले मै लाख बार सखी सरवर की चेली हूं, लेकिन गुरु-घर में मेरा यकीन पक्का हो चुका है । हम सईद हिन्दुस्तान की पैदाइश हैं, हमारे पुरखे हिन्दू थे और हमारे रस्मो-रिवाज, हमारी जड़े हिन्दुस्तान में हैं । हमने धर्म बदला है, विश्वास नही बदला ।

मेरे बाबा ने कहा—न मुट्ठिया भरो, मेरे भाइयो, बाबा को दुःखी मत करो । लेकिन कौन मानता है ? कौन रोके ? बाबा को समाधि में बैठा रहने दो । उसकी वृत्ति लगी रहे, जग का कल्याण होगा ।

मेरे बाबा ने फिर मुझे बताया—एक बार बाबा बुड्ढे को भैंस चराते बाबा नानक मिल गए । उसने भैंस का दूध दुहा और कटोरा भर कर गुरु के पास ले आया । मेरे दूध को अमृत बना दो, गुरु देव । सर्वज्ञ गुरु ने कटोरा मुह से लगा लिया । दुनिया की हर नियामत बख्श दी । सुदामा द्वारका पहुचा था । मुरली वाले ने उसकी झोली भर दी । पटरानी रुकमणी ने भगवान् की बाह पकड ली । सब कुछ इसे ही दे देंगे । हमारे लिए और सारी दुनिया के लिए कुछ तो बाकी रहने दीजिए । भगवान् की वृत्ति टूट गई । बस, जो कुछ मिलना था, मिल गया । बाबा बुड्ढा इतनी-सी बात में ही वली बन गया । गुरु का रूप उसके अन्दर प्रवेश कर गया ।

गुरु ने कहा—तुम साधारण पुरुष नही हो, बाबा बुड्ढा हो । उस दिन से बिना दाढी का लड़का बाबा बुड्ढा बन गया और आज तक लोग बाबा बुड्ढा कह कर सत्कार करते हैं । यह थी बाबा बुड्ढे की कहानी ।

—हमारे घोड़े भी सुन रहे हैं, इसलिए उन्होंने चारा नही खाया । जितनी देर तुम्हारी कथा मैं सुनता रहा हू, इन्होंने मुंह नहीं चलाया । अब देख लो, वे मुंह मारने लगे हैं । ये जीव परमात्मा के प्यारे हैं । तभी इनका-हमारा साथ है । मेहताब सिंह ने कहा ।

—यह गुरु की महिमा है । सुक्खा सिंह ने जवाब दिया ।

सुक्खा सिंह ने फिर अपनी कथा छेड़ दी—सन्तान का दुःख संसार का सबसे बड़ा दुःख है । इस दुःख को सहना पीरों-फकीरों और गुरु के बस का रोग भी नहीं है । गृहस्थ को सब तरह की नियामतें चाहिएं । किसी बात की भी

कमी रह जाए, तो घर वाले सूली पर लटका देते हैं। गुरु अर्जुन देव जी ने हरिमन्दिर का निर्माण अपने हाथों करवाया और करवाने वाला था बाबा बुड्ढा। यही चबूतरे पर बैठ कर सारा हरिमन्दिर बनवाया। धूप, अंधड़, झक्खड़, बारिश, सब कुछ अपने आप पर बरसवाया। जाड़ों की ठंड नंगे बदन काटी। सावन-भादों की बारिश सही। गर्मियों की तीखी दोपहरें भी यहीं काटी। जब सूरज सवा नेजे पर आ खड़ा हुआ, तब भी उसका तेज सहा। लेकिन धन्य था बाबा बुड्ढा। उसने जरा उफ तक नहीं की। न ही वह डोला-डिगा। जब तक हरिमन्दिर पूरा नहीं बन गया, बाबा वहां से नहीं हिला। हरिमन्दिर की पूजा गुरुओं ने खुद करवाई। सारी साध-संगत इकट्ठी हुई। पंथ के सम्मेलन में पहला ग्रन्थी बाबा बुड्ढा को ही बनाया गया। गुरु ग्रन्थ साहिब की सवारी बाबा बुड्ढे के सिर पर चढ़ कर आई और हरिमन्दिर साहिब में प्रविष्ट हुई।

हरिमन्दिर की स्थापना करने वाला, हरिमन्दिर को देवलोक से लाने वाला गुरु रामदास अपनी बहू की गोद हरी न कर सका और न गुरु अर्जुन देव अपने कुल का पौधा लगा सका। कहते हैं कि संगत में इस बात की बड़ी चर्चा थी। गुरुओं ने फरमाया—यह खुदाई देन है। इसमें कोई दखल नहीं दे सकता। 'राई वधे न तिल घटे जो लिखिया करतार।'

एक दिन माता गंगा जी बहुत परेशान थी। बोली—लोगों की कुलें हरी करने वाले अपनी कुल को पानी नहीं दे सकते।

गुरु महाराज ने फरमाया—यह मेरी हिम्मत से बाहर है।

—क्या मैं निपूती रहूंगी ?

—मुख से, यह क्या कहती हो। गुरु-घर में किसी चीज़ की कमी नहीं है। आराधना करो। संगत की सेवा करो। लंगर में प्रसाद पकाओ, खिलाओ पास-दूर से आई संगतों को। शायद कोई करनी वाला नेह्रदान हो जाए। यह तो कोई गुरु-सेवक ही बख्शिश करेगा।

—वह कौन है ? कहां है ?

—इतनी जल्दी उतावले नहीं होते। [illegible] सहा नहीं जाता।

—तानों-व्यंग्यों ने मेरा कलेजा छलनी-छलनी कर दिया है। न रात को नींद, न दिन में चैन। देवरानियों-जेठानियों की बातें अब मुझसे सुनी नहीं जाती। दया करने वाले दयालु दाता, मेरी बांह भी थामो। अब तो जिन्दगी सिसकने पर आ गई है। [illegible] है। गंगा माता ने दुःख भरे स्वर में कहा।

मेरे बाबा कहते है कि माता गंगा खुद लंगर में वर्तन मांजती रही, कितने दिन सेवा करती रही; यह तो गुरु ही जाने। माता गंगा ने फिर कभी उलाहना नहीं दिया, गुरु को और न ही गुरु ने कभी बात को छेड़ा। आषाढ़ी गुजर गई, श्रावणी भी निकल गई, ऋतुएं आईं और चली गईं। सोनपांखी आए, हंसों की डारें उतरी और फिर उड़ गईं।

एक दिन साहब समाधि मे थे। जब आंख खुली, तो देखा, गंगा माता जी भी पालथी लगाए बैठी थी। माता अभी ध्यान में ही थीं, वृत्ति लगी हुई थी।

साहिब जी ने फरमाया—बाबा बुड्ढा ही रेख मे मेख मार सकता है।

माता की वृत्ति अपने आप खुल गई।

धन्य गुरु गरीब-नवाज़।

गुरु जी उठकर लंगर की ओर चले गए। देखा माता गंगा संगत के वर्तन माज रही है।

संता दे कारण आप खलोइया पैंज रखदा आया राम राजे।

वाग-वाग हो गया दिल माता गंगा का।

किसी से कुछ नही पूछा। अपने आप ही गडवैलें जोड़ ली। कहारों से कहकर पालकी निकलवाई। एक जत्था चल पड़ा अमृतसर से बाबा वुड्ढे के डेरे की ओर। बिल्कुल वैसे ही, जैसे कोई तरुणी ससुराल जा रही हो सखियो-सहेलियो के साथ। छन-छन करती गड़वैलों ने सुर बिखेर दिए। गहने-गट्टे पहने, हार-सिंगार किया, रेशमी बाना पहना। माता गंगा गडवैल में बैठ गईं। पालकियों में दासियां थी। सवारी जा रही थी किसी पटरानी की। काफिला बाबा वुड्ढा के डेरे पर पहुंचा। बाबा वृत्ति में थे, तार जुड़ा हुआ था उस दातार के साथ। गुरु के महलो ने घेरा डाल लिया, जैसे गुरु बैठे हों चेलों के बीच, चांद के चहु ओर जैसे तारे। चरखा कात रही हो जैसे झुण्ड में बैठी तरुणी।

बाबा ने आंख खोली। बड़े हैरान हुए। यह अचम्भा क्या है? सहज स्वभाव से बोले—गुरु के महलो में क्या भगदड़ मच गई? इतना कह कर बाबा चुप हो गए। तार फिर दातार से जा जुड़ा।

बात स्वाभाविक ढंग से ही कही गई थी। वृत्ति लगी हुई थी, शोर से जरा-सी आंख खुली और वृत्ति फिर लग गई। सरसरी निगाह से भी न देखा गुरु के महलों की ओर और न ही पूछा, किधर आए हैं गुरु के महल? बड़े कठोर थे बाबा।

गुरु के महल निराश होकर वापस चले आए।

बात अमृतसर में फैल गई।

शिकायत साहिबों के पास भी पहुंची।

माता गंगा ने भी दिल का गुबार निकाला।

साहिब जी ने फरमाया—बुजुर्गों के पास इस तरह जाते हैं ? सिक्ख का तो मन नीचा होता है। 'नानक नीचा जो चलै, लगे न तती वाउ।' जाना मांगने और चढकर डोले में ?

माता गंगा का चेहरा उतर गया। ठंडे पसीने आने लगे।

—मेरे मन के चाव ने उतावली की है। मैं नही जानती थी कि बात यहां तक पहुंच जाएगी।

—चलो, गुरु भला करेंगे। बाबा जी के मन में मैल नही है। भागवान्, कल फिर जाना : अपने हाथों प्रसाद बनाना, सिर पर उठा कर, नगे पाव, वस्त्र सीधे-सादे, दूध-से सफेद, नीलकमल जैसे, हंसों की डारें जैसे मान सरोवर से उडती हैं। हल्की-हल्की बारिश होती हो, बीच में जैसे नाचता हो मोर। प्रभात में उठना, जैसे रब का प्यारा। स्नान करने जाए जैसे कुआंरी कंजक गगा में। दरवाजा खोले, जैसे पुजारी मन्दिर का। जैसे कोई सेवक जाता है गुरु-दर्शन को। यह कर साहिब चले गए।

दिन ऊहापोह में गुजर गया। रात को नीद किसे आनी थी ? आधी रात को ही माता गंगा उठ बैठी।

चक्की पीसने की आवाज ने अमृतसर को झकझोरा। मकर चांदनी-मरीचिका देख कर भक्त लोग उठ बैठे। भगवान् अभी सो रहे थे। आटा छाना, साना और परांठे बनाए ; साथ लिया आम का अचार, दो-चार प्याज भी साथ बांध लिए। अभी रोशनी भी नही हुई थी, पर चैन कहा ? लस्मी की मटकी सिर पर रख ली और पीछे-पीछे चार दासिया। राधिका रूठे हुए कान्ह को मनाने जा रही थी।

सूरज की टिकिया बाबा बुड्ढा के डेरे पर पहुचने पर ही चढी। सोते हुए अमृतसर को छोड़ गई थी, गगा माता ; जागने पर लौट कर आई।

—कौन ? बाबा बुड्ढा ने कहा।

—मैं गंगा। गुरु के महलो से आई हूं।

—प्रसाद लाई हो हमारे लिए ? बड़ी भूख लगी है।

पराठों वाली थाली सामने रख दी। बाबा ने दो पराठे हाथ पर ही रख लिए ; ऊपर आप ही आम का अचार भी रख लिया। जब प्याज देखा, दिल में एक तरंग-सी उठी, एक उम्मीद जागी। प्याज हाथ में ले लिया। प्याज को दोनों हथेलियों के बीच रखकर, दबाकर तोड दिया। मुंह मे कौर डाला। बाबा रुक गए।

—परांठे बड़े स्वाद हैं। आम का अचार भी अमृत है। धन्य है गुरु के महल। बाबा फिर चुप हो गए :

माता गंगा संगमरमर की मूर्ति की तरह खामोश थी।

बाबा तौड़ी मे चले गए।

माता गंगा जपुजी साहिब का पाठ कर रही थी।

बाबा की वृत्ति अभी टूटी नहीं थी।

जब माता गंगा ने जपुजी साहिब की पौड़ियों का भोग डाला, तो आवाज़ आई—होगा, ज़रूर होगा। मेरे गुरु मेहर करेंगे। शक्तिशाली, बलवान्, योद्धा, मुग़लों का सिर तोड़ने वाला बेटा इस कुल में अवतार धारण करेगा।

खुशी में बावले हुए बाबा नाचने लगे।

आशीर्वाद लेकर गुरु-घर के महल अमृतसर लौट आए। धूम पहले ही मच चुकी थी।

बताशे और गुड़ की रेवड़ियां बांटी जा रही थी। बहारें गुरु के आंगन में गिद्दा नाच रही थीं।

'तुमरे घर प्रगटेगा जोधा
जान बल गुन किन्हूं न सोधा।'

जहां गुरु भी आशीर्वाद लेते हैं, उस बाबा को कौन नमस्कार न करें? बाबा बुड्ढे ने पाच पातशाहियों को अपने हाथों से गुरु-गद्दी दी और अपने हाथ से तिलक लगाया। महावाणी, महान् आत्मा, महान् शक्ति, बाबा बुड्ढा...

मेहताब सिंह, रात आधी से ज्यादा खत्म हो रही है। जरा-सी कमर सीधी कर ले, दिन में सफर करना है। गुरु-महिमा गाते रातें कटे, गुरु-गान करते दिन। सुक्खा सिंह ने कहा।

दोनों व्यक्ति सो गए, लेकिन माला किसे सोने देती है?



चौमुखा आंगन

जिस आंगन में सिंह बैठे हुए थे, उस घर से खाली उठना, मुंह जूठा किए वगैर राह पर चल देना अचम्भे वाली बात थी। मेहताब सिंह का ख्याल था कि जल्दी चला जाए और दूसरे ठिकाने पर पहुचा जाए, लेकिन सुक्खा सिंह इसके पक्ष में नही था। वह चाहता था कि कोई विधिचदिया मिल जाए और उससे दूसरे अड्डे का पता पूछ लिया जाए। हमें मालूम तो है, फिर भी पक्का कर लेना अच्छी बात होगी। शायद अगला आदमी घर में ही न मिले, या कही गश्ती सेना गई-आई हो, और ऊसल-मूसल लिए घोंट रही हो, और उसी गांव में उसने अपना डेरा भी जमा रखा हो। इस तरह की स्थिति में कन्नी काट जाना और उस गांव को तिलांजलि दे जाना ही अकलमंदी है। बस यों ही, इधर-उधर कोई नया रास्ता बना कर निकल जाएं। कान लपेट कर निकलना और किसी को कानों-कान खबर भी न हो, इसलिए हमजोली का इन्तजार कर ही लेना चाहिए। वह जरूर रोटी-टुक्कड के वक्त आ गरजेगा। फिर पसर कर बैठेंगे, मलाह-मशविरा किया जाएगा। हमसे पहले हमारे साथी, हमारे दोस्त गांव के बाहर जरूर धूनी रमाये बैठे होंगे। ये नाथों के डेरे, ये जोगियों की टोलिया, ये सूफी फकीरों के तकिये, ये रमतों की ढाणियां, हमारी बाई-दाई आखें है। यही हमारी बाहें हैं। ये मुने जोगी सबके सब विधिचदिये ही हैं। ये सिंहों के खूंटे हैं, और ये गाव-गांव में खूंटे गाड कर बैठे हुए हैं। इन्होंने अपना जाहो-जलाल बना रखा है। सारे गांव की औरतें इनकी सेवा करती हैं। औरतों का गुरु कभी भूखा नही रहता। खीर-पुए, दूध-मलाइया, कड़ाह प्रसाद के थाल कतार बांध कर चले आते हैं। कितना खा लेंगे? बचा-खुचा माल गांव मे ही बांट कर इन्होंने गांव भर को जीत रखा है। ये टोले असल मे गुरु के सबसे बड़े श्रद्धालुओं के हैं। इन्हीं के सिर-सदके हम उड़ते-फिरते हैं। इनकी भुजाओं की शक्ति से ही हम राज छीन लेंगे। ये लोग अपनी गूगल की धूनियों से मुग़लों के सिर पर चढ़े भूत उतार देंगे। इनके गरम चिमटे चुड़ैलों को निकालना जानते हैं। धीरे-धीरे हम ताकत पकड़ रहे हैं। इनकी चंडाल चौकड़ी जब दाने फेंकती है, तो कुछ उड़ जाते हैं, कुछ उड़ना चाहते हैं और कुछ पग्गा बांध जाते हैं। इनके छाज में पड़ा

जहांगीरी राज था। मुगलों के झण्डे झूलते। थर-थर कांपती जनता। हिन्दुस्तान की जान उन झण्डों की मुट्ठी में थी। जहांगीर की जुबान से निकला हुआ शब्द कानून बन जाता। अफ़ीम और शराब के नशे में झूमता जहांगीर कभी कोई गलत बात भी कह जाता। महीना गुज़र जाने पर उसे सिर्फ़ मलिका नूरजहां ही बदलती। गुरुओं का तेज-तप जहांगीर ने अपनी आंखों देख रखा था। एक बार अपने पिता अकबर के साथ गोइंदवाल आया था, और फिर एक बार जब बादशाहत का ताज पहना। बादशाह बन कर उसने गोइंदवाल की नुहार देखी थी। गुरु-घर उसकी आंख का किरकिरी बन गया था। उसके सीने पर तो तभी सांप लोटने लगे थे, जब उसने सेवकों को दंडवत करते देखा था। यारो, कहां मैं बादशाह और कहां यह मामूली फ़कीर। असली बादशाह तो ये है।

तब अलिफ़ मुजदद सानी, सरहिन्द वाले ने जहांगीर के कान में फूंक मारी थी—देखा। छोटी-सी छछूंदर। जब अभी इनका इतना तेज, शान-शौकत और जलाल है, तो कल को क्या होगा? अगर कहीं इन्होंने अपने चार घर इकट्ठे बना लिए, तो फिर हुकूमत को ताड़ना, आंखें दिखाना और अपनी चौधराहट बना लेना कोई मुश्किल काम नहीं होगा। क्या है, जो इनके पास नहीं है? क्या बात है, जो यह नहीं कर सकते? हुकूमत तो हाथी, घोड़े, फौज वगैरा दाम देकर खरीदती है, पर इनके पास यह सब चढ़ावे के रूप में आ जाता है। हुकूमत का डंडा कानून है, लेकिन इनका कानून श्रद्धा है। श्रद्धा झुकती नहीं, टूट जाती है। ऋतु बदलने की देर है, ये हुकूमत के लिए किसी दिन मुसीबत बन जाएंगे। इसलिए इस वृक्ष को, जिसे पंजाब वाले गुरुघर कहते हैं, जड़ से ही काट देना चाहिए, ताकि लोग इसकी छाया में न बैठ सकें।

जहांगीर सुरूर में था। बात उसे पसन्द आ गई। पांचवें पातशाह गुरु अर्जुन देव उस समय गुरु-गद्दी पर विराजमान थे। बादशाह ने सज़ा का इंतख़ाब किया—तसीहे दे-देकर जान को अज़ाब में डाल दो। जब यह गुरु तौबा-तौबा कर उठें, तो गर्दन उड़ा दो, क्योंकि इनके आश्रमों से मुझे बगावत की बू आ रही है।

इस हुक्म ने शहादत का रूप धारण किया और गुरु अर्जुन देव गर्म तवों पर बैठे। देगों में उन्हें उबाला गया। गर्म रेत ने पूरे शरीर पर छाले डाल दिए। तब भी जब सांस न रुकी, तब आखिरी हुक्म सादर हुआ। गाय की खाल में मढ़वा दो। यह सज़ा गुरु को कबूल नहीं थी। गुरु महाराज ने स्नान की इच्छा प्रकट की। छालों भरे शरीर के लिए यह भी एक सज़ा थी। इजाज़त मिल गई। रावी नदी की उतराई में, जिसके किनारे लाहौर के ऊंचे बुर्ज हैं, वाहिगुरु का नाम लेकर गुरु ने ऐसी डुबकी ली कि बाद में न गुरु मिले, न गुरु का साया। फिर किसी ने दर्शन तक न किए। कौम निराश हो गई, लेकिन इस निराशा ने.

व्यक्ति बिना छंटे रह ही नही सकता । इस तरह गांवों से इनकी ढाणियां शहरों की तरफ मुंह उठा रही हैं । गांवों मे जब इनका जोर खत्म हो जाएगा, तो इन्हे धक्के मार के बाहर निकाल देना बहुत मामूली बात है । हुकूमत की ताकत गांवों में ही होती है । जब पाताल से जड़ें उखड़ जाएं, तो हुकूमत हवा के एक झोंके के साथ उड़ जाती है ।

रात ने अभी तीसरे पहर मे पांव रखा ही था । सुक्खा सिंह ने मेहताब सिंह से कहा—जरा-सा आराम कर लो । स्नान-ध्यान करके चलेंगे । घोड़े हांफ गए हैं । इन्हे भी जरा-सा होश आ जाए । नौ-बर-नौ हुए तो फिर ये शेर के पूत । रेत में ऊंट ही टिक पाता है ।

—सत्य वचन । मेहताब सिंह ने कहा ।

सोने के लिए बहुत यत्न किए, लेकिन माला कहा सोने देती थी ? जरा-सी आंख लगी कि माला ने फिर जगा दिया । न मेहताब सिंह सोया और न उसने सुक्खा सिंह को ही सोने दिया ।

मेहताब सिंह बोला—वह कथा अध-बीच ही रह गई । हम दूसरे रहट ही चलाने लगे । गुरु-महिमा सुनते-सुनते हम यहा तक पहुच गए हैं । ये सब मेहरें बाबा नानक की हैं । यार, तुम्हारी बोली में बड़ा रस है । तुम्हें कथा कहनी आती है, तुम कथा सुनाना जानते हो ।

सुक्खा सिंह के कंठ से आवाज निकली—लो सुनो, मैं और मेरे बाबा उस चौमुखे चौक मे पहुंच गए थे, जहा संगतें हरि-कीर्तन कर रही थीं । जहां शब्द पढे जा रहे थे ।

इस चौमुखे आगन का सिंगार है अकाल तख्त, थडा साहिब, लाची बेर और दर्शनी ड्योढी से चमचमाता हरिमन्दिर । हम वही बैठ गए और मेरे बाबा बोले—धन्य गुरु रामदास ।

मैं पैदाइशी शैतान की टूटी था । मेरा चाचा कहा करता था—शूलों के मुंह जन्म से तीखे । यह जरूर सिंहों के जत्थे में मिलेगा । सो इसकी बात सच्ची हो गई ।

—बेटे, यह अकाल तख्त है । इसे हरगोविन्द ने बनवाया था । यह वह तख्त है, जहा से कौम के हर फैसले का ऐलान होता है । गुरु-मन्तव्य के बाद सारी कौम को परवाने यहीं से भेजे जाते है । इसका हुक्म अटल है । शाही फरमान तो कभी बदल दिया जाता होगा, लेकिन अकाल तख्त से परवान हुआ गुरुमत बदल दिया जाए—नामुमकिन । पत्थर की लकीर मिट सकती है, अक्षर की कमी-बेशी की जाए, यह गुरु-मर्यादा के विपरीत है । यह सच्चे पातशाह का तख्त है । दिल्ली का तख्त झूठा है । वह फरेब, झूठ और लोभ के लहू से लिथड़ा हुआ है । बेटे, तुम पूछोगे, इसकी जरूरत ही क्यों आई ? मैं यों ही इधर-उधर ताक-झाक कर रहा था । मेरे बाबा ने मेरा कान खींच दिया । एक बार तो तारे नजर आ गए । शरारती लड़के ऐसे ही सीधी राह पर आते है ।

जहांगीरी राज था। मुगलों के झण्डे झूलते। थर-थर कांपती जनता। हिन्दुस्तान की जान उन झण्डों की मुट्ठी में थी। जहांगीर की जुबान से निकला हुआ शब्द कानून बन जाता। अफीम और शराब के नशे में झूमता जहांगीर कभी कोई गलत बात भी कह जाता। महीना गुजर जाने पर उसे सिर्फ मलिका नूरजहां ही बदलती। गुरुओं का तेज-ताप जहांगीर ने अपनी आंखों देख रखा था। एक बार अपने पिता अकबर के साथ गोइंदवाल आया था, और फिर एक बार जब बादशाहत का ताज पहना। बादशाह बन कर उसने गोइंदवाल की नुहार देखी थी। गुरु-घर उसकी आंख का किरकिरी बन गया था। उसके सीने पर तो तभी सांप लोटने लगे थे, जब उसने सेवकों को दंडवत करते देखा था। यारो, कहां मैं बादशाह और कहां यह मामूली फकीर। असली बादशाह तो ये है।

तब अलिफ मुजदद सानी, सरहिन्द वाले ने जहांगीर के कान में फूंक मारी थी—देखा। छोटी-सी छछूंदर। जब अभी इनका इतना तेज, शान-शौकत और जलाल है, तो कल को क्या होगा? अगर कहीं इन्होंने अपने चार घर इकट्ठे बना लिए, तो फिर हुकूमत को ताड़ना, आंखें दिखाना और अपनी चौधराहट बना लेना कोई मुश्किल काम नहीं होगा। क्या है, जो इनके पास नहीं है? क्या बात है, जो यह नहीं कर सकते? हुकूमत तो हाथी, घोड़े, फौज वगैरा दाम देकर खरीदती है, पर इनके पास यह सब चढ़ावे के रूप में आ जाता है। हुकूमत का डंडा कानून है, लेकिन इनका कानून श्रद्धा है। श्रद्धा झुकती नहीं, टूट जाती है। ऋतु बदलने की देर है, ये हुकूमत के लिए किसी दिन मुसीबत बन जाएंगे। इसलिए इस वृक्ष को, जिसे पंजाब वाले गुरुघर कहते हैं, जड़ से ही काट देना चाहिए, ताकि लोग इसकी छाया में न बैठ सकें।

जहांगीर सुरूर में था। बात उसे पसन्द आ गई। पांचवें पातशाह गुरु अर्जुन देव उस समय गुरु-गद्दी पर विराजमान थे। बादशाह ने सज़ा का इंतखाब किया—तसीहे दे-देकर जान को अज़ाब में डाल दो। जब यह गुरु तौबा-तौबा कर उठे, तो गर्दन उड़ा दो, क्योंकि इनके आश्रमों से मुझे बगावत की बू आ रही है।

इस हुक्म ने शहादत का रूप धारण किया और गुरु अर्जुन देव गर्म तवों पर बैठे। देगों में उन्हें उबाला गया। गर्म रेत ने पूरे शरीर पर छाले डाल दिए। तब भी जब सांस न रुकी, तब आखिरी हुक्म सादर हुआ। गाय की खाल में मढ़वा दो। यह सज़ा गुरु को कबूल नहीं थी। गुरु महाराज ने स्नान की इच्छा प्रकट की। छालों भरे शरीर के लिए यह भी एक सज़ा थी। इजाज़त मिल गई। रावी नदी की उतराई में, जिसके किनारे लाहौर के ऊंचे बुर्ज हैं, वाहिगुरु का नाम लेकर गुरु ने ऐसी डुबकी ली कि बाद में न गुरु मिले, न गुरु का साया। फिर किसी ने दर्शन तक न किए। कौम निराश हो गई, लेकिन इस निराशा ने

कौम को हिलाया। गैरत के माथे पर ठंडा पसीना उभरा। एक सोई हुई कौम ने करवट ली।

गुरु हरगोबिन्द अभी बालक ही थे। बाबा बुड्ढे को गुरु गद्दी का तिलक दे दिया। कहते हैं कि बाबा बुड्ढे ने पीरी की तलवार गुरु साहिब को पहनाई, बाएं हाथ की तरफ। यह तलवार आम तौर पर मीरी की मानी जाती है। मुल्क फतेह करने पर यह पहनाई जाती है। मीरी की तलवार दाईं ओर पहनी जाती है। सिर्फ अपनी हिफाजत के लिए। लोग हैरान हो गए, बाबा की इस गलती पर। एक बुजुर्ग बोल उठा—बाबा जी, यह क्या? बाबा मुस्कराये। गुरु हरगोबिन्द बोले—बाबा जी, इसे रहने दीजिए। यह मीरी की तलवार है। आपने पहनाई है, इसकी जरूरत थी। पीरी की दूसरी पहना दीजिए। दूसरी तलवार भी पहना दी गई। यह एक अचम्भा था, एक चुनौती थी, एक नया कदम था, नई करवट थी, नया हिचकोला था। गुरु जी ने फरमाया—एक तलवार मीरी की है और दूसरी पीरी की है। यह सेहली टोपी उतार लीजिए। आज से यह सेहली तलवार का गातरा होगी।

कौम सहम गई। जज्बात दब गए। डरी हुई कौम सहारा ढूंढ रही थी। एक बार तो आगन डोल गया, कंपकंपी-सी हुई, चेहरों पर उदासी नज़र आई। गुरु ने बात ताड़ ली। कौम से यह भरोसा ही न उठ जाए कि सत्य और धर्म की जय होती है। कहीं लोग दुनिया के झमेलों से उदास होकर उदासीन न बन जाएं। इसलिए यह हिचकोला प्रकाश स्तम्भ साबित हुआ। यह सृष्टि नेकी और बदी की रणभूमि है। गुरु ने फरमाया—पिता जी को यह भान हो गया था कि कौम को शहादत की जरूरत है। 'तेरा भाना मीठा लागे' की धुन को माला के मनकों के साथ गाया और शहादत के गले लग गए। अब कौम को शूरवीरों की एक ऐसी सेना तैयार करने की जरूरत है, जो किसी से न डरे। ये योद्धा मैदान मे उतरें और भय स्वीकार करें सिर्फ अकाल पुरुष का। बाकी, इस हुकूमत का डर तो दिल से निकाल दें। तलवारें भीगें सिर्फ अनाथो, गरीबो और धर्म की रक्षा के लिए। श्री साहिब खड़के, लेकिन यह भावना रखकर कि हमारी कौम को ढाल का काम करना है। तख्त से फरमान हुआ—आज के बाद हमारी भेंट, हमारी नजर अच्छा शस्त्र, अच्छी जवानी, बढ़िया घोड़ा, फड़कती भुजाएं होंगी। आप दूर दराज के गांवो से आए हैं। गांव-गांव में अखाडे बनाओ। गतका खेलो, घुडसवारी करो, कुश्ती की आदत डालो और हर घर में जवान पैदा करो वज्र शरीर वाले। शिकार खेलो, तलवार का वार करना और वार झेलना सीखो। अब हमारी सीधी टक्कर हुकूमत से है। जब तक यह जुल्म-अनाचार बन्द नही हो जाता, तब तक तुम्हारी तलवारें चलती रहेगी। जंग-लगे बरछे निकालो और उन्हे सान दिखाओ। प्रण करके उठो और कौम में जागृति पैदा कर दो। आज से हम बाज रखेंगे, घुड़सवारी करेंगे, पालकियों में आया-

जाया करेंगे, कलगी सीस पर चमकेगी, शस्त्र शरीर का अंग होंगे। जवानी वही जो कौम के काम आए। जो मौत का आलिंगन करना जानता है, उसे मौत कभी नही आती। 'पहलां मरन कबूल...' की मुहारनी पढ़ो। तुम आटे में नमक जरूर हो। तुम सोत हो और दरिया सोतों के गर्भ से ही निकलते हैं। तुम जैसे लाखों सोत कौम में हैं। पत्थर की रगड़ से आग पैदा होती है। एक चिंगारी सारे जंगल को राख बना देती है। वह तो पत्थर है, एक बेजान पत्थर, पर तुम तो इन्सान हो। मामूली इन्सान नही, तुम वह इन्सान हो, जिनका कलेजा अभी-अभी गर्म तवों पर जलाया गया है।

—धन्य थे कौम को नया मोड़ दिखाने वाले गुरु हरगोबिन्द। मेहताब सिंह श्रद्धा से बोला।

—कौमें वही जिन्दा रहती हैं, जो कुर्बानी देना जानती हैं। जो लोग जान को हथेली पर रखना जानते हैं, उनका कोई बाल भी बांका नही कर सकता। सुक्खा सिंह ने कहा।

जब तख्त पर सुनहरी चंवर झुलने लगा, तो सचमुच दिल्ली दरबार का भ्रम होने लगा। कवियों और ढाडियों ने वारें गाईं। गुरु महाराज ने फरमाया—कवि कौम का दिल होता है। कुदरत ने तुम पर बख्शिश की है। कविताओं की ईंटें बना-बना कर महल खड़े कर सकते हो। तुम कवि हो। तुम्हारी कविता में ज्वाला है। कौम के सीने में आग की गर्मी पैदा कर दो। लोग अपनी खाल उतारना सीख जाएं, बंद-बंद कटवाते डर न लगे। हंसते-हंसते फांसी की चरखियों पर चढ़ जाएं। जैसे सांप अपनी केंचुल उतार देता है, जैसे आदमी पुराने कपड़े उतार फेंकता है। पंजाब का लहू ठंडा पड़ चुका है, उसे गरमाना तुम्हारा काम है—वारें गाओ, शूरवीरों, बहादुरों और योद्धाओं की। शमा थक जाए, पर परवाने खत्म न हों। जलने वालों की इतनी बड़ी कतार लग जाए कि लोग दांतों तले अंगुलियां दबाने लगें। ढड-सारंगियों की धुनों में ललकारें उठें।

सुर ने एक अजीब लहर पैदा की। ढड पर एक थाप पड़ी और कौम में हिचकोला आया। घुंघरूओं ने कुर्बानी के लिए चाव पैदा किया। सुरसरियों की तरह सोई कौम फनियर सांपों की तरह जाग उठी। मुंह-माथा निखर आया। एक नया चेहरा सामने आया। अकाल तख्त प्रकाश स्तम्भ बन गया, जिसकी रोशनी में सारी कौम अपना रास्ता खोजती।

मैंने बाबा से पूछा—क्या यहां वारें भी गाई जाती थीं।

मेरे बाबा ने जवाब दिया—हां, अब्दुल्ला और नाथ मल ने यह वार गाई, जो आज भी प्रचलित है :

'दो तलवारा बधियां, इक मीरी दी इक पीरी दी
इक अजमत दी, इक राज दी, इक राखी करे वज़ीरी दी
हिम्मत बाहा फट्ट गढ, दरवाज़ा बरख बखीरी दी
नाल सिपाही नील-नल, मार दुष्टा करे तगीरी दी
पग तेरी कि जहांगीर दी......'

बस, इतनी ही कथा है अकाल तख़्त की। मेरे बाबा अब चुप हो गए थे। मैंने उनके चेहरे की तरफ देखा। उनके मस्तक से चिंगारियां फूट रही थीं, लहू खोल रहा था।

भुजाएं फड़कीं। ऐसा लगता था जैसे किसी मुग़ल का सीना चीर कर चुल्लू भर-कर ख़ून पिएंगी।

सुक्खा सिंह ख़ामोश हो गया।



रास्ते

रात का तीसरा पहर निकल गया। चौथे पहर मे लोग करवटें वदलने लगते हैं। मुर्गे ने वांग दी, समझो दिन चढ गया। नाथ ने अपनी धूनी की आग मे चिमटा चलाया, आग तेज़ हो गई। तकिये से आवाज़ आई—अल्ला हू—अल्ला हू। किसी ने मद्धिम और मीठी-सी आवाज़ में 'आसा दी वार छेड़ी। आम मुमलमान इस वार से परिचित नही थे। उनका ख्याल था कि किसी ब्राह्मण ने आरती का नया ढंग निकाला है। छोटे-से गांव में, जहा गिनती के घर हों हिन्दुओं के, वहां कोई सिंह कुंडी चढ़ाकर, पिछली कोठरी मे भले ही पाठ कर ले 'आसा दी वार' का, पर खुले आम कोई जुर्रत न करता। सारे काम हो रहे थे चोरी-छिपे। आदमी अपने आपको सिंह कह कर यों ही तो नही रह सकता था। अगर किसी को शक हो भी जाता, तो हिन्दू ख़ुद उठ कर सामने आता और यह कह कर टाल देता कि कोई साड बौरा गया होगा, आ घुसा हमारे गाव मे। सिंहों को रोका थोड़े ही जाता है। आते-जाते किसी न किसी गाव में घुस ही आते हैं। कई बार उनके टखने तोड़े हैं, पर वे डरते ही नही। यह बात सुनकर अहलकार को शान्ति मिल जाती। हिन्दू डरपोक थे। डरपोक होना भी बहुत ज़रूरी था। अपनी और सिंहों की रोटी का प्रवन्ध करना होता था। सिंह अपने ही पूत थे। सीने पर हाथ मार कर कह देते, वह हमारा बेटा नही है। हमने उसे निकाल दिया है। सिंह बन गया है। उसके साथ हमारा क्या रिश्ता। जब चौधरी नाक बन्द कर देते, तो कभी तड़ी में आकर कह भी देते—लड़को और साड को कौन रोक सकता है? लडका मुंह ज़ोर हो गया है और सिंह बन गया है घर-बार त्याग कर। घर मे बूढ़ी मा है, बूढ़ा बाप खों-खों कर रहा है। अब तो हमारी सेवा की ज़रूरत थी। अभी से ही धोखा दे गया ठीक है, हमारा क्या ज़ोर है? सिंह घर-बार से तो निकाले ही जाते हैं। यह बात ऊपरी-ऊपरी ही थी। असल में तो बेटे रात को आते और रसद ले जाते। खाना-रोटी भी खा जाते। मा, बहन, भाई से मिलकर अपनी छाती भी ठण्डी करते। हिन्दुओं के अलावा इनका हमदर्द था ही कौन? कोई विरला मुसलमान भले ही हामी भरे, वरना जो सिंह मुसलमान के हाथ पड़ जाता, वह चौधरी की कचहरी तक पहुंचकर ही रहता—फिर इनाम चाहे जूतों का ही मिले। भले ही मुंह काला करवाना पड़ता, लेकिन हरामखोर हरामख़ोरी से बाज़ कहां आता है? गुरु की तेगें मारी हुई थी। सारे पंजाब में अंगुलियों पर गिनने लायक ठिकाने थे। वे भी सूफी फकीरों के।

सभी सरवर भी कहीं-कहीं मेहरवान हो जाते। मेहताव सिंह, जब हम पंजाब पहुचेंगे, तो हमें फूंक-फूंक कर पांव रखने पड़ेंगे। किसकी आस्तीन से सांप निकल आए, कोई नहीं जानता। कौन किस वक्त बेईमान हो जाए, किसे मालूम ? जो ठिकाने विधिचंदिये हमारे लिए चुनेंगे, वही होने चाहिएं। हमें उनके नक्शे-कदम पर ही चलना पड़ेगा, क्योंकि वे इन राहों पर चल चुके हैं। रास्ता उनके पांवों के नीचे से गुजर चुका है। वे बुरा-भला पहचानते हैं। अभी तक हमें कोई विधिचंदिया मिला नहीं है। हमारे नाथ का क्या बना ? उसकी भी कोई खोज-खबर नहीं मिली।

मेहताब सिंह बोला—सिंह साहब, तुम तो यों ही उतावले हो रहे हो। हम से ज्यादा फिक्र उन्हें है। यह ताना-बाना उन्होंने ही ताना है। और हम उनकी सलाह के बगैर कहीं कदम नहीं उठाएंगे। हम कल नहीं, तो परसों-तरसों तक पंजाब की हद तक जरूर पहुंच जाएंगे। इसलिए जो कुछ फैसला करना है, यहीं करके चलना है। आज उनके आने का दिन तय है। तुम अभी नाश्ता-पानी भी नहीं कर पाए होंगे कि उनमें से कोई आकर फतेह बुला देगा।

—बोले सो निहाल।

—क्यों, सुक्खा सिंह। हमारे अंदाजे की दाद दो। अभी मुर्गे ने पहली बांग दी है ना, यह सुन लो, मस्जिद में अजान हो रही है। अभी तो मुंह भी दिखाई नहीं देता। सिंह आ पहुंचे हैं। क्यों भाई, इन्हें नींद आती है ? रात को इन बेचारों ने आंख लगाकर भी नहीं देखी। मेहताब सिंह ने कहा।

—हम तो भले ही भुलावे में सो जाएं, लेकिन इन बेचारों की आंखों में नींद किरकिराती रहती है। इनका वक्त से पहुंच जाना यह गवाही देता है कि ये बेहद चैतन्य हैं। सुक्खा सिंह ने अपनी बात कही।

—चार दिन जीने भी दो हमें। इतनी फूंक मत दो कि पेट फूल जाए हमारा और पटाखा मारकर फट आए। हमें चरणों में लगे रहने दो, सिंह जी। विधिचंदिये ने कहा।

—गुरु की बड़ी कृपा है आप पर। मेहताब सिंह ने कहा।

—गुरु की तो सब पर कृपा है। क्या गुरु आप पर भी दयालु नहीं हैं ? क्या वे आप पर मेहरबान नहीं हैं ? अगर आप अपने इरादे में कामयाब हो गए, तो फिर सेहरे भी आपको ही बंधेंगे। कौम आपके पांव धो-धो कर पिएगी। विधिचंदिये ने कहा।

—ये सारी मेहरें आपकी ही हैं। आप ही हमें ठिकाने तक पहुंचाएंगे। हमें न तो रास्ता मालूम है, न मंजिल। जब माझे में पहुंचेंगे, तब हम कुछ सलाह दे सकेंगे। वह हमारा घर है। हमारे रिश्तेदार, भाई, पड़ोसी, हमारे गांवों के वासी हमारी बांह पकड़ेंगे। अभी तो लकड़ी आपके हाथ है। पंजाब आने

वाला है। हमे कब चलना है, क्या करना है, हमें क्या हुक्म है ? मेहताब सिंह ने निवेदन किया।

—आज का पूरा दिन टाग पर टाग धर कर गुजार दो। हमारे साथी अभी तक पहुचे नही हैं। पहले हमे रास्ता उलीकना है, फिर खू टे गाडे जाएगे। ये सब आने वाले जत्थे के हाथ है। इतनी छूट, जो अब तक तुम्हे मिलती रही है, आगे जाकर नही मिलेगी। धूप सेंक लो, खुली हवा फाक लो, खुले आसमान में उड़ाने भर लो। यह सब फिर नसीब नही होगा। आज के दिन वैसाखी मना लो, सिंह जी। आज के दिन ही खालसे का जन्म हुआ था और आज के दिन ही कौम को सजाया गया था। विधिचंदिया अभी भी बोले जा रहा था।

—सत्य वचन। लो, दातुन और लोटा आ गया है। दातुन-कुल्ला करो। स्नान-ध्यान करो और फिर नाश्ता-पानी किया जाए! सुक्खा सिंह ने मेहताब सिंह से कहा।

—गोली किसकी और गहने किसके ? छलांग लगाकर उठ बैठा मेहताब सिंह।

सब लोग जंगल पान के लिए चले गए। कोई स्नान कर रहा था और कोई स्नान से लौट रहा था। किसी ने वाणी का पाठ छेड़ दिया था और कोई तैयारी कस रहा था। किसी ने अभी सोचा भी नही था। सिंह इकट्ठे हो रहे थे। जत्था आने वाला था। प्रतीक्षा हो रही थी। प्रसादे पक रहे थे। लोहे के नीचे आग लप-लप करती जल रही थी। रोटियां पका रही थीं घरों की औरतें। एक-एक औरत आटे की परात पका कर उठेगी। गुरु की लाडली सेनाएं आ रही हैं।

नाथों की टोली, जोगा और चौधरी भी आ पहुंचे। बोले—लो, हम भी आ गए हैं। हमारे साथ कुछ लाडली फौजें और भी हैं।

धन्य भाग्य! पधारो। गुरु का रूप हमारे घर आया है। हमारे घर के भाग्य जाग उठे। घर वालो ने कहा।

—यही फर्ज है। इसे कहते है लगन। यही कौम का प्यार है। यही सांझा है। सुक्खा सिंह ने कहा।

—सब कुछ यही कमा लेंगे। गुरु की असीसो से इनकी झोलियां भर जाएंगी। चलो, हमे बचा-खुचा ही मिल जाए, तब भी हमारे पूर्ण भाग्य। मेहताब सिंह की आवाज थी।

—आ गई संगतें ? बाहर से आए सिंहों ने कहा।

—प्यार खींच लाया है। आपके मोह में इतनी कशिश है कि चुम्बक को भी शर्म आती है।

—सब गुरु की कृपा है। कृपा है इन बुजुर्गों की। जिसके सिर पर नाथ का हाथ हो, वह लोहा भी सोना बन जाता है। एक नाथ ने कहा।

—लंगर तैयार है, अरदास करो और भोग लगाओ।

—अरदास आपके बग़ैर और कौन करे।

—सारे काम मैं ही करूंगा। सेली टोपी कल को तुम लोग पहनोगे, और सारे काम अभी से ही बाटने शुरू कर दिए।

—अभी बहुत वक्त है। अभी हमें बुजुर्गों की बहुत जरूरत है।

अरदास हुई। सबने की। संगत लंगर के लिए बैठ गई। जब सब लोग खा-पी चुके, तो खाटें निकाल ली और संगत उन्हीं पर आ जुड़ी।

—हां, अब क्या कार्यक्रम है? मेहताब सिंह ने पूछा।

—रास्ता उलीक दिया गया है। अगर तुम दोनों लोग अलग-अलग चलोगे, तो हम साथ-साथ चलेंगे। थोड़े फासले पर आगे-पीछे। बायें-दायें। नाथो के घोड़े तुम्हारे चौगिर्द होंगे, पर तुमसे दूर। ऐसे किसी को शक नहीं होगा।

—हमारा रास्ता है : गगा नगर पहली चौकी, दूसरी चौकी मिचनाबाद। वहां से दीपालपुर, चुन्नियां, खुडिड्या, कसूर को अलग छोड़ देंगे। तीसरी और चौथी चौकी का फैसला बाद मे किया जाएगा। खेमकरन, पट्टी, तरनतारन और अमृतसर। बस, यही रास्ता है।

चौधरी बोला—आज की चौकी हमारे गाव में होगी। वह गगा नगर से पांच कोस पर है—सूरतगढ़। चम्पा बेचारी मुंह उठा-उठाकर देखती होगी।

—तुम्हारे कोस भी पाच-पाच कोस के बराबर हैं। फिर कभी आएंगे।

नही, सिंह जी, यह नहीं हो सकता। हमारी तो दिल की दिल में ही रह जाएगी।

—गंगानगर पहुंचकर सोचेंगे।

—चौधरी जी, क्या हम अभी भूल भुलैयों में ही फसे रहेंगे? जोगा बोला।

—हम उसी रास्ते आए है, जिससे गए थे। मैंने ऊंट को सूरतगढ़ की तरफ मोड़ दिया था। हमारा निशाना तो कोई नही था ना। हम तो भगवान् के आसरे जा रहे थे। लक्खी जगल, न जाना, न बूझा। मुंह उठाया था—कहीं जाकर तो पानी मिलेगा। गुरु की कृपा हुई, सब काम ठीक हो गए। अब मेरा घर जरूर पवित्र करो।

—खालसा फैसला करेगा। अभी बहुत रास्ता पडा है।

—सवेरे चले और रात को पहुचे गगानगर। गंगानगर कोई सामने है। रेत नापकर जाना है। नाथ ने कहा।

अच्छा, जैसी सिंहों की इच्छा।

—गुरु से नाराज़ नही होते। नाथ ने चौधरी को पुचकारते हुए कहा। तुम्हारी आस पूरी होगी।

ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। हल्की-हल्की बदलियों ने आकाश को ढक लिया। सूरमाओं की आख लग गई। सभी लोग अमृतसर के सपने देख रहे थे।

●●

थड़ा साहिब

सूरतगढ वाला चौधरी गंगा सिंह और जोगा एक ही ऊंट पर सवार थे। 'छन-छन करती डाची सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह के घोड़ों से आ मिली।

जोगा बोला—जानते हो, सिंह साहब, हम कहां पहुंच गए हैं ?

—हमारी समझ में अभी तक कुछ नहीं आ रहा है। अभी तो रेत की ढेरियां ही नजर आती हैं और यों ही धक्के खा रहे हैं। हमें लगता है अभी हम राजस्थान में ही चक्कर काट रहे हैं। पंजाब पहुंचेंगे, तो बताएंगे कि हम कहां हैं। मेहताब सिंह ने कहा।

—मेरा गांव आ रहा है। वह रहा सूरतगढ़। देखने में भले ही नजदीक लगता है, पर अभी पांच कोस की दूरी है। हमारे कोस भी तुम्हारे कोस से बड़े होते हैं, चौधरी ने कहा।

—हां भाई, माल चोरों का और लाठियों के गज। सुक्खा सिंह ने कहा।

—वह कैसे ?

—माले मुफ्त, दिले बेरहम। माल मुगलों का और नापने वाले राजपूत। जरीबें भी अपने घर की बनी हुईं। मुगल भी चुप लगाए रहे, इसलिए कि उनका क्या है। घड़े की मछलियां हैं, जब जी चाहा, पकड़ लेंगे। ऐसी ही आदत पड़ गई है। इसलिए तुम्हारे कोस, तुम्हारे माप और तोल हम से बड़े हैं। लोभी से लालची का वास्ता है। मुगल जब खुद माल लेते हैं, तो उनके बाट दूसरे होते हैं और जब वे माल देते हैं, तो उनके बाट और होते हैं। यही रीत चली आ रही है। सुक्खा सिंह ने बात का खुलासा किया।

—तुम्हारी बात ठीक है, सिंह जी। समधियाने में कहीं हिसाब किया जाता है ? पंजाब ने कोई रिश्तेदारी की नहीं, इसलिए पंजाब वाले इन रस्मों से अनजान हैं। ये सारी जंजीरें हम तोड़ देंगे। वक्त आ रहा है। अब हमारा भाई-चारा सिंहों के साथ होने वाला है। अब रिश्ते मुगलों की तरफ से आयेंगे। पहले डोलियां यहां से दी जाती थीं, अब डोलियां दिल्ली से लाई जाएंगी। मेरा गांव आ रहा है। चम्पा कितनी खुश होगी। मेरे घर के भाग्य जाग उठेंगे। मेरा

घर पवित्र हो जाएगा। मेरे आंगन में सिंहों के चरण पड़ने पर आंगन को चार चाद लग जाएंगे। चम्पा खुशी से लाल हो उठेगी मेहमानों को देखकर। मेरी चम्पा अतिथियो की सेवा करना जानती है। वेचारी की आंखें पक गई होंगी, इन्तजार करते-करते। डरती तो नही थी। अजीव ही दिन आ गये हैं। मुंडेर पर बैठी जम्हाइया ले रही होगी कि कब मेरा वापू आएगा। रात की रोटी हम घर जाकर खाएगे। सारे मोहल्ले मे धूम मच गई होगी कि गंगा सिंह सिंहो के साथ गया है। लोग तो सिंहो के नाम की माला जपते है, लेकिन खुल कर इस डर से सामने नही आते कि टक्कर पहाड़ से है। कहीं राजस्थान उठ खड़ा हो, तो सिंहों को इतने पापड़ न वेलने पड़ें। चौधरी कहे जा रहा था।

—जरूरत ईजाद की मा है। जरूरतें अपने आप नए रास्ते ढूंढ लेती है, सुक्खा सिंह ने जवाव दिया।

छोटा-सा काफिला चल रहा था। नाथों के चिमटे धड़क रहे थे। दूर-दूर रहने वाली सगतें इकट्ठा हो रही थी।

—हम पहले पहुंचते हैं सूरतगढ और तुम लोग वाद में आना। हम अपनी धूनी की आग रमा लें, तुम्हारा-हमारा साथ ही क्या। हम रसद-पानी गाव से इकट्ठा करेंगे और अपना तवा गर्म करेंगे। तुम्हे तो चौधरी के घर मे ठहरना है। दिन मे मिलाप होगा। नाथ ने कहा।

—सलाह तो अच्छी है। इससे किसी को शक भी नही होगा। डिविया वन्द ही रहनी चाहिए। ढक्कन खोलने मे अक्लमन्दी नहीं है, चौधरी ने अपनी वात रखी।

—गुरुमता परवान ? नाथ ने पूछा।

—परवान, सिंह जी।

नाथों ने अपना रास्ता पकड़ लिया। और चार मूर्तिया अपने मज़े-मज़े में सूरतगढ की ओर चल रही थीं।

मेहताव सिंह वोला—सुक्खा सिंह, हमारी वात वीच में ही रह गई थी। तुम्हारी कथा की हिलोर ने हमारा रास्ता इस तरह खत्म कर दिया, जैसे हम यहां उड़ कर आ गए हों। हमें रेत का कही पता ही नही चला। गुरु-महिमा में बड़ा आनन्द है।

—तो फिर सुनो, तुम्हें थड़ा (चबूतरा) साहिव की वात सुनाता हूं। यह चबूतरा उसी चौमुखी आगन मे है, दर्शनी ड्योढी के एकदम सामने। मेरे बाबा का विचार है कि कुदरत ने सारे रग बना रखे हैं। ऐसा न होता तो थड़ा साहिव कभी न वनता। अन्धेर साईं का, घर का मालिक घर आए, तो उसे दहलीज न पार करने दी जाए। नरीको का क्या भरोसा।

मैंने वावा से पूछा—वावा, यह क्या पहेली है ?

—पहेली नहीं, यह असलियत है, वेटा। जव तुम वड़े होगे, तव तुम्हें

पता चलेगा दुनियादारी का। दरांती के दात एक ही तरफ होते हैं, लेकिन दुनिया के दात दोनो तरफ होते हैं। यह किसी तरफ से पूरी नही उतरती। अच्छा बच्चू, सुनो, बालगुरु हरिकृष्ण दिल्ली में ज्योति-ज्योत मे समा गए और जाते हुए संगत की जिद्द पर कहते गए—'बाला बकाले।' गुरु बनने वालों ने अपनी-अपनी नरद फेंक कर संगत को भरमाना शुरू कर दिया। गुरु गद्दी पर झगड़ा होना निश्चित था। धीरमल सोढी साहिबो मे सबसे ऊपर था। मस्तक पर तेज़। जब शरीक के चेहरे पर लाली भडकती देखी, तो उन्होने अपने मुंह थप्पड मार-मार कर लाल कर लिए। जैसे खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है, बिल्कुल उसी तरह शरीकों ने भी जिद्द मे आकर खाटें बिछा ली। हर एक अपनी डफली बजाने लगा। बीनें बज रही थी, तूतिया बज रही थी। हर एक की अलग-अलग आवाज़ थी। गुरु का भ्रम होने लगा। कौन गुरु है? कौन गुरु बने? किसको गुरु माने संगत? इस बात का फैसला न हो सका। बाबा बकाले के चौराहे मे किसी ने सेह का काटा बो दिया था और उसके बाद गायब हो गया था। बावरी हुई संगत बाईस खाटो के चारो ओर चक्कर काट रही थी। माथे टेक-टेक कर उन्होने माथे घिसा लिए थे। न गुरु मिला, न उसकी परछाई। न गुरु प्रकट हुआ, न ही संगत को धीरज मिला।

इधर हरजी बीनो ने हरिमन्दिर साहिब पर अपना कब्जा पक्का कर लिया। जिसके हाथ जो माल लगा, उसने उसी को हड़प करने की कोशिश की। हर सोढी साहबजादा पराये हक को गाजर की तरह चबा रहा था।

आखिर मक्खन शाह लुबाना की हिम्मत से गुरु प्रकट हुआ—गुरु तेग बहादुर। सबके सब कच्चो झाग की तरह बैठ गए। लाठियों वालो ने अपना करतब भी दिखाया। धीरमल की शह पर शीहे ममंद ने गोली भी चलाई सद्गुरु पर। गुरु बनने वाला गुरु बन गया, लेकिन लोगों ने ऐसे हालात पैदा कर दिए कि गुरु के लिए सांस लेना कठिन हो गया। आखिर नूरानी ज्योति ने अन्धेरे को फाड़ कर एक लौ जगा दी। बादल अपने आप छट गए, चाद निकल आया। सारे पंजाब ने जी भर कर चादनी पाई। पंजाब ने अपने गुरु तेग बहादुर के आगे सिर झुका दिया और आशीर्वाद पाया।

गुरु गद्दी के बाद अमृतसर की यात्रा जरूरी थी। फैसला हुआ। गुरु नगरी की यात्रा की तैयारियां शुरू हुई। इधर हरजी को पिस्सू पड गए। उसने धीरमल को हालत खस्ता होते देखी थी। घड़ी में ही देगें पकाने वालों ने चावलों को सुफेद होते हुए देखा था। उसके पांवों के नीचे मे ज़मीन निकल गई। उसे दिन मे तारे नज़र आने लगे। हरिमन्दिर मुझसे तभी छिन जाएगा, जब गुरु के पांव अमृतसर में पडेंगे। बाहर ही रोकना चाहिए। लेकिन यह उसके बस का रोग नही था। हरजी ने कौड़िया फेंकी और नरदों को अपने हाथ मे रखा। पुजारियों को बुलाया, हर एक को एक सौ एक मोहरें दी, कई झूठे वादे

और कहा—गुरु के घोड़े के अमृतसर की हद में पांव रखते ही तुम लोग हरिमन्दिर से ऐसे निकाल दिए जाओगे जैसे मक्खन में से बाल। गुरु के सिंह तुम्हारे साथ भी वैसा ही करेंगे, जैसा धीरमल के साथ हुआ। अब तुम्हे खुद सोचना है कि तुम्हे यही रहना है या पत्रा वांचना है। बात सिर्फ आठ पहर की है। अगर तुम एक दिन के लिए हरिमन्दिर के दरवाजे बन्द करके खुद किसी अन्धेरी कोठरी में छिप जाओ, तो गुरु आएगा और अपने आप लौट जाएगा। गुरु का ठिकाना कीरतपुर है। ताला कोई तोड़ेगा नही और गुरु यहां पक्की तरह टिकेगा नही। घडी भर की शर्मिदगी और सारी जिन्दगी का आराम। हरिमन्दिर साहिब की आमदनी के तुम सब मालिक। अगर गुरु को दरवाजे खुले मिल गए, तो वह अपने किसी सिंह को यहां बिठा देगा और फिर तुम लोग डंडे बजाते घूमोगे। लाभ-हानि तुम खुद सोच लो।

—यह बात कह कर हरजी चला गया और पुजारियों के मुंह में सोने का चम्मच देता गया। सुक्खा सिंह ने बात को बल दिया।

मेहताब सिंह बोला—गुरु-घर मे झगड़ा शोभा नही देता। लेकिन पगडी को छेड़ने वाले कब खामोश बैठते हैं।

अब अमृतसर की कहानी सुनो। माया के रूप देखो। माया की आंख को पहचानो घूंघट में। माया की सुरमे वाली आंख को परखो। सुरमा तो सभी लोग डाल लेते हैं, लेकिन आख को मटकाना बडा मुश्किल है।

मसदों को अपने पिस्सू पड़ गए। खीर और माल-पुए उन्हे हवा में उड़ते नजर आए। एक मसद कह उठा—गुरु के तख्त के हम पाये हैं। हम स्रोत हैं पूजा की माया के। हम जिसे चाहे, गुरु बना दें और जिसे चाहे, फूंक मार कर उड़ा दें। डोरी हमारे हाथ मे है और गोले को हमने जेब में डाल रखा है। गुरु के आस-पास जो पुछल्ले चिपटे हुए हैं, वे हमारा निरादर ही करेंगे। उन्होने भी अपने पाव मजबूत कर लिए। अगर हमें सरोपे मिले, तो दसवंध गुरु के आगे ढेर लगा दिए जाएंगे, वरना डकार मारना हमे भी आता है।

—एक बात और। अभी बहुत-से लोग असली और नकली गुरु की पहचान नही कर सकते। यह बात भी हमे लोगों को बतानी है। यह भी एक बहुत बड़ा भ्रम है। इस बात के लिए भी गुरु को हमारी जरूरत है।

गुरु का घोड़ा अमृतसर की मालगुजार में दाखिल हुआ। शहर का कोई सम्मानित व्यक्ति, कोई पुजारी या मसंद अगवानी के लिए नही आया। पता नही गुरु ने अमृतसर का क्या बुरा किया था। हरजी ने मसंदों और पुजारियों के हृदय कठोर बना दिए थे। यह बात अभी तक किसी को नही बताई गई थी कि गुरु-गद्दी पर गुरु तेग बहादुर विराजमान हैं। शोर तो धीरमल का ही हो रहा था। आवाज लगाने वाले उसी के नाम की आवाजें लगा रहे थे। कुछ सयाने लोग जानते थे, बाकी तो सब मिट्टी के माधो थे। दर्शनी ड्योढी पर ही घोड़ा

रुक गया। गड्डलों से उतरे गुरु के महल। बाकी की सगत ने भी वही अपना माल-असबाव रख दिया। गुरु के प्यारे नंगे पांव पैदल ही चल पड़े।

—हरिमन्दिर में कीर्तन की धुन सुनाई नही देती। रवावी कही अफीम खाकर तो नही सो गए हैं। एक गुरुमुख सिंह ने कहा।

सब कुछ जानने वाले साहिवों ने फरमाया—वाणी मध्यम सुरो में गाई जाती है।

—यहा तो कुछ और ही वात लगती है।

—धीरमल यहां कही किकनी तो नहीं डाल गया है और यहां भी शीहे मसंद जैसी पचायत लगे। महाराज, अव के हम माफ नही करेंगे। हमारी नरमी ने इन्हें सिर पर चढा लिया है। मक्खन शाह लुवाना ने कहा।

—जैसी करनी, वैसी भरनी। जौ बो कर कोई गेहू नहीं काट सकता। नेकी कर दरिया मे डाल। आप अपना काम कीजिए और इन्हें अपना करने दीजिए। साहिव जी ने फरमाया।

मक्खन शाह की वात सच निकली। जव साहिव जी ने परिक्रमा मे कदम रखे, तो देखा कि दर्शनी ड्योढी के दरवाजे पर मन भर का ताला लगा हुआ है। सारी संगत के हाथों के तोते उड गए यह क्या हुआ? पुजारी कहां गए।

—पुजारी चले गए ताला मार कर। वे अव कहा आएंगे? चाबियां हरजी साथ ले गए हैं। एक आदमी ने कहा।

—भला हो उसका। साहिव जी ने कहा। सगतें स्नान-ध्यान करें। आ जाएंगे। तीखी दोपहर है। आंखें खुलती नही। ज़रा-सी ढल जाए दोपहर। पुजारी आ ही जाएंगे। सगत अपने काम-काज करे। दर्शन हम पुजारियों के वगैर भी कर सकते है।

सन्देश भेजा गया। पुजारी न आए।

—ताला तोड़ दिया जाए?

—गुरु-घर का ताला नही तोडा जाता।

—हम तो माथा टेकने आए हैं। दर्शनी दरवाजा ही वन्द है, तो हम हरिमन्दिर में जाएंगे कैसे?

—जिस तरह साहिव जाएंगे।

प्रतीक्षा होती रही। पुजारी न आए।

शान्त-स्वभाव सद्गुरु बोले—इसी चौमुखे आंगन में ही वैठ जाए और यहीं वाणी का कीर्तन किया जाए।

सारी संगत वैठ गई। कीर्तन शुरू हुआ। रसभीनी वाणी मध्यम सुरों में गाई जा रही थी। रवावी अपनी धुन में गा रहे थे। संगत लीन थी। भोग पड़ा।

पुजारी अब भी नहीं आए थे।

अरदास हुई। संगत उठ खड़ी हुई और उन्होने परिक्रमा मे बैठ कर ही माथा टेका। कुछ मनचले सरोवर मे छलांगें लगा कर हरिमन्दिर साहिब के दर्शन करना चाहते थे। लेकिन सद्गुरु के कहने पर उन्होने अपना इरादा बदल लिया। संगत पसर कर बैठ गई। इन्तजार और किया गया। जंगल में गया भी कोई लौट कर आता है ? मोहरों की गर्मी ने श्रद्धा की ओर से बिल्कुल मुंह मोड़ दिया था। अफीम चाट कर पुजारी दरवाजे बन्द किए तीसरी कोठरी मे सो रहे थे। अमृतसर वालो को तब खबर हुई, जब सद्गुरु गुरु नगरी को तिलाजलि देकर चले गए।

यह पुजारियो के दिल की आग है। माया के लोभ में ये सारी उम्र इसी आग मे जलते रहेंगे। 'अमृतसर वासी—अन्दर जलने वाले'—शाप देकर अमृतसर को प्रणाम कर दिया। अपनी जन्मभूमि के दर्शन भी नहीं किए। ससुर का घर भी न देख सके गुरु के महल।

यह चर्चा घर-घर, आंगन-आगन, गली-मुहल्लों मे हुई। बातूनी लोग इकट्ठे हो गए। पुजारियो की शामत आई कि उनका घर से निकलना मुहाल हो गया।

—तेरे बाप का घर था कि ताला लगा कर चाबी नाड़े से बांध ली। एक पुजारी ने कहा।

—हरजी से मोहरें गिनवा कर तुमने खुद झोली मे डाली थी।

—गिनते वक्त तुम्हारी लम्बी दाढ़ी को लाज न लगी ? तब तो होठो पर जबान फेर रहे थे।

लोभी लालची और ढीठ को भी कभी शर्म आती है।

—कोई तालाब देखें डूब मरने को। नही तो अमृतसर वाले जूते मार-मार कर धुआं निकाल देंगे।

—तुम लोग कोढी, लंगड़े, लूले होकर मरोगे। मागने पर तुम्हें खैर भी नही मिलेगी।

—फिर कोई रास्ता ढूंढा जाए। तब तो अक्ल पर पर्दा पड़ गया था। अब तो होश ठिकाने पर हैं।

इतने में ही चूड़ियों भरी परात, पीढियां, चकले और बेलने लेकर नाइन आ गई।

—यह क्या ?

—सारे अमृतसर की औरतों ने सौगात भेजी है—पुजारियो और उनके हमदर्दों के लिए। तुम लोग घर चलो, बच्चो को सम्भालो, रोटिया पकाओ और हम सब चली हैं गुरु को मनाने।

महिलाओं ने सिर पर थालिया उठा ली। गले में दुपट्टे डाल लिए।

दीवान सजा हुआ था। पहुच कर हुजूर के सामने नमस्कार किया। सिर झुकाये वे खड़ी रहीं।

हुजूर बोले—क्या हमसे कोई भूल हो गई ?

—नहीं हुजूर हमारे मर्द मर्द नहीं रहे। उनकी भूल बख्श दो, दाता। हमारी लाज रख लो। हमारी फैली हुई झोली भर दो।

दयालु महाराज घडी भर में ही पिघल गए।

उन्होंने फरमाया—माइया प्रभु का रूप।

माइयो की लाज रख ली गुरु ने। सबके गुनाह माफ़ कर दिए। गोपियों ने कान्हा को मना लिया। उस दिन से लोग थड़ा साहिब को प्रणाम करते हैं। यह उस गुरु की याद है, जिसने फिर कभी पजाब मे पांव भी नहीं रखा।

सुक्खा सिंह ने कथा का भोग यहीं डाल दिया।

—अच्छा, हम भी चलकर नमस्कार करेंगे थडा साहिब को। मेहताब सिंह ने श्रद्धा से भर कर कहा।



अमृत

मेहताब सिंह, मेरे बाबा ने मेरा मुंह दर्शनी ड्योढ़ी की तरफ कर दिया। मैंने दर्शनी ड्योढ़ी से स्वर्ण मन्दिर की ओर बड़े गौर से देखा। गुरु जानता है, सूरज जैसी चमक, जिसके सामने मेरी आंखें चौंधिया गईं। जब मैंने दर्शन किए, माथा दहलीज पर झुक गया। मेरी आखों में ज्योति के तेज का प्रकाश बढ़ा। आत्मा बलवान् हुई, कलेजे में ठंडक पड़ गई। मेरी पलकों ने धूल पोंछी सरदल की। मेरे हृदय ने खुशियों की गठरियां बांध ली। मैं अपने दिल की हालत तुम्हें बता नहीं सकता। मेरी आत्मा तृप्त हो गई, जैसे मां की छाती में ठंडक पड़ जाती है बच्चे को सीने से लगा कर। मै अपनी मा की बांहों में झूल रहा था। ठंडी हवा आ रही थी स्वर्ण मन्दिर की तरफ। कितना आनन्द आ रहा था, बयान नहीं किया जा सकता। सुक्खा सिंह ने फिर बात का सिरा पकड़ा।

—गुरु रामदास के आंगन में हर आदमी मां के दूध का आनन्द ले सकता है। विशाल आंगन हर आदमी को अपने सीने से लगा लेता है। इतना बड़ा जिगर गुरु के अलावा और किसके पास होगा? जो गुरु की शरण आ गया, वह गुरु के सीने लग गया। गुरु का घर सबके लिए खुला है, जालिम हो या मजलूम। गुरु-घर की बरकतों ने सिंहों के हौसले बुलंद किए हैं। वरना इतनी बड़ी हुकूमत से टक्कर लेना माथा तुड़वाने वालों बात है। सिंह अब राज छीन कर रहेंगे। गुरुओं ने हमें बख्शा है राज। मेहताब अपने जज्बे की हिलोर में कहे जा रहा था।

—हां, तो मैं बता रहा था...स्वर्ण मन्दिर के बनने की जो कथा मेरे बाबा ने सुनाई, वह बड़ी रोचक है। मेरे बाबा मुझे सुना रहे थे और मैं हैरान-परेशान हो रहा था। इतने युगों का छुपा हुआ तीर्थ गुरु के प्रताप से प्रकट हुआ। मेरे बाबा ने इतनी पुरानी कथा सुनाई। मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि यहां भगवान् राम भी आए होंगे। राम आधी उम्र तो जंगल में घूमते रहे। कहां विन्ध्याचल और कहां सोने की लंका। लेकिन मेरे बाबा ने यह बात पक्की करके दिखा दी कि भगवान् राम मजबूरन यहां आए थे। सुक्खा सिंह ने कहा।

—वह कैसे ?

—यहा महात्मा बुद्ध भी आए और गुरु नानक भी यहां तपस्या करते रहे। कहने वाले यह भी कहते हैं कि यहा वाल्मीकि ऋषि का आश्रम था और उनकी कुटिया रामतीर्थ मे थी। बाल्मीकि के शिष्य यही निवास करते थे। शिक्षा का बहुत बडा केन्द्र था यह। गाएं चराते हुए विद्यार्थी यहा तक आ जाते थे। ये बातें मुझे हमारे गाव के ग्रन्थी ने बताई थी।

सुक्खा सिंह आगे बोला—यह बात तब की है, जब लंकेश की चिता की राख भी अभी ठडी नही हुई थी। भगवान् राम ने विभीषण को राजतिलक देकर लकाधिपति बना दिया और खुद अयोध्या लौट आए। यह बात आज की नही है। युग बीत गए। सदियां गुजर गईं। सतयुग गया, द्वापर आया। अयोध्यावासियों ने उस दिन दीपमाला की, जिसे आज तक दीवाली के नाम से पुकारा जाता है। महाराज रामचन्द्र जी को राजतिलक दिए अभी गुरु वशिष्ठ के हाथ भी मैले नही हुए थे। भले उस दिन अयोध्या नगरी मे जगह-जगह, गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले, खुशिया नाच उठी थी, लेकिन ज्योतियों के धुए की कालिख की तरह खुसपुस भी होने लगी...सुक्खा सिंह रुक गया।

—रामराज्य मे भी ऐसा हुआ करता था ? मेहताब सिंह ने घोडे को पुचकारते हुए कहा।

—रामराज्य ही था, लेकिन लोग तो दूध के धुले नही थे। जहा देवता बसते है, वहा पड़ोस मे राक्षस भी जरूर होते है। राम अभी कल ही लका से आए थे। उनके साथ कई राक्षस भी आए होगे। जहा किसी ने कुछ दिन काटे हो, वहा के लोग दुश्मन बन जाएं, तो कोई सज्जन भी बन जाता है। राम के प्यारे जरूर साथ आए होंगे। अयोध्या नगरी में राम की पूजा होती, लेकिन जिसकी बुद्धि पर पर्दा पड़ जाए, उसका कोई क्या करे ?

सुक्खा सिंह ने भी अपने घोड़े की लगाम को जरा-सा झटका दिया।

—कोई अनहोनी बात हुई होगी ? मेहताब सिंह ने पूछा।

—उससे भी बढ़ कर। कोई महारानी सीता को अपराधी ठहरा रहा था और किसी ने रावण का स्यापा किया। किसी ने कहा कि राम बेवस थे। कोई कहता, महारानी सीता सति-सावित्री है, मूर्ख यो ही उनके आचल पर दाग लगा रहे हैं। असल में कोई भी आदमी अपने सीने पर हाथ रख कर मर्दों की तरह मैदान में नही कह सकता था। बात अन्दर ही अन्दर सुलगती रही। जितने मुंह, उतनी बातें। बात दरबारियों के कानो में पड़ी। छोटी-सी बात का बतंगड बन गया। पंखों की डारें बन गईं। रामराज्य मे भी रावण राज्य का भूत नाच उठा। उसके पैरों मे घुंघरू थे। हाथ में ढोलक और पीछे ढोलक वाला। लोगों ने इस आदमी को मसखरा समझा। किसी ने उसे बहुरूपिया कहा, किसी ने सौदाई। होनी रामराज्य मे भी होकर रही। मुंह तोड़ कर बात करने वालों के

अमृत

मेहताब सिंह, मेरे बाबा ने मेरा मुंह दर्शनी ड्योढ़ी की तरफ कर दिया। मैंने दर्शनी ड्योढ़ी से स्वर्ण मन्दिर की ओर बड़े गौर से देखा। गुरु जानता है, सूरज जैसी चमक, जिसके सामने मेरी आंखें चौंधिया गई। जब मैंने दर्शन किए, माथा दहलीज पर झुक गया। मेरी आंखों में ज्योति के तेज का प्रकाश बढ़ा। आत्मा बलवान् हुई, कलेजे में ठंडक पड़ गई। मेरी पलकों ने धूल पोंछी सरदल की। मेरे हृदय ने खुशियों की गठरियां बांध ली। मैं अपने दिल की हालत तुम्हें बता नहीं सकता। मेरी आत्मा तृप्त हो गई, जैसे मां की छाती में ठंडक पड़ जाती है बच्चे को सीने से लगा कर। मैं अपनी मां की बाहों में झूल रहा था। ठंडी हवा आ रही थी स्वर्ण मन्दिर की तरफ। कितना आनन्द आ रहा था, बयान नहीं किया जा सकता। सुक्खा सिंह ने फिर बात का सिरा पकड़ा।

—गुरु रामदास के आंगन में हर आदमी मां के दूध का आनन्द ले सकता है। विशाल आंगन हर आदमी को अपने सीने से लगा लेता है। इतना बड़ा जिगर गुरु के अलावा और किसके पास होगा? जो गुरु की शरण आ गया, वह गुरु के सीने लग गया। गुरु का घर सबके लिए खुला है, जालिम हो या मजलूम। गुरु-घर की बरकतों ने सिंहों के हौसले बुलंद किए हैं। वरना इतनी बड़ी हुकूमत से टक्कर लेना माथा तुड़वाने वाली बात है। सिंह अब राज छीन कर रहेंगे। गुरुओं ने हमें बख्शा है राज। मेहताब अपने जज्बे की हिलोर में कहे जा रहा था।

—हां, तो मैं बता रहा था...स्वर्ण मन्दिर के बनने की जो कथा मेरे बाबा ने सुनाई, वह बड़ी रोचक है। मेरे बाबा मुझे सुना रहे थे और मैं हैरान-परेशान हो रहा था। इतने युगों का छुपा हुआ तीर्थ गुरु के प्रताप से प्रकट हुआ। मेरे बाबा ने इतनी पुरानी कथा सुनाई। मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि यहां भगवान् राम भी आए होंगे। राम आधी उम्र तो जंगल में घूमते रहे। कहां विन्ध्याचल और कहां सोने की लंका। लेकिन मेरे बाबा ने यह बात पक्की करके दिखा दी कि भगवान् राम मजबूरन यहां आए थे। सुक्खा सिंह ने कहा।

—वह कैसे ?

—यहां महात्मा बुद्ध भी आए और गुरु नानक भी यहां तपस्या करते रहे। कहने वाले यह भी कहते है कि यहां वाल्मीकि ऋषि का आश्रम था और उनकी कुटिया रामतीर्थ मे थी। वाल्मीकि के शिष्य यही निवास करते थे। शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र था यह। गाए चराते हुए विद्यार्थी यहा तक आ जाते थे। ये बातें मुझे हमारे गाव के ग्रन्थी ने बताई थी।

सुक्खा सिंह आगे बोला—यह बात तब की है, जब लकेश की चिता की राख भी अभी ठंडी नही हुई थी। भगवान् राम ने विभीषण को राजतिलक देकर लंकाधिपति बना दिया और खुद अयोध्या लौट आए। यह बात आज की नही है। युग बीत गए। सदियां गुजर गईं। सतयुग गया, द्वापर आया। अयोध्यावासियों ने उस दिन दीपमाला की, जिसे आज तक दीवाली के नाम से पुकारा जाता है। महाराज रामचन्द्र जी को राजतिलक दिए अभी गुरु वशिष्ठ के हाथ भी मैले नही हुए थे। भले उस दिन अयोध्या नगरी मे जगह-जगह, गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले, खुशिया नाच उठी थी, लेकिन ज्योतियो के धुए की कालिख की तरह घुसपुस भी होने लगी...सुक्खा सिंह रुक गया।

—रामराज्य में भी ऐसा हुआ करता था? मेहताब सिंह ने घोड़े को पुचकारते हुए कहा।

—रामराज्य ही था, लेकिन लोग तो दूध के धुले नही थे। जहा देवता बसते है, वहां पड़ोस मे राक्षस भी जरूर होते है। राम अभी कल ही लका से आए थे। उनके साथ कई राक्षस भी आए होगे। जहा किसी ने कुछ दिन काटे हों, वहा के लोग दुश्मन बन जाएं, तो कोई सज्जन भी बन जाता है। राम के प्यारे जरूर साथ आए होंगे। अयोध्या नगरी में राम की पूजा होती, लेकिन जिसकी बुद्धि पर पर्दा पड़ जाए, उसका कोई क्या करे?

सुक्खा सिंह ने भी अपने घोड़े की लगाम को जरा-सा झटका दिया।

—कोई अनहोनी बात हुई होगी? मेहताब सिंह ने पूछा।

—उससे भी बढ कर। कोई महारानी सीता को अपराधी ठहरा रहा था और किसी ने रावण का स्यापा किया। किसी ने कहा कि राम बेदम थे। कोई कहता, महारानी सीता सति-सावित्री है, मूर्ख यों ही उनके आंचल पर दाग लगा रहे हैं। असल में कोई भी आदमी अपने सीने पर हाथ रख कर मर्दों की तरह मैदान में नही कह सकता था। बात अन्दर ही अन्दर सुलगती रही। जितने मुंह, उतनी बातें। बात दरबारियों के कानों में पड़ी। छोटी-सी बात का बतंगड़ बन गया। पंखों की डारें बन गईं। रामराज्य मे भी रावण राज्य का भूत नाच उठा। उसके पैरों मे घुंघरू थे। हाथ मे ढोलक और पीछे ढोलक वाला। लोगों ने इस आदमी को मसखरा समझा। किसी ने उसे बहुरूपिया कहा, किसी ने सौदाई। होनी रामराज्य में भी होकर रही। मुंह तोड़ कर बात करने वालों के

अखाड़े दिन के समय कम लगते, लेकिन रात को छिनालें घघरी पहन कर नाचतीं। बात अभी निखर कर सामने नहीं आई थी। एक दिन वह एक चिन्गारी बन गई तथा उसके पड़ोस का तिनकों का ढेर। हवा का एक झोका आया, चिन्गारी उडी और तिनको में आग लग गई। आग का बगूला उठा, जिसे सारी अयोध्या ने देखा। यह बात रात के पहले पहर की है। महाराज राम को अपनी प्रजा से बड़ा प्यार था। रात-बिरात भेस बदल कर जाते और अपनी प्रजा की बातें सुनते। दूसरा पहर निकल गया रात का। चौकीदार आवाज़ दे रहा था—जागते रहना। तीसरे पहर अपना घाघरा छलकाती आ गई होनी, जब सारी दुनिया अन्धेरे की गोद में खर्राटे ले रही थी। रात का रामधारिया काला जामा पहन कर भंगड़ा करना चाहता था। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। सारी अयोध्या सायं-सायं के घेरे में घिरी हुई थी। सरयू नदी अपनी मध्यम और मस्त रफ्तार से बह रही थी। होनी ने अपनी सुरमेदानी निकाली, सुरमा डाला और आंखें मटकाने लगी। शामत की बात कि वह धोबियों का मुहल्ला था। शोर मच रहा था। कुछ आदमी इकट्ठा थे। घर के एक कोने मे मिट्टी का दीया जल रहा था। हल्की-हल्की रोशनी कभी उनके चेहरों पर पड़ती और वे एक-दूसरे को पहचान लेते। एक बड़े मुंह फट धोबी ने सारे मुहल्ले को सिर पर उठा रखा था। शराब में धुत हुआ वह अपनी बीवी को पीटे जा रहा था, जैसे ज़मीन पीटी जाती है रामदूत भी शोर सुनकर उधर की तरफ आ निकले। एक ने आगे बढकर कहा—क्या बात है ? क्यों अपनी स्त्री को मारे जा रहे हो ? रामराज्य में किसी पर जुल्म नहीं हो सकता।

—चलो-चलो, तुम कौन हो हमारे मामले मे दखल देने वाले ? यह मेरी स्त्री है। मेरे जो जी मे आएगा, मैं करूंगा। तुम कौन हो ?

—इसका कोई दोष भी है या यों ही खाल उतारे जा रहे हो ? तुम्हारी पत्नी है तो ?

—मेरा सिर घूम गया है या मैं पागल लगता हूं ? धोबी ने गुस्से में कहा।

—तो बात क्या है ? दूसरे दूत ने पूछा।

धोबी का पारा और भी गर्म हो गया और वह गज भर लम्बी जबान निकालते हुए बोला—बात। अभी बताता हूं। और इसके [illegible]थ ही धोबिन की कमर में लात जमा दी।

एक दूत ने आगे बढ़ कर [illegible] दोनों हाथ जकड़े गए।

—चल, कमजात कही की। तू क्या समझती है, मैं राजा रामचन्द्र हूं, जिसने सीता को रावण के घर मे रहने के बाद भी अपने घर में रख लिया। मैं राम नही, मैं धोबी हू। मेरा खानदान, मेरी जाति, यह बर्दाश्त नही कर सकती कि मेरी औरत मुझसे चोरी दीवार फाद कर किसी दूसरे के घर मे रात गुजार आए। शरीफ़ आदमी इस तरह की कुलच्छनियों को घर मे नही रखते। मुझे किसी की परवाह नही है। मैं छिनाल को अपने घर मे नही बसा सकता। निकल जा मेरे घर से। तेरे जैसी चडालन का मुह देखना महापाप है। छिनाल, रात भर किसी दूसरे के साथ रंगरलिया मनाती है और मुझसे कहती है, मैं गंगा नहा कर आई हू। तू सीधे से नही जाएगी, तो तेरी चुटिया उखाड कर हथेली पर रख दूंगा। रात के अन्धेरे मे ही तू मेरे घर से निकल जा। दिन मे कोई तेरा मुंह न देखे। कुलच्छिनी का मुंह देखने से मुहल्ले पर परछाईं पड जाएगी। अपने कलंक को अपने साथ ही ले जा। हमारी औलाद पर बुरा असर न पड़े। गन्दा फोड़ा, गन्दा खून, शरीर के लिए कोढ बन जाता है। इसे निकाल देना ही इलाज है। धोबी के मुह मे जो आ रहा था, वह बके जा रहा था।

—मैं निर्दोष हू। मैंने किसी के साथ आख मैली नही की है। मै अपनी मौसी के घर गई थी।

—झूठ, बिल्कुल झूठ। चोर भी, चतुर भी। वे लाल पगड़ियों वाले तुम्हारे भाई होते हैं। धोबी ने कहा।

—सौत यों ही झूठ बोलती है। पतिदेव, वह मुझसे जलती है। सौत है, तो कुछ न कुछ तमाशा करेगी ही।

—बहुत हो चुका। युद्ध-भूमि का अन्त हो गया। चलो, हमारे साथ दरबार में चलो। वहां तुम्हारा सब फैसला हो जाएगा। दुनिया को आख भर कर सोने दो।

रामदूत दोनो को पकड़ कर ले गए।

रात अभी बाकी थी। बाकी रात आंखों मे बीत गई। मुर्गे ने बाग दी। पंछियों ने दिन चढने का भेद खोल दिया। मन्दिरों में घड़ियाल बजे। पुजारी ने आरती की ज्योति जलाई। सरयू नदी के कन्धे भिड़ने लगे। अयोध्या नगरी के नर-नारी स्नान के लिए जा रहे थे। उधर रामदूत धोबी की पसलियां सेंक रहे थे। अरे कम्बख्त ! क्यों सब की जबान पर आना चाहते हो। जबान दबा जाओ। मर्द-औरत का झगडा बताओ और अपनी जान बचाओ। अपने घर जाओ और मंगलाचार करो। भिड़ के छत्ते को छेड़ कर तुम्हे क्या मिलेगा ? सोए हुए नागों को जगाना अच्छा नही होता। शेर की खोह मे हाथ डालना गलती है। दूत धोबी को समझा रहा था।

—झूठ बोलना महापाप है और वह भी रामराज्य में। मैंने अपने अन्दर की आग बाहर निकाल दी है। अब मैं इसे फांक नही सकता। आग खाने वाले

लोग कोई और ही होते हैं। मैं प्राण दे सकता हूं, झूठ नहीं बोल सकता। धोबी ने जवाब दिया।

—अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्जी। दरबार में पगड़ी बांध कर आना। राजा की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी में बचना चाहिए। बुद्धिमान् लोग यही कहते हैं।

—रामराज्य का यह ऐलान है कि रामराज्य में कोई झूठ न बोले। मैं राजा से विमुख हो जाऊं? धोबी ने कहा।

—राम को चार दिन सुख तो लेने दो। चौदह साल तक वनों की खाक छान कर आए हैं। जरा पांव तो सीधे करने दो। कमर की नसें तो सीधी हो जाएं। राम तुम्हारे ही सुपुत्र हैं, तुम्हारे ही भाई हैं। कुछ रहम करो उन पर। रामदूत ने मिन्नत की।

—मैं झूठ नहीं बोल सकता। अपनी जान जरूर न्योछावर कर सकता हूं। मैं देखना चाहता हूं कि यह सत्यवादी राजा अपने बारे में क्या फैसला करता है? रामराज्य रहती दुनिया तक अमर रहेगा। मेंहदी पीसने के बाद ही रंग देती है। धोबी ने कहा।

रामराज्य के दरबार में उस धोबी को पेश किया गया। उसे वही शब्द दोहराने को कहा गया, जो आधी रात के समय अपने घर में मुंह से निकाले थे। पण्डित, ब्रह्मज्ञानी, ऋषि सन्न रह गए। क्षत्रियों ने तलवारों को मुंह में दबा लिया। दरबारियों ने दांतों तले अंगुली दी। शूरवीरों ने अपने सिर झुका लिए।

धोबी कहने को तो कह गया, पर अब शहतूत की टहनी की तरह कांप रहा था। मैं गुनाहगार हूं, दोषी हूं, मुझसे भूल हुई। मैं माफी चाहता हूं।

—सच को दबाना झूठ को जन्म देना है। झूठा आदमी रामराज्य में नहीं रह सकता। धोबी ने सच बोला है। इसे छोड़ दिया जाए। बल्कि पुरस्कार दिया जाए। जाओ भाई, तुम्हारा कल्याण हो। राम किसी को दण्ड नहीं देंगे। राम अपराधी है। उसे दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। जाओ, सब अपना-अपना काम करो। राम भगवान् ने फरमाया।

धोबी का तो कुछ नहीं बिगड़ा, पर सारे राज्य का ताना-बाना घड़ी भर में बिगड़ गया।

दूसरे दिन ही आज्ञा पाकर लक्ष्मण राजमाता सीता को सरयू नदी के पास छोड़ने चले गये। घर में किसी को खबर तक नहीं थी। सिर्फ हुक्म था राम का, जिसका पालन हो रहा था। गंगा आई, पार हुए और लक्ष्मण ने सीता के पांवों पर सिर रखकर प्रणाम किया।

—मुझे इजाजत दीजिए। लक्ष्मण ने कहा।

—क्यों?

—मुझे इतना ही आदेश दिया है कि माता को गंगा पार छोड़ आऊं।

—मेरा अपराध ?

—मैं कुछ नही जानता, लेकिन ऋषि वशिष्ठ ने जब मेरे कान मे कुछ कहा था, तब मैं कुछ नही बोल सकता था। उन्होने कहा था—रामराज्य का निर्णय : राज-माता का त्याग।

—त्याग...बिना कसूर, बिना पूछे-पुछवाये, बिना किसी दोष के। फैसला मंजूर। स्वामी की आज्ञा सिर-माथे पर स्वीकार। जाओ, लक्ष्मण, अपने भैया का ख्याल रखना। मेरा फिक्र न करना। धरती माता मेरी रक्षक है। वन के वृक्ष, पक्षी, शेर-बाघ, ये सब मेरी रक्षा करेंगे। भगवान् तुम्हारा भला करे। जाओ लक्ष्मण, अपने भाई को उदास न होने देना। मेरी याद आये, तो एक बार मेरा नाम लेना, मैं भगवान् के चरणो में बैठी नजर आऊंगी। सीता ने कहा।

लक्ष्मण चला गया। सीता के पैरो के नीचे से जमीन सरक गई। आखों के सामने अंधेरा-सा आया। लक्ष्मण मूर्च्छित राजमाता को छोड़ कर अयोध्या लौट आया। राम की उदासी ने राज-काज को ठप्प कर दिया।

सुक्खा सिंह ने कहा – क्यो मेहताब सिंह, देखा त्याग। जो आदमी त्याग करना जानता है, जीना भी वही जानता है।

सुक्खा सिंह ने घोड़े की पीठ पर थपकी दी और बोला—उदासी को तोड़ने के लिए अश्वमेध यज्ञ रचाया गया। ऋषि-मुनि यज्ञ के लिए बैठ गये। आहूतिया दी गईं। अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को सजाया गया। अयोध्या-नरेश का ध्वज घोड़े की काठी पर बाधा गया। ध्वज अपने नाम का सिक्का जमा रहा था। आर्यपुत्र ने लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को घोड़े के पीछे भेजा। घोड़ा देश-देशातर घूमता चारो कूट मापना इस इलाके मे आ निकला, जहा राजमाता सीता अपने बनवास के दिन पूरे कर रही थी। सीता माता के गर्भ से लव ने जन्म लिया और वाल्मीकि की जरा-सी भूल ने कुश को जन्म दिया। ऋषि ने कुश इकट्ठी की, उसे जल का छींटा दिया और अपनी तपस्या का सारा पुण्य-कुश-घास को दे दिया। कहते है कि उस घास ने एक बालक का रूप धारण कर लिया। उसका नाम कुश ही रखा गया। लव और कुश दो भाई थे। दोनों जवान हो रहे थे उन्होने सुन्दर घोड़े को देखा और उसे रोक लिया। लव कह रहा था, मैं लूंगा, कुश कह रहा था, मैं लूंगा। अभी फैसला नही हो पाया था कि इसी बीच सेनाएं आ गईं।

लक्ष्मण बोला—बेटो, यह घोड़ा अश्वमेध यज्ञ का है। इसे यों नही रोका जाता। यह घोड़ा तीन कूट घूम आया है। जब यह चौथे कूट से निकल जायेगा और अयोध्या पहुंचेगा, तो यज्ञ की पूर्णाहूति पड़ेगी। तब आर्यपुत्र चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। बालको, घोड़े को छोड़ दो। घोड़ा ही चाहिए, तो हम से दो-चार दूसरे घोड़े ले लो। इस घोड़े को रोकना आग से खेलने के समान है। घोड़ा छोड़ दो।

बालहठ लव के मन में उठ खड़ा हुआ। बोला—किस-का घोड़ा है? आर्यपुत्र राम का। जिन्होंने सीता महारानी को बिना किसी दोष के वनवास दिया था। हम उस अपराधी को जरूर देखना चाहते हैं। चलो, इसी बहाने उस निर्दयी के दर्शन हो जायेंगे। जाओ, अपने राजा से कह दो, लव-कुश ने घोड़ा रोक लिया है। जिसका भुजाओ में बल है, छुड़वा कर ले जायें। हम क्षत्रिय है, धनुर्धारी हैं। हम घोड़ा नही छोड़ेंगे।

मेरे भाई ठीक कहते हैं। हमारे गुरु ने सीता माता की कथा हमें सुनाई है। आज हम लक्ष्मण को भी देखेंगे, जो अपनी भावज को अकेली गंगा-पार छोड़ गया था।

—बालको, यह तुम्हारी भूल है। ये दो छोटी-छोटी जानें इतनी बडी फौज का सामना कर सकेंगी? लक्ष्मण ने कहा।

—यह तो समय ही बतायेगा।

घोर संग्राम हुआ। लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत को पहले ही हल्ले में बेहोश कर दिया लव-कुश ने। सेना के पांव उखड़ गये। घोडा पेड से बंधा हुआ था। हाहाकार मच गया। खबर अयोध्या पहुंची। राम आये, धनुर्धारी सेनाएं लेकर—बालको, घोड़ा छोड़ दो।

—क्या एक बार ही कहना काफी नही है कि जिसकी भुजाओ में बल है, घोड़ा उसी का है? लव ने कहा।

—मैं राम हूं—अयोध्या का राजा।

—पहले मुकाबला, बाद में दूसरी बात। कुश ने कहा।

कहते हैं, लव-कुश के बाणों ने राम के होश भी गुम कर दिये। इतनी देर मे सीता को खबर मिली। वह दौड़ी-दौड़ी आई और बेटों के सामने खड़ी हो गई। बोली—बस बेटो, अब तीर मत चलाना।

—नही मां, आज हम राम से पूछना चाहते हैं कि उन्होंने सीता को वनवास क्यों दिया।

—नही, बेटा, अब उसकी जरूरत नही है। वह कथा गुरु ने तुम्हें यों ही पढ़ा दी थी।

—यह नहीं हो सकता, मां। हमारे गुरु झूठ नही बोल सकते।

—यह तुम्हारी मां का आदेश है। तुम जानते हो, जो तुम्हारे मुकाबले पर खड़ा है, वह कौन है?

—कौन है, मा?

—तुम्हारे पिता आर्यपुत्र राम। सीता ने कहा।

—इसका मतलब है, हमारी मा महारानी सीता हैं।

—हां, बेटा—यह सच है।

वाणों के वार से राम घायल हो चुके थे। सीता और लव कुश ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। लोग कहते है कि तब इद्रपुरी से अमृत मगवाया गया और वह अमृत सारी सेना और मृत योद्धाओं पर छिड़का गया। योद्धा सजीव हो उठे। बाकी बचा हुआ अमृत यहा दवा दिया गया। गुरुओ के प्रताप से अमृत वाली जगह पर अमृत का सरोवर है।

इतनी बात बता कर सुक्खा सिंह खामोश हो गया।

घोड़े चल रहे थे। रास्ते की कमर टूटती जा रही थी। वागी और कथा दोनो को अमृतसर के निकट लिये जा रही थी।



—चम्पा। अरी चम्पा। दरवाजा खोल। हमारे घर नारायण आये हैं! बापू की आवाज़ थी।

घोड़े बांधे गये। ऊंट को उसके ठिकाने खड़ा कर दिया गया। महमान हवेली में दाखिल हुए। पलंग बिछे देख कर चौधरी बड़ा प्रसन्न हुआ। कहने लगा—बड़ी सयानी है मेरी बेटी। छोटी थी कि मा मर गई। ठोकरें खा-खा कर समझदार हो गई है। पधारो, गुरु के प्यारो। हमारे घर को भाग्यशाली बनाओ।

—बापू, हम जरा मुंह-हाथ धो लें। बड़ी धूल चढ गई है। हमारे मुंह पर पलेथन लगा दिया है धूल ने। दुतहिया मैली हो जायेंगी। मेहताब सिंह बोला।

—दुतहियां तुमसे अच्छी हैं? बापू ने कहा।

चम्पा ने गागर भर कर आगन में रख दी। सिंह हाथ-मुंह धोने लगे। सारा गाव अपने आप इकट्ठा हो गया।

सिंह आये हैं। धन्य भाग्य। गगा सिंह, हम तुम्हारे बहुत ऋणी हैं। तुमने हमारे गाव को पवित्र कर दिया। कौन? ठकुराइन। क्या लाई हो? ठाकुर कह रहा था।

ठकुराइन बोली—लड्डुओं का थाल है महमानों के लिए।

—वह पीछे कौन है?

—देवरानी।

—मेरे घर में पिन्नियों की टोकरी भरी थी...अभी बोल उसके मुंह में ही थे कि जोधाबाई चौधराइन ने त्रिचौली की परात सामने ला कर रख दी।

—चौधरी, यह क्या? सुक्खा सिंह ने कहा।

—मैं क्या जानूं? मैं तो तुम लोगों के साथ ही आया हूं। गांव वालों का चाव जाग उठा जब उन्होंने सुना कि सिंह आये हैं। ठकुराइन ने लम्बा-सा घूंघट निकाल रखा था। बोली—चम्पा बेटी, तुम रोटी-भाजी के चक्कर में न पड़ना। रोटी हम लेकर आयेंगी।

—जेठ जी, मैं खीर बना आई हूं। मैं भी जेठानी जी के साथ आऊंगी।

—बापू, यहा मैंने जो कुछ बना रखा है, उसका क्या होगा?

—अरी, जब हम बैठी है, तो तुम्हारा क्या काम? अभी तुम बच्ची हो। गुड़ियों से खेलने की उम्र है। ये मेहमान कौन रोज-रोज आयेंगे।

भूरी ने दूध के गिलास दिये। चम्पा ने लड्डुओं का थाल भी साथ रख दिया। पास ही पिन्नियों की टोकरी भी रख दी।

—भोग लगाओ, सिंह जी। ठकुराइन बोली।

माता जी, इतना कष्ट करने की क्या जरूरत थी? सुक्खा सिंह ने कहा।

'हम घर साजन आये'

जब बापू नजर आये, तो चम्पा मुंडेर पर बैठी थी। बापू के साथ महमान थे। वह झट से छलांग लगा कर दौड़ी-दौड़ी गई और भूरी से जा कर बोली—बापू आ गये। साथ में महमान हैं। उठ, और दूध इकट्ठा कर। चाची की मटकी में से दूध डाल ला, ताई का घर भी देख लेना। भाभी से कहना, जितना दूध है, दे दे। हमारे यहा मेहमान आये है। मैं खटिया बिछा कर दुतहियां बिछाती हूं। पंजाब से दुतहियां लेकर आये थे जीजा। चार खाटें तो बिछी हों। महमान क्या कहेंगे? चौधरी की लड़की को कोई अक्ल ही नहीं है। महमान भगवान् की न्याई होता है। महमान घर आये, तो भगवान् घर आ गये। एक ही बात है। ले, जल्दी कर और घड़ा ले जा। और किसी को पता न चले। बापू के आने से पहले सारा काम हो जाना चाहिए।

चम्पा का रंग निखरा देख कर भूरी बोली—अरी, तेरा वह भी आ रहा है?

—वह कौन?

—तुम्हारा कोई...मेरे जीजा...बापू का जवाई।

—आंखे तो तू सेक रही थी, बात मेरे गले मढ रही है। अरी, यह सिक्ख बड़े अच्छे है। देख ले, निश्चय के कितने पक्के है। जान हथेली पर लिये घूमते हैं। हल्के-से सदेश पर चल दिये है सूरमा, मौत का मजाक उड़ाने। इनके चेहरो पर झलकता तेज देखा है तूने? गभरू जवान, दूले, वज्र शरीर। आखो में इलाही नूर। किसी दिन पजाब के राजा बनेगे ये। चम्पा ने कहा।

—फिर कुहनियों तक चूड़ा और कंगन भी तू ही पहनेगी। हमें तो कोई अंगूठी भी लेकर नही देगा। जीजा भले ही छल्ला दे जाये। भूरी ने कहा।

—तू तो अभी से ब्याह रचा बैठी है। रोटी-टुक्कड तो खिला ले बारातियों को। जब डोली चलेगी, तो सारा गाव इकट्ठा होगा। घबरा मत। तू दूध इकट्ठा कर ला, तेरी सारी चाहत पूरी दूंगी। परीबंद और झांझिया पहनाऊंगी।" —तू चूल्हा सुलगा। मैं आई कि आई। भूरी घड़ा लेकर चली गई।

—चम्पा। अरी चम्पा। दरवाजा खोल। हमारे घर नारायण आये हैं! बापू की आवाज थी।

घोड़े बांधे गये। ऊट को उसके ठिकाने खड़ा कर दिया गया। महमान हवेली में दाखिल हुए। पलंग बिछे देख कर चौधरी बड़ा प्रसन्न हुआ। कहने लगा—बड़ी सयानी है मेरी बेटी। छोटी थी कि मा मर गई। ठोकरें खा-खा कर समझदार हो गई है। पधारो, गुरु के प्यारो। हमारे घर को भाग्यशाली बनाओ।

—बापू, हम जरा मुंह-हाथ धो लें। बड़ी धूल चढ गई है। हमारे मुंह पर पलेथन लगा दिया है धूल ने। दुलहिया मैली हो जायेंगी। मेहताब सिंह बोला।

—दुलहियां तुमसे अच्छी हैं? बापू ने कहा।

चम्पा ने गागर भर कर आगन में रख दी। सिंह हाथ-मुंह धोने लगे। सारा गाव अपने आप इकट्ठा हो गया।

सिंह आये हैं। धन्य भाग्य। गगा सिंह, हम तुम्हारे बहुत ऋणी हैं। तुमने हमारे गांव को पवित्र कर दिया। कौन? ठकुराइन। क्या लाई हो? ठाकुर कह रहा था।

ठकुराइन बोली—लड्डुओं का थाल है महमानों के लिए।

—वह पीछे कौन है?

—देवरानी।

—मेरे घर में पिन्नियों की टोकरी भरी थी...अभी बोल उसके मुंह में ही थे कि जोधाबाई चौधराइन ने खिचौली की परात सामने ला कर रख दी।

—चौधरी, यह क्या? सुक्खा सिंह ने कहा।

—मैं क्या जानूं? मैं तो तुम लोगों के साथ ही आया हूं। गांव वालों का चाव जाग उठा जब उन्होंने सुना कि सिंह आये हैं। ठकुराइन ने लम्बा-सा घूंघट निकाल रखा था। बोली—चम्पा बेटी, तुम रोटी-भाजी के चक्कर में न पड़ना। रोटी हम लेकर आयेंगी।

—जेठ जी, मैं खीर बना आई हूं। मैं भी जेठानी जी के साथ आऊंगी।

—बापू, यहा मैंने जो कुछ बना रखा है, उसका क्या होगा?

—अरी, जब हम बैठी हैं, तो तुम्हारा क्या काम? अभी तुम बच्ची हो। गुड़ियों से खेलने की उम्र है। ये मेहमान कौन रोज-रोज आयेंगे।

भूरी ने दूध के गिलास दिये। चम्पा ने लड्डुओं का थाल भी साथ रख दिया। पास ही पिन्नियों की टोकरी भी रख दी।

—भोग लगाओ, सिंह जी। ठकुराइन बोली।

माता जी, इतना कष्ट करने की क्या जरूरत थी? सुक्खा सिंह ने कहा।

—नदी नाम संजोगी मेले, बेटा। देवर जी की कृपा से तुम्हारे दर्शन हो गये। क्या हमारा इतना भी हक नहीं ?

भूरी और चम्पा फूली नहीं समा रही थी।

—जोगा भाई, पहले तुम मुंह मीठा करो लड्डुओं से। सुक्खा सिंह ने लड्डुओं से उसका मुंह भर दिया।

भूरी ने चम्पा के कान में कहा—लो, अब तो चपनी शुरू हो गई। बधाई, लो। अब तो मेंहदी लगा लूं ?

—बहुत ढीठ हो। समय-असमय तो देख लिया करो। चम्पा ने कहा।

—तुम न कर दो। मैं जयमाला डाल देती हूं। भूरी ने जवाब दिया।

—ना-ना, ना री ना। चम्पा ने चूनर में चेहरा छिपाते हुए कहा।



संतोखसर

—मुक्खा सिंह, बीबी चम्पा ने इतनी सेवा की है कि जब तक जीता रहूंगा, हमेशा याद रहेगी। यह गांव कभी सिक्खों की काशी बन जायेगा।

मेहताब सिंह बोला—अभी रात काफी है और सोना भी जरूरी है; पर गुरु-महिमा गाते नींद आ जाये, तो आदमी के भाग्य पूर्ण हो जायें।

—हां, सिंह जी, हम भी सुनेंगे। कृपा करो। ऐसे मौके किस्मत से ही मिलते हैं, चौधरी ने कहा।

—चाचा जी, अमृतसर की कथा सुनने का तो मेरा भी मन है। चम्पा बोली।

—मैं दूध ले आई हूं एक-एक कटोरा, सिर्फ एक-एक कटोरा। भूरी की आवाज उभरी।

—दूध पिलाना था, हमारे पेट में कुछ जगह खाली रहने देती। पहले चाची आई, फिर ताई और बची-खुची कसर भाभी ने पूरी कर दी। पेट है या चूल्हा।

—मेरी बच्ची के प्यार को ठेस न लग जाये। बस चाहे भोग ही लगा लो। बड़ी रीझ से दूध गरम करके लाई है।

चौधरी ने मिन्नत की। सब ने बच्ची का दिल रख लिया और फिर कथा का आरम्भ हुआ :

जब मनुष्य के मन में सरोवर की कल्पना आती है, तो उसके पांच रूप नजर आते हैं स से सच और स से सेवा, म का सम्बन्ध सुमिरन से भी है, स का मतलब साधन भी है, स संयम को भी कहा जाता है। पांच तत्त्व का पुतला जब यह ज्ञान प्राप्त कर लेता है, तो वह मरण-जीवन से मुक्त हो जाता है। यह बात तो हुई गुरमुख सिंहों के लिए तथा साधारण आदमी के लिए सतगुरुओं ने पांच सरोवरों के स्नान बताये हैं। इन स्नानों से आदमी यदि निर्वाण हासिल नहीं कर सकता, तो कम-से-कम मुक्ति का मार्ग जरूर पा जाता है। उसके भीतर से डर-भय इस तरह निकल जाता है, जैसे

बंदे के शरीर में से जीव। आप पूछेंगे, वे सरोवर कौन-कौन-से हैं और कहां-कहां हैं। हरिद्वार और काशी नहीं जाना पड़ेगा। हम अमृतसर पहुंच रहे हैं। सब कुछ वहीं है। इसीलिए अमृतसर का अपमान पंजाबी बर्दाश्त नहीं कर सकता।

मुक्खा सिंह की कथा चल पड़ी थी।

—नई बात ही बता रहे हो, मुक्खा सिंह। तुम गुणों की गुत्थी हो। गुदड़ी के लाल हो। कमल कीचड़ में ही पैदा होता है। घड़े को ज्यों-ज्यों बजायें, त्यों-त्यों उसमें से आवाज निकलती है। बस, छेड़ने का तरीका आना चाहिए; फिर क्या है, आदमी चौरासी के चक्कर से निकल जाये। उनका भय उसके पास तक न फटके। मेहताब सिंह ने कहा।

—तो लो, पांचों सरोवरों के नाम सुनो: रामसर, बबेकसर, कौलसर, संतोखसर और अमृतसर। राम का जाप करते रहना। विवेक-बुद्धि का मालिक बन कर माया से ऊंचा उठना, बिल्कुल कमल के फूल की तरह। संतोख सब का धारक है। मौत को हंसकर गले लगाने वाला है। जिसने अमृत के सरोवर में डुबकी लगा ली, उसकी खाल में से मौत का भय उडान भर कर भाग गया।

अब बात अमृतसर की की जाये। गुरु रामदास ने अमृतसर की नींव तो रख दी, कुछ लोग भी बसा दिये, पर सरोवरों का जो सपना देखा था, वह पूरा नहीं हुआ। गुरुओं ने सरोवरों के जितने गुण और जितनी निशानियां बताई थीं, उन्हें ढूंढना खाला जी का घर नहीं था। इतने बड़े जंगल में सरोवर का कुंड ढूंढना किसी अंतर्ध्यान हुए बुजुर्ग का ही काम हो सकता था। पहला अटकल पच्चू संतोखसर का ही लगाया गया, और यह अनुमान सही निकला। संगत में बड़ा उत्साह था। लोग जी जान से सरोवर की सेवा कर रहे थे। तालाब खोदते-खोदते एक समाधि मिल गई। संगत रुक गई। गुरु को जा कर बताया। सद्गुरु स्वयं आये। जब उन्होंने समाधि देखी, तो वहीं बैठ गये। उन्होंने फरमाया कि अब असली सरोवर मिल जायेगा। कुंड का रक्षक समाधि लगा कर बैठा है। गुरु रामदास ने जिस तीर्थ का जिक्र किया था, वह शायद यही है। बौद्ध मत वालों का जो सरोवर लुप्त हो गया था, उसे ढूंढने के लिए बौद्ध लोग आते हैं, पर खाली हाथ लौट जाते हैं। महात्मा बुद्ध यहां तपस्या करते रहे हैं। निर्वाण-प्राप्ति का यह भी एक द्वार है। कभी यह भी बौद्धों का तीर्थ रहा होगा। तीर्थ हम प्रकट कर रहे हैं, यह आज का नहीं, युगों पुराना है। पता नहीं, यहां कितने तपस्वी तप करते रहे हैं। ब्यास और रावी का दोआब तीर्थों के लिए महान् माना जाता रहा है। गुरु रामदास गोइंदवाल से नाक की सीध में चल पड़े, वाणी पढ़ते जाते। कहते हैं, गुरु की सुरति लगी हुई थी। वृत्ति एकाकार हो चुकी थी। मस्ती में पैदल ही चलते गये। न कहीं ठोकर लगी,

न पांव अटका । जहा समाधि टूटी, वह स्थान यही था, जहां संतोखसर की खुदाई हो रही है। पालथी लगा कर बैठे गुरु देव ने अतःदृष्टि मे देखा, कोई प्रभु का प्यारा युगेश्वर युगो से समाधि मे लीन बैठा है । युगेश्वर को समाधि से जगाना भी एक तपस्या है । बडे यत्न किये जितने उपाय हो सकते थे, किये गये । अत मे सद्गुरु ने पानी का छीटा दिया । युगेश्वर की समाधि खुली, नेत्र खुले । युगेश्वर ने कहा—यह कौन-सा युग है ?

गुरु महाराज ने फरमाया—कलियुग ।

—गुरु अमरदास हुआ ?

रामदास गुरु ने कहा—हुआ ।

—मैं कैसे विश्वास कर लू ?

—मैं गुरु अमरदास का सेवक हू ।

—जो कुछ मैं सुन रहा हू, अगर वह ठीक है, तो गुरु-वाणी सुनाओ । विश्वास हो जायेगा ।

रबावियों ने गुरुवाणी गाई । युगेश्वर ने कहा—मेरी योनि कट गई । जल छिडको, मेरी आत्मा अपने स्थान पर आ जाये ।

—अमृत का कुंड कहां है ?

—थोडी ही दूर है । मेरे पास समय कम है । मै उठ भी नहीं सकता । आप इरावती नदी की ओर मुंह कर लें । दो-एक शख के करीब एक तालाब मिलेगा ।

—शंख से आपकी मुराद ?

—अच्छा ! युग बदल गया है । पैमाइश भी बदल गई है । धनुषबाण मे नाप लो । एक शख एक धनुष की पैमाइश का है ।

—और इसके गुण

—अमृत स्वयं अपने गुण बता देगा । जल्दी-जल्दी । मुझे देर हो रही है । इतजार नही कर सकता ।

सद्गुरु ने पानी का छीटा दिया । आंख झपकने में तो देर लगी होगी, किन्तु युगेश्वर को शरीर त्यागने में क्षण भर भी नही लगा । युगेश्वर को संतोष मिल गया और इसीलिए इस सरोवर का नाम संतोखसर रख दिया गया ।

मुक्खा सिंह की आंखों में नींद अठखेलियां कर रही थी ।

—सो जाओ, सिंह जी, अभी बहुत रास्ता तय करना है । बहुत दूर है गुरु की नगरी ।

—'पूरन ताल खटाया : अमृतसर विच जोत जगावे' मुक्खा सिंह ने वाणी की तुक पढी ।

दुख भंजन बेरी

सुक्खा सिंह ने दूसरी कथा शुरू की :

—वह दुख भंजन बेरी दिखाई देती है न ? नजर आती है न ? नही, तो मेरी तरफ देखो, बिल्कुल हरिमंदिर के पूर्व की तरफ। क्यो, ख्याल में आई बेरी?

—हा-हा, मेरी मा ने मनौती मानी थी मेरे चाचा के बेटे की। मेरी चाची के बच्चे बचते नही थे। उसने कहा, बहन जी, अगर दुख भंजन बेरी के आशीर्वाद से मेरा बच्चा बच गया, तो मैं सिंहों के डेरे पर छोड़ आऊंगी। मेहताब सिंह ने कहा।

—सिंहों को क्या पडी है कि अनाथ बच्चे पालें। जोगा बोल उठा।

—नही, मेरी चाची ने सकल्प लिया था कि मेरा बेटा जब जवान होगा तो मैं उसे सिक्ख बनाऊंगी। सारा पंजाब संकल्प लेता रहता है। सारे पंजाब का चढावा भी सिक्ख हैं। हर हिन्दू अपने बडे बेटे को सिक्ख बनाता है। ये सब जत्थे इसी तरह बने हैं। कुछ जोश में आ कर, कुछ वलवलों के उछाल से और कुछ सरदार बनना चाहते हैं। कुछ गुरुओं की बनाई कल्पनाओं को साकार करना चाहते है। हर कोई कोई-न-कोई आशा लेकर सिक्ख बना। मेहताब सिंह ने अपनी बात को पूरी तरह खोल कर कहा।

सुक्खा सिंह ने कहा—लो भाई, अब जमकर बैठ जाओ सारा दिन हमें यही गुजारना है। नाथों के डेरे अपने ठिकाने पहुंच जायें, तो फिर घोड़ों पर काठिया कसनी हैं। अब हमे फूक-फूंक कर कदम रखना पडेगा। गश्ती फौज जगह-जगह कुलबुला रही है। उनकी आखों मे मिर्चें झोकनी हैं। आज तुम भेस बदल कर दिखाओ। चौधरी, जरा सूफी फकीरों के चोलें इकट्ठे करो। तसबीहे भी ढूंढो। सब अपना रूप बदलें और फिर हम एक-दूसरे को पहचान कर देखें कि कौन इस इम्तहान मे पास होता है।

—हम तो अब कथा सुनेंगे, हमारा तार इसके साथ जुड़ा हुआ है। रात को अपने करतब दिखायेंगे। अब कुछ समय के लिए गुरु गाथा सुनी जाए। मेहताब सिंह ने कहा।

—मैं शाम को यह तमाशा दिखाऊंगा। जो पहचान ले, सब के सामने उसकी टांग के नीचे से निकल जाऊंगा। अब सुक्खा सिंह जो लोरियां दे रहा है, उसका आनन्द उठाओ। हर आदमी को घडी-आध घडी से ज्यादा समय नहीं मिलना चाहिए। यह तो तडक-फड़क का काम है। इधर नजर फिरी, उधर कानों में मुद्राएं। इधर सहती को भरमाया, उधर खेडे को रस्सी का सांप बना के दिखा दिया। रांझा हीर को मिल गया सहती ने मुराद को देख कर आंखों की प्यास बुझाई। राम लीला की तरह आदमी अपनी शक्ल बदले कि पहचानने वाले पहचान न सकें।

मेहताब सिंह ने कहा—हमे एक बार हरिमंदिर के दर्शन तो करवा दो। फिर अपना जो डमरू बजाना हो, बजाते रहना।

—अच्छा सुनो, मैं तुम्हे दुख भजन बेरी की बात सुनाता हूं। पहला कटाव इस बेरी के तने पर लगाया गया। उसे मुहूर्त कह लो, या शगुन। यह बात अच्छी तरह विश्वास के साथ कही जा सकती है कि कटाव लगाने वाले गुरु राम दास थे या बाबा बुड्ढा। बाकी तालाब की खुदाई सेवकों, श्रद्धालुओं, गुरु के प्यारों और मजदूरों का काम है। श्रद्धालु तो यहा तक कहते हैं कि गुरु स्वय तालाब से टोकरी सिर पर रख कर लाते थे। चाहे शरीर ढीला था, लेकिन जवानों के सामने कंधा नहीं लगने देते थे। इस उद्यम को देख कर सारा पंजाब इकट्ठा हो गया। प्रेम-प्यार, श्रद्धा, लगन, भावना और उत्साह ने सरोवर की रूपरेखा बनाई। अगर दमड़े खर्च किये जाते, तो शायद हरिमंदिर का बनना कुछ और ही होता।

सुखा सिंह ने जरा-सा रुक कर सास ली।

बीच में मेहताब सिंह बोल उठा—इसे दुख भंजन बेरी क्यों कहते हैं?

—दुनी चंद खत्री, माझे का वासी, आस-पास के इलाके का माना हुआ शाह था। अकबर की तख्तनशीनी के समय दुनी चंद खत्री से कर्ज लिया गया था। कलानौर के दरबार की पूरी रकम एक एक पाई गिन कर शाह ने अपने पल्ले से चुकाई थी। मुगल हुकूमत में उसके नाम की हुंडी चलती थी। अकबर उसे अपने पिता की तरह मानता था। कई बार वह अकबर के साथ [illegible]। अकबर ने एक बार उसे सारे पंजाब का ठेका दे दिया। सारा [illegible] उसी के पास इकट्ठा होता था। वह चुकाये, न चुकाये, उसे पूछने [illegible] नहीं था। जब हुकूमत को जरूरत होती, वही दमड़े गिन कर दे [illegible] वह किसी को मोहरें देता, तोल कर देता। [illegible] की [illegible] उसकी बीवी जिद करने लगी। [illegible], मोहरें गिन कर [illegible] बोला—यह काम तुम ही कर [illegible]। बीबी ने [illegible] दिन मोहरें गिनने के बाद ही [illegible]। [illegible] मुंह पर हाथ फिराया। [illegible]

मुंह सूज गया। रूठी हुई औरतों को मनाना आदमियों को आता है। सेठानी बोली—मेरे मुंह पर क्या कोई हंसी की चीज़ लगी है ? शाह फिर हंस पड़ा। बीबी का गुस्सा सीमा पार करने लगा।

—भगवान, गलती हो गई। शाह के दिमाग शीघ्र ही एक बात आई। वह आईना उठा लाया और बीबी के सामने रख दिया। जब बीबी ने अपना चेहरा देखा, तो वह काला-स्याह था।

—हैं। यह क्या हुआ ? कोयलों की दलाली में मुंह काला।

—तुमसे किसने कहा था मोहरें गिनने के लिए ?

—मेरे हाथों को कालिख लग गई है। मुखड़ा मैला हो गया है।

उस दिन के बाद किसी ने मोहरें नहीं गिनी। शाह का डंका दिल्ली तक बजता था। कौन था, जो शाह के नाम से परिचित नहीं था ?

सुख से, उसकी पांच बेटियां थीं, बेटा एक भी नहीं था। अकबर को बेटा बनाया, पर वह तो शहंशाह था। इतनी दौलत को क्या आग लगानी है, जब उसका कोई मालिक ही न हो। लेकिन शाह को दौलत पर बड़ा गर्व था। भगवान् बना बैठा था। दौलत भगवान् का दूसरा नाम है। साप और शाह में कोई फर्क नहीं था।

जब शाह रसोई में बैठता, तो पांच थालियां लेकर बेटियां भी बैठ जातीं। जिसकी पांच बेटियां हों, दीवारें नहीं डोलतीं ? पर शाह को रत्ती भर फिकर नहीं थी। मुझे सारे जवाई रजवाडों में ढूंढने हैं, भूखों का मेरे आंगन में क्या काम। बेटियां दिनों दिन बड़ी होती जा रही थीं। एक-एक करके वे दरवाज़े की चौखट छूने लगीं। बाप की पगड़ी का शमला डोलने लगा। बड़ी बेटी के लिए वर ढूंढने निकला। जयपुर पहुंचा। दीवान का बेटा था। बात तय हो गई। बारात आई। शाह ने दहेज में इतना कुछ दिया कि लोग देखते रह गये। जब बेटी डोली में बैठी, तो बोली—बापू, तुम्हारा दिया बहुत कुछ है। मेरी ससुराल वालों का घर भर दिया है तुमने। भगवान् तुम्हारे भाग्य जगाये रखें। तुम ही हमारे अन्नदाता हो।

शाह के पैर जमीन से बालिश्त भर ऊंचे रहने लगे। बेटी ने तारीफ की शाह की। भगवान् बन बैठा। दौलत के अलावा उसे कोई चीज़ ही नजर नहीं आती थी। वह चाहता था कि वह जब तक जिंदा रहे, लोग उसका चबूतरा पूजते रहें। दूसरी बेटी का ब्याह हुआ। पहली की ही तरह। तीसरी ने भी यही कुछ किया। चौथी का ब्याह हुआ, तो उसने भी बाप का यश गया। लेकिन पांचवीं बेटी चापलूस नहीं थी। खुशामद उससे होती नहीं थी। समझदार थी। वह जब भी बोलती, यही कहती—भगवान् की दया है। भगवान ने दिया है। भगवान् ने दिया है, तो मेरे पिता दे रहे हैं। यह सब प्रभु की माया है। शाह

इस बात से बिगड़ जाता। वह कहता—देने वाला मैं हूं। भगवान् कौन है? लड़की सब जानती थी। वह कहती—यह सब वाहेगुरु की कृपा है। शाह घड़ी भर में लाल-पीला हो उठता। मां बीच में आ खड़ी होती। बाप का गुस्सा कुछ मद्धिम पड़ता। सेठानी कहती—लड़की बच्ची ही है। इसकी बातों से खफा मत होवो। लेकिन शाह को कौन समझाये?

एक दिन लड़की बोली—भगवान् के सौ हाथ हैं। जब वह देता है, तो सौ हाथों से देता है। आदमी दो हाथों से कितना खर्च कर सकता है? लेकिन जब वह छीनता है, तब भी उसके सौ ही हाथ होते हैं। बता दो हाथों से कितना कुछ संभाल लेगा? यह माया उसी भगवान् की है।

शाह की समझ में यह बात नहीं आती थी। समझ में आ भी नहीं सकती थी। लड़की से वह बहुत दुखी था। एक दिन झगड़ा हो गया। लड़की बोली—*भगवान् ने मेरी किस्मत लिख दी है—इसमें कमी-बेशी नहीं हो सकती। आदमी* कौन है, किसी की किस्मत बिगाड़ने वाला। न कोई बना सकता है तथा न कोई उसे बदल ही सकता है।

—यह बात बिल्कुल गलत है। मैं चाहूं तो एक दिन में किसी को धनवान बना सकता हूं।

—झूठ बापू, बिल्कुल झूठ। तुम किसी को दौलत दे भी दो और रात को चोर ले जायें, तब तुम क्या कर लोगे? नहीं, कोई किसी की तकदीर नहीं पलट सकता। यह सब कुछ उस परमात्मा के हाथ में है।

लड़की अपनी जिद पर अड़ गई थी और शाह अपनी जिद का पक्का था। वह बोला—मैं देखूंगा, एक दिन तुम यह स्वीकार करोगी कि बापू की बात सही थी। लड़की ने सिर हिला दिया। जले-भुने बाप ने उसका विवाह एक भिखारी सें कर दिया। लड़की ने खिले हुए माथे से शादी को कबूल किया। विवाह हो गया। डोली भिखारी के साथ चलती की गई। शाह के सिर पर राख डाली सारे इलाके ने, लेकिन शाह ने भी पगडी झाड़ दी। भिखारी का घर और लड़की लेकिन लड़की ने बाप के घर से एक फूटी कौड़ी तक न ली। चारों कन्नियां झाड़ कर घर से निकली। भिखारी को अपने सिर का स्वामी मान लिया। भिखारी कोढी भी था। लड़की उसे गाडी में डाल कर गांव-गांव ले जाती, उसे खींचती। घर-घर मांगती। पहले उसे खिलाती, बाद में स्वयं खाती। लेकिन पिता के लिए उसके मुंह से शुभकामनाएं ही निकलतीं—बापू, तुम्हारे चौबारे बसते रहें। भगवान् तुम्हें इतना दे कि तुम संभाल न सको।

लोग कहते हैं कि लड़की सारे इलाके में मांगती रहती और अपने पति का पेट भरती। इस तरह एक साल निकल गया। किसी दिन खाने को न मिला, तो भी जिद्दी लड़की बाप के घर मांगने नहीं गई। वह पिता की दहलीज को

ही भूल गई। जिसने पैदा किया है, वह खाने को भी देगा। उसका निश्चय पक्का था।

सुक्खा सिंह फिर रुक गया।

—वह बाप था या कसाई। मेहताब सिंह ने कहा।

—धन्य थी वह लड़की। उसने एक आंसू तक नही बहाया। किस्मत पर शाकिर रही, जोगे ने कहा।

—अकबर के समय जब वलीअहद जहांगीर किसी बात से तंग आ गया, तो उसने शाह की सारी जायदाद जब्त कर ली। सरकारी अहलकार उसकी सारी दौलत समेट कर ले गये। पर शाह भी पत्थर-दिल इन्सान था, उसके चेहरे पर रत्ती भर शिकन नही आई। अन्दर से चाहे वह खोखला हो चुका था। रस्सी जल गई थी, पर बल नही गया था।

एक दिन लड़की कोढ़ी पति के साथ अमृतसर आ पहुंची। बेचारी की गाड़ी टूट गई थी। उसने अपने पति को टोकरी में डाल कर सिर पर उठा लिया और वहा ला कर रख दिया, जहा दुख भंजन बेरी है। टोकरी वहां रख वह खुद लंगर से रोटी लेने चली गई। भगवान् की माया। लड़की को वहा देर लग गई। कोढ़ी बेरी के नीचे बैठा माला जप रहा था। सामने देखा, एक जोहड़ मे काले कौवे नहा रहे थे। जब वे उड़ते, तो उनकी शक्ल हंसों जैसी हो जाती। कोढ़ी को ज्ञान हो गया। उसने सोचा, अगर काले कौवे गोरे हो सकते हैं तो हिम्मत करके मैं भी एक डुबकी लगा लूं, शायद इसी से मेरा कोढ जाता रहे। कोढ़ी कितनी देर में पहुंचा होगा, उस जोहड़ के पास। टोकरी टूट गई। लेकिन किसी तरह लुढकते-गिरते वह जोहड़ तक पहुंच ही गया। उसने गोता लगाया। चाहे वह मुंह के बल गिरा था, पर परमात्मा जानता है, उसके मुंह का कोढ जाता रहा। उसे महसूस हुआ कि यह अमृतकुंड है। अब उसने अच्छी तरह डुबकी लगाई। एक ही डुबकी ने उसका सारा कलक धो दिया। सारा कोढ़ झड़कर जोहड़ मे ही गिर गया। बिल्कुल निरोग हो गया कोढ़ी। उसके जुड़े हुए हाथ-पांव भी खुल गये।

इतनी देर मे ही लड़की आ गई। ढूंढने लगी कि मेरा कोढी कहा है। कोई शेर-बाघ तो नही खा गया। टूटी हुई टोकरी भांय-भांय कर रही थी। लेकिन भिखारी जोहड़ के किनारे बैठा मुस्करा रहा था।

—आओ रजनी, मेरे पास आओ। मै ही तुम्हारा कोढी हूं।

—झूठ, बिल्कुल झूठ। रजनी के चेहरे पर आंसू ही आंसू थे।

—डरने की जरूरत नही है। यह करिश्मा कुदरत का है। मेरी देह कुंदन बन गई है।

वह खड़ा हो गया। खूबसूरत जवान।—अब मैं रोगी नही हूं। लाओ,

लंगर का प्रसाद पायें। कल से मैं जो कमाऊंगा, वह गुरु के लंगर मे दे दिया जायेगा। यह कष्ट गुरु ने काटा है।

रजनी की तपस्या, साधना और त्याग ने कोढी का कोढ दूर कर दिया। चंदन जैसा शरीर भिखारी का और सोनेरंगी देह रजनी की—खूबसूरत जोड़ी।

इस घटना का सारा वृत्तांत गुरु-घर में पहुंचा और गुरु-सेवकों को अमृत-कुंड का पता चल गया।

—यह अमृत की महिमा है। सरोवर सही जगह पर बना है। गुरु रामदास ने आशीर्वाद दिया दोनों गुरु-घर के सेवक बन गये। जितने दिन जीवित रहे, अमृतसर की सेवा करते रहे। इस जगह को इसीलिए दुख भंजन बेरी कहा जाता है। सुक्खा सिंह ने कहा—अच्छा भाई, बाकी कल।

घड़ी भर में सारी ढाणी बिखर गई।



गश्ती फौज

अभी सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने कमर ही सीधी की थी। चम्पा और चौधरी अभी जाग रहे थे। सरसों के तेल का दीया जल रहा था। साईं के दायरे पर अभी महफिल जमी हुई थी। गांव के चौक में बैठे लोग अभी छिकड़ी खेल रहे थे। गाव की दूसरी पत्ती मे एक मंडली घुल-मिल कर बैठी हुई थी। ढोला-मारू गाया जा रहा था। बीकानेर से आए एक जवान ने जैमल-फत्ते की वार छेड़ दी। हल्की-हल्की रोशनी हर घर में थी। कहीं दीये की, तो कहीं जलते हुए चूल्हे की। मशाल सिर्फ मंडली वालों ने ही जला रखी थी। बाकी सारा गाव अन्धेरे के पहलू में छिपा बैठा था। रात अन्धेरी थी। आधी रात को चाहे चाद निकल आता। चारों तरफ गीदड़ बोल रहे थे, या सायं-सायं की आवाज आ रही थी। हवेली मे चार ही लोग थे, बाकी खिसक गए थे या पत्रा बाच गए थे।

चौधरी चम्पा से कह रहा था—महमान घर से तो जंगल गए हैं, पर शायद कहीं ढोला-मारू सुनने ही न बैठ गए हों। पानी के लोटे भर कर उनके सिरहाने रख देना। रात को किसी को प्यास लगी, तो कहां पानी ढूंढते फिरेंगे।

—पानी तो मैं रख ही देती हूं, लेकिन बापू, ढोला-मारू वे कहां सुन सकते हैं। जैमल-फत्ते की वार सुनने के लिए भले ही बैठ जाएं। चम्पा ने कहा।

—चम्पा ठीक कहती है। मेहताब सिंह बोला। सुक्खा सिंह खटिया पर लेटते ही सो गया था।

—तुम भी सो जाओ, सिंह जी। दिन मे सफर करना है और रास्ता नापना है।

मेहताब सिंह की आख भी लग गई। रात अभी ज्यादा नहीं गई थी। लोग अभी अधनींदी की हालत मे ही थे।

—सिंह बहुत भले लोग हैं। और हा, चम्पा, कृपाणें सम्भाल कर रख ली? मेरी तलवार मेरे सिरहाने ही रख दो। चौधरी गंगा सिंह ने कहा।

सम्भाल ली हैं, बापू। ये सिक्ख देवता-स्वरूप हैं। लोग तो यो ही इनसे डरते हैं। चम्पा ने कहा।

—सिंह जवान के बड़े पक्के हैं। माला और तलवार के भी धनी हैं। चौधरी ने कहा।

एकाएक घोड़ों ने चौधरी की हवेली को घेर लिया।

—कहां हैं सिंह ? निकाल रे काफिर। मरदूद। कहा छिपा रखा है तूने उन्हें ? गश्ती फौज के एक अहलकार की आवाज़ आई।

—गश्ती फौज लगती है। चम्पा ने कहा।

—लगती तो गश्ती फौज ही है, पर यह चंडाल-चौकड़ी कहा से आ गई ? इन्हें कैसे खबर लग गई ?

—बिल्ली चूहों को ढूंढ ही लेती है।

—बाहर निकल हरामजादे। हमारे दुश्मनों को छिपाने की तेरी जुर्रत कैसे हुई ? निकाल अपने बापों को, वरना हम तेरी हवेली को आग लगा देंगे। कमीने। खाते हमारा हैं और यश सिंहों का गाते हैं।

—खां साहब, आप किस की बात कर रहे हैं ? कहीं मकान तो नहीं भूल गए हैं ?

—हम सिंहों की बात कर रहे हैं, जिनके लिए तूने पलंग बिछा रखे हैं।

—कौन सिंह ? कैसे सिंह ? सिंहों का यहा क्या काम ? सिंह पंजाब मे होंगे, यहा वे धूल फांकने आएंगे।

—झूठ बोलता है, काफिर। दामादों को घर में रख कर हमारी आखो में मिर्चों की मुट्ठी झोंक रहा है। दाढ़ी का एक-एक बाल नोच लो। जूते लगाओ, कैसे नहीं बताता। बताएगा, ज़रूर बताएगा। यह तो क्या, इसके फरिश्ते भी बताएंगे।

—खां साहब, सिंहो से हमारा कोई रिश्ता नहीं है।

—लक्खी जंगल अपने बाप को छोड़ने तू गया था या तेरे फरिश्ते।

कोई दूसरा आदमी होगा, सरकार। मैं तो जयपुर गया था।

दो घुड़सवार हवेली में घोड़ों सहित दाखिल हुए। बाकी के सवारों ने धूल उखाड़ दी हवेली की। इसी बीच सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह की आख खुल गई।

—झूठ बोलता है, काफिर। सिंह तेरे बाप लगते है। ये कौन हैं ? हिलो मत। चौधरी तेरे माथे के पसीने से लगता है कि तू तलवार पर हाथ डालने वाला है। तेरी बांह काट दी जाएगी। अहलकार ने कड़क कर कहा।

निहत्थे सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह के हाथ-पांव फूल गए।

—गश्ती फौज है।

—काफिरो। तलवारें ढूंढ रहे हो। ठहरो, रुको।

—बड़ी देर बाद आज काबू आए हो। परदेस में तलवारें सिरहाने

रख कर सोया जाता है। देखा, चौधरी ने झोली भर मोहरें ली हैं और पकड़वा दिए सिंह।

झूठ बिल्कुल झूठ। मैं मोहरों पर थूकता भी नहीं। चौधरी ने तलवार निकाल ली।

—बस, एक ही तलवार। मेरे पूरे दस्ते ने तेरी हवेली को घेर रखा है। अगर हम तेरी रगें न पी गए, तो हमें मुगल कौन कहेगा ? फिर आवाज का सुर बदला—तलवारें ढूंढ रहे हैं सिंह ? कष्ट मत उठाओ, सिंह जी। मैं तुम्हे देता हू कृपाण। पर हाथ धोकर कृपाण को हाथ लगाना। यह श्री साहिब है।

—कौन, जोगा ?

—सत् श्री अकाल ! जोगा ही हूं।

—खूब, बहुत खूब। जवाब नही तुम्हारा।

—ये घोड़े ?

—आपके ही हैं।

—और यह दस्ते वाले ?

—सब नाथ हैं।

—और यह बाना ?

—गाव के चौधरी का चुराया है। चौधरी शराब के नशे में मस्त खर्राटे भर रहा है।

—तुम्हारे चाटे पेड़ कभी हरे नही हो सकते।



मियां मीर

शहरयार—मालिका नूरजहां का सबसे बड़ा बेटा, दूसरी तरफ दामाद और सोने पर सुहागा, ज़बरदस्ती का बादशाह। दूसरा बेटा भी उसी की कोख से पैदा हुआ, शाहजहां, जिसे उसने अंगूठा दिखा दिया, मा होते हुए भी। ये तीनों लोग हज़रत मियां मीर के चेले थे। तख्त का हकदार शाहजहा भी बना घूमता था, पर मां ने उसके सारे दरवाज़े बंद कर दिए थे, सिर्फ एक ही खिड़की खुली थी—खुदा पर भरोसा। मियां मीर के दरवाज़े से किसे खैर मिलती है? बादशाह भले ही जोर में था, लेकिन शाहजहां की बाहों में भी काफी जोर था। एक दिन शहजादियों ने दो थाल सिर पर उठाए और नंगे पांव मटक-मटक चलती हुई वे मियां मीर के तकिये पर पहुंची। एक थाल दरबार की तरफ से आया था और दूसरा थाल मुमताज महल ने दिया था। रेशमी रूमाल से ढके हुए थाल मियां मीर की दहलीज पर रख दिए गए। हुजरे में कोई औरत तो जा नही सकती थी। हज़रत ने दोनों थालों से रूमाल उठाए, एक सरसरी नज़र डाली और सिर हिला दिया। शहजादियों का रंग उतर गया। एक भी कबूल नही हुआ। अल्हड़ लड़कियां जिद करने लगीं। एक थाल में मोतियों की माला थी और दूसरे में खजूरों की। हुजूर ने दूसरे पर हाथ रख दिया। यह बात बादशाह को नागवार गुज़री, लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। उसने एक बार फिर परखा साईं बाबा को। शाही परवाना लेकर आया अहलकार—हुजूर से पगड़ी मांगी है शाह ने। मियां मीर की भेजी पगड़ी का मतलब था कि दिल्ली और दूसरे सूबों ने बादशाह को कबूल कर लिया है। शहरयार से लोग बेजार आ चुके थे। फकीर लोगों की मर्जी के खिलाफ कैसे जा सकता था? वह तो लोगों का ही बंदा था—मेरे पास कौन-सी ढाके की मलमल आई है, जिसको पगड़ी फाड़कर भेज दूं? बात नहीं बनी। अहलकार जिद कर रहा था। दरबार का सुरूर था। उधर फकीर भी अड़ा हुआ था। जब मामला तल्खी तक पहुंच गया, तो फकीर चिढ़ गया। उसने सिर से पगड़ी उतार कर फेंक दी और कहा—ले जाओ उठा कर। पगड़ी ही चाहिए न। मेरा चोगा तो नही चाहिए।

यह तमाशा शहजादियों ने भी देखा। कलेजा पकड़ कर बैठ गई—हज़रत, इतना कहर। यह सहा नही जाएगा। रहम करो, अल्लाह के नाम पर। जुले-भुने मिया मीर ने कहा—इन्होने मेरी पगड़ी उतारी है। खुदा इनकी उतारेगा।

—तख्त का क्या होगा ?

—होना क्या है। वारिस आ रहा है।

अंगूठी बनी पड़ी थी। नगीना हज़रत ने जड़ दिया। एक दिन भी नहीं बीता, मोतियों की माला वाला शहरयार गिरफ्तार हो गया और खजूरों की माला वाला दिल्ली के तख्त पर आ बैठा।

शाहजहां कहा करता था—मुझे तख्त दूर दरगाह से मिला है।

शहरयार के शब्द जिन्होने सुने थे, वे कहते थे, वह बोला था—मैंने फकीर की ग़ैरत को ललकारा था। मुझे उसका फल मिल गया।

मिया मीर खुदा की जबान जानता था। वली था मियां मीर। पंजाब मे कौन ऐसा आदमी है, जो मियां मीर के नाम से परिचित नही है। दिल्ली वाले भी पानी भरते हैं हज़रत का। मैंने सुना है, कई शहज़ादे उसके वुज़ू के लिए लोटों में पानी भरा करते थे। यह बात सुक्खा सिंह ने मेहताब सिंह को बताई।

मियां मीर के बारे में एक बात और भी मशहूर है। एक बार बलख़ का बादशाह दर्शन करने आया। फकीर अपनी मौज मे बैठा हुआ था। हाथी, घोड़ों, रथों, शामियानो ने मियां मीर की कुटिया के सामने डेरे डाल दिए। पैगाम भेजा गया। हुज़ूर ने मिलने से इन्कार कर दिया। आम की गुठली जैसी शक्ल रह गई बादशाह की। सारी शान-शौकत धूल मे मिल गई। इज्जत उतर गई। दूसरे दिन बादशाह ने हौसला नही छोड़ा। नया प्रभात अभी आया ही था कि कमर में चादर बांध कर हाजिर हो गया। हजरत ने फिर भी ध्यान नही दिया। तीसरा दिन क्या आया, अब तो धूल ही बची थी सिर मे डालने को। और कोई राह नही थी। उसने चादर खोल कर चौरास्ते पर दे मारी और लंगोट बांधे-बांधे ही हज़रत के दरबार में जा हाजिर हुआ। इतनी बात देख कर हज़रत मेहरबान हो गए। फरमाया—यह लो, बेटे, झोला। आटा मांग कर लाओ हिन्दुओ और मुसलमानों के घर से। शाह के लिए जन्नत के दरवाज़े खुल गए। शाह ने शर्म उतार कर एक तरफ फेंक दी और झोला उठा लिया। मांगना किसे आता था ? फिर भी वह सारी दिल्ली से माग लाया। डेरे पर हाजिर हुआ। बोला—हुज़ूर, यह झोला हिन्दू घरों के दान का है और दूसरा मुसलमान घरों की खैरात का है। फकीर फिर मुस्कराया। फिर शामत आ गई शाह की।

—नहीं, इसी तरह आज फिर जाओ और अब अल्लाह के नाम पर मांग कर लाओ।

शाह फिर उसी रास्ते पर चल दिया। जब अल्लाह के नाम की हाक लगाई, तो आटा मांगते-मांगते बेसुध हो गया। अपना होश न रहा बादशाह को। इतना बेखबर था कि वह बता नहीं सका कि कौन-सा झोला हिन्दुओं का है, कौन-सा मुसलमानों का। दोनो झोलों की गठरी इकट्ठी लाकर रख दी। हजरत ने पूछा—हिन्दुओं का झोला कौन-सा है और मुसलमानों का कौन-सा?

शाह बोला—मुझे कोई खबर नही। मुझे तो अल्लाह ही अल्लाह नजर आता है। मैं बता नही सकता कि कौन-से झोले में हिन्दुओं का आटा है, और किसमें मुसलमानों का। मैं तो अब पहचान भी नही सकता।

हजरत ने फरमाया—अब तुम खुदा को पा सकते हो। पहले तुम्हारे अन्दर बादशाहत की बू थी, अहंकार था, तकब्बर था। दूसरी बार तुम 'मैं' की चादर लपेट के आए थे। तीसरी बार तुमने 'मैं' की चादर उतार दी, लेकिन हिन्दू और मुसलमान का फ़र्क न मिटा सके। पर आज तुमने उस फर्क को भी भुला दिया है। इसी बात से तुम परवान हुए हो। पहले तुम नकली शाह थे, कागजों के तुम्हारे किले थे, आज असली बादशाह बने हो।

इस शाह को लोग बुल्लेशाह के नाम से याद करते हैं।

—कमाल है भाई। तुम तो पूरे ग्रन्थी हो। मेहताब सिंह ने सुक्खा सिंह से कहा।

—सब बुजुर्गों की कृपा है। सुक्खा सिंह ने जवाब दिया।

मियां मीर की बात यही खत्म नही होती। साझा फकीर था। नफरत से बेनियाज। उसकी किताब मे हिन्दू-मुसलमान का पाठ ही नही था। उसने तो बस एक ही बात पढ रखी थी कि सभी ईश्वर के जीव हैं। मिया मीर के हुजरे में बोरियां बिछी रहती थी। इन बोरियो पर शहजादे, शहजादियां, बादशाह, वजीर बैठना अपना कर्त्तव्य समझते थे। किस्मत वालो को ही ये बोरियां नसीब होती थी। हजरत फरमाया करते थे कि बाहर कोई वस्तु निजात नही दिला सकती। दिल की हुजूरी के बगैर नमाज अदा करना फिजूल है। कीर्तन के बड़े आशिक थे। कितनी-कितनी देर रबाबियों से कीर्तन सुनते। अगर कोई नाक-भौं सिकड़ोता या कोई मुंह बिगाड़ता, तो वह बांह पकड़ कर बाहर निकाल देते, चाहे वह कोई बादशाह ही क्यों न हो। कहते—आदमी तीन चीजों का समूह है: नफस, दिल और रूह। नफस रुकता है शरीअत से, दिल तरीकत मे और रूह हकीकत से। रूह की भाषा कीर्तन है। तस्वीर तो यों ही दिखावा है। माला तो मन की है। जुबान पर अल्लाह का नाम होना ही असली तस्वीर है। इस बात ने कई हिन्दू तपस्वियो को भी भरमा लिया था।

जब तालाब खोदा गया, तो मन्दिर बनवाने की कल्पना की गई। जगह निश्चित हो गई। अब सवाल उठा कि इसकी नीव का पत्थर किससे रखवाया जाए? किसी ने बाबा बुड्ढे का नाम लिया, तो किसी ने बाबा श्रीचंद का।

यह तमाशा शहजादियों ने भी देखा। कलेजा पकड़ कर बैठ गई—हजरत, इतना कहर। यह सहा नही जाएगा। रहम करो, अल्लाह के नाम पर। जुले-भुने मिया मीर ने कहा—इन्होंने मेरी पगड़ी उतारी है। खुदा इनकी उतारेगा।

—तख्त का क्या होगा?

—होना क्या है। वारिस आ रहा है।

अगूठी बनी पड़ी थी। नगीना हजरत ने जड़ दिया। एक दिन भी नहीं बीता, मोतियो की माला वाला शहरयार गिरफ्तार हो गया और खजूरों की माला वाला दिल्ली के तख्त पर आ बैठा।

शाहजहा कहा करता था—मुझे तख्त दूर दरगाह से मिला है।

शहरयार के शब्द जिन्होंने सुने थे, वे कहते थे, वह बोला था—मैंने फकीर की गैरत को ललकारा था। मुझे उसका फल मिल गया।

मियां मीर खुदा की जबान जानता था। वली था मिया मीर। पंजाब मे कौन ऐसा आदमी है, जो मियां मीर के नाम से परिचित नहीं है। दिल्ली वाले भी पानी भरते हैं हजरत का। मैंने सुना है, कई शहजादे उसके वुजू के लिए लोटों में पानी भरा करते थे। यह बात सुक्खा सिंह ने मेहताब सिंह को बताई।

मियां मीर के बारे में एक बात और भी मशहूर है। एक बार बलख का बादशाह दर्शन करने आया। फकीर अपनी मौज में बैठा हुआ था। हाथी, घोड़ों, रथों, शामियानो ने मियां मीर की कुटिया के सामने डेरे डाल दिए। पैगाम भेजा गया। हुजूर ने मिलने से इन्कार कर दिया। आम की गुठली जैसी शक्ल रह गई बादशाह की। सारी शान-शौकत धूल में मिल गई। इज्जत उतर गई। दूसरे दिन बादशाह ने हौसला नही छोड़ा। नया प्रभात अभी आया ही था कि कमर में चादर बाध कर हाजिर हो गया। हजरत ने फिर भी ध्यान नही दिया। तीसरा दिन क्या आया, अब तो धूल ही बची थी सिर मे डालने को। और कोई राह नही थी। उसने चादर खोल कर चौरास्ते पर दे मारी और लंगोट बांधे-बांधे ही हजरत के दरबार में जा हाजिर हुआ। इतनी बात देख कर हजरत मेहरबान हो गए। फरमाया—यह लो, बेटे, झोला। आटा मांग कर लाओ हिन्दुओं और मुसलमानों के घर से। शाह के लिए जन्नत के दरवाजे खुल गए। शाह ने शर्म उतार कर एक तरफ फेंक दी और झोला उठा लिया। मांगना किसे आता था? फिर भी वह सारी दिल्ली से मांग लाया। डेरे पर हाजिर हुआ। बोला—हुजूर, यह झोला हिन्दू घरों के दान का है और दूसरा मुसलमान घरों की खैरात का है। फकीर फिर मुस्कराया। फिर शामत आ गई शाह की।

—नहीं, इसी तरह आज फिर जाओ और अब अल्लाह के नाम पर मांग कर लाओ।

शाह फिर उसी रास्ते पर चल दिया। जब अल्लाह के नाम की हाक लगाई, तो आटा मांगते-मांगते बेसुध हो गया। अपना होश न रहा बादशाह को। इतना बेखबर था कि वह बता नही सका कि कौन-सा झोला हिन्दुओं का है, कौन-सा मुसलमानों का। दोनो झोलों की गठरी इकट्ठी लाकर रख दी। हज़रत ने पूछा—हिन्दुओं का झोला कौन-सा है और मुसलमानों का कौन-सा ?

शाह बोला—मुझे कोई खबर नही। मुझे तो अल्लाह ही अल्लाह नजर आता है। मैं बता नहीं सकता कि कौन-से झोले में हिन्दुओं का आटा है, और किसमें मुसलमानों का। मैं तो अब पहचान भी नही सकता।

हज़रत ने फरमाया—अब तुम खुदा को पा सकते हो। पहले तुम्हारे अन्दर बादशाहत की बू थी, अहंकार था, तकब्बर था। दूसरी बार तुम 'मैं' की चादर लपेट के आए थे। तीसरी बार तुमने 'मैं' की चादर उतार दी, लेकिन हिन्दू और मुसलमान का फ़र्क न मिटा सके। पर आज तुमने उस फ़र्क को भी भुला दिया है। इसी बात से तुम परवान हुए हो। पहले तुम नकली शाह थे, कागजों के तुम्हारे किले थे, आज असली बादशाह बने हो।

इस शाह को लोग बुल्लेशाह के नाम से याद करते हैं।

—कमाल है भाई। तुम तो पूरे ग्रन्थी हो। मेहताब सिंह ने सुक्खा सिंह से कहा।

—सब बुजुर्गों की कृपा है। सुक्खा सिंह ने जवाब दिया।

मियां मीर की बात यहीं खत्म नहीं होती। सांझा फकीर था। नफरत से बेनियाज़। उसकी किताब मे हिन्दू-मुसलमान का पाठ ही नही था। उसने तो बस एक ही बात पढ रखी थी कि सभी ईश्वर के जीव हैं। मियां मीर के हुजरे में बोरिया बिछी रहती थी। इन बोरियो पर शहजादे, शहज़ादियां, बादशाह, वजीर बैठना अपना कर्त्तव्य समझते थे। किस्मत वालों को ही ये बोरियां नसीब होती थीं। हजरत फरमाया करते थे कि बाहर कोई वस्तु निज़ात नही दिला सकती। दिल की हुज़ूरी के बगैर नमाज़ अदा करना फिज़ूल है। कीर्तन के बड़े आशिक थे। कितनी-कितनी देर रबाबियों से कीर्तन सुनते। अगर कोई नाक-भौं सिकड़ोता या कोई मुंह बिगाडता, तो वह बाह पकड़ कर बाहर निकाल देते, चाहे वह कोई बादशाह ही क्यों न हो। कहते—आदमी तीन चीज़ों का समूह है: नफस, दिल और रूह। नफस रुकता है शरीअत से, दिल तरीकत से और रूह हकीकत से। रूह की भाषा कीर्तन है। तस्बीर तो यों ही दिखावा है। माला तो मन की है। जुबान पर अल्लाह का नाम होना ही असली तस्बीर है। इस बात ने कई हिन्दू तपस्वियो को भी भरमा लिया था।

जब तालाब खोदा गया, तो मन्दिर बनवाने की कल्पना की गई। जगह निश्चित हो गई। अब सवाल उठा कि इसकी नीव का पत्थर किससे रखवाया जाए ? किसी ने बाबा बुड्ढे का नाम लिया, तो किसी ने बाबा श्रीचंद का।

यह तमाशा शहजादियों ने भी देखा। कलेजा पकड़ कर बैठ गईं—हज़रत, इतना कहर। यह सहा नहीं जाएगा। रहम करो, अल्लाह के नाम पर। जुले-भुने मियां मीर ने कहा—इन्होंने मेरी पगड़ी उतारी है। खुदा इनकी उतारेगा।

—तख्त का क्या होगा ?

—होना क्या है। वारिस आ रहा है।

अगूठी बनी पड़ी थी। नगीना हजरत ने जड़ दिया। एक दिन भी नहीं बीता, मोतियों की माला वाला शहरयार गिरफ्तार हो गया और खजूरों की माला वाला दिल्ली के तख़्त पर आ बैठा।

शाहजहां कहा करता था—मुझे तख़्त दूर दरगाह से मिला है।

शहरयार के शब्द जिन्होंने सुने थे, वे कहते थे, वह बोला था—मैंने फ़कीर की ग़ैरत को ललकारा था। मुझे उसका फल मिल गया।

मियां मीर खुदा की जबान जानता था। वली था मिया मीर। पंजाब में कौन ऐसा आदमी है, जो मिया मीर के नाम से परिचित नहीं है। दिल्ली वाले भी पानी भरते हैं हज़रत का। मैंने सुना है, कई शहजादे उसके वुजू के लिए लोटों में पानी भरा करते थे। यह बात सुक्खा सिंह ने मेहताब सिंह को बताई।

मियां मीर के बारे में एक बात और भी मशहूर है। एक बार बलख का बादशाह दर्शन करने आया। फकीर अपनी मौज में बैठा हुआ था। हाथी, घोड़ों, रथों, शामियानों ने मियां मीर की कुटिया के सामने डेरे डाल दिए। पैगाम भेजा गया। हुजूर ने मिलने से इन्कार कर दिया। आम की गुठली जैसी शक्ल रह गई बादशाह की। सारी शान-शौकत धूल में मिल गई। इज्जत उतर गई। दूसरे दिन बादशाह ने हौसला नहीं छोड़ा। नया प्रभात अभी आया ही था कि कमर में चादर बांध कर हाजिर हो गया। हजरत ने फिर भी ध्यान नहीं दिया। तीसरा दिन क्या आया, अब तो धूल ही बची थी सिर मे डालने को। और कोई राह नहीं थी। उसने चादर खोल कर चौरास्ते पर दे मारी और लंगोट बांधे-बांधे ही हजरत के दरबार में जा हाजिर हुआ। इतनी बात देख कर हज़रत मेहरबान हो गए। फरमाया—यह लो, बेटे, झोला। आटा मांग कर लाओ हिन्दुओं और मुसलमानों के घर से। शाह के लिए जन्नत के दरवाजे खुल गए। शाह ने शर्म उतार कर एक तरफ फेंक दी और झोला उठा लिया। मांगना किसे आता था ? फिर भी वह सारी दिल्ली से माग लाया। डेरे पर हाज़िर हुआ। बोला—हुजूर, यह झोला हिन्दू घरों के दान का है और दूसरा मुसलमान घरों की खैरात का है। फकीर फिर मुस्कराया। फिर शामत आ गई शाह की।

—नहीं, इसी तरह आज फिर जाओ और अब अल्लाह के नाम पर मांग कर लाओ।

शाह फिर उसी रास्ते पर चल दिया । जब अल्लाह के नाम की हाक लगाई, तो आटा मागते-मांगते बेसुध हो गया । अपना होश न रहा बादशाह को । इतना बेखबर था कि वह बता नही सका कि कौन-सा झोला हिन्दुओ का है, कौन-सा मुसलमानो का । दोनो झोलों की गठरी इकट्ठी लाकर रख दी । हजरत ने पूछा—हिन्दुओं का झोला कौन-सा है और मुसलमानों का कौन-सा ?

शाह बोला—मुझे कोई खबर नही । मुझे तो अल्लाह ही अल्लाह नजर आता है । मैं बता नही सकता कि कौन-से झोले में हिन्दुओं का आटा है, और किसमें मुसलमानों का । मैं तो अब पहचान भी नही सकता ।

हजरत ने फरमाया—अब तुम खुदा को पा सकते हो । पहले तुम्हारे अन्दर बादशाहत की बू थी, अहंकार था, तकब्बर था । दूसरी बार तुम 'मैं' की चादर लपेट के आए थे । तीसरी बार तुमने 'मैं' की चादर उतार दी, लेकिन हिन्दू और मुसलमान का फर्क न मिटा सके । पर आज तुमने उस फ़र्क को भी भुला दिया है । इसी बात से तुम परवान हुए हो । पहले तुम नकली शाह थे, कागजों के तुम्हारे किले थे, आज असली बादशाह बने हो ।

इस शाह को लोग बुल्लेशाह के नाम से याद करते हैं ।

—कमाल है भाई। तुम तो पूरे ग्रन्थी हो । मेहताब सिंह ने सुक्खा सिंह से कहा ।

—सब बुजुर्गों की कृपा है । सुक्खा सिंह ने जवाब दिया ।

मियां मीर की बात यही खत्म नही होती । सांझा फकीर था । नफरत से बेनियाज़ । उसकी किताब में हिन्दू-मुसलमान का पाठ ही नही था । उसने तो बस एक ही बात पढ रखी थी कि सभी ईश्वर के जीव हैं । मियां मीर के हुजरे में बोरियां बिछी रहती थी । इन बोरियों पर शहजादे, शहजादियां, बादशाह, वजीर बैठना अपना कर्त्तव्य समझते थे । किस्मत वालों को ही ये बोरिया नसीब होती थी । हजरत फरमाया करते थे कि बाहर कोई वस्तु निजात नही दिला सकती । दिल की हुजूरी के बगैर नमाज़ अदा करना फिजूल है । कीर्तन के बड़े आशिक थे । कितनी-कितनी देर रबाबियों से कीर्तन सुनते । अगर कोई नाक-भौं सिकड़ोता या कोई मुँह बिगाडता, तो वह बाह पकड़ कर बाहर निकाल देते, चाहे वह कोई बादशाह ही क्यों न हो । कहते—आदमी तीन चीज़ों का समूह है : नफस, दिल और रूह । नफस रुकता है शरीअत से, दिल तरीकत से और रूह हकीकत से । रूह की भाषा कीर्तन है । तस्बीर तो यों ही दिखावा है । माला तो मन की है । जुबान पर अल्लाह का नाम होना ही असली तस्बीर है । इस बात ने कई हिन्दू तपस्वियों को भी भरमा लिया था ।

जब तालाब खोदा गया, तो मन्दिर बनवाने की कल्पना की गई । जगह निश्चित हो गई । अब सवाल उठा कि इसकी नीव का पत्थर किससे रखवाया जाए ? किसी ने बाबा बुड्ढे का नाम लिया, तो किसी ने बाबा श्रीचंद का ।

लेकिन गुरु अर्जुन देव बड़े बेनियाज थे। उनके मन में भेद-भाव नही था। वे एक अलग किस्म का मन्दिर बनाना चाहते थे—जो एकदम न्यारा हो। प्रचलित रस्मों को तोड़ कर उन्होंने हजरत मियां मीर को बुलाया और अर्ज किया—सरकार, आप इस मन्दिर की नींव रख दीजिए। मियां मीर को लालियां चढ गईं। खुशियों से भर कर फकीर ने कहा—असली धर्म की नींव आज रखी जाएगी। स्वर्ग मन्दिर की पहली ईंट दूसरे धर्म के अगुवा ने रखी। एक धर्म दूसरे धर्म के कितना निकट आ गया। गुरु अर्जुन देव ने इस अनोखे और चारों वर्णों के लिए खुले तथा भेद-भाव मिटाने वाले मन्दिर को कीर्तन गढ बना दिया। हरकी पौड़ी भी खुद सजाई। जब हरिमन्दिर बन गया, तो उस पर पुल बनाया जाना था। दर्शनी ड्योढ़ी का दरवाजा कई बार बना और कई बार नापसन्द किया गया। जब कारीगरों ने पूछा, तो सद् गुरु ने फरमाया—इसका दरवाजा किसी धर्म स्थान का ही लगना चाहिए, तभी शोभा होगी।

—बनारस का कोई मन्दिर दरवाजा दे दे। झट मेहताब सिंह बोल उठा।

—नही। मेरे बाबा ने बताया था कि गुरु महाराज की नजर सोमनाथ के उस दरवाजे पर थी, जिसे महमूद गजनवी लूट कर गजनी ले गया था। चलो, अब जो मिलता है, लगा दो। जब तक वह दरवाजा नही लगता, तब तक इसका रूप नही निखरता। दरवाजा वही लगेगा, चाहे जब भी लगे। अब बात आई पुल की। उसकी लम्बाई चौरासी कदम रखी गई। आदमी एक-एक कदम पर अपनी एक-एक मंजिल तय कर सकता है। चौरासी काटी जा सकती है। हर चीज धर्म की मर्यादा को सामने रख कर बनाई गई। गुरु अर्जुन देव इलायची बेरी के नीचे बैठकर फरमाया करते थे—मन्दिर के चार दरवाजे होंगे। चारों दिशाओं की ओर। लेकिन उनका मुँह किसी कूट की तरफ नही होना चाहिए। बल्कि दो कूटों के बीच दरवाजा रखा जाए। यह एक नई योजना थी। इससे हर मौसम, हर ऋतु मे मौसम सुहाना रहेगा। चार वेद, चार आश्रम, चार मुक्तियां, चारो युगो मे चारों वर्ण एक ही समय दाखिल हो सकें। किसी को अनुमति लेने की जरूरत नही है। मन्दिर, मस्जिद का जब भी दरवाजा रखा गया, वह एक ही होता। हरिमन्दिर को बिल्कुल पानी की सतह पर रखा गया, इसलिए कि जैसे कमल पानी के सीने पर तैरता है, उसी तरह हरिमन्दिर भी सरोवर मे रहेगा और हृदय कमल की तरह खिल जाएगा, दर्शनार्थी का। हरिमन्दिर को जान-बूझ कर नई जगह पर बनाया गया था। नम्रता के बिना हरि को पाया नही जा सकता। इसके गुंबद बैठे हुए से और ठोस हैं, जिसका मतलब यही है कि नम्रता मे ही सब कुछ है। अकाल तख्त के गुंबद देखकर आदमी आपे से बाहर हो जाता है और खुशी से छलांगें लगाने लगता है। गुंबद खड़ा है, सीधा है और अनख का प्रतीक है। गुंबद को जरा गौर से देखो, तो पता चलता है कि गुंबद को उल्टा रखा गया है। लक्ष्मी सीधे फूल पर रीझती है

और आसन जमाती है। उल्टे कमल से अमृत झर-झर गिरता है और वहीं हरि का वास है। माया अपने-आप पीछे-पीछे घूमेगी। कमल को उलटाना ही हरि को पाना है।

हरिमन्दिर में जितने भी फूल-बूटे बनाए गए हैं, उनमें से ज़िन्दगी बोलती है। जीवन की चित्रकारी-हरियाली दिल मे छिपी बैठी है और शीतलता मिलती है इस मीनाकारी को देखकर। इसी को देखकर और प्रभावित होकर ईरानी मुसव्वरों ने ताज महल बनाया। उसमे कहीं किसी जानवर की शक्ल जैसी कोई चीज नही मिलती। सिर्फ ऐसी चीजें ही नक्काशी गई हैं, जिनमे अध्यात्म है। जिन्दगी से दूर होने के कारण ही ताज महल को मृत्यु समान माना जाता है, जबकि हरिमन्दिर को जीवन-समान। ज़िन्दगी यहा खेलती और कलोल करती नजर आती है।

इसकी खिड़कियां इस ढग से बनाई गई हैं कि ठण्डी-ठण्डी हवा के झोंके आते रहें। वर्षा ऋतु में जब मेघला घुंघरू पहनकर नाचे, तब भी ऋतु सुहानी लगे। चौमासे में पसीना न आए और सर्दी मे जाड़ा न लगे।

अमृतसर मानसरोवर है, हरिमन्दिर जहाज है, बादबान वाह गुरु और मल्लाह है शब्द-गुरु।

इतना कह कर सुक्खा सिंह ने नमस्कार कर दिया। मेहताब सिंह और दूसरों ने भी दूर बैठे ही सीस झुका दिए।

—चलो, तैयार हो जाओ। अब हमें पंजाब की सीमाओं को छूना है। वक्त बहुत कम है। कही आराम नही मिलेगा। घुटना झुकाकर बैठना या सांस लेना बहुत मुश्किल है। तरनतारन जाकर डेरे लगेंगे, तब कही सुख की सांस मिलेगी।

एक नाथ ने कहा—हमारे जत्थे आगे-आगे जाएंगे। तुम दोनों लोग इकट्ठे रहोगे। हम तुम्हारे लिए हर जगह कुछ निशान छोड़ते जाएंगे, जिनका मतलब होगा कि रास्ता साफ है। जहा हमें कोई बाधा नज़र आएगी, वहां खतरे के निशान होंगे और तुम्हारे पीछे हमारा दूसरा जत्था होगा। तुम्हें इस तरह लेकर जाएगा, जैसे हथेली पर छाला। हमारी सारी योजना तरतारन जाकर बनेगी। हमारे साथी अमृतसर पहुंचने ही वाले हैं। यह सारा काम हमने तुमसे चोरी-छिपे किया है।

नाथों ने अपनी बात रख दी।

आवाज आ रही थी—अलख निरंजन। जय गुरु गोरख नाथ।



गोटे वाली चूनर

भीड छंट गई। तेज घट गया महमानो का। थोड़े-से महमान रह गए गांव में। नाथ गांव की रौनक को अपने पल्ले में बांध कर ले गए। चम्पा, बापू, जोगा सलाह करने लगे : शूलों भरे रास्ते हैं। गश्ती फौज सिंहों का शिकार करती घूमती है। प्रतिज्ञा करने वाले सूरमा आज से ही सूफी फकीर का पहरावा पहन लें। उनकी बोली अभी से ही सीखना शुरू कर दें। अगर कहीं फंस-फंसा गए, शिकंजे में फंस कर वुजू करना पड़ जाए, या नमाज पढनी पडे, तो झिझकें बिल्कुल नही। आधी-चौथाई नमाज सुक्खा सिंह जानता है। मेहताब सिंह भी कलमा पढ सकता है। लटें खोल लीं, केश छांट दिए और लम्बे-लम्बे चोगे पहन लिए—यह कोई मुश्किल काम नही था। ये कलंदर जिस गांव में जाएंगे, जी भर कर खाएगे। रोटी की कमी इन्हें कहीं महसूस नही होगी। यह सलाह जोगे की थी।

—बापू, मेरा दिल कहता है कि हमें भी इनके साथ जाना चाहिए। अकेले बेचारे कहां भटकते फिरेंगे? चम्पा ने कहा।

—दिल मेरा भी चाहता है। मैं चार दिन लंगर में बैठकर प्रसाद चख आया हूं। अब घर की रोटी अच्छी नहीं लगती। जिन्दगी तो उनकी है। हम तो यो ही अपने दिन पूरे कर रहे हैं। चौधरी ने कहा।

जोगा बोला—हमने तो गुरु की बही पर अपना नाम लिखवा लिया है। हमे तो जाना ही होगा। पर आप क्यों अपनी आंखो देखकर मक्खी निगलते हैं? यह तो शूलो की सेज है। मौत की बारात में जाने वाली बात है। घर से कंगन बांध कर निकलना पडता है।

—तुम क्या समझते हो, हमारी अनख गिरवी पड़ी है। नहीं, यह बात नही है। कुछ घराने मुगलों से जा मिले है। बाकी सारा राजस्थान तो अपनी मौत मरता है, अपनी जिन्दगी जीता है। देख तो, उदयपुर वाले अभी भी जिन्दा हैं। चित्तौड से अब भी पद्मिनी की चिता की गर्मी उठती रहती है। प्रताप की आवाज अब भी लोग पहाड़ों में सुनते हैं। अमर सिंह राठौर अब भी हर गांव में

जन्म लेते हैं। जैमल-फत्ते की रूह दफन कर दी गई। नही भाई, नही, अगर मेरी बच्ची का जी चाहता है, तो हम भी साथ चलेंगे। चौधरी की आवाज़ में आत्म गौरव की भावना थी।

—घर का क्या होगा, बापू? यह ऊंट, यह खेत, यह बकरियां, यह हवेली किसके सहारे छोड़ कर जाओगे? जोगा चौधरी की टोह ले रहा था। उसके स्वर में व्यंग्य था।

—राम-भरोसे। घर फिर बन सकता है। खेती दूसरे साल काट लेंगे। पर यह कुम्भ रोज-रोज नहाने को नही मिलेगा। ये मेले रोज़-रोज नही लगेंगे। ये सूरतें रोज़-रोज नही मिलेंगी। हम भी चलेंगे। मरेंगे, तो एक साथ, जिएंगे, तो एक साथ। अब हमें मौत ही अलग कर सकेगी। मैंने दो-चार दिन धूनियों की आग सेंक ली है। एक बार जिसने यह सेंक ले लिया, उसे फिर मलेच्छों की पलच्छ की रजाइयों में गर्माहट नही मिलनी। वह जिन्दगी ही कोई और है। वह सुरूर ही कुछ अलग है। चौधरी ने कहा।

चम्पा बोली—बापू, मुझे छोड़ के न जाना। मैं हरिमन्दिर की परिक्रमा करना चाहती हूं। सोने के मन्दिर में बैठकर मैं गुरु की वाणी सुनना चाहती हूं, ताकि मेरे कलेजे को ठण्डक पहुंचे। रेत में पैदा होना, रेत में ही मर जाना, यह भी कोई जिन्दगी है। खुले गगन में भी उड़ान भर कर देख लिया जाए।

—चुपके-चुपके क्या तैयारियां हो रही हैं? ये रेत के गोले बनाए तो जाते हैं, लेकिन मुट्ठी खुलने के बाद इनका आकार क्या है? सुक्खा सिंह ने यों ही कहा।

—हम रेत को जोड़ना जानते है। पत्थर हो जाती है रेत। तुम हमे गोद में उठा कर तो ले नही जाओगे। हमने अब झूला झूलना सीख लिया है। चार दिन हमे भी झूल लेने दो। चौधरी के मन का प्यार बोल रहा था।

—तुम लोग उनके महमान बनना चाहते हो, जिनका न घर है न घाट। छत नही, चौबारा नही, औरत नही, झोंपड़ा नही, कोई अपना नही, कोई हम-दर्द नही। न कोई आवाज देने वाला, न दरवाजे पर दस्तक देने वाला। थान की ढेरियों के बिस्तर। कुछ मिला तो खा लिया वरना मुट्ठी भर चने चबाए और पानी का लोटा पी लिया। रात गुजर जाए, सुबह ईश्वर राखा। सुक्खा सिंह ने फिर टोह लेते हुए कहा।

चौधरी बोला—सिंह जी, हमे टरकाने की कोशिश मत करो। हमे क्यों यों ही टाल रहे हो। तुमने जयपुर वालों का नाम सुना है, बीकानेर की धरती को तासीर तुम नही जानते। ये लोहे के बने हैं। टूट जाएं, पर झुकेंगे नही। हमे साथ ले चलो, हम भी आपके बहाने बैसाखी देख आएंगे।

—चलो, अगर तुम सुरमा डाल के देखना ही चाहते हो, तो देख लो।

सुरमा डालना जितना आसान है; उतना ही उसे मटकाना मुश्किल है। सुक्खा सिंह ने कहा।

—'गुरु जिन्हां दे उडणे, चेले जाण छड़प्प।' चौधरी ने कहा।

—कब चलना है फिर ?

—अभी। चल री लड़की, लगा ताला और चाबियां दे आ ताई को। और कहना, हम कुम्भ नहाने जा रहे हैं। साथ मिल गया है यात्रियों का। तुम्हारे लिए गंगाजल लेकर आएंगे। चौधरी चम्पा से बोला।

—अभी आई चाबी देकर। चम्पा खुश हो गई।

—पिन्निया चाची ने दी हैं और लड्डू ताई ने, चूरमा मेरी मां ने पोटली में बांध कर दिया है। भूरी ने कहा, सिंह भूखे न जाएं बसते घर से। फिर वह जरा-सी नजर घुमा कर बोली—गोटे वाली चूनर बता रही है कि चम्पा भी आपके साथ जा रही है।



पत्तन मिचनाबाद का

मेले और मुकलावे का चाव युवतियों को सांस नहीं लेने देता। भोली चम्पा क्या जाने मेला-अमावस। बैसाखी का नाम ही झाझरों में जोबन भर देता है। जवानी उमड़-उमड़ पड़ती है। लेकिन जहा सिर कटवाने वालों की मण्डी हो, महां मेला किस भाव लगेगा? यह कंचन देवी क्या जाने। चलो, ले चलो, इसकी रगों में भी राजपूती खून है। बेटी किसकी है? डोलेगी नही। अगर डोल गई, तो राजपूत नहीं। राजपूतनियां क्या जग में नहीं जाती थी? यह धर्मयुद्ध है, संग्राम है। कोई बात नही, सारा अमृतसर बसता है, यह भी किसी गुरुमुख सिंह के घर में रात काट लेगी। गुरु का दरबार देख आएगी। भाई घोड़ी पर चढ़ने वाले है—एक बहन तो साथ होनी ही चाहिए। चम्पा का दिल मोह लिया है इन गुरु के प्यारों ने। इनके भाई-बहन के अटूट रिश्ते को मै कैसे तोड़ूं? चम्पा अपनी भाभी का घूंघट उठा कर पलेठी की मुंहदिखाई देना चाहती है। अबोध बच्ची नही जानती कि इस बारात की क्या कीमत अदा करनी पड़ेगी। 'मिलनी' में रेजा मिलेगा या पगड़ी। चलो, भाइयो की 'घोड़ियां' गा लेने दो। भाई की शादी देखने का बड़ा चाव है मेरी बेटी को। चौधरी गगा सिंह सोच रहा था।

—बापू, सिंह तो अपनी राह पर चल दिए, हम किसके साथ जाएंगे? चम्पा बोली।

—सिंह बैठे तो रहेंगे नही। उनकी मंजिल बहुत दूर है। हम भी हल्ला मारें, तो हम भी जा मिलेंगे। हमें तो सभी रास्ते मालूम ही हैं। देखा-भाला रास्ता है। चल दिए, तो उनसे पहले हम उस पड़ाव पर जा पहुंचेंगे। एक पड़ाव छूट गया, तो दूसरे पर जा पकड़ेंगे। हम एक बार अपने ऊंट को उकसा दें, तो हमारी जवान डाची सांस ही वहा जा कर लेगी, जहां हमारा ठिकाना होगा। हमें अलग जाना चाहिए। चौधरी ने कहा।

—बापू, सिंह बड़े स्वार्थी निकले। हमें बताए बगैर ही घोड़ों पर सवार हुए और अपनी राह पर चल दिए। हम मुंह उठाए देखने ही रह गए। हमारी आंखें प्यासी हैं। बापू, क्या इनकी प्यास कभी बुझ पाएगी? चम्पा बोली।

—भोली बच्ची, हम तो बैसाखी देखने जा रहे हैं और वे मौत से दस्त-

पंजा लड़ाने जा रहे हैं। हमारे और उनके बीच जमीन-आसमान का अन्तर है। बापू ने कहा।

चम्पा बोली—बापू, इतनी भी बेरुखी क्या। इन्हें हमको कन्धों पर उठा कर तो ले जाना नहीं था।

—बड़ी नासमझ हो। भोली हो। अरी सौदाइन, गश्ती फौज का डर, हाकिमों का भय, चौधरियों की दहशत, उठाईगीरी के छोड़े हुए दूत, कानों में पड़ी फूंकों से डर-डर कर, लुकते-छिपते अपने अड्डे पर पहुंचना और फिर अपना काम करके लौटना—बिल्कुल दोधारी तलवार पर चलने वाली बात है। एक तरफ हुकूमत की लटकती तलवार और दूसरी तरफ डर उन पापियों का, जो घी-शक्कर खाएंगे, मूंछों पर हाथ फिराएंगे और भाइयों के रक्त में नहाएंगे। जंगल के शेर से घर का सांप ज्यादा खतरनाक होता है। पर सिंहों ने तो जान हथेली पर रखी हुई है। वे किसी नवाब से नहीं डरते। किसी चौधरी की चौधराहट को नहीं मानते। उनकी खाल में भय नाम की कोई चीज नहीं है; वे तो गुरु की ओट लेकर निकले हैं। गुरु स्वयं ही उनके कार्य पूर्ण कर देंगे। किसी दिन वे पंजाब को छीन लेंगे। आज चाहे इनकी औरतें अनाथ बनी घूमती हैं, लेकिन जब दिन फिरेंगे, तो इनकी बाहों में सुन्दर चूड़ा होगा। बागों में मौसम बदलने वाला है। हवाओं का रुख बदलने दो, फिर देखना खालसे के पौ-बारां होंगे। चौसर का पासा पलटते किसने देखा है? कुदरत के रंग न्यारे हैं। तेल देखो और तेल की धार देखो। ऊंट की मुहार की तरफ ध्यान रखो. बेटी, मंजिल खुद-बखुद नजर आने लगेगी। गुरु मन की मुरादें पूरी करेंगे। तुम्हारे भाई अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर सकें, गुरु उनकी इज्जत रखें। चलो बेटी, तैयार हो जाओ, मैं ऊंट को लाता हूं। बापू ने चम्पा को उत्साहित किया।

—आई बापू, मैं कंगन रख आऊं। मां अमानत दे गई थी। मेरी मटकी में अभी दाने पड़े हैं। उन्हीं में छुपा आती हूं और चाची चाची को दे आती हूं। बापू, तुम थपकी दो अपनी डाची को। चम्पा ने कहा।

जब चम्पा घर से बाहर निकली तो उसका रंग-रूप ही कुछ और था। निखरा हुआ रूप सोने जैसा लगता था। उषा की पहली किरण चम्पा के मुखड़े पर कलोल कर रही थी।

—यह क्या, बेटी? चौधरी ने कहा।

—बापू, रास्ता लम्बा है। जवान जहान लड़की को बीसियों लोग गहरी नजर से देखेंगे। साथ ही हमें एक ऊंट पर जाना है। हम यों ही तमाशा क्यों बनें? बापू, मैं तुम्हारी बेटी नहीं, तुम्हारा बेटा बन कर साथ जा रही हूं। बापू, मैं लड़का लगती हूं या नहीं? कहीं परखना पड़े, तो परख लेना। चाची

दीवार की मुंडेर पर ही रहने दो, कोई नही उठाएगा। चलो वापू, जल्दी करो, अब जी नही लगता। हमारे साथी बहुत आगे निकल गए हैं।

—बैठो बेटी ऊपर। मैं मुहार मोड़ता हू। उठ मेरे बेटे, उठ मेरे साथी, आज हमारी इज्जत तेरे ही हाथ है। तू ही हमारे मन की प्यास बुझाएगा। चौधरी ने मुहार को ज़रा-सा ठुमका दिया।

गांव से निकलते हुए ऊंट को सबने देखा, लेकिन चम्पा को कोई नही पहचान पाया। ऊंट के पांव राह के होंठ चूम रहे थे। सारा दिन चलता रहा ऊंट। रात को भी वह नही थमा। धन्य था उसका जिगर। गगानगर से निकल आया वह। ठिकाने भले ही गगानगर में ही थे, लेकिन उन्होंने वहां भी विश्राम नही किया। ऊंट ने राह को चूम-चूम कर पांव आगे बढाए। पूरा दिन उसी दौड़-भाग मे गुज़र गया। सिहों की कोई खोज-खबर न मिली। रात हो गई। तारों की छाव मे उन्होने ऊंट को ठहराया और अपनी कमर सीधी की। सारी रात कोई नही सोया। नीद ने लोरी भी नही दी। कितना चाव था चम्पा और उसके बापू को।

चम्पा बोली—सिंह हिरनों के सींगों पर सवार हो गए।

—सिंहों का काम है हिरन हो जाना।

—बापू, किसी से पूछ तो लेते, हम कही गलत राह पर न पड़ जाएं।

—पूछ के देख लेते हैं, बेटे। अरे, जाने वाले राही, ज़रा बताओगे, इधर कही सिंह देखे हैं ?

राही एक बार हैरान हुआ, लेकिन हिम्मत करके बोला—जब मेरी उनसे भेंट हुई थी, तो वे मिचनावाद का पत्तन पार कर रहे थे।

—लो बापू, तुम्हारे सिंह मिचनावाद का पत्तन भी पार कर गए और उन्होंने हमारा इन्तज़ार तक न किया।

—तीसरे दिन उन्होने पत्तन पार किया है और तीसरे दिन ही हम जा पार करेंगे। अरी पगली, अगर आज नही मिले, तो कल मिल जाएंगे। वह नायों की टोली जा रही है। सिंहो के रखवाले नज़र आ गए। रात को हम भी सिंहों के मेहमान बनेंगे। रात को गुरु का लंगर तैयार मिलेगा। चल बेटे, पार कर दे पत्तन मिचनावाद का। गुरु तेरी रक्षा करें।

कमर बांधे खड़ीं पत्तन पर

नाथों का डेरा। धूनी सुलग रही थी। लपटें उठ रही थीं। धूनी की आग पुकार-पुकार कर कह रही थी—पंजाब तुम्हारा है, राज के वारिस तुम हो। नाथों की टोली पालथी लगाए बैठी थी। ऊंट भले ही दूसरी जगह पर आवाज़ लगा रहा था, लेकिन चौधरी धूनी की आग सेंकने में मग्न था।

मिचनाबाद का पत्तन भी पार कर आए थे, लेकिन सिहों का कोई पता-ठिकाना नहीं था। झट-से छू-मन्त्र हो जाते हैं, मदारी के डंडे की तरह।

—हिरन हुए सिहों का कभी पता चला है जोकि तुम्हें चलता। एक जोगी ने कहा, आप लोगों को अमृतसर जाना है?

—घर से तो यही सलाह करके आए थे। स्नान-ध्यान हो जाएगा, साथ ही गुरु के प्यारों के दर्शन हो जाएंगे, मगर दम रास्ते में ही टूटता नज़र आता है। कमर की हड्डी जवाब देती जा रही है। गुरु ही अपने पास बुला ले, तो शायद दम बच जाए। चौधरी ने कहा।

एक नाथ ने बीच में ही टोक दिया और बोला—अमृतसर पर तो पहरा बैठा हुआ है। किसी आदमी की हिम्मत नहीं हो सकती कि स्नान कर सके। तुम लोगों ने यह इरादा कैसे कर लिया? वहां तो मस्सा रंघड़ के बगैर कोई चिड़िया तक चोंच नहीं भर सकती। कभी भूल-चूक से कोई सिंह चला जाता है, कोई भूल से भी सरोवर में हाथ सुच्चे कर ले, तो या तो उसे उसी वक्त कत्ल कर दिया जाता है, या बन्दीखाने में उसे डालकर उसकी जान अज़ाब में डाल दी जाती है। सब कुछ जानते-बूझते भी क्यों मौत के कुएं में छलांग लगाने जा रहे हो? लौट जाओ।

—बाबा अगर तुम्हें अपने आप पर तरस नहीं आता, तो इस भुजंगी पर ही तरस खाओ। तुम तो खा-पी जी चुके। इसे तो चार दिन जीने दो। इस समय अमृतसर में साधारण आदमी का कोई काम नहीं है। सिरकटा भले ही आ घुसे घोड़े समेत सरोवर में! वैसे, लोग अमन-अमान से रहते हैं। चौधरी मस्सा अमृतसर की जनता को नहीं छेड़ता। उसे तो सिर्फ सिक्खों से चिढ़ है और वह

सिखों का ही वैरी है। जिन्दा सांप को तो मार कर कोई गले से उतार लेगा, लेकिन मरे हुए सांप को कोई क्यों गले में डालेगा? एक नाथ ने कहा।

चौधरी को ताव आ गया। रोष से भर कर बोला—उम्र भर का पट्टा लिखवा रखा है उसने। कभी तो चौराहे पर भांडा फूटेगा ही। सारी उम्र उसकी तूती थोड़े ही बोलती रहेगी? सारी उम्र किसी का जलाल नही रहता। सिंहों का दाव लगने की देर है, वे उसकी वह हालत बनाएंगे, कि मस्से का कोई नामलेवा नही बचेगा। कोई ठौर-ठिकाना नही बचेगा उसके लिए। खोज-खबर तो बडी दूर की बात है, पौदा उखड़ा तो जड तक नही मिलेगी। हुकूमत की बात ढीली पड़ती जा रही है। अहमदशाह अब्दाली हमले की तैयारियों में लगा हुआ है, और खैबर के दर्रे में बहक रहा है। लाहौर वाले उनसे गठजोड़ कर रहे हैं। अमृतसर की तरफ उनका ध्यान कम ही जाएगा। पंजाब में अगर टक्कर लेनी पड़ी, तो फिर सिक्खों के साथ गठजोड़ करके मुकाबला किया जाएगा। यह तो हुई न कोई बात। अकेली हुकूमत कुछ नही कर सकती। इसलिए लाहौर वाले सिंहों पर भी डोरे डालेंगे और वैर-विरोध को छोड़ देंगे। अकेला मस्सा रंघड़ टांगें नहीं पसार सकता और न ही उसकी [illegible]। मैंने सुना है कि आजकल हरिमन्दिर में रंडियां नाचती हैं। [illegible] की [illegible] छन-छन करती फिरती है। मटकों पर मटके शराब [illegible] है। कौन-सा दुराचार है, जो वहां नही होता। सिंह कितने दिन [illegible] रहेंगे? उन्होंने बहुत दिनों तक अपने सीने पर [illegible] लिया है। कोई तो फूंक मार कर बुझाएगा। हम तो गुरु के [illegible] रहे हैं। [illegible] वहां किस भाव बिकती है। लोग स्नान करेंगे, [illegible]। [illegible] दूर से ही प्रणाम करके मन की प्यास बुझा लेंगे! [illegible] नही। हमें सांप निकाल-निकाल कर मत दिखाओ। [illegible] दलनी है। चरी बोनी है, कोई बो देगा। [illegible] आए हैं। स्नान करके जाएंगे। चाहे [illegible] और चाहे [illegible] जाए। चौधरी ने पूरी बात एक ही [illegible]।

—

कुरता उठाया है। मैं पहचानता हूं। चौधरी ने कहा। क्यों नाथ जी, मैंने पहचान लिया है न? मैं अन्धेरे में ही तो हाथ नहीं मार रहा हूं? सूरज के आगे ही सीस झुकाया है?

—पहचान तो लिया है, लेकिन इतनी जल्दी खुलना भी मुसीबत बन सकता है। अच्छा, तो आप थे जोगे को लक्खी जंगल ले जाने वाले। अब आई न बात समझ मे। भला किया। यह पुण्य सारे पंजाब के लिए हुआ। सज्जनो, सिंहों के खुले दर्शन आपको पट्टी पहुचने पर होंगे। अभी हम बिखरे-बिखरे हैं। हमें डर है, और सूचना भी मिली है कि गश्ती फौज का दस्ता शिकार करते-करते कहीं इधर ही न आ निकले। इसीलिए आप से मेल नहीं हुआ। मेला लगाने की जरूरत नहीं है। आप सिंहों की रखवाली में हैं। सिंह दूर नहीं हैं, आपके आस-पास ही मडरा रहे हैं। वे आपको देख रहे हैं, लेकिन आप उन्हें देख भी लें, तो पहचान नहीं सकेंगे। चले चलो मित्रो, आप ठीक राह पर चल रहे हैं। दीपालपुर आने वाला है। रात शायद वहीं काटनी पड़े। उससे आगे चुनिया, उसको पार किया, तो खुड्डियां और फिर सामने खेमकरण। डेरे वहीं लगेंगे। पट्टी का रास्ता साफ और सुरक्षित लगा, तो पट्टी में ही विश्राम किया जाएगा। अगली बात पट्टी में जाकर खुलेगी। इन पहेलियों को खोलना बड़ा कठिन है। वहां अलम्बरदारों के घर में शादी का ढोल-ढमाका है। ढोलकी बज रही है। मुजरे हो रहे हैं। नियाजें बांटी जा रही हैं। अखाड़े लगे हुए हैं। मछिन्दर डेरे लगा कर बैठे हुए हैं। ब्याह ने सभी गावों में ढोल बजा दिया है। बड़ी धूम-धाम से कारज रचाया है अलम्बरदारों ने। हम भी उनमें जा मिलेंगे। वैसे पट्टी सिक्खों के लिए मौत के दहाने पर खड़ी है। पट्टी के बगैर हमारा रास्ता साफ नहीं होगा। वहां काफी लोग हैं, हमारे सहायक। वहां जितने हमारे सखी हैं, उतने ही शत्रु भी हैं। पट्टी पर हम अपना पडाव डाल लें, तो फिर अमृतसर पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं होगी। पट्टी में हमें अमृतसर की सारी ऊंच-नीच का अन्दाज मिल जाएगा। सारी कहानी की शुरूआत वहीं से होगी। ये कंकड़ों से भरे रास्ते और चलना नगे पांव; पांव भले ही बिंध जाएं, छिल जाएं, सिंह तो इन्हीं कठिन राहों पर चलते रहेंगे। इसके बगैर हम चक्रव्यूह मे दाखिल नहीं हो सकते। जयद्रथ किले के मुंह पर बैठा, आंखें दिखा रहा है। अभिमन्यु चाहे किला तोड़ भी दे, लेकिन उसे किले से सही-सलामत निकाल लाना बड़ा कठिन है। द्रोणाचार्य अमृतसर की नाभि पर बैठा हुआ है। हमारे महारथी कहीं द्वार पर ही हाक लगाते न रह जाएं। इसलिए जयद्रथ के गले में रस्सी डालना और उसकी टांगों को बांधना और उसे घोडे से नीचे गिराना—इन्हीं के ख्याल में मग्न हैं सिंह। इसीलिए सिंहों का अमृतसर पहुंचना और पहले से ही अपने मोर्चे पर बैठ जाना जरूरी है। हमारे गढ़ बन गए हैं। जब हमारी बाहें आपस मे भिड़ने लगीं, तो फिर मूजियों को मारना मुश्किल नहीं

हगा। शिकार चाहे हिरन का ही करना हो, मचान शेर का ही बांधना चाहिए। ला भाई, हमें जो कुछ कहना था, कह चुके। अब तुम जानो और तुम्हारा काम। वैसे डरने की कोई बात नही है। तुम्हारे इर्द-गिर्द नाथों ने बाड़ बना रखी है। सारी सगत को तुम्हारा ख्याल है। मेले में बेधड़क होकर घूमो। कोई तुम्हारा बाल भी बांका नही कर सकता। खुशियां मनाओ। भुजंगी सिंह को कौन भूल सकता है? पराठे अभी भी स्वाद दे रहे हैं। जबान अभी भी पिन्नियों और चरमे का चटखारा ले रही है। चम्पा ने दूध के कटोरों से सिंहों को निहाल कर दिया था।

—बोलो, चम्पा बेटी, ठीक से हो? कहकर नाथ अपने रास्ते पर चल दिया।

चम्पा शरमा गई। नाथों की आंख बड़ी तेज़ है। दिल के चिराग का सुरमा डालते हैं। नाथों की आंख दिये की तरह चमकती है।



अलम्बरदारों की हवेली

अलम्बरदारो की हवेली में मशाल जल रही थी। सारा गांव एकत्र था। आदमी पर आदमी सवार था। कसूर की डेरेदारनियां उतरी हुई थी। मुजरा जवानी पर था। झांझरें छनक रही थी। घुंघरू निर्लज्जता से बोल रहे थे। तबला बहक रहा था। सारंगी पर गज घूम रहा था—उसकी आवाज़ दिल खींच लेती थी। झाझर वाली दिल को चीरती निकल जाती। जन्मजात छड़ों की टोली आंखें सेक रही थी। जोगा जन्मजात छड़ा था। 'छड़े दी अख एयों मचदी, जिवें मचे रंडी दे घर दीवा'। झाझर वाली आग लेने तो क्या आती, आई और लूट कर ले गई। छड़ों का सीना फूंक गई। एक ने जरा-सी आख दबा दी। बाबा-पोते हरा दिए। पर छड़ो को कौन रोकता। बोले—'काहनूं कढदी एं कुपत्तिए गालां, छड़े दा किहड़ा पुत मर जाऊ।' जुम्मा और फत्ता पहले ही रंडी के डेरे का चक्कर लगा आए थे। दोनो रडी की आंख मे खटकते थे। रंडी ने जूती दिखाई, तो भाग खड़े हुए, नगे पाव ही।

प्रभु की इच्छा। मुजरे के अखाड़े मे सबसे आगे खानदानी छड़ों की पक्ति बैठी थी। जब छोटा-सा घूंघट काढ कर रंडी ने चक्कर लगाया, तो जवानों की ढाणी लोट-पोट हो गई। चौधरी नशे मे धुत थे। कमर को हिचकोला देकर जब गोरी ने गीत शुरू किया, तो सारी महफ़िल झूम उठी। लोटन कबूतर बन गया सारा अखाड़ा।

'लाखों के बोल सहे सांवरिया तेरे लिए।'

बिल्लौर जैसी गोरी नार ने महफिल को अंगुलियो पर नचा लिया। जियो। नशे मे गुम अखाड़े मे से आवाजें आ रही थी।

एक जवान ने आह भरते हुए कहा—'तेरी सजरी पैड़ दा रेता, चुक-चुक लावां हिक नूं।'

नशे मे धुत एक दूसरा जवान बोल उठा—'माले चूस लां पठोरिये तैनूं, माले तेरा लौंग चूस लां।'

उसी ढाणी से एक आवाज और उभरी—'अख पटवारन दी, जिवें इल दे आह्लणे विच आंडा।'

दूसरे ने कलेजे पर हाथ धर लिया और गला फाड़ कर कह उठा—'अक्खी वेख के सबर न आवे, यारा तेरा घुट भर लां।'

—ससुराल से आई हुई का गाना भी सुन लो, अपनी कव्वाली न छेड़ो। पास बैठे जवान ने कहा।

फतेह खां ने बात मुंह पर दे मारी और बोला—तुम क्या जानो जाड़ों की रातें कैसे गुजरती हैं! तुम तो रजाई की गर्मी में जा घुसोगे। हमारा भी खुदा मालिक है, जिन्हे तन्दूर पर रात काटनी है।

'......बोल सहे सावरिया तेरे लिए' इतनी-सी बात ने ही महफ़िल को करारा कर दिया। गाने वाली ने गले की गरारी को ऐसे चक्कर दिए, कि खलकत चक्कर मे पड़ गई।

महफ़िल के पिछवाड़े मे एक आदमी बोल उठा—नकलो का क्या हुआ?

—भांड कसूर से आने वाले थे।

—जूती पूरी नही आई होगी, इसलिए वक्त पर नही पहुचे।

—जूतियों की यहा कमी थी।

तीन भांड, एक का कुर्ता फटा हुआ, दूसरे के हाथ में चमोटा, तीसरा पाव से नंगा। तीनों की पगड़ियां गले में पड़ी हुई।

—यजमानो की, खैर नवाबी बनी रहे। जोड़ियों के भाग्य जगे रहें। बेल बढ़े। महफ़िलें लगी रहें। भाड आते रहे और गठरियां बाध कर हवेलियों से ले जाते रहें। भाडों ने अपना काग-राग छेड़ दिया। लड़कों के गुट ने झट से मुंह फेर लिया। आधी महफ़िल का ध्यान भाडो ने अपनी ओर खीच लिया। नगे वदन पर चमोटा वजा और उसकी धमक गाव की तीसरी कोठरी मे जा पहुंची।

—यजमानों की खैर। नवाबी बनी रहे। जोड़ियों को भाग्य लगे रहें। बेल बढ़े। अल्लाह की बरकत। डोलियां नित-नित आएं। महफ़िलें जुड़ी रहें। भांडो के हाथ नित्य खांड-चावल मे रहे।

रंडी के आखिरी बोल ने महफ़िल को सुन्न कर दिया। महफ़िल से आवाज़ आई—तुम कहा मर गए थे?

—कब्रों से उठ कर आए हैं। लम्बर के घर डोली आई, हमारी नींद भी खुल गई।

—आगे आ जाओ।

भांड आगे आए और तबले वाले अपना सामान उठा कर एक ओर हो गए।

भांड ने नंगे वदन वाले को चमोटा दे मारा। तोप जैसा धमाका हुआ

अभी से मारने लगें बाप को। बाप के गौने के लिए लम्बरों को भेजोगे?' सारा अखाड़ा हंस पड़ा।

—सुनाओ भाई, क्या हाल-चाल है?

—बहुत बढ़िया, ऐश हो रही है।

—क्या काम करते हो इतनी ऐश हो रही है?

—सिक्खड़ो के सिर काट-काट कर थोक में भेजते हैं लाहौर।

हंसी जरा-सी फूटी।—तब तो बहुत बड़े कसाई हुए तुम। काम बढ़िया चुना है। जवाब नही है तुम्हारे चुनाव का।

—काम करें हमारे दुश्मन। हम इतने बड़े ज़मींदार हैं। हमें क्या जरूरत पड़ी है काम करने की।

—बहुत बड़े जमींदार हो गए हो।

—और क्या। कोई छोटे-मोटे ज़मींदार थोड़े हैं। पैंतीम घुमाव ज़मीन पर बाड़ लगा रखी है।

—वाह रे जवान। पैंतीम घुमाव ज़मीन। तब तो काफी फसल होती होगी। मटके भर जाते होंगे अनाज से।

—दस घुमांव मे चावल लगाया है। काली घटा की तरह उठ रहा है। कहीं तिल धरने तक को जगह नही है।

चमोटा एक बार फिर बज उठा।

—क्या कहने तुम्हारी जमींदारी के।

—पांच घुमांव में कपास का खेत। आम जैसे बड़े बूटे। रात दिखाई देती है।

—कमाल है भाई। मुकाबला नही है चनाव का, चाहे मूखी ही बहे।

—दस घुमाव में मक्का। बालिश्त-बालिश्त भर के भुट्टे।

—ठीक है, भाई, ठीक है। इसीलिए कुरता फटा हुआ है।

—सिक्ख फाड़ कर हिरन हो गए। चमोटा मार कर भांड ने उसके बदन पर नील डाल दिया।

—पांच घुमाव में तिल बोए। अल्लाह की मेहरबानी, जैसे अनार के बूटे होते हैं। देखकर बोतल का नशा आ जाता है।

—पर इतनी फसल वाली तुम्हारी जमीन है कहा?

—पास ही है।

—फिर भी, पता तो बताओ।

—हमारी लंगड़ी भैंस की कनपटी पर।

हंसते-हंसते सारी महफिल का पेट दुखने लगा। मोहरो की बारिश होने लगी। भांड बटोरने लगे।

दूसरे ने महफ़िल का रुख बदला। चमोटा एक बार फिर बज उठा, तोप के गोले की तरह।

—सुनाओ भाई, सुनाओ, ब्याह करके आए हो।

—ब्याह ही करके आया हूं। बहुत बढ़िया ब्याह हुआ। सारी सीमाएं समाप्त हो गईं। एक बार तो वाह-वा-वाह-वा करवा दी सारी पट्टी की।

—ब्याह पट्टी में किया था?

—नही जी, गाव में।

—लेकिन ब्याह की धमक पट्टी तक पहुची।

—नादिरशाह की तोप होगी।

—क्या कुछ खिलाया?

—बहुत कुछ। दस तो देगें ही उतार दी हमने।

—दस देगें तो जरदे की उतारी होगी।

—ज़रदा। जरदा भी कोई खाता है आजकल।

—फिर क्या तुमने पुलाव की उतारी होगी।

—पुलाव भी कोई खाने वाली चीज है। नमकीन चावल, कौन खाए?

—तो हलवा बना होगा।

—हलवा क्या होता है। गुड़ की सानी। हमे सिक्खड़ों को देना था?

—तो फिर ज़रूर गोश्त बना होगा।

—गोश्त जानवरो का खाना है।

—तो मुर्गे बने होंगे।

—मुर्गो को तो अब गीदड भी नही खाते।

—तो और किसकी इतनी देगें उतरी?

—हल्की-सी आवाज आई—गर्म पानी की।

चमोटा एक बार फिर बजा। भांड जूते-खाए आदमी की तरह मुंह बनाते हुए बोला—सिंहो के गुसल का ठेका तो नही ले लिया।

—लानत है। अरे कम्बख्त, मुंह अच्छा न हो, तो बात तो अच्छी करो।

—बुरा-सा मुंह बना कर बोला भांड—बारातियो को डुबो-डुबो कर, एक-एक का बिज्जू बना कर निकाला देग से।

बस। सारी महफिल हंसते-हसते दुहरी हो गई। मोहरों के ढेर लग गए। भांडों ने महफिल को अपनी तरफ खीच लिया।

—ठहरो, ठहरो। हमें जाने दो। आधी रात गुज़ार दी। हमे तड़के उठना है। मामला तारना है अमृतसर मे। एक लम्बर ने कहा।

भाडों ने फिर शोर मचा दिया। लेकिन चौधरी उठ गए। महफिल बिखरने लगी।

एक भांड ने आवाज़ मारी—सिंह जी, कुछ हमें भी देते जाओ।

—सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह भी वहीं अखाड़े में खड़े थे। ताड़ गए। उन्होंने किसी को भनक न पड़ने दी और खिसक गए।

महफिल फिर जुड़ बैठी। चौधरी भले ही उठ गए थे, लेकिन अखाड़े वालों ने रंडी को उकसा कर मुजरे के लिए फिर तैयार कर लिया।

भांड अपना काम कर गए। मोहरें उठाईं और लोगों में ही घुल-मिल गए। कोई नहीं पहचान सकता था कि भांड कौन हैं ?

रंडी ने एक बार फिर रंग बांध दिया। वह गा रही थी :

'पल्ला मार के बुझा गई दीवा,
ते अक्ख नाल गल कर गई।'

यह सब कुछ पट्टी में हुआ। मुजरा सारी रात होता रहा। छड़े पालथी मार कर बैठे रहे। पट्टी सारी रात जुड़ी रही। रंडी रात भर नाच-नाच कर चूर हो गई। जेबें झाड़ कर ले गई शरबती आंखों वाली। किरमिची दुपट्टा मशाल की रोशनी में उड़ रहा था। पट्टी के जवान लट्टू हुए घूमते थे कसूर की मुजरे वाली पर। छड़े तो उसे जेब में ही डाल लेना चाहते थे। परवाने शमां की लौ को अपने में समेट रहे थे।



कुत्ता राज बहालिए

अभी भोर का तारा नही निकला था। मेहताब सिंह और सुक्खा सिंह दोनों सो रहे थे। चौधरी सारी रात हवेली में जागते रहे। न खुद सोए, न घर के लोगों को आंख मीचने दी। घोडिया निकाली। सामने वाली थैलियों को दिए की रोशनी में देखा। तसल्ली की कि हाकिम की मुहरें लगी हुई हैं। कसूर वाले मामला अपने पास इसलिए नही रखते थे, क्योंकि मस्सा रंघड़ बड़ा अड़ियल, बददिमाग, गुस्ताख़ और शेखीखोर था। आदमी की इज्जत खडे-खड़े ही उतार देता। अमृतसर के आसपास रंघड़ों के घर भी बहुत अधिक थे। बड़े जोश में थे रंघड। अपनी बादशाहत अपनी हुकूमत। मस्सा रंघड, अपना पूत, अपना खून। ये बातें हर बात का फैसला अमृतसर में ही करवा लेती। किसी को लाहौर या कसूर जाने की तकलीफ न उठानी पडती। स्याह को सफेद कर लेना, जब जी में आए रात को दिन और दिन को रात में बदल लेना, किसी की गर्दन काट लेना, और उसे कुएं में फेंक देना—ये सब बड़ी मामूली बातें थी। हर तरफ अपनी चौधराहट थी। जी चाहता तो मुर्गे को बाग देने देते, न चाहता तो उसकी गर्दन मरोड देते। मस्सा दोनों हाथों से लूट रहा था। रंघड अपने सन्दूक भर रहे थे, पठानों से ईंट-कुत्ते का बैर था। लेकिन हुकूमत ने कसूर वालो को अमृतसर पर अपने छत्र झुलाने की इजाजत दे रखी थी। अमृतसर वाले चाहे कसूर की छत्रछाया के नीचे थे, लेकिन मस्सा जूते से सेवा कर रहा था। मस्से ने उनकी इज्जत उतार कर उनकी झोली मे डाल दी थी। कसूर वाले दुखी थे। लाहौर वालों को इतनी फुर्सत नही थी कि वे उनकी आंख मिचौनी मे सीटी बजाए। मस्सा जो कुछ कर रहा था, वह लाहौर वालों के लिए ठीक था। अहमदशाह अब्दाली के हौवे और सिर पर लटकती उस की तलवार ने लाहौर वालो को बुजदिल बना दिया था। दिल्ली की हुकूमत लाहौर की तरफ कोई ध्यान नही देती थी। दिल्ली वाले अपनी मुसीबतों मे मुब्तिला थे। प्रतिदिन जूतों में दाल बांटी जाती। घरेलू के रिश्ते खुद ही कोनों में जा लगे थे। खान भाइयों ने अच्छी नकेल डाल रखी थी। बादशाह, वज़ीर, अहलकार नाक में नकेल डाले घूमते।

लाहौर का तो वही हाल था कि हाथी के सिर पर महावत न हो, तो वह लावारिस घूमता फिरता है। अब्दाली के चमचे लाहौर में नाच रहे थे। हर चौधरी आका हुआ बैठा था।

मस्सा रंघड़ ने भी चमड़े का सिक्का चलाया, लेकिन उसने किसी सिंह को अमृतसर में नहीं घुसने दिया। उसने हरेक की कमर में तड़ागी बांध रखी थी और घुंघरू अपने नाम के बांध दिए थे। सिर्फ सिंह ही थे, जिन्होंने न तड़ागी कबूल की, न हाथ लगाने दिया। उसका जितना जी चाहता, वह हरिमन्दिर का अपमान करता। हर रोज गाय के लहू से फर्श धोया जाता। हड्डियों से सरोवर भर गया। लेकिन क्या जिगर था सिंहों का कि उनकी श्रद्धा में रत्ती भर अन्तर न आया। बल्कि उनकी श्रद्धा में वृद्धि ही होती रही और उनके इरादे भी बलवान् होते गए।

एक दिन मस्सा शराब के नशे में धुत था। फिरकनी की तरह घूमता और पागलों की तरह हंसता हुआ बोला—सिंह काफिर अमृतसर की दीवारों की तरफ नहीं झांक सकते। मस्से का जलाल उनकी मौत है। कोई नहीं आ सकता। सिंह छोड़ गए अमृतसर को। जंगलों, पहाड़ों और मरुस्थलों में मर-खप जाएंगे। डरने की जरूरत नहीं है। खाओ, पियो, ऐश करो। यह जिन्दगी चन्द रोज़ की है। मौत क्या है? राज क्या है? मैं अमृतसर का नवाब हूं। मैं खुद मुख्तार बादशाह हूं। मुझे किसी की परवाह नहीं है। मुझे किसी का डर नहीं है। उसने उसी समय सुराही से दो प्याले भरे और गटागट चढ़ा गया। —अब अमृतसर में मेरी हुकूमत है और कल बहिश्त में भी मैं ही शासन करूंगा। जी भर के नर्तकियों को नचाओ। शराब पियो और काफिरों की गर्दनें काटो। तुम्हारा मजहब यही है। इस्लाम ने तुम्हें इतना ही सबक दिया है।

ये खबरें लाहौर पहुंचीं। कसूर वालों ने कानों में रूई ठूंस ली। वे सुनते कि मस्से ने गांवों के गांव उजाड़ दिए हैं और जवान जहान लड़कियों की इज्जत जी भर कर लूटी है। उसने माझे की इस धरती पर हाहाकार मचा दिया है। मुर्गे को मार डालना और आदमी को मार देना एक ही बात है। वैसे सारा इलाका मस्से से दुःखी था। हर रोज, हर रात कोई न कोई कुआरी लड़की, चाहे हिन्दू मिले, चाहे मुसलमान, एक ही रात में औरत बना दी जाती। किसी की इज्जत सुरक्षित नहीं थी। 'कुत्ता राज बहालिए, चक्की चटण जाए।'

भोर का तारा मकबरे की दीवार पर चमक रहा था। सारी पट्टी सो रही थी। सिर्फ चौधरियों के घर में ही दीया चल रहा था। घोड़ियां तैयार थीं। चौधरी के घोडी चढने से पहले उसकी बहन ने उस की बाह पर इमाम-ज़ामन बांधा। दो चौधरी गांव से पूरे जलाल में निकले। और कोई साथ नहीं था। दो सूरज एक साथ निकल आए थे।

सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह भी तैयारी में थे। उन्होंने भी घोड़ियों को

थपकियां दीं। गुरु का नाम लेकर छलांग लगाई। गांव से काफी दूर सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने दोनों चौधरियों को जा कर घेर लिया, और बेखबरी में ही भरपूर वार किया। पहले तो चौधरी डरे, फिर सामने डट गए। सुक्खा सिंह के पहले वार ने ही एक चौधरी का राम नाम सत्य कर दिया। मेहताब सिंह ने दूसरे चौधरी पर घातक वार किया। वार भाले का था। भाला सीना पार कर गया। छाती खरबूजे की तरह फट गई। सीना चाक हो चुका था। ज़रा-सी लड़ाई हुई। चौधरी दुनिया-जहान से जाते रहे। पहले एक गिरा, फिर दूसरा भी गिर गया। लहू गर्म था, स्रोत फूट रहे थे, ज़ख्म घातक थे। चौधरी मुकाबला कर ही नहीं रुके। ज़रा-सी आवाज़ भी न निकली। एक ही वार में मेहताब सिंह ने एक की गर्दन झटका दी। उजाड़ में कौन किसकी सुनता है? घोड़ियां भाग-दौड़ गईं।

सुक्खा सिंह बोला—मेहताब सिंह, इन दोनों की वर्दियां उतार लें। थैलियां कब्जे में करें और इन्हें ठिकाने लगा दें, ताकि दो-चार दिन शोर न मचे।

उन्होंने दोनों की वर्दियां उतार लीं, आलिफ़ नंगा करके घसीट कर उन्हें कुएं में फेंक दिया। दोनों सिंहों ने वर्दियां और थैलियां बगल में दबाईं और तरनतारन पहुंच कर दम लिया। पीछे वाले भी आ मिले। आगे वाले पहले ही इन्तजार कर रहे थे। सब कुछ समेट लिया और सिंहों को फिर मुक्त कर दिया।

मेहताब सिंह और सुक्खा सिंह ने वर्दियों को अच्छी तरह धोया और पिछली कोठरी में बैठ कर उन्हें सुखाया।

घोड़ियां जब वापस पहुंचीं, तो पट्टी के लोगों के होश उड़ गए।

—यह काम ज़रूर सिंहों का है। किसी ने कहा।

—सिंह कहां है?

—हिरन हो गए।

अलम्बरदारों की बेगमें घोड़ियों के गले लग कर रो रही थीं। सफ बिछ गई सारी पट्टी में। मुजरे का नशा उतर गया। पर लाशें किसी को न मिलीं।

शक कसूर वालों पर भी गया।

इसी हलचल में सिंह अपने ठिकानों पर डट गए।

—सांप निकल गया। सारे पट्टी वाले अब लकीर पीटो।

बादलों को चीरता हुआ चांद मुस्करा रहा था।

तरनतारन के कोढ़ी घर में उसी दिन दोहरा कड़ाह प्रसाद बांटा गया।



खड़खड़िया सांप

जोगियों, नाथों, विधिचदियों और अमृतसर में बचे-गुचे सिहों ने मिलकर अमृतसर के चारों कोने सम्माल लिए। नाथों ने ब्रह्म बूटियों के अखाड़ों के स्थान पर अपनी धूनियां रमा ली। चिमटे पर चिमटा बजने लगा। कुछ साधु, जो सखी सरवरो के वेश मे थे, शहर के बीच की कब्र पर रोट पकाने लगे। कोई किसी को नहीं जानता था और न ही पहचानने की कोशिश करता था। रात को किसी गोष्ठी मे भले ही किसी का किसी से मिलाप हो जाए। इस तरह एक-दूसरे का हाल जान लेते। वैसे सखी सरवरो का बड़ा ज़ोर था। मुसलमान पीरों, नाथों और जोगियों मे कोई फर्क नही था। शक्ल-सूरत सब की एक-सी थी। लम्बे-लम्बे चोगे, खुले। पीछे फेंके हुए बाल। माथे पर भभूत। मस्सा अपने सरूर में मस्त था। उसे क्या मालूम था कि हाथी कहां झूमता है।

एक दिन मुजरा हो रहा था। नाचने वालियां नाच-नाच कर बेहाल हो रही थीं। उनके पांवों ने हरिमन्दिर के चिकने फर्श को छील डाला। मेहंदी उतर गई बेचारियों की। लेकिन मस्सा रंघड़ ने उसका मूल्य भी न चुकाया। नाचने वालियां अन्दर ही अन्दर खीज रही थीं। जल-भुन कर कोयला हो रही थी गुल्लू बाई। मन मे खूब भुन रही थी, लेकिन हाथ मल कर रह जाती।

हरामजादी, नाचते वक्त भी शरमाती है। इतना ही परदा था, तो किसी हरम में बैठ जाती।

—हरम में हमें कौन जाने देता है?

—पंखनुची कबूतरी को कौन दड़बे में घुसने देगा।

—पख भी तो आप ही ने नोचे हैं। नोचने वाला और तो कोई नही था। घर से तो हम पकीज़ा आई थीं।

—मुझे क्या बाड़ा बनाना है, आम खाने वाले को पेड़ गिनने से क्या मतलब?

—हम किसकी झाड़ झोंकें?

—इस कुटनी गुल्लू बाई का, जो टके गिन लेती है। बुढ़िया रंडी और तेल का उजाड़।

छिपकली की तरह उसने बल खाया, सर्पिनी की तरह तड़पी। गुल्लू बाई के तन-बदन में आग लग गई—खाने-पीने के लिए बिलाव, डंडे खाने के लिए रीछ। वह बोली।

—बड़ी बदजबान हो गई है, री गश्ती। अरी कमज़ात। लाहौर में अपने सिर में राख डलवा आई है और अब यहा क्या करने आई है। मस्से को गुस्सा आ गया।

—हुजूर, मैं तो खिदमतगार हू।

—जिस आदमी के तेरे जैसे चार खिदमतगार हों, उसे दुश्मनो की क्या ज़रूरत है।

—वह कैसे?

—मेरे सामने कव्वाली वालो की मुट्ठिया भरती है। प्यारों का कलेजा जलाने के लिए।

—वो तो सखी सरवर के चेले है। मैं सलाम करने गई थी।

—लोग तो पीठ-पीछे यार पीटते हैं। तू तो सामने चरखा डाल बैठी है।

—मेरी रहमतों ने चौधरी को पगड़ी बधवाई चौधराहट की। और आज मेरी ही भरी महफिल में चोटी उखाड़ी जा रही है। हमारी बिल्ली और हमसे ही म्याऊ।

—मैंने मुहरों से तेरे घर भर दिए है। फिर भी अहसान बाकी रह गया है?

—मैं मुहरो को आग लगाऊं?

—जिसे पहिलन झोटी दुहने को मिल जाए, वह खांगड का सिर चाटेगा?

—हुजूर, कस्तूरी जितनी पुरानी हो, उतनी ही अच्छी होती है।

—मुश्क काफूर की पोटली मे बांधे फिर। ला, शराब की सुराही। तूने तो नशा ही उतार दिया।

—नई शराब कौन पीता है? पुरानी और दबा कर रखी गई शराब में ही नशा होता है। आज पुरानी शराब को ही होठो से लगाओ।

—ज़बान बन्द कर, गश्ती। तेरी ज़बान काटनी पड़ेगी। मस्सा रंघड़ नशे में था।

—यही इनाम मिलना था न। गुल्लू बाई की आखें आसुओ से भर आईं।

—रोने लगी, कुलच्छिनी। इस कुतिया कमज़ात का सिर मूंड दो। यह ऐसे पीछा नहीं छोड़ेगी।

—हजूर।...

—हुक्म की तामील की जाए।

जी हुजूरियो, खुशामदियो और चमचो ने बात को बीच में ही लपक लिया

और नाई को बुलवा लिया । खुदा के सामने, हरिमन्दिर के गर्भ में ही गुल्लू बाई का सिर मूंड दिया गया। बाकी सब लोग बटेरों की तरह खिसक गए। शराब में अन्धा हुआ मस्सा रंघड़ बेसुध हो गया। गुल्लू बाई रोते-चिल्लाते हरिमन्दिर से बाहर आ गई।

रहमत कव्वाल, जिनका डेरा लाची बेर के पास था, कानों को हाथ लगाने लगे। अच्छा नहीं किया चौधरी ने। यह ज़ुल्म। अति का खुदा से वैर होता है। मस्सा रंघड को खुदा की खुदाई याद नहीं रही।

गुल्लू बाई पागलों की तरह रोती-चिल्लाती दर्शनी ड्योढ़ी का दरवाजा पार कर गई। बाकी नाचने वालियां भी एक-एक करके झरने लगी। तबले उलटे हो गए। सारंगी का तार टूट गया। अकेला मस्सा रंघड़ नशे मे बेहोश हुआ बड़बड़ा रहा था—सिंह काफ़िर हैं। मैं इन्हें कच्चा चबा जाऊंगा। मेरे जीते-जी सिंह अमृतसर मे पांव नही रख सकता। इन काफिरों ने अति कर रखी है। मैं इनका बीज नष्ट कर दूंगा।

—सिक्ख आ गए। सिक्ख आ गए। एक नचनी गश खाकर गिरी और उसके गले से यह आवाज निकली।

—कहां हैं सिक्ख ?

—हिरन हो गए।

सिंह नहीं होंगे, सिंहों का भूत होगा।

—सिंह काफिर। उन्होंने मेरी नींद हराम कर दी है। मस्सा रंघड़ बड़बड़ा रहा था।

गुल्लू बाई की चीखों ने अमृतसर की गलियों की आंखों में आंसू ला दिए। उसका मुंडा हुआ सिर देख कर गलियों के तिनके भी रो दिए।

लेकिन सर्पिनी बल खा रही थी। उसके माथे से पसीना चू रहा था। ●●

नकली चेहरे

गुप्त गोष्ठियों में बिजला सिंह, मनसा सिंह, धारा सिंह, पारा सिंह दिखाई देने लगे, सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह के साथ। उनके साथ नार्थों के अगुआ भी बैठे रहते।

बिजला सिंह बोला—लो भाइयो, जरा गौर से सुन लो। फिर मत कहना कि मैंने किसी को धोखे में रखा है। पहले पहल जब मेरी मुलाकात सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह से हुई, तब मैं यों ही, यतीम किस्म का आदमी था और मेरा नाम था योगराज। क्यों भाई, ठीक है न? मेरे साथ एक चौधरी था गगा सिंह। हम दोनों ने लक्खी जंगल में तुम्हारे दर्शन किए और तब तुम मुझे जोगा-जोगा कहने लगे। मैं जोगा के नाम से ही मशहूर हो गया। पूछने वालों ने मेरी जाति पूछी, तो एक दिन बतानी ही पड़ी। कब तक छुपाए रख सकता था? आखिर हार कर मैंने भी कह दिया कि मैं भी विधिचंदिया हूं। बस फिर क्या था? मेरे सारे साथी भाइयों की तरह मुझे पास बिठाने लगे और मैं विधि चंदिये का एक अंग बन गया। सारा जत्था चैतन्य था। फिर एक होनी हो गई। यह गुरु की कृपा थी और मेरे जत्थे वालों ने उस रात मुझे गश्ती फौज के अफसर के रूप में देखा। मेरे जत्थे वालों ने भले नाक-मुंह सिकोड़ा, अपने हमजोलियों का सूजा हुआ मुंह भी मैंने देखा, पर यह वक्त की बात थी। ऐसा करना मेरे लिए भी जरूरी था, क्योंकि दो जरनैल इतनी बड़ी कसम खाकर चले हों और रास्ते में ही बांह पर सिर रख कर सो जाएं। इन्हें चैतन्य करना बहुत जरूरी था। सिर पर मौत नाचती हो और वे तलवारों को कोठरी में अमानत रख दें। इतनी बड़ी भूल को झटका देकर न जगाता, तो कैसे चैतन्य होते ये सूरमा? इसलिए मैंने यह करतब किया। मुंडे हुए जोगी और पीठी दारू की कोई पहचान नहीं होती। इच्छा-धारी सर्प की तरह जब जी किया, अपनी देह बदल ली। हम तो वक्त की नब्ज पहचानते हैं, और उसी वक्त ढल जाते हैं। फिर एक तमाशा और हो गया। मांडो वाला तमाशा तो तुम सबने देखा। गुरु की सौगन्ध खाकर कहे मेरे भाई, अगर किसी ने मुझे पहचाना हो। क्यों सिंह जी, तुमने या

तुम्हारे साथियों में से किसी ने या सारी पट्टी के वासियों में से किसी ने मुझे पहचाना हो, तो निचाई वाली ज़मीन पर बैठा कर मुझे सौ जूते मारो। हमने कसब सीखा है। अब मेरा नाम रहमत कव्वाल है और आज से मुझे इसी नाम से बुलाना। धारा सिंह, तुम क्यों हैरान हो रहे हो? मैं वही हूं, तुम्हारा लंगोटिया बिजला सिंह। मैं ही योगराज था और मैं ही जोगा। फौजी अफसर भी मैं ही था और भाड भी मैं। आज कव्वाल भी मै ही हूं। अब कव्वालिया भी हम ही गायेंगे और तुम सुनना। सज्जनो! हम तो चले गए, पीछे तुमने क्या काम किया?

धारा सिंह बोला—कमाल किया। कुर्बान तुम्हारे हुनर पर। तुम्हारे उस्ताद को सौ बार प्रणाम। सारा पंथ तुम्हारे सदके। गुरु की लाज रख ली तुमने। बिजला सिंह रोज-रोज नही जन्मते। अच्छा, अगर हम भी कभी सरदार बनेंगे, तो तुम्हे मुहरों से तोल देंगे। तुम्हारे घर की चौगाठें चादी से मढ़वा देंगे। अगर मेरा दाव लग गया, तो चन्दन की चौकी पर सोने का पत्रा लगवा के बिठाऊंगा। एक बार फिर तुला-दान करवाऊंगा। फिर देखना सगतों को, कैसी वारिश करती हैं।

—जब सरदार बनेंगे, तब सरदारों वाली बातें करेंगे। अभी तो जो कुछ है, वही है। धारा सिंह ने अपनी कहानी शुरू की:

सरकार जब हमे अकेला छोड़कर नौ दो ग्यारह हो गए, तो अमृतसर में हमारी दाल गलना मुश्किल हो गई। पर मैंने आपकी मार खा रखी थी। झट से सखी सरवरी का चेला बन गया। सिर पर बालों का पहले ही अकाल था। जब पगड़ी उतारी, तो सिर तरबूज की तरह चमक उठा। ठोड़ी पर दो-ढाई ही बाल थे। सखी सरवरों ने मुझे बहुत जल्दी कबूल कर लिया और मैं उनके बीच नहला-दहला बनकर रहने लगा। रोज रोट खाने को मिल जाते, और सुक्खा यात्रियों के डेरो से। बाकी सारे पापड़ बेलने आते थे। रोज़ चकमा देकर शाम को हर की पौडी पर ज्योत जला आया करता था। कभी सरोवर में उल्टी डुबकी लगाकर और कभी सीधी। हर रोज लोग हैरान होते, लेकिन मैं सबकी आंखों में मिर्चें झोंक कर अपना धर्म पूरा करता हू। आज भी ज्योत जगा के आया हूं। जब तक सिहो में से एक भी जीव बाकी है, हरिमन्दिर में ज्योत ज़रूर जगेगी। कई बार झाड़ू देने के बहाने गया और ज्योत जला आया। कई बार गुल्लू बाई की पिटारी उठाकर अन्दर गया। जब तक बाई नाचती रही, तब तक उनके साथ रहे और फिर जब रात उतरने पर आई, तो दाव लगाया और चकमा देकर ज्योत जगा दी। यह एक अचमा-सा बन गया था। कभी मैंने खुद यह काम किया और कभी मनसा सिंह ने। कभी हम दोनों उखड़ गए, तो पारा सिंह हमारा गुरु निकला और ज्योत जगा आया। मुसलमानों मे यह बात आम मशहूर है कि हरिमन्दिर मे जिन्न बसते हैं, भूतों का वास है। समझदार और सुलझे हुए आम सिपाही रात को दाव लगते ही खिसक जाते हैं। कई एक लोगों का ख्याल है कि इस हिन्दू

मस्जिद में रात को भूतनियों के सम्राट् का सिंहासन लगता है। ये सब कसब हमारे हैं। लेकिन जो बात सबसे बढ़िया है, वह यह है कि हम सखी सरवरों के चेलों में बहुत मशहूर हैं। जितनी मान्यता यहां हमारी है, उतनी और किसी की नहीं है। हम चाहे रोज़ ग़ुसल नहीं करते, पर फिर भी हर रोज चार बार सरोवर के जल से वुज़ू जरूर करते है। मैं तो नित्य नियम से स्नान जरूर करता हूं। इसलिए मैं तुम सबसे ज्यादा खुशकिस्मत हूं। आज भी जब जिसका जी चाहे, मेरे साथ स्नान कर ले। हमें किसी का डर नहीं है। हमें कभी कोई नहीं टोकता।

अब बारी आई सुक्खा सिंह की। बोला—हमारे सभी साथी चाहे अमृतसर पहुंच गए हैं, लेकिन हम सबसे मिल नहीं पाए हैं। बिजला सिंह का कहना ठीक है। ना-ना, भूल हो गई। बिजला सिंह नहीं, रहमत कव्वाल। सब अपनी-अपनी ठौर बनाकर बैठे है और उन सबकी नज़रें हरिमन्दिर साहब पर हैं।

मेहताब सिंह ने पूछा—अब क्या हुक्म है?

जोगा बोला—सिंह साहिब, इसके बारे में कल तुम्हें बतायेंगे कव्वालियां सुनो, मज़ा लूटो और अपनी धूनियों में मस्त रहो। मैंने नकली चेहरे का खोल पहन लिया है। मैं जा रहा हूं गुल्लू बाई के डेरे पर, अफसोस जाहिर करने। बेचारी के साथ बहुत बुरा हुआ है। सिर मुंडवा दिया। कोई बात नहीं, चोट खाई सर्पिनी अगर डसेगी, तो यही कहेगी, परे होकर गिर। उसके डसे हुए कभी पानी भी नहीं मांग सकेंगे। अच्छा भाई, गुरु राखा।

कुत्ता मुंह उठाकर रो रहा था। सारी रात रोता रहा।

हरिमन्दिर के दरवाजे के पास टंगी हुई मशाल की लौ मद्धिम न हुई। कुत्ते ने अपना मुंह हरिमन्दिर की तरफ कर रखा था। एक तारा टूटा और उसकी चमक सारे आसमान में फैल गई।

००

चरखा कौन चलाए ?

रहमत कव्वाल, बिजला सिंह के मुंह पर चढ़ा हुआ मखौटा, काला स्याह बाना, खुली बावरियां, गले में मोटे-मोटे मनकों की माला, हाथ मे कमंडल और मेहराब के निशान, जैसे कोई पीर अभी-अभी सरहंद से आया हो। रहमत कव्वाल ने सुक्खा सिंह को भी अपने रूप मे ढाल लिया। रहमत कव्वाल का हाथ लगा हो और सुक्खा सिंह पहचाना जाए ? नामुमकिन। हाथ न कट जाएं।

रहमत बोला—बाई के घर जा रहे हैं। जली भुनी बैठी होगी। जरा-सा तेल डालकर देखो, कैसे लपटें उठती हैं। बात करके देखेंगे, शायद अपना अतस् उगल दे और हमारे सारे रास्ते साफ हो जाएं।

—बात तो बढ़िया है। हमदर्दी जताओ और उसके दुःख में साझेदारी बनाओ। गुल्लू बाई हमारे बड़े काम आ सकती है।

रहमत ने जाकर गुल्लू बाई की दहलीज पार की। सुक्खा सिंह भी साथ था। वह भी बिना झिझक अन्दर जा घुसा। जाते ही सिर पकड़ कर बैठ गए, जैसे अभी-अभी बाप मरा हो।

—बहुत बुरा हुआ, बाई जी। इतनी अति। मस्सा रंघड़ ने तो कमाल ही कर दी। शैतान का भी गुरु निकला। खुदा की खुदाई भूल गया चौधरी। रहमत ने कहा।

—मुझे तो फांक डाला उसने। उसका कुछ न बचे। जवानी से जाए। खुदा उसे पहले हल्ले में ही उठाए। किसी और की मौत उसे लग जाए। मैं जली-भुनी बैठी हूं। बद्दुआ ही दे सकती हूं। बाई के आसू ही नहीं थम रहे थे।

—अल्लाह के हुजूर में देर है, अन्धेर नहीं है, रहमत ने कहा।

रहमत, हमारा अल्लाह पता नहीं कहां जा छुपा है। मुझे तो लगता है, अल्लाह नादिरशाह बन गया है। चुटिया कटी होती, तो मैं छुपा लेती। नाक कटी होती, तो मुंह पर कपड़ा दे लेती। लेकिन मुंडे हुए सिर को किससे छुपाऊं ? बुरी शामत से अमृतसर मे बैठी हूं। अगर लाहौर मे होती, तो खून पी जाती। दिन न चढ़ने देती और इसका बदला ले लेती।

रहमत कव्वाल ने उसे जरा-सा और टटोला—चौधरी ने तुम्हारी जरा भी दाद-फरियाद न सुनी। तुम्हारे तो कौर साझे थे। चावल-शक्कर तो तुम दोनों एक ही परात में खाते थे!

—नशे में धुत्त हाकिम और माथे पर सवार हराम। बस, उसने बात को जमीन पर भी नहीं गिरने दिया। मेरी उसने एक न सुनी। साम ही तब ली, जब उसने मेरा झाटा मूंड कर मेरे हाथ में थमा दिए। मैं दोहत्थड़ पीटती, उसका स्यापा करती घर लौट आई। कच्ची उम्र की लड़कियों को वह पक्के आम की तरह चूस जाता है। गोरे रंग पर तो मतवाला हुआ घूमता है। मेरा खाना खराब हो गया है, रहमत। मुझे तो दोनों जहान में अब जगह नहीं मिलेगी। जमीन अब मेरे पैरों को झेलती नहीं। कौन-सा मुंह लेकर घर से बाहर निकलूं? किसी को क्या बताऊं कि मेरे साथ क्या हुआ है? मैंने इज्जत बेची, मान बेचा, रूप को सूप में डाल कर उड़ाया। घर की लाज सरे-बाज़ार नीलाम की। मैंने सिंह-धड़ की बाज़ी लगाई और उस कुत्ते को चौधरी की पगड़ी दिलवाई। मैंने जकरिया खां के जाने कितने अहसान सहे, कितने उलाहने उतारे। जाने कितनी अनहोनियां उसके साथ मिल कर कीं, और इस कमबख्त को अमृतसर का चौधरी बनवाया। लेकिन इस बेईमान ने काला नाग बन कर मुझे डसा है। डायन भी चार घर छोड़ देती है। लेकिन इसने एक घर भी नहीं छोड़ा। अल्लाह करे, इसका कुछ न बचे। इस दोजखी ने यदीद से चार हाथ लंबी छलांग लगाई है। बिजली गिरे और इसका खाना खराब हो जाये। गुल्लू बाई के आंसुओं से उसके हाथ धुल रहे थे।

—कहते हैं, पाप का घड़ा भर कर फूटता है।

यह कोई पहले की बात होगी। जब लोग फरिश्ते होते होंगे आज तो जालिम को कहीं ताप भी नहीं चढ़ता।

—ठीक है, खुदा तो देखता है।

—खुदा आजकल कहां है? वह तो आजकल सिंहों के डेरे में बैठा हुआ है।

—सिंह तो पहाड़ों पर चढ़े हुए हैं। सिंह यहां कहां? अमृतसर में आ कर वे अपनी गरदन कटवायेंगे? रहमत ने कहा।

—जाने सिंहों को कौन सा दौरा पड़ गया है। कोई नजर ही नहीं आता।

—बेचारे सिंहों का क्या है। वे तो जान बचाते घूमते हैं।

—यह तो झूठ बात है, रहमत। जो डर जाये, वह सिंह नहीं। कोई आसपास रहता हो, तो बताओ, ताकि मैं उसके सामने जाकर अपना दुखड़ा रोऊं। लेकिन आजकल सिंह सोंठ की गांठ हो गये हैं।

—सिंह खुदा-तरस बन्दे हैं। वे इस जुल्मी की गर्दन ज़रूर उतारेंगे। मुगलों को तो यह बगल में दबाये घूमता है।

—रहमत, मेरी फरियाद सिंहों तक पहुंचा दो।

—अमृतसर में मस्सा रंघड़ के आदमी कुलबुलाते घूमते हैं। सिंह आटे में नमक के बराबर हैं। वे पहाड़ से कैसे टकरायें ?

—जैसे लाहौर लूटा था, वैसे ही अमृतसर को लूटें। नादिर की फौज को लूटना सिर्फ सिक्खों के ही बस की बात थी। इस मरदूद पर खुदाई कहर नहीं टूटेगा।

—जब तक मस्सा रघड़ अमृतसर में है, सिंह अमृतसर में पैर तक नहीं रखेंगे।

—रहमत, अगर सिंहों तक तुम्हारी कोई पहुंच नहीं है, तो अपने पीर के ही पांव पकड़ो, वही इसे उठायें।

—बाई जी, कौवों के कहने से ढोर नही मरते। अगर सिंह आ भी जायें, तो मस्सा रघड़ तक कैसे पहुंचें ?

—लगता है, कलंदर सुल्फ़े का दम मार कर आये हैं। इन मूजियों का क्या है ? कल सब को ईरान की सूखी माजून-शराब बांटी जायेगी। हर आदमी नशे में होगा। तीखी दोपहर मे घोड़े बेच कर सोये होते हैं सिपाही। मस्सा रंघड कोई हौवा है ? उसे अपना होश नही है। उस वक्त अन्दर चले जाना कोई मुश्किल काम नही है। साथ ही हरिमन्दिर के चारो ओर कोई गढी तो है नहीं। जुमेरात को ये लोग दीन-दुनिया से बेखबर होते हैं। रहमत, मैं तुम्हारी उस्तादिन हूं। मेरे अपमान का बदला लो, तब मेरे कलेजे में ठण्डक पहुंचेगी।

—बाई जी, मैं अपनी जान पर खेल सकता हूं, लेकिन सिंहों के पास जाते हुए मेरी अपनी जान हवा होती है। आदमी शेरों के पास कैसे जाये ?

—मेरे लिए, मेरे वास्ते, खुदा के वास्ते। यह लो, मुहरों की पोटली ले जाओ और कड़ाह प्रसाद करवा दो। शायद किसी के मन में मेहर पड़ जाये। गुल्लू बाई के आंसू थम ही नही रहे थे।—तुम ही समझाओ, पीर जी, रहमत को। इसके दिमाग मे भी कोई बात बैठे। सिंह बड़े भले लोग हैं। यह यों ही डरता है।

—बाई जी, मैं आपका बदला जरूर लूंगा। मैं पीर की दरगाह पर दुआ मांगने जाता हूं।

—खुदा तुम्हारी दुआ कबूल करे। गुल्लू बाई ने कहा।

सुक्खा सिंह और रहमत गुल्लू बाई को धीरज की थपकियां देकर उसके घर से निकल आये।

चरखा बिछा कर बैठी गूल्लू बाई का चरखा कौन काते।

जुमे रात

--पीरों के पीर, जाहिरा पीर रहमत। रहमतुल्ला साईं रहमत, तेरी तस्वीह को नौ सलाम। तेरे कसब को सात सलाम। जुमे रात से बेहतर दिन और कौन-सा हो सकता है? सुक्खा सिंह ने कहा।

—गुरु की लाडली फौजें ऐसा नहीं कहेंगी, तो और कौन कहेगा? फाल तो खूब निकली है, खालसा जी। गुल्लू बाई के आंसू देखे नहीं जाते। बेचारी के साथ बहुत बुरा हुआ है। ये हाकिम किसी के मीत नहीं। भवरा और हाकिम भी कभी किसी का मित्र बना है?

रहमत ने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि मेहताब आ गया और उसने आ कर फतेह बुलाई।

—हम नाथों के डेरे पर बैठे-बैठे सूख गये। मैंने समझा कि तुम लोग रफा हो गये। नाथों ने भी सारे अमृतसर का पत्ता-पत्ता छान मारा। न तुम मिले न तुम्हारी परछाईं। मेहताब सिंह बोला।

—हम लोग अभी-अभी गुल्लू बाई के डेरे से आये है।

—कौन गुल्लू बाई?

—नवाब ज़करिया खां की रखैल।

—ढोलक लेने गये थे या घुंघरू?

—कव्वाली के बोल सीखने गया था रहमत। लेकिन इसका जी मेंहदी लेने को भी चाहता था। मुझ से झिझक गया।

—यह भाड से कव्वाल कब बन गया?

—नाथों के चिमटे और मदारी के डंडे से किसने पार पाया है?

—खालसा जी, मुझे तो छुट्टी दो।

—मुझे तो साथियों को जगाना है। सवेरे से सुक्खा पी कर उलटे हुए हैं। कल हमारा सारा दिन कव्वालियों में ही जायेगा। लाची बेर के तने के पास हमारा डेरा लगेगा, वहीं मेल होगा। अपनी बात कह कर रहमत अपनी राह चलने के लिए उठ खड़ा हुआ।

मेहताब सिंह ने उसे बाह से पकड़ कर बैठा लिया—हमें किसके सहारे छोड़ चले हो ?

—एक दाना निकाल कर लोग पूरी देगची का अंदाज़ लगा लेते हैं। मैंने तो सुक्खा सिंह को देगची की खरचन तक उतार कर दिखा दी है। अब यह जाने और इसका काम।

—दबी राख मे यों ही चिंगारी चमकी है। हवा देना तो तुम्हारा काम है। कल अरदास हो जाये। सुक्खा सिंह ने कहा।

—मैं कुछ इशारे बताता हूं। सिंह तैयार रहें। सखी सरवरों की टोली जब हरिमन्दिर के सरोवर की प्रदक्षिणा कर रही हो, तब यह समझा जाये कि हरिमन्दिर में प्रवेश करने में कोई खतरा नही है। दूसरे, जब नाथों के चिमटे बजें और धूनी में से लपटें उठें, तो समझा जाए कि सभी साथी चैतन्य हैं। तीसरे, जब सूरज सवा नेजे पर हो, आग बरसती नजर आए, कव्वा-आंख निकलती हो, जमीन तावे की तरह तपती हो, हाल खेलने वाला आदमी जब अल्लाह ही अल्लाह की आह भरे, तो समझो, सिपाही नींद की घोड़ी पर सवार हैं। हाल खेलने वाला आदमी धारा सिंह होगा। इसे बहुत कम लोग देख रहे होंगे। यह सब को देखेगा। हरिमन्दिर के पेडों के नीचे सोए सिपाहियों के बारे में यह पूरी इत्तिला देगा। गूंगे के इशारों की तरह। जब हमारी कव्वाली यौवन पर हो, जब हम वज्द में हों और बाहें उठा-उठाकर तान छेड़ रहे हों, तो समझ लिया जाए कि मस्सा रंघड़ नशे में धुत है। झूम रहा है मस्त हाथी की तरह। हमें अब आज्ञा दो।

धारा सिंह और रहमत कन्नी काट गए। विचारों का रहट चलने लगा, अखाड़ा ब्रह्म बूटी पर बैठी मण्डली धूनी सेंक रही थी, भले ही तीखी दोपहर थी। गर्मी से पसीना तो चू ही रहा था, खून भी टपक रहा था। लेकिन इसके बगैर वे बैठ नही सकते थे। बहुत जरुरी था यह उनके लिए।

सरोवर के जल से भरा हुआ बिजला सिंह का लोटा सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने लिया और पंच-स्नान किया। दूर से ही सिर झुका कर हरिमन्दिर को प्रणाम किया। फिर सखी सरोवर के टोले से आख बचाकर खिसक आए। खिचड़ी पकी हुई थी। घी, दाल और चावल इस तरह मिले हुए थे, जैसे सखी सरवर, सिंह और नाथ। दांव लगा लेना कोई मुश्किल नहीं था। अमृतसर की धरती को नापाक करने वाले मलेच्छ सिंहों को सूंघते फिरते थे। कस्तूरी तो हिरन की नाभि में थी। अमृतसर के हर सहजधारी के घर में एक न एक सिंह का डेरा था—चाहे वह नाथ हो या साधु, सखी सरवरों का चेला या उदासी सन्त। पूरा अमृतसर मेहमानों से भरा हुआ था। गुरु की नगरी में दुतहियां बिछी हुई थी।

दिन निकला। धूप कड़कने लगी। सूरज ने चिंगारियां छोड़ी। आसमान

आग बरसाने लगा। ज़मीन ने रंग बदला। एक नाथ ने धूनी में चिमटा मारा। एक चिंगारी उड़ी, और आधे आसमान तक गई।

एक विधिचंदिया बोला—आज फजल की नमाज़ के साथ ही सिपाहियों को ईरानी माजून की शराब बांटी गई है। सिपाहियों के हाथों में प्याले हैं। मस्सा का हर सिपाही चुस्कियां ले-ले कर पी रहा है। आज का दिन ईद से कम नहीं है। कुछ सिपाही पहरे पर हैं। बाकी टोलियां बनाकर जश्न मना रहे है। गोश्त की देगचियां चढ़ गई हैं। गाय को ज़िबह करके लटका दिया गया है और नीचे आग जल रही है। गोश्त भुन रहा है। परिक्रमा में रासधारी नाच रहा है। जगह-जगह पर बैठी टोलियां रंगरलियां मना रही हैं। मस्त सिपाही कह रहे हैं—खुदा खैर करे। आज की रात कितनी कुआरी लड़कियों का सतीत्व भंग होगा।

रहमत कव्वाल ने अपने वाद्य सीधे किए। सारंगी पर गज फिराया। हाथ से बंधे घुंघरुओं ने जब तबले पर थाप दी, तो समां बंध गया। सारंगी की लय कलेजा चीर गई। रहमत ने जब नाचना शुरू किया, हाथ जोड़कर ताली बजाई, तो एक नए साज़ ने जन्म लिया। कव्वाली आरम्भ हुई। कव्वाली नहीं, मरसिया था। बोल थे :

'जब कर्बला में खाक को नूरे खुदा मिला,
यानी हुसैन मंज़िले-मकसद से आ मिला।
रगे रवां को रुतबा खाके सफ़ा मिला,
ज़र्रा हरेक मेहरे दरख्शा से जा मिला।
चेहरों की ज़ू से चारों तरफ नूर हो गया,
वीराना-ए-गंज हुस्न से महमूर हो गया।'

यह एक इशारा था, जिसे सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने सुना! इसे सदा-ए-ज़र्रा समझ लो या मन्दिर का घड़ियाल। शेरों की तरह आगे बढ़े चेहरों पर तेज उभरा, बदन में फुर्ती आई, हौसले बुलन्द हुए, तियारे कसे और घोड़ियों पर सवार हो गए। घोड़ियों के पांव परिक्रमा में पड़े। घोड़े के नाखून जब पत्थरों पर बजे, तो वहां बिजली चमकी। पहले गुरु के हुजूर में सिर झुकाया। कव्वाल ने अपने बोल फिर दोहराए :

'चेहरों की ज़ू से चारों तरफ नूर हो गया,
वीराना-ए-गंज हुस्न से महमूर हो गया'

अब कैसे चलते है सिर-कटे जवान, जैसे ब्याह के लिए जाते दूल्हे। कैसे गुरु धाम का आंगन चौड़ा करते हैं।

उन्होंने एक बार घोड़ियों को रोका, ज़रा-सा सोचा अभी नाथों की इजाज़त तो मिली नहीं। जोगियों ने अपनी आवाज़ नहीं दी। सखी सरवर अभी सरोवर की परिक्रमा करके नहीं लौटे। हाल खेलने वाला अभी अपने जलाल में

नही आया। पर उन्होंने घोड़ियां निकाल ली थी। उन्होंने एक बार उन्हें ज़रा-सा फिर रोका। चाल देखने के लिए। हरिमन्दिर में मुजरा जोबन पर आ चुका था। सूरूर को गज़-गज भर की लाली चढ़ रही थी। जवानी अठखेलियां कर रही था। पाव की पायल सौ-सौ नखरे कर रही थी :

'बाजूबन्द खुल-खुल जाए,
सांवरिया ने कैसा जादू डारा रे।'

इन बोलों ने मुजरे पर निखार तो ला दिया, लेकिन नशे में धुत लोग राग क्या जानें। ज़मीन-आसमान के कुलावे मिलाए जा रहे थे। रंडी के घुंघरूओं ने एक बार सबको झूमने पर मजबूर कर दिया। शराब के प्याले अदल-बदल कर पिए जा रहे थे।

रंडी ने जब देखा कि मुहरों की बारिश बन्द होने लगी है, तो उसने झट से मद्धिम और सुरीली लय छेड़ी। बोली :

कोयलिया मत कर पुकार
करेजवा लागे कटार'

इधर रहमत कव्वाल के बोल भी उभरे। ऊंची-ऊंची वाह ललकार रही थी :

'आओ, आओ, मुहम्मद आओ।'

ये बोल जब रहमत कव्वाल ने अपने कण्ठ से निकाले, तो वह वज्द में आ गया और हाथ उठा-उठा कर तानें छेड़ने लगा। सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह अब चैतन्य थे। तानें छिड़ती रही और बोल उभरते रहे।

हरिमन्दिर के गर्भ में बहार गाई जा रही थी। मौसम पाले ही नहीं था। सुरीली, मधुर और सोज़ भरी आवाज़ बाहर तक सुनाई देती :

'कोयलिया मत कर पुकार,
करेजवा लागे कटार'



मोहे मरने का चाव

बेरियों के झुरमुट में से पट्टी के दो सवार निकले। सजी-सवरी घोड़िया, शाही वर्दिया, हरे रंग की पगड़िया, हाथों में मामले की थैलिया। कमर में लहू की प्यासी तलवारें। चेहरे पर जलाल। लाल-लाल, जलती हुई आखें। शरीर में बल। शेरों जैसे जवान। देखते ही भूख मिट जाए। ऐसा लगे जैसे लाहौर दरबार के वली अहद आ रहे हों। पगड़ियो पर पटके शाही निशान वाले। तलवारो की पट्टियां जरी से कढी हुई। मचेरू घोड़िया बदन पर मक्खी तक न बैठने देती। किसी राजा के पूत बड़े जलाल और रौब से चले आ रहे थे। हरिमन्दिर की परिक्रमा को सजदा करते। इशारो से आखें बचाकर नमस्कार किया। ये जवान कौन थे? कहा से आए? क्या करने के लिए आए? क्यों आए? इनके पैंतरे तो देखिए। बाजीगर हैं बीकानेर के। मजा आएगा। ये जवान देखने मे पट्टी के अलमबरदार हैं, लेकिन सच बात यह है कि इनमें से एक का नाम सुक्खा सिंह है और दूसरे का महताब सिंह। मुसलमानी लिबास। शक्ल-सूरत भी इस्लामी। मौत की बारात चढ़ने जा रहे हैं। सूरमा मौत को ब्याहने जा रहे हैं। चमड़ी में रत्ती भर भय नही। जरा, देखिए तो किस अन्दाज से चले जा रहे हैं।

मुंह जोर घोड़ियां। तनी हुई लगामें। काबू मे नहीं आ रही हैं। लेकिन शेरों के बेटों ने उन्हें अपने हाथ में कर रखा है।

—कौन हैं ये?

—चौधरी लगते हैं।

—जाने-पहचाने तो लगते नही।

—लाहौर से आए होंगे या कसूर से। चौधरियों से तो चौधरी ही मिलने आ सकते हैं।

—क्या बांके जवान है लाठियों जैसे कद वाले।

—घोड़ियां बिल्कुल एक ही सांचे से निकली मालूम पडती हैं।

—जवान भी किसी एक ही हाथ के बनाए लगते हैं। खैर, कुछ भी हो, अल्लाह बचाए बुरी नजरो से।

घोड़ियां ठुमक-ठुमक चलती जा रही थीं। शराब में मस्त हुए सिपाही चौधरियों को झुक-झुक कर सलाम कर रहे थे। अनेक ने कदम बोसी की। सवार अपने गरूर में जवाब देते। घोड़ियां जैसे-जैसे आगे बढ़ती, सिपाही रास्ता छोड़ देते और नशे में झूमते हुए कहते—बामुला-हिज़ा होशियार।

नाथों ने चिमटे बजाए। धूनी की आग को टटोला। लपटें उठीं। सवार हरिमन्दिर की ओर बढ रहे थे। सखी सरवरों की टोली प्रदक्षिणा कर चुकी थी। हाल खेलने वाले ने 'अल्लाह ही अल्लाह' की आवाज़ लगाई।

बाबे बुड्ढे की बेरी पार करने पर सामने अकाल तख्त नज़र आया। सवारों ने आख झपकने से भी कम समय में सिर झुकाया और सीधा कर लिया। कोई देख नही सका। घोड़ियां भी सुरूर में आ रही थीं। जवान थड़ा साहिब के आंगन में आ पहुंचे। कव्वालियां गाने वाला रहमत कह रहा था :

'कर्बला मे जब हुसैन आए थे
जमी ने सजदे किए झुका आसमां आगे'

चौधरियो की शक्ल देखते ही सिपाहियों के पसीने छूट गए। नशा नही टूटा था, लेकिन फौरन उठ खड़े हुए।

—पहरे पर कौन है ? चौधरी ने पूछा।

—हम है, सरकार।

—पहरा ऐसे दिया जाता है ?

—नहीं सरकार, तीखी दोपहर में तो आदमी वैसे ही बौरा जाता है। यों ही, जरा-सा छाह मे बैठे थे।

नमकहराम ! सवारों ने छलांगें लगाईं और घोड़ियों से उतर आए। घोड़ियों को उन्होंने आगे बढ कर पकड़ा।

—सामने, पेड़ के साथ बाध दो। जरा होशियार रहना, ये पेड़ उखाड़ कर भाग न जाएं।

—नही, सरकार।

चौधरियों के तेज और जलाल ने सिपाहियों के रंग उडा दिए। दोनों जवानों ने दर्शनी ड्योढी का दरवाजा पार किया। गर्दन अकड़ा कर, जैसे कोई मगरूर महल के दरवाज़े से निकला हो। पर नही, उन्होंने एक बार गुरु का ध्यान किया। सिर झुका कर नमस्कार किया। यह कसब उनका अपना था। न किसी ने देखा और न ही किसी ने आख मिलाने की जुर्रत की। सिपाही थर-थर कांप रहे थे।

रहमत कव्वाल तान छेड़े जा रहा था :

'कर्बला मे जब मुहम्मद आए थे,
जमी ने सजदे किए झुका आसमां आगे'

चौधरियों ने मोहरों वाली थैलियां खनकाई और एक मुट्ठी मोहरें सिपाहियों की तरफ उछाल दीं। कव्वाली को रोक कर रहमत बोला—कौन हैं ये ?

—कोई चौधरी लगते हैं। या मामला देने आए हैं। या कोई शाही पैगाम लेकर आए हैं।

—रोका नहीं ?

—रोक कर मरना है ? हमारी तो हिम्मत ही पस्त हो गई। हमारी आखें चुंधिया गई। उनके जलाल के आगे हमारी आख नही टिक सकती। खैर... आदमी बहुत दिलेर हैं। बड़े सखी और दयालु लगते हैं।

चौधरी सीधे हरिमन्दिर की ओर गए। कभी पुल पर पांव रखते। कभी धरती से ऊंचा, कभी धरती पर। मतलब यह कि धरती पर उनके पाव नही पड रहे थे।

घुंघरू खनक रहे थे। तबला बहक रहा था। रंडी नाच रही थी। आवाज़ सुरीली, सोज़ भरी, लचीली और कशिश भरी थी। एक बार तो पाव रुक गए। फिर बड़ी जवांमर्दी से वे आगे बढ़े। फिर और आगे। जब उन्होंने देखा कि मुजरा हो रहा है, उनकी आखों से चिंगारियां फूट निकलीं। चेहरा लाल सुर्ख हो गया, लेकिन उन्होंने अपने आप पर काबू रखा और ओछे हथियारों पर नहीं आए।

दरवाज़े पर एक पहरेदार बैठा था। बोला—कहां से आए हो ? कौन हो ?

— चौधरी है पट्टी के। मामला चुकाने आए हैं।

—आने दो। मामला लेकर आने वाले भले लोग हैं। मस्सा रंघड़ ने कहा।

चौधरी भीतर चले गए। दो-चार शराबी मस्सा रंघड के सामने बैठे हुए थे। सद्गुरु के दरबार में हुक्का रखा हुआ था। शराब और सुराही नजर आई। मस्सा पलंग बिछा कर बैठा हुआ था। बस, फिर क्या था। सिंह गुस्से मे आ गए। खून खौल उठा। होंठ फड़के। नाड़ी-नाड़ी फूल गई। हाथ तलवार की मूठ की तरफ़ बढ़ ही रहा था कि वे रुक गए।

—आओ, आगे आओ। झिझको नहीं। डरने की कोई बात नहीं है। इस जन्नत पर अब मेरा कब्जा है। सिंह तो मर-खप गए। यहां अब मस्सा रंघड़ का राज है। मामला लाओ। बहुत अच्छा किया तुम लोगों ने। मामला खुद दाखिल कराने वालों को हुकूमत बहुत मरतबे बख्शती है।

सुक्खा सिंह ने झुक कर सलाम किया और तलवार उतार कर जमीन पर रख दी। जरा-सा डरा, कुछ सहमा, फिर बोला—हुजूर, मेरी तो टागें कांपती हैं। इस मस्जिद में पांव धरते मुझे तो डर लगता है। मौत दिखाई देती है। सिंहों की परछाइयां नजर आती हैं। हम तो आगे नही बढ़ेंगे। यह सिंहों के पीरों का स्थान है। वे बड़े करामती हैं।

—अरे मूर्खो ! करामतें सब दूर हो गईं। हुक्का, शराब और नाच सब

फकीरों को नष्ट कर देता है तुम तो प्याले भर-भर के पियो । प्याऊ लगा हुआ है ।

—नहीं, सरकार, हमें तो डर लगता है ।

—बड़े डरपोक हो । अच्छा फैंक दो थैलिया ।

सुक्खा सिंह जरा-सा पीछे हट गया ।

उसने थैली फैंक दी ।

अब बारी आई मेहताब सिंह की । उसने भी तलवार को कमर से खोलकर नीचे रख दिया ।

—ठीक है । तुम भी फैंक दो । अरे मूर्खो, चौधरी बड़ी दूर से आए हैं, शराब के प्याले भर के दो ।

—हुजूर, इतनी गुस्ताखी । हुजूर के सामने हम शराब पिएं ।

नचनी ने एक चक्कर लगाया और अपनी कमर को बल-सा दिया । मस्सा उसी से झूम उठा । शराब उस पर सवार थी ।

—लाओ, थैली मैं खोलूं और आज इसी में से इसकी झोली भर दूं । यह क्या याद करेगी कि किसी रईस से पाला पड़ा था ।

असल में दोनों थैलियां इस तरह फैंकी गई थीं कि वे पलंग के नीचे जाकर गिरी थीं ।

—घुंघरू बज रहे थे । सारंगी कूक रही थी । तबला चहक रहा था ।

मस्सा रंघड़ थैलिया उठाने के लिए खुद ही झुका ।

जोश जागा । खून खौला । मेहताब सिंह आगे था और सुक्खा सिंह उसके पीछे । उसने आख भी नहीं झपकने दी, अपनी तलवार फर्श से उठा ली और खींचकर भरपूर वार किया—गुरु का नाम लेकर । सूअर जैसी गर्दन तलवार का एक वार भी न झेल सकी । सूरमाओं ने सिर काट दिया । इतनी देर में मेहताब सिंह भी तलवार सम्भाल चुका था ।

लहू का फौवारा छूटा । पलंग लहू से नहा गया । फर्श भी लहू-लुहान हो गया ।

नचनी नाच भूल गई । तबला थम गया । सारंगी गूंगी हो गई ।

सुक्खा सिंह ने आगे बढ़कर मस्सा रंघड़ की गर्दन को बालों से पकड़ लिया । मेहताब सिंह ने पहरेदार के दो टुकड़े कर दिए । साजिंदे या तो भाग गए, या तालाब मे डूब गए ।

मेहताब सिंह बोला—यहीं खड़े रहो अगर जान की अमान चाहते हो तो । आगे बढो रे । थैलिया निकालो पलंग के नीचे से ।

लम्बे बालो वाले एक आदमी ने पलग के नीचे से थैलियां निकाली और सामने रख दी । उसका सारा शरीर पत्ते की तरह डोल रहा था । मेहताब सिंह ने जोश में आकर तलवार का एक हाथ मारा, तबलची तो बच गया, लेकिन रंडी की शामत आ गई । घुंघरूओं वाली टाग के दो टुकडे हो गए ।

दहशत छा गई। भय ने सारे अखाड़े को दुर्बल बना दिया।

सुक्खा सिंह बोला—चलो, हरकी पौडी से चरणामृत तो ले ले। फिर चलें गुरु की नगरी। अब अगर शहर भी जाएंगे, तो कोई परवाह नहीं है।

चरणामृत लिया और बालो से पकड़ा मस्से का सिर। लहू-भीगी तलवार हाथ में। डरे हुए लोग मिट्टी की मूरतों की तरह सुन्न थे। कही एक कतरा रक्त का नही था, जो हरकत कर रहा हो।

रक्त के कतरे फर्श पर गिर रहे थे, पर जवान वीर-बहादुर पूरे जोश में बाहर आए। आते ही मेहताब ने थैलियो का मुँह खोला और मुट्ठिया भर-भर कर सिपाहियो की तरफ़ फेंकने लगा। लेकिन सिपाहियो ने जब मस्से रघड़ का सिर देखा, तो गश खाकर गिर पड़े।

रहमत कव्वाल ने घोड़िया खोलकर हाजिर की। असल मे उसने घोडियां पहले से ही खोल रखी थी, जब उसने देखा था कि जवान मर्द मस्सा रघड़ का सिर लेकर आ रहे है।

—गुरु राखा। रहमत कव्वाल ने कहा।

सिपाहियों के दबे गली से आवाज निकली—सिंह।

जब तक दूसरों ने यह आवाज सुनी, तब तक सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह घोडियों पर सवार हो चुके थे। जब तक वे तैयार हुए, तब तक सूरमा और उनकी घोडियां अमृतसर से निकल कर बहुत दूर जा चुकी थी।

नाथों ने धूनियो में से अपनी तलवारें खीची। सखी सरवरों की टोलियो मे भी तलवारे चमकी और उन्होंने खून-खराबा मचा दिया।

—सिंह। सिंह आ गए। आवाजें तो बहुत थी, लेकिन दबी-दबी।

—मस्सा रंघड़ का सिर लेकर सिंह गायब हो गए।

—खुदा सिंहों को मेरी उम्र दे। जुग-जुग जिएं सिंह। गुल्लू बाई ने चौबारे से देखा और दुआ दी।

रामदास सरोवर नहाते

उधार की फौज फूंक मारते उड़ गई। जिसके सींग जिधर समाए, उसने उधर ही मुंह उठा लिया। कई तलवार की भेंट चढ गए और कई नंगे पांव ही भाग खडे हुए। कई सिपाहियों को सिहों ने मुर्गियों के दड़बों से निकाला—वे वहा जा छुपे थे—और उन्हें तलवार की धार पर उतार दिया। मस्सा रंघड़ के खूनी दरिंदे, जालिम, बहादुर अमान-अमान पुकार रहे थे। मीरे-कारवां का सिर कटा और पूरा कारवा चिदी-चिदी हो गया। किसी ऊंट ने पहाड़ की तरफ थूथन उठा लिया और किसी ने दक्खन की तरफ़। जिसके हाथ में जो ऊंट आया, वह उसी का मालिक बन बैठा। भगोडों का कुल्ला भी किसी के हाथ आ गया, तो उसने उसे भी नही छोड़ा। भागते भूत की लंगोटी ही सही। मतलब यह कि हरिमन्दिर मे तो झाड़ू ही फिर गया। कोई पठान, कोई रंघड, मुगल या सरकारी कर्मचारी नजर नही आता था। सिर्फ चौकियों पर पहरेदार बैठे हुए थे। सिहो ने उन्हें बिल्कुल नही छेड़ा। उससे सुक्खा सिह और मेहताब सिह बहुत दूर निकल गए। रात का फासला पड़ गया बीच में। सूरमा पट्टी तक जा पहुंचे थे। हाहाकार मच गया था—सिंह आ गए। सिंह आ गए। बस, इसी दौड़-भाग मे सिंह ठिकाने तक जा पहुंचे थे। जब खबरो का गोला फटा, तब हाकिमो के दिल में धकधुकी मची और उन्होंने घोड़े कसे। तलवारों को सूरज की धूप दिखाई। पर अब क्या होना था। अन्धे कुत्ते हिरनों के शिकारी। सिर में धूल डलवा के लौट आए। न सिंह मिले, न उनकी परछाईं।

रहमत कव्वाल ने अपना चोगा उतार कर फेंका और उसके भीतर से बिजला सिंह निकल आया।

धारा सिंह बोला—बेचारे पारा सिंह की भी खबर ली? कही पेड़ पर टंगे-टंगे अकड़ ही न जाए।

मनसा सिंह और धारा सिंह जब पेड़ के पास पहुंचे, तो पारा सिंह बेहोश था—रस्सी से बधा हुआ, टांगें सूजी हुईं, खून सिर को चढा हुआ। बड़ी मुश्किल से सिंह को उतारा और बडी मुश्किल से उसे होश में लाया गया।

—क्या हाल है ? धारा सिंह ने पूछा ।

—अब तो गुरु की कृपा है ।

मरी-मरी आवाज मे बोला—क्या बना सिंहों का ?

—सिंह अपना काम कर गए । मस्सा रंघड़ का सिर काट कर ले गए गुरु के लाडले । सिंह पहाड़ो पर चढ़ गए ।

—तब तो गुरु की कृपा हो गई ।

सुक्खा सिंह और मेहताब सिंह के साथ नाथो का जत्था था । यह मालूम नहीं कि वे किधर गए, किधर से गए । पर उनकी मंजिल लक्खी जंगल जरूर थी । वही गुरु धाम था उनके लिए ।

हरिमन्दिर में सिंहों की हुकूमत चाहे चार पहर ही रही, पर उतने अरसे में ही कई सिंहों ने दुःख भंजनी बेरी पर स्नान किया और अपने हृदयों को पवित्र किया ।

बिजला सिंह बोला—वह देखो, युग पलटता ।

—क्या सत् युग आ गया है ?

—सत् युग के दर्शन कर लो । वह देखो । कुछ नजर आया ? उसने हाथ से इशारा किया ।

—हमें तो चौधरी गंगा सिंह और चम्पा ही नजर आते हैं । स्नान कर रहे हैं ।

—और उनके पास ?

—गुल्लू बाई ने भी अपना मजहब बदल लिया है । वह भी नहा रही है सरोवर में डुबकियां लगा-लगा कर । बेचारी की सारी मैल उतर गई । आत्मा अपना चोला बदल रही है ।

एक सिंह पढ़ रहा था :

'रामदास सरोवर नहाते सब उतरे पाप कमाते ।'

धुंध मिट रही थी और इन्सान जन्म ले रहा था ।

००

जो ले हैं निज बल से ले है

एक अठवारे के पश्चात् पता चला कि सिंह लक्खी जंगल में पहुंच गए, खबर देने वाले ने बताया कि जवानों ने चौथे ही दिन अपना सफर पूरा कर लिया था।

हरिमन्दिर बिल्कुल खाली था। कहीं कोई चिड़िया तक पर नहीं मारती थी। भांय-भांय कर रही थी गुरु की नगरी। मस्सा रंघड़ की बेगमें दोहत्थड़ मारकर स्यापा कर रही थीं। अपने बाल नोच-नोच कर उन्होंने बालों का ढेर लगा दिया था। कोई सिंह अमृतसर में ढूंढे से नहीं मिलता था। जब फौज आई, तो हरिमन्दिर बिल्कुल शान्त था। न कोई इन्सान था, न परिंदा।

—सिंह कहां गए?

—सिंह तो यहां आए ही नहीं। किसने देखा है उन्हें? कोई बता सकता है?

—फिर यह काम कैसे हो गया? पट्टी का एक अहलकार कह रहा था।

—यह एक सपना था। सिंह तो नहीं थे, पर सिंहों के भूत गर्दन काट कर ले गए। करामती गुरुओं ने कोई चुटकी फेंकी। सिपाही सो गए। मौत के फरिश्ते आए और मस्से की रूह को पकड़ कर ले गए। यह कोई इलाही कहर था। इसमें किसी का कोई कसूर नहीं है। यह विचार अमृतसर के एक वासी का था, जो सखी सरवरों का पीर था।

—मुझे सिर्फ कातिल का नाम बताओ। और मैं कुछ नहीं जानता। अफसर कह रहा था।

—कोई जानता हो, तो बताए। किसी ने देखा हो, तो पहचाने। लेकिन गुल्लू बाई बड़बड़ा रही थी, जिन्होंने सुना है, वे बताते हैं कि लक्खी जंगल से सुक्खा सिंह, माड़ी कंबो के का जात कलसी, एक सिक्ख था और दूसरा मेहताब सिंह मीर कोट वाला...वही सिर को बगल में दबाकर ले गए हैं।

—इन दोनों के गांवों की ईंट से ईंट बजा दो। अमृतसर में किसी सिंह का घर नजर आए, तो उसे फूंक डालो और राख लाहौर भेज दो। इन काफिरों ने हमारी नाक में दम कर दिया है। उधर काबुली बिलाव अहमदशाह अब्दाली

चढ़ता आ रहा है। पहले उसे सम्भाला जाए, फिर इनसे निपटेंगे। सांप के मुंह में छिपकली वाली हालत है। पहले इस बिलाव से निपट ले, फिर इनको देखेंगे। अफसर उछल कर घोड़े पर सवार हो गया और लाहौर की तरफ चल दिया।

लक्खी जंगल के निकट सक्खा सिंह और मेहताब सिंह ने भूरे में से मस्सा रंघड़ का सिर निकाला और फिर धरती पर रखकर दोनों ने बारी-बारी पांच-पांच जूते उसे लगाए। यह शगुन था गुरु के लाडलों का। फिर सुक्खा सिंह ने उसके सिर को भाले पर टांग लिया। सिंहों के पूत खुशी से इतना फूल उठे कि उनके पांव धरती से बालिश्त-बालिश्त भर ऊंचे उठ रहे थे।

खबरें लक्खी जंगल में पहुंच चुकी थीं। खालसा खुशी में उठा नाच।

दरबारा सिंह, बुड्ढा सिंह, नवाब कपूर सिंह आगे बढ़कर लेने आए।

गुरु ने हमारी लाज रख ली। सुक्खा सिंह ने एक बार भाले को हवा में लहराया।

—धन्य गुरु और धन्य गुरु के लाडले। नवाब कपूर सिंह ने कहा।

जत्थे ने जयकारा बोला—बोले सो निहाल।

सुक्खा सिंह ने मस्सा रंघड़ का सिर जत्थेदार के कदमों में रख दिया।

दरबारा सिंह ने सुक्खा सिंह को गले से लगा लिया। नवाब कपूर सिंह मेहताब सिंह को सीने से लगा रहा था।

नवाब कपूर सिंह ने बांह उठा कर कहा :

'कोई किसी को राज न दे है,
जो ले है निज बल से ले है।'

सारे जत्थे के चेहरे शिंगरफ की तरह दहक रहे थे।

संगतें पढ़ रही थीं :

'संता दे कारज आप खलोया।
पंज रखदा आया राम राजे।।

—समाप्त—

शीघ्र पढ़ें
—हरनाम दास सहराई का नया उपन्यास
पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह की महबूबा
मोरां सरकार
एक छोटा-सा गुनाह सजा केवल पचास कोड़े

हरनाम दास सहराई

जन्म : १३ अप्रैल, १६२०
राजासांसी, अमृतसर में

लेखन : समरावों, चुनरिया दाग-भरी, गली मुहल्ले के लोग, शबे मालवा, कोहेनूर, आईना, मोरां सरकार, हरिमन्दिर, अनूपकौर, लोहगढ़ ।

पुरस्कार : पंजाब सरकार की ओर से शिरोमणि साहित्यकार के रूप में सम्मानित ।
मूल लेखन पंजाबी में । लेकिन अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, मराठी, तथा अन्य भारतीय भाषाओं में आपके उपन्यासों के अनुवाद प्राप्य हैं ।

पता : ७६, बस्तीनौंव, जालन्धर (पंजाब)